आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य

आधुनिक
हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य

(जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्र एवं डायरी आदि)

[पंजाब विश्वविद्यालय की पी एच०डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध]

डॉ० शान्ति खन्ना
एम० ए० पी एच० डी०

मूल्य पच्चीस रुपए, प्रथम संस्करण १९७२ © डॉ० नागि
मुद्रक नुबला प्रिंटिंग एजेंसी द्वारा इण्डिया प्रिंटर्स, दिल्ली ६

चिरसचित स्नेह और वात्सल्य की करुणामूर्ति
परम पूज्यनीय स्वर्गीय पितृदेव
की
पुनीत स्मृति मे

—शाति खन्ना

भूमिका

प्रस्तुत शोध का विषय है—

आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य

इसमें १८५० सन् से १९६४ सन् तक के हिन्दी साहित्य में प्राप्त जीवनीपरक साहित्य का विवेचन है। हिन्दी साहित्य के इतिहास एवं समीक्षा सम्बन्धी जितनी भी पुस्तकें अभी तक प्रकाशित हुई हैं उनमें गद्य की इन विधाओं का स्वतन्त्र रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। जो भी थोड़ा बहुत विवेचन प्राप्त होता है, उससे इस साहित्य को साहित्य के अन्य भेदों के समान महत्वपूर्ण स्थान नहीं प्राप्त हो सकता। इस साहित्य की आवश्यकता एवं महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए मैंने इस विषय को चुना है।

इस विषय का हिन्दी साहित्य में अपना ही महत्त्व है। सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि यह साहित्य हमें साहित्यिक व्यक्तियों के व्यक्तित्व का तो परिचय करवाता ही है साहित्येतर व्यक्तियों की भी झाँकी प्रस्तुत करता है। लेखक अपने जीवन चरित्र में अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए सम्पर्क में आए अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व की भी झलक प्रस्तुत करता है। ये व्यक्ति राजनैतिक सामाजिक एवं धार्मिक भी हो सकते हैं। यही नहीं इन सभी प्रकार के व्यक्तियों के जीवन चरित्र स्वतन्त्र रूप से भी प्राप्त होते हैं। इससे स्पष्ट है कि इस साहित्य में साहित्यिक व्यक्तियों के अपने साहित्येतर व्यक्तियों के व्यक्तित्व की झाँकी भी प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त साहित्यकार के अपने हाथों से लिखा हुआ उसका अपना व्यक्तित्व का विवेचन समीक्षक एवं पाठक दोनों के लिए अधिक लाभप्रद होता है। आलोचक अत्यन्त सुविधा से साहित्यकार की कृतियों की आलोचना कर सकता है। इसमें साहित्यिक आलोचना में अधिक मनोवैज्ञानिक गहराई सामाजिक गहनता कृतियों की प्रामाणिकता तथा यथार्थता का स्वस्थ विकास हो सकता है।

इस प्रकार के साहित्य में साहित्यकार के व्यक्तित्व की सभी विशेषताओं का, उसके स्वभाव रुचियों एवं प्रेरणा स्रोतों का स्पष्ट रूप से विश्लेषण होता है जिसके अनुशीलन से पाठक उन सभी विशेषताओं की तुलना करके तादात्म्य या विश्लेषण करता है। इससे साहित्यकार और पाठक में अधिक रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। उस उस व्यक्तित्व का अध्ययन कुछ और ही आनन्द देता है। इस साहित्य के अनुशीलन से हम साहित्यकार के मानसिक एवं भावात्मक जीवन के और अधिक समीप पहुँच जाते हैं।

इस प्रकार के साहित्य के अनुसंधान, अनुशीलन और संचयन के पश्चात् जो साहित्य के इतिहास प्रकाशित होंगे उनकी प्रामाणिकता के विषय में किसी भी व्यक्ति को सन्देह नहीं उत्पन्न हो सकेगा। इन सभी विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए मैंने इस विषय पर शोध कार्य किया, और निस्सन्देह इन सभी विशेषताओं का निदर्शन मुझे इस साहित्य में हुआ है।

इस विषय से सम्बन्धित एक ग्रन्थ डॉ० चन्द्रावती सिंह द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य में जीवन-चरित का विकास' प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त डॉ० कृष्णलाल, डा० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय एवं डॉ० भोलानाथ तिवारी के इतिहासों में इस विषय का जो भी वर्णन है वह साधारण-सा है। चन्द्रावती सिंह के ग्रन्थ में इस विषय का जो विवेचन है वह अनेक सीमाओं से बंधा हुआ है। इस ग्रन्थ में विशेषरूप से जीवनी साहित्य की ओर ही ध्यान दिया गया है। जीवनीपरक साहित्य की अन्य विधाओं को इस विषय के भीतर ही समेट लिया गया है तथा किसी को भी स्वतन्त्र विधा नहीं माना गया है। रेखाचित्र साहित्य का तो वर्णन ही नहीं है केवल रेखाचित्र परक कुछ पुस्तकों का नामोल्लेख लेखिका ने अपनी पुस्तकों की सूची में कर दिया है। इस ग्रन्थ में सन् १९५० तक के जीवनी साहित्य का उल्लेख है। लेखिका ने जीवनीपरक साहित्य के अन्तर्गत कल्पनात्मक सृजनपरक साहित्य भी समेट लिया है जिससे इसके यथार्थ एवं कल्पना—दोनों पक्षों का गडड मडड सा हो गया है।

जीवनी-साहित्य के प्रकारों का वर्णन करते हुए लेखिका ने जहाँ उसके सैद्धान्तिक पक्षों का निरूपण किया है वह भी अपूर्ण ही है। ग्रन्थ में विषय और शैली तत्त्व पर ही अधिक विवेचन है। अन्य तत्त्वों का नगण्य-सा वर्णन है। अन्य किसी भी विधा के सैद्धान्तिक पक्षों का उल्लेख नहीं है। सभी पक्षों के उन्हीं तत्त्वों को स्वीकार किया गया है। इससे स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक पक्ष की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अधूरा-सा लक्षित होता है।

इसके अतिरिक्त जहाँ उन्होंने जीवनीपरक साहित्य के इतिहास का वर्णन किया है वहाँ विशेष युगों के प्रतिनिधि लेखकों का तो वर्णन विस्तृत रूप से किया है अर्थात् उनके द्वारा लिखित जीवनियों का तो लेखिका द्वारा विवेचन हुआ है परन्तु अन्य लेखकों एवं उनकी कृतियों की एक सूचीमात्र दे दी गई है। यह रुचिकर प्रतीत नहीं होता। लेखिका ने उन जीवनियों एवं उनके लेखकों का कुछ भी विवेचन नहीं किया। इसके अतिरिक्त विषयानुसार जहाँ भी जीवनी साहित्य का विवेचन किया गया है वह पृथक रूप से नहीं प्राप्त होता बल्कि प्रत्येक लेखक के जीवन चरित्रों के विषयों को पृथक पृथक रूप से विभाजित करके लेखिका ने समस्त ग्रन्थ में कई बार विषय की दृष्टि से विभाजन किया है जो कि इतिहास वर्णन में समीचीन नहीं मालूम होता।

लेखिका ने आत्मकथा साहित्य को जीवनी साहित्य का अन्य प्रकार माना है। इसका स्वतन्त्र अस्तित्व इस ग्रन्थ में दृष्टिगोचर नहीं होता। सैद्धान्तिक पक्ष का तो

वणन ही नही है, इतिहास को भी क्रमानुसार सम्यक रीति से नही रखा गया है। प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर किसी भी साहित्य की विधा का विकास वर्णित करना कठिन बात नही है। इसलिए लेखिका के ग्रन्थ म इतिहास वणन म कोई विशेष अन्वेषण दृष्टिगोचर नही होता है। पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित आत्मकथा साहित्य का कहीं नामोल्लेख तक नही है।

इसी प्रकार रेखाचित्र, सस्मरण, पत्र एव डायरी साहित्य के विषय म कहा जा सकता है। इस ग्रन्थ मे केवल इन विधाओ की प्रकाशित पुस्तकों का नामोल्लेख ही मिला है कोई विशेष अन्वेषण सद्धान्तिक एव व्यावहारिक पक्ष दृष्टिगोचर नही होता। वर्णित ग्रन्थ की इन त्रुटियो का इस प्रबन्ध म विसजन हुआ है। जहाँ तक हो सका है मैंने इसमे नवीनता लाने का प्रयास पूणरूप से किया है। मैंने जीवनीपरक साहित्य की सीमा को प्रामाणिक इतिहास स बाँधा है। अत लेखक द्वारा लिखे गए पत्र, डायरी सस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथादि, अथवा अन्य लेखक द्वारा लिखी गई जीवनी सस्मरण, रिपोर्ताज आदि ही शामिल किए गए हैं। हमारी कसौटी यथार्थता एव प्रामाणिकता की ओर रही है। अत हमने इनके कल्पित रूपा को यथासम्भव पृथक रखा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम अध्याय मे लेखक और उल्लेख्य के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए इस विषय के अनेक प्रकारों का वणन किया गया है। इसके साथ ही यह सिद्ध किया गया है कि जीवनीपरक साहित्य के जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र सस्मरण पत्र और डायरी आदि प्रमुख भेद हैं। इसके पश्चात् (ख) भाग मे जीवनी से सम्बन्धित तत्त्वा का वणन ही नहीं अपितु उनके महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है। जीवन से सम्बन्धित किन किन तत्त्वा का विवेचन लेखक को जीवन चरित्र के अन्तगत करना पडता है इसका सम्यक रूप से वणन है। जीवनी से सम्बन्धित तत्त्वा म अन्तगत मैंने शारीरिक रचना, व्यक्तित्व, वातावरण के भीतर उसके जीवन का तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक एव साहित्यिक परिस्थितिया में योगदान एव उन परिस्थितियो का उसके जीवन म महत्त्व आदि का विवेचन किया है। इससे नायक के जीवन का समाज, धम साहित्य एव राजनीति से क्या तथा कसे सम्बन्ध रहे हैं, इनका स्पष्ट रूप से ज्ञान हो जाता है। इसके पश्चात् (ग) भाग म जीवनीपरक साहित्य और इतिहास का तुलनात्मक विवेचन है। इस भाग म मैंने यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि दोनो विधाओ म भिन्नता अधिक है और समानता कम है। विषय, शैली और उद्देश्य सभी दृष्टियो से दोनो विधाओ मे भिन्नता है। यदि समानता है तो वह इसी बात म है कि दोनो म जिन घटनाओ का वणन होता है व पूणतया सत्य होनी हैं।

इसके बाद (घ) भाग म मैंने इन जीवनीपरक तथ्यों की रचना शलियो का विवेचन किया है। जीवन चरित शली, आत्मकथा शैली, रेखाचित्र शैली, सस्मरण

शैली पत्र शैली एवं डायरी शैली का स्वतन्त्र रूप से वर्णन है। इन सभी शैलियों में प्राप्त विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख भी किया गया है

द्वितीय अध्याय में सर्वप्रथम तो जीवनीपरक साहित्य की सभी विधाओं यथा जीवनी आत्मकथा, रेखाचित्र संस्मरण, डायरी एवं पत्र साहित्य के सैद्धान्तिक पक्षों का सम्यक् रूप से विवेचन है। सर्वप्रथम जीवनी के अन्तर्गत विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख करते हुए उत्कृष्ट परिभाषा की रचना की गई है। इसके पश्चात् जीवनी साहित्य के वर्ण्य विषय चरित्रचित्रण देशकाल उद्देश्य एवं शैली तत्वों का सम्यक् रूप से विवेचन हुआ है। जिसके अन्तर्गत प्रत्येक तत्व की विशेषताओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। फिर इस साहित्य के विभाजन के आधारों का भी उल्लेख है। विभाजन में मैंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि वर्ण्य चरित्र के आधार पर साहित्यिक राजनैतिक ऐतिहासिक एवं धार्मिक पुरुषों की जीवनियाँ हो सकती हैं। इसके पश्चात् शैली के आधार पर संस्मरणात्मक शैली में, [illegible] शैली में एवं कथात्मक शैली में भी जीवनियाँ लिखी जा सकने की सम्भावना है।

इस वर्णित सैद्धान्तिक पक्ष में मैंने यह सिद्ध करने का पूरा प्रयत्न किया है कि रेखाचित्र साहित्य के तत्वों के भीतर जो विशेषताएँ पाई जाती हैं वे अन्य विधाओं के तत्वों से भिन्न हैं। यही कारण है कि यह साहित्य हिन्दी जीवनीपरक, साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है।

संस्मरण के अन्तर्गत भी प्रसिद्ध समीक्षकों की परिभाषाओं का उल्लेख करते हुए एक संशोधित परिभाषा दी गई है। तत्वों के भीतर वर्ण्य विषय चरित्र चित्रण, देशकाल, उद्देश्य एवं शैली तत्व का वर्णन है। वर्ण्य विषय के अन्तर्गत, विषय सम्बन्धी विशेषताओं की रोचकता स्वाभाविकता, स्पष्टता एवं सुसंगठितता आदि का विवेचन करते हुए वर्ण्य विषय के प्रकारों का उल्लेख हुआ है। चरित्र चित्रण के वर्णन में चरित्र विशेषताओं एवं उसकी वर्णन करने के प्रकारों का उल्लेख हुआ है। देश-काल एवं वातावरण के सन्दर्भ में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक लेखक आवश्यकतानुसार अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए देशकाल एवं वातावरण का वर्णन करता है। उद्देश्य के साथ साथ शैली तत्व के अन्तर्गत संस्मरण शैली की सभी विशेषताओं का वर्णन है जिससे यह शैली परिपक्व एवं पुष्ट बनती है। इसके पश्चात् संस्मरणात्मक साहित्य का विभाजन कितने प्रकार से हो सकता है इसका भी उल्लेख है।

पत्र साहित्य के अन्तर्गत प्रसिद्ध समीक्षकों की पत्र सम्बन्धी विचारधारा का विश्लेषण करते हुए पत्र लेखक एवं भावग्राहक के सम्बन्ध को स्पष्ट किया है। इसके पश्चात् व्यक्तिगत परिभाषा का उल्लेख है। यह परिभाषा सभी विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के विश्लेषण के पश्चात् दी गई है। पत्र साहित्य के तत्वों का विवेचन भी किया गया है। वर्ण्य विषय के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि विषय की दृष्टि से पत्र कई प्रकार के हो सकते हैं। वर्ण्य विषय को उत्कृष्ट बनाने के लिए जिन विशेषताओं का पत्र में होना आवश्यक है उनका भी वर्णन है। अन्य तत्व पात्रों और घटनाओं से सम्बद्ध और उनके प्रति प्रतिक्रिया के प्रसंग में यह स्पष्ट किया गया है कि पत्र में लेखक किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का केवल वर्णन ही नहीं करता अपितु आवश्यकतानुसार टीका टिप्पणी भी करता है। उद्देश्य एवं देशकाल वातावरण के साथ साथ शैली तत्व के अन्तर्गत पत्र शैली की विशेषताओं का वर्णन है। शैली सम्बन्धी विशेषताओं में से आत्मीयता संक्षिप्तता स्पष्टता स्वाभाविकता एवं भाव-ग्राहकानुकूलता का स्पष्ट रूप से विवेचन किया गया है। इन विशेषताओं के महत्त्व का भी स्पष्ट किया गया है। वर्गीकरण के प्रसंग में साहित्यिक आत्मकथात्मक अन्य चरित्रमूलक वर्णनात्मक एवं विचारात्मक पत्रों का विवेचन है।

प्रसिद्ध समीक्षकों द्वारा दी गई डायरी साहित्य की परिभाषाओं का विश्लेषण करते हुए एक संशोधित परिभाषा देने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त डायरी साहित्य के सैद्धान्तिक पक्ष का स्वतन्त्र रूप से विवेचन किया गया है। तत्वों के अन्तर्गत विषयवस्तु का विस्तार सम्पर्क में आए हुए व्यक्तियों एवं घटनाओं से

लेखक का सम्बन्ध और उनकी प्रतिक्रियाएँ, देशकाल-वातावरण, उद्देश्य एवं शैली तत्त्व को लिया गया है। प्रत्येक तत्त्व की पृथक्-पृथक् विशेषताओं का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है। डायरी साहित्य के वर्गीकरण के आधारों का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख है।

जीवनीपरक साहित्य के रूपों के अन्तर्सम्बन्धों के अन्तर्गत मैंने आत्मकथा जीवनी, आत्मकथा डायरी, आत्मकथा संस्मरण एवं रेखाचित्र और संस्मरण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट करने का पूर्णतया प्रयास किया है कि इन विधाओं में पारस्परिक सम्बन्ध होते हुए भी कुछ असमानताएं हैं जिनसे जीवनीपरक साहित्य में इनका पृथक् पृथक अस्तित्व है।

इन जीवनीपरक साहित्य की विधाओं द्वारा जिन विशिष्ट शैलियों का अवधारण हिन्दी साहित्य में हुआ है उन सभी शैलियों की विशेषताओं का स्पष्ट रूप से विवेचन किया गया है। इसके पश्चात् इस जीवनीपरक साहित्य का गद्य की अन्य विधाओं से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। बीच में गद्य की उस विधा को रखा गया है जिसका सम्बन्ध अन्य वर्णित दोनों विधाओं से है। यहाँ नाटक, उपन्यास और जीवनी, जीवनी संस्मरण और आत्मकथा, पत्र, रेखाचित्र तथा डायरी, नाटक काव्य तथा गद्यगीत एवं रिपोर्ताज और पत्रकारिता के सम्बन्ध को स्पष्ट करने का प्रयत्न हुआ है। इन विधाओं के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचकों के मतों को भी आवश्यकतानुसार प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में सर्वप्रथम जीवनीसाहित्य के तत्त्वों का जो विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया था उनमें से प्राप्त विशेषताओं को सोदाहरण देने का प्रयत्न किया गया है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि ये सभी तत्त्व किसी भी जीवन चरित्र का विश्लेषण सम्यक रूप से करने में पूर्णतया सहायक सिद्ध होते हैं। इसके पश्चात् १८५० से लेकर १९६४ तक के जीवनी साहित्य के इतिहास का उल्लेख किया गया है। इस समस्त विकास को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एवं वर्तमानकाल—तीन भागों में विभाजित किया गया है। इस विकास को मैंने प्रकाशित जीवनी साहित्य के आधार पर लिखा है। जिन जीवन चरित्र एवं उनके लेखकों का साहित्य एवं इतिहासपरक महत्त्व है पूर्णरूपेण उनका विवेचन मैंने कर दिया है। प्रकाशित जीवनी साहित्य में अमृतराय द्वारा लिखित प्रेमचन्द कलम का सिपाही जीवनी विशेष रूप से महत्तम कृति कही जा सकती है। इसके पश्चात् मैंने सर्वप्रथम उत्कृष्ट साहित्यिक जीवनी लेखक बाबू शिवनन्दन सहाय को माना है जो द्विवेदी युग के प्रसिद्ध लेखक थे। इन्हीं के द्वारा हिन्दी जीवनी साहित्य का विशेष रूप से प्रारम्भिक विकास हुआ है। सर्वप्रथम नवीन प्रयोग इस दिशा में इन्हीं का लक्षित होता है 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' एवं 'गोस्वामी तुलसीदास' शीर्षक जीवनियाँ हिन्दी साहित्य में अपना अद्वितीय स्थान रखती हैं। अन्य प्रसिद्ध साहित्यिक जीवनियाँ इनके पश्चात् लिखी गई हैं। विभाजन' मैंने

प्रकाशित जीवनी साहित्य के आधार पर विभाजन खण्ड के अन्तर्गत किया है। यह विभाजन वर्ण्य चरित्र के आधार पर किया गया है जिसमे साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक पुरुषो की जीवनियो को लिया गया है। इन सभी प्रकार की जीवनियो की विशेषताएँ दिखलाने का पूरा प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त शैली के आधार पर इसका विभाजन किया गया है जिसमे यह सिद्ध किया गया है कि हिन्दी जीवनी साहित्य अनेक प्रकार से लिखा गया है। निबन्धात्मक एव औपन्यासिक शैली मे लिखी हुई जो जीवनियाँ प्राप्त होती हैं उनका वर्णन भी हुआ है। साथ-ही-साथ शैली सम्बन्धी गुणो का वर्णन भी यथास्थान किया गया है।

आत्मकथा साहित्य सम्बन्धी अध्याय मे उन तत्त्वो का सोदाहरण विवेचन किया गया है जिनका विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया है। इस सैद्धान्तिक पक्ष को सोदाहरण वर्णन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस साहित्य का भी अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है और इसके तत्त्वो की विशेषताएँ साहित्य के अन्य तत्त्वो से भिन्न हैं। आत्मकथा साहित्य के विकास का जहाँ विवेचन किया गया है उस समस्त विकास को मैंने भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एव वर्तमानकाल भागो मे विभाजित किया है। भारतेन्दु युग के अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाचरण गोस्वामी, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास एव श्रीधर पाठक प्रभृति लेखको का वर्णन है। इन सभी लेखको ने आत्मचरित लिखने का बहुत कुछ यत्न किया है परन्तु वे अपने इन प्रयासो मे सफल नहीं हो सके हैं। द्विवेदी युग के अन्तर्गत आत्मकथा साहित्य का विश्लेषण करने के उपरान्त मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस युग मे आत्मकथा साहित्य का विकास पूर्णगति से हुआ। तब अच्छे लेखको के आत्मचरित प्राप्त होते हैं। इस युग मे मौलिक आत्मकथाओ के साथ-साथ अनूदित आत्मकथाओ की भी कमी नही रही। इसके अतिरिक्त वर्तमान काल मे आत्मकथा साहित्य का विश्लेषण करते हुए मैंने साहित्यिक आत्मकथाओ मे से आचार्य चतुरसेनशास्त्री की 'मेरी आत्मकहानी' को सप्रमाण उत्कृष्ट आत्मकथा माना है। इसके पश्चात् पत्र पत्रिकाओ एव स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित आत्मकथा साहित्य के आधार पर विभाजन किया गया है। लेखकों के आधार पर जो वर्गीकरण किया गया है उसमे कवि, कथा लेखक आलोचक एव राजनैतिक धार्मिक पुरुषों को लिया गया है। शैली के आधार पर जो वर्गीकरण है उसमे निबन्धात्मक शैली सस्मरणात्मक शैली, डायरी शैली एव आत्मकथात्मक जीवन-चरित शैली पर लिखी हुई आत्मकथाओं का वर्णन है। इन विभिन्न शैलियों की विशेषताओ का भी साथ-साथ उल्लेख किया गया है।

रेखाचित्र साहित्य के भी उन सैद्धान्तिक तत्त्वो का सोदाहरण विश्लेषण किया गया है जिनका सैद्धान्तिक निरूपण द्वितीय अध्याय में हो चुका है इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह बताई गई तत्त्वो सम्बन्धी विशेषताएँ रेखाचित्र साहित्य पर पूर्ण रूप से लागू होती हैं। रेखाचित्र साहित्य का आरम्भ मैंने १९२४ सन् मे स्वीकार किया है और पद्मसिंह शर्मा को सर्वप्रथम लेखक माना है। इसके पश्चात् जितना भी

रेखाचित्र साहित्य पत्र-पत्रिकाओं एवं स्वतन्त्र पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ, उस सभी का विश्लेषण 'विकास खण्ड' में किया गया है। इसके साथ मैंने यह स्पष्ट किया है कि इस साहित्य की उन्नति विशेषतया पत्र पत्रिकाओं के सहयोग से हुई है। रेखाचित्र साहित्य का विभाजन मैंने समस्त साहित्य को दृष्टि में रखते हुए किया है। वर्ण्य विषय के अनुसार—साहित्यिक लेखकों के रेखाचित्र, मानवीय गुणों से सम्पन्न साधारण पुरुषों के रेखाचित्र, राजनीतिक पुरुषों के रेखाचित्र एवं मानवेतर जड़ या चेतन सम्बन्धी रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। इन सभी प्रकार के रेखाचित्रों की विशेषताओं का उल्लेख भी किया गया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में रेखाचित्र साहित्य कई प्रकार से लिखा गया है। कथात्मक शैली में लिखा हुआ रेखाचित्र साहित्य, संस्मरणात्मक शैली में लिखे हुए रेखाचित्र एवं प्रतीकात्मक शैली में लिखे हुए रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। इन सभी प्रकार की शैलियों की विशिष्टता का उल्लेख भी किया गया है।

इसी प्रकार संस्मरणात्मक साहित्य की भी प्रारम्भ में परिभाषा देते हुए उसके वर्णित तत्वों का विवेचन स्पष्ट रूप से किया गया है। प्रत्येक तत्व की विशेषता को सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है। संस्मरण साहित्य के विकास में मैंने यह स्पष्ट किया है कि हिन्दी साहित्य में यह सन् १९२० ई० के पश्चात् हुआ है और इसके सर्वप्रथम लेखक बालमुकुन्द गुप्त हैं। हिन्दी संस्मरण साहित्य का विकास मैंने प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं एवं प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर अंकित किया है। इसके अतिरिक्त सभी संस्मरण लेखकों की कृतियों का सम्यक रूप से विश्लेषण भी किया गया है। इस समस्त साहित्य का विभाजन विषय वस्तु के आधार पर, वर्ण्य के आधार पर, लेखक एवं शैली के आधार पर किया गया है। इस प्रकार समस्त संस्मरणात्मक साहित्य का विवेचन पूर्णरूपेण किया गया है। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दृष्टियों को यथासम्भव पूर्णरूपेण लिया गया है और जितना भी अधिक से अधिक साहित्य मिल सका है उसका विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

पत्र साहित्य के सैद्धान्तिक पक्ष का स्वतन्त्ररूप से निरूपण किया है। तत्वों के अन्तर्गत वर्ण्य विषय, पात्रों और घटनाओं से सम्बन्ध और उनके प्रति प्रतिक्रिया, उद्देश्य देशकाल, वातावरण एवं शैली तत्व का विवेचन किया गया है। प्रत्येक तत्व की विशेषताओं का वर्णन उदाहरण सहित किया गया है। इन तत्वों के विश्लेषण द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि पत्र साहित्य की अपनी एक स्वतन्त्र सत्ता है। इसके साथ ही इस साहित्य के सैद्धान्तिक पक्ष का भी अपना ही महत्त्व है। समस्त पत्र साहित्य के विकास को भारतेन्दु कालीन साहित्य, द्विवेदी कालीन पत्र साहित्य, आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र साहित्य एवं अनूदित पत्र साहित्य के अन्तर्गत बाँटा गया है। समस्त पत्र साहित्य के विकास का विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि भारतेन्दुकालीन पत्र साहित्य का विषय साहित्यिक ही रहा है। द्विवेदी युग में इसकी प्रगति होने की सम्भावना है। इस साहित्य के विकास में

प्रमुख रूप से पत्र पत्रिकाओं का ही सहयोग रहा है। विभाजन करते समय समस्त पत्र साहित्य का अवलोकन करते हुए इसको साहित्यिक, आत्मकथात्मक ग्रंथ चरित्र मूलक वर्णनात्मक एवं विचार प्रधान पत्रों की श्रेणी में बांटा गया है। इन सभी प्रकार के पत्र लेखकों एवं उनकी इस साहित्य से सम्बन्धित विशेषताओं का वर्णन करने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है।

डायरी साहित्य के सैद्धान्तिक पक्ष का भी उदाहरण सहित स्पष्ट वर्णन किया गया है। हिन्दी साहित्य में डायरी साहित्य के प्रारम्भिक लेखक के रूप में बालमुकुन्द गुप्त को स्वीकार किया गया है। इसके पश्चात् हिन्दी पत्र पत्रिकाओं की छानबीन से जो भी इस विषय में सामग्री प्राप्त हुई है उसका क्रमिक विकास दिया गया है। इसके साथ ही प्रकाशित डायरियों एवं डायरी सम्बन्धी पत्रों को भी लिया गया है। डायरी साहित्य की पर्याप्त सामग्री मुझे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्राप्त हुई है जिनके नाम मैंने यथास्थान दिए हैं। पंडित सुन्दरलाल त्रिपाठी और डा० धीरेन्द्र वर्मा को हिन्दी डायरी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट लेखक माना जा सकता है। डा० धीरेन्द्र वर्मा की डायरी यद्यपि उनके सम्पूर्ण जीवन का परिचय नहीं देती परन्तु उसमें जो विशेषताएँ प्राप्त होती हैं वे किसी भी डायरी में नहीं पाई जाती। उक्त विशेषताओं को देने का प्रयास किया गया है। समस्त डायरी साहित्य का विभाजन लेखकों के अनुसार, विषय वस्तु के अनुसार एवं स्थानहेतुकादि के आधार पर किया गया है।

इस समस्त जीवनीपरक साहित्य के विवेचन के पश्चात् अष्टम अध्याय में मैंने यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि अमुक अमुक काल में किस किस विधा की विशेषरूप से प्रगति हुई और क्या हुई? जीवनी आत्मकथा, रेखाचित्र, पत्र एवं डायरी साहित्य का किस काल में इन विभिन्न विधाओं का विशेष रूप से प्रादुर्भाव हुआ क्योंकि इनका विकास या विशेष प्रगति तात्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल थी। भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एवं वर्तमानकाल की समस्त परिस्थितियों का विवेचन करते हुए एवं लेखकों पर इन परिस्थितियों का प्रभाव दिखाते हुए इन जीवनीपरक साहित्य की विधाओं का विशेष प्रगति का भी वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् साहित्येतिहासों के आलोक में जीवनीपरक साहित्य का क्या महत्व है इसका सर्वप्रथम मौलिक विवेचन किया गया है। गार्सां द तासी से डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी तक के इतिहासों तक सभी साहित्य के इतिहासों के विश्लेषण के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि इन इतिहासकारों ने किसी भी लेखक के जीवनीपरक तत्त्वों की भूमिका का पूर्ण तया निर्वाह नहीं किया है। इनकी जीवनीपरक ऐतिहासिकता की सीमा वश जन्म तिथि नाम स्थान आदि तक ही सीमित रही है। इतिहासकार तो देश की परिस्थितियों का वर्णन करके उनका प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर दिखलाता है। वह किसी विशेष व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं करता। उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त जीवनीपरक साहित्य की महत्ता को संक्षेप में वर्णन किया गया है।

उपसहार के अ तगत इस समस्त जीवनीपरक साहित्य के अनुशीलन एव विश्लेषण स मुझे क्या उपलब्ध हुआ है उसका आलोचन किया गया है। इसके साथ ही इस साहित्य के द्वारा हि दी साहित्य के इतिहास म क्या-क्या परिवतन आ सकते हैं, इनका भी समावेश किया गया है।

यदि इस ग्र थ मे मैं कुछ नवीनता ला सकी हूँ तो मेरा परिश्रम साथक माना जाएगा। इस प्रब ध के निर्देशक डॉ० रमेश कु तल मेघ ने अपने निर्देशन द्वारा मेरे इस काय को आगे बढाया है। इस विषय पर काय करने की प्रेरणा मुझे गुरुवार डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी से मिली जि होने मुझ हतोत्साहित को प्रेरित किया। इस काय को सम्पन्न करने मे मुझे इतने लोगो से उपकृत होना पडा है कि उनका उल्लेखमात्र तो अकृतज्ञता होगी लेकिन फिर भी मैं इतना कह देना चाहती हूँ कि परिवार के सदस्यो म से इस काय को करने की प्रेरणा मुझे अपने पिता आदरणीय विद्यारत्न विद्यालकारजी एव भया डा० अमरजीवन से मिली है। उन सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ हूँ जि होने मुझे सहायता पहुचाई है।

इसके अतिरिक्त मैं काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, मारवाडी पुस्तकालय दिल्ली के अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय एव पजाब विश्वविद्यालयो के पुस्तकालया के व्यवस्थापको का भी ध यवाद करती हूँ जिनके सहयोग से मैं इस काय को सम्प न कर सकी हूँ।

स माग प्रकाशन के व्यवस्थापक श्री सुरे द्रजी का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ जि होंने बहुत ही अल्प समय म इस शोध ग्र थ को हि दी पाठको के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

—शान्ति ख ना

विषय-सूची

उपसहार के अन्तगत इस समस्त जीवनीपरक साहित्य के अनुशीलन एव विश्लेपण से मुझे क्या उपलब्ध हुआ है उसका आलोचन किया गया है। इसके साथ ही इस साहित्य के द्वारा हिन्दी साहित्य के इतिहास म क्या-क्या परिवतन आ सकते हैं, इनका भी समावेश किया गया है।

यदि इस ग्रन्थ मे मैं कुछ नवीनता ला सकी हूँ तो मेरा परिश्रम साथक माना जाएगा। इस प्रबन्ध के निर्देशक डॉ० रमेश कुन्तल मेघ ने अपने निर्देशन द्वारा मेरे इस काय को आगे बढ़ाया है। इस विषय पर काय करने की प्रेरणा मुझे गुरुवार डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी से मिली जिन्होंने मुझ हतोत्साहित को प्रेरित किया। इस काय को सम्पन्न करने मे मुझे इतने लोगो से उपकृत होना पड़ा है कि उनका उल्लेखमात्र तो अकृतज्ञता होगी लेकिन फिर भी मैं इतना कह देना चाहती हूँ कि परिवार के सदस्यो मे से इस काम को करने की प्रेरणा मुझे अपने पिता आदरणीय विद्यारत्न विद्यालकारजी एव भ्राता डा० अमरजीवन से मिली है। उन सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सहायता पहुचाई है।

इसके अतिरिक्त मैं काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, मारवाड़ी पुस्तकालय दिल्ली के अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय एव पजाब विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयो के व्यवस्थापकों का भी धन्यवाद करती हूँ जिनके सहयोग से मैं इस काय को सम्पन्न कर सकी हूँ।

सन्मार्ग प्रकाशन के व्यवस्थापक श्री सुरेन्द्रजी का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने बहुत ही अल्प समय म इस शोध ग्रन्थ को हिन्दी पाठको के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

—शान्ति खन्ना

विषय-सूची

जीवनीपरक साहित्य में लेखक किसी विशेष व्यक्ति का, घटना को चित्र एवं यात्रा-वर्णन के साथ व्यक्तिगत जीवन को अपना विषय स्वतन्त्र एवं पृथक रूप में अपना सकता है। जब वह किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन या कुछ मार्मिक घटनाओं के आधार पर वर्णन करता है तब वह जीवनी साहित्य में माना जाता है। लेखक उसी व्यक्ति को अपनी लेखनी का आधार बनाता है जिससे वह स्वयं प्रभावित होता है और साथ में उसको यह विश्वास हो जाता है कि अमुक व्यक्ति के जीवन चरित्र से पाठकगण प्रभावित हो जाते हैं। यह कोई आवश्यक नहीं कि वह व्यक्ति साहित्यिक ही हो राजनैतिक सामाजिक या धार्मिक किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण एवं विवेचन कर सकता है। जीवन चरित्र लेखक का चरित्र नायक के जीवन के व्यक्तित्व से प्रभावित अवश्य होता है और उसके चरित्र चित्रण से उसे मानसिक संतोष होता है। इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य में लेखक का विषय किसी श्रद्धेय व्यक्ति का जीवन चरित्र लिखना भी होता है जिसको जीवनी कहा जाता है। इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य का प्रथम प्रकार जीवन चरित्र हुआ।

जब लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन चरित्र का चित्रण न करके अपने ही व्यक्तित्व का विश्लेषण विवेचन पूर्ण रूप से करता है तब वह आत्मकथा कहलाती है। आत्मकथा का नायक लेखक स्वयं होता है। इसमें लेखक अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का तो वर्णन करता ही है इसके साथ अपनी मानसिक क्रिया प्रतिक्रियाओं का भी उल्लेख करता है। आत्मकथा, लेखक आत्म विवेचन आत्म विश्लेषण के दृष्टिकोण से तो लिखता ही है इसके साथ वह आत्मप्रचार की भावना से भी व्यक्तिगत जीवन का विवेचन करता है। वह चाहता है कि उसके अनुभवों का लाभ अन्य लोग भी उठा सकें। इस प्रकार गद्य साहित्य की इस विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः स्पष्ट है कि जब लेखक अपने जीवन का विश्लेषण विवेचन स्पष्ट रूप से करता है तब वह आत्मकथा कहलाती है। जीवनीपरक साहित्य का यह अन्य भेद है। आत्मकथा लेखक साहित्यिक राजनैतिक धार्मिक कोई भी व्यक्ति हो सकता है, परन्तु लेखक का सर्वप्रतिष्ठित एवं सर्वमान्य होना आवश्यक है।

जब लेखक किसी वस्तु व्यक्ति या घटना का सम्पूर्ण चित्र अपनी शब्दरेखाओं से कुछ पृष्ठों में प्रस्तुत करता है तो वह रेखाचित्र कहलाती है। इसमें लेखक का विषय कोई वस्तु घटना, व्यक्ति हो सकता है परन्तु ये सभी लेखक के व्यक्तित्व में अपना ही स्थान रखते है वह इन सब से प्रमुख रूप से प्रभावित होता है। इस विधा में लेखक का कार्य चित्रकार सा होता है। रेखाचित्रकार कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु व्यक्ति, घटना या भाव का अंकन करता है। यहाँ लेखक नायक के चरित्र को उद्घाटित करता है विश्लेषण नहीं विश्लेषण तो स्वयं हो जाता है। इन सभी के चित्रण में लेखक अपने जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से समाविष्ट कर जाता है। इस प्रकार रेखाचित्र साहित्य का समावेश भी जीवनीपरक साहित्य में हो गया है।

जीवनीपरक साहित्य म 'संस्मरण साहित्य' का भी अपना विशिष्ट स्थान है। जब लेखक अनन्त स्मृतियो म से कुछ रमणीय अनुभूतियो को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यजनामूलक संकेत शली म अपने व्यक्तित्व की विशेषताओ स विशिष्ट कर रमणीय एव प्रभावशाली रूप से वणन करता है तब उसे 'संस्मरण' कहत ह। संस्मरण मे लेखक केवल उन्ही घटनाओ का उल्लेख करता है जिनसे लेखक के जीवन म घटित होने वाले परिवतनो का संकेत मिलता है और जो अन्य जनो के कौतूहल को शान्त करन म सहायक होत हैं। इन घटनाओ का उल्लेख वह इसलिए करता है कि ये समय समय पर उसे प्रेरणा देती रहे और साथ ही इनके वणन से उसे मानसिक *सतोष प्राप्त होता है। संस्मरण भी प्रसिद्ध व्यक्ति लिख सकता है।*

जब लेखक अपन प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओ का वणन ही नही इसके साथ-साथ मानसिक प्रतिक्रियाओ का वणन भी जिस पुस्तक म सक्षिप्त एव सुसगठित रूप म करता ह उसे डायरी कहत है। इसम लेखक जीवन म अनुभव की हुई कोई एसी घटना, नई अनुभूति, विचित्र वस्तु का वणन करता है जो सामान्यत मानव समाज के लिए भी शिक्षाप्रद नवीन एव लाभदायक होती है। डायरी म लेखक व्यक्तिगत जीवन की गुह्य गुत्थियो का विवेचन करता है इस प्रकार साहित्य की यह विधा जीवनीपरक साहित्य म अपना स्थान रखती है।

पत्र साहित्य भी जीवनीपरक साहित्य के अन्तगत ही आता है। पत्र वह लेख है जो दूरस्थ व्यक्ति को प्रेषित किया जाता है और जिसम लेखक अपनी भावनाओ को उसकी रुचि, समझ एव योग्यता के अनुसार वणन करता है। इसमे लेखक व्यक्तिगत जीवन के विषय म एव अन्य व्यक्ति के विषय म अपने विचार प्रकट कर सकता है। जीवन चरित्र लेखक के लिए पत्र विशेष रूप से सहायक होते हैं।

इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य के जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र संस्मरण पत्र एव डायरी आदि भेद ह। विषय एव शली की दृष्टि से इनका अपना अपना महत्व है।

जीवनी से सम्बन्धित तत्त्वो का कथन और उनकी विशिष्टता

प्रत्यक जीवन चरित्र लेखक अपन नायक के जीवन की विशेष प्रकार की विशेषताओ एव विशिष्ट प्रकार के जीवन सम्बन्धी तत्त्वो के चुन लेन स ही जीवन चरित्र लिखने म सफल हो सकता है। यही बात आत्मकथा लेखक के विषय मे कही जा सकती है। इस प्रकार प्रत्येक लेखक को जीवन सम्बन्धी तत्त्वो का चयन करना पडता है और इसके साथ ही उसके जीवन से उन तत्त्वो का क्या सम्बन्ध है यह भी दिखलाना पडता है।

प्रत्येक लेखक जिस भी व्यक्ति को अपना नायक चुनता है सवप्रथम उसके सम्मुख उसकी आकृति और शारीरिक रचना आती है। लेखक अपने पाठको को अपने

नायक के शारीरिक गठन के विषय म अवश्य ज्ञान करवाता है। जीवनी के इस तत्व का वणन ही अपन जीवन चरित्र म नही करता प्रत्युत उसका जो भी प्रभाव उसके जीवन पर पडता है उसको दिखलाता है। शारीरिक रचना म शरीर के सभी अवयवो का वणन तो होता ही है इसके साथ लेखक नायक के व्यक्तित्व का इन अवयवो स प्रभावित दिखलाता है। प्रत्येक व्यक्ति के अवयव एक जैसे होने पर भी उनम भिन्नता होती है इसीलिए जीवनी लेखक को उन अवयवो का ज्ञान पाठक को करवाना पडता है। इन शारीरिक अवयवो के आकार प्रकार एव विशिष्टता का वणन न करने से पाठक को उस व्यक्ति के सम्पूण व्यक्तित्व का ज्ञान नही हो सकता। जिस प्रकार किसी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम उसके शब्दो का अध्ययन करना आवश्यक है इसी प्रकार किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को समझने के लिए हम सवप्रथम उसके शारीरिक अवयवो की विशिष्टता को देखना पडता है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जिस का ध्यान लेखक को पूणतया रखना पडता है वह नायक का व्यक्तित्व (Personality) है। मनुष्य का समस्त स्वरूप ही वस्तुत उसका व्यक्तित्व है। उसके गुण अवगुण, उसका चरित्र, उसके आचार-व्यवहार उसका आन्तरिक मन, उसकी सस्कृति तथा सास्कृतिक उपाजन इन सबकी एक रसायन प्रस्तुत करती है।[1] व्यक्तित्व मनुष्य की सभी आन्तरिक और बाह्य विशेषताओ का सामजस्य होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व से अभिप्राय है सोचना, अनुभव करना व्यक्तियो स आचार व्यवहार जो कि एक आवश्यक भाग है जिससे वह अपने आप का खूब विचार करता है एव जो एक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियो स पृथक करता है।[2]

We mean by personality the thinking feeling acting human being who for the most part conceives of himself as an individual separate from other individuals and objects

इसस स्पष्ट है कि व्यक्तित्व म मनुष्य की सभी क्रियाए आ जाती है। जीवनी लेखक नायक के व्यक्तित्व को भली प्रकार अध्ययन करता है उसके व्यक्तिगत गुण दोषो का विवेचन वह अपने जीवन चरित्र म करता है। व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणो का विवेचन तो बडी सुविधा स लेखक कर सकता है। परन्तु आन्तरिक दोषो का विवेचन करने म उस कठिनाई प्रतीत होती है। दोषो के विवेचन म वह नायक के व्यक्तिगत पत्रो एव दैनन्दिनी से विशेष रूप स सहायता लेता है। ऐसा करने स ही वह व्यक्तित्व की सभी विशेषताओ को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत कर सकता है। प्रत्येक विशेषता को वह तभी वणन करता है जब कि उसके पास प्रमाण होते हैं। अन्धाधुन्ध व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं होता। इन सभी के अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं जिनस

---

१ समीक्षा के सिद्धान्त लेखक प्रो० सत्येन्द्र पृ० ३४

२ The Making of a Healthy Personality P 3 by Heleyn Leland Witmer Ruth Kotinsty

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आंका जाता है। व्यक्तित्व की नम्र और कूर एव शक्तिशाली विशेषताओ को नायक की शारीरिक रचना व शारीरिक गठन से भी आका जाता है। व्यक्तित्व को पहचानने के लिए शारीरिक गठन का अपना ही स्थान है। जिसका व्यक्तित्व शक्तिशाली, सख्त एव क्रियाशील होता है वह अपनी इन चारित्रिक विशेषताओ को जीवन के आवश्यक प्रथम स्तर पर ही अपनी शक्ति और स्वभाव के सम्पन्न होने को अपनी गिडगिडाती हुई आवाज से सख्त हड्डिया से और भारी चाल से दिखा सकता है जिसका सम्बन्ध वास्तविक बनावट से ही नही अपितु प्रतिवचन की प्रधानता से भी है।[1]

इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि मनुष्य की आन्तरिक एव बाह्य विशेषताओं का प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पडता है। अत जीवन चरित्र लेखक के लिए व्यक्तित्व का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

अन्य महत्वपूर्ण तत्व जिसका जीवनी लेखक को ध्यान रखना पडता है वह वातावरण है। वातावरण से अभिप्राय उन परिस्थितियो से है जिनमे नायक का व्यक्तित्व निखरता है। लेखक को नायक के जीवन से सम्बन्धित सभी परिस्थितिया का वर्णन करना पडता है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एव साहित्यिक परिस्थितिया के निरीक्षण के बिना कोई भी लेखक सफल जीवन चरित्र नही लिख सकता। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर अपने समय की परिस्थितिया का प्रभाव पडता है। साधारण व्यक्ति तो परिस्थितिया से प्रभावित ही होते है पर तु प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से जनता को भी प्रभावित करते हैं और अन्य व्यक्तिया के व्यक्तित्व से भी प्रभावित होते हैं। यहा कहने का अभिप्राय यह है कि विशिष्ट प्रकार के व्यक्ति जिनका जीवन चरित्र लिखा जाता है वह परिस्थितियो से प्रभावित भी होते हैं और अपनी इच्छानुसार उन परिस्थितिया को ढाल भी सकते हैं उनमे इतनी विशाल शक्ति होती है। किसी भी राजनैतिक पुरुष की जीवनी लिखने के लिए लेखक को तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितिया का वर्णन तो करना ही पडता है परन्तु उसको यह भी दिखलाना पडता है कि उसका नायक उन परिस्थितिया से कितना प्रभावित हुआ है और उनको अपनी योग्यतानुसार सफल बनाने मे कहाँ तक उसका व्यक्तित्व निखरा है। राजनैतिक पुरुष का व्यक्तित्व तो निखरता ही राजनैतिक परिस्थितियो से है इस लिए लेखक के लिए उनका वर्णन करना आवश्यक है। जहा तक अन्य व्यक्तिया का प्रश्न है साहित्यिक पुरुष भी अपनी परिस्थितिया से प्रभावित होते है। प्रत्येक लेखक समयानुसार ही रचना करते है। इसलिए राजनैतिक परिस्थितिया का प्रभाव

1 There is also a place for the recognition of structure A very strong or tough or active individual these characteristics lie for the most part at the first level may show his strength or toughness in ablooming voice tight muscles structed but only generality of response, is involved

साहित्यिक व्यक्तियों पर भी पडता है परन्तु जहा वह उनमे परिवर्तन लाना चाहते हैं वहाँ वह वसी ही प्रकार का साहित्य जनता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। यही बात धार्मिक एव सामाजिक व्यक्तियो के विषय म कही जा सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व जहा अपने समय की राजनतिक परिस्थितियो से प्रभावित होता है वहाँ उन पर सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव भी कोई कम नही पडता। जीवन चरित्र लिखने के समय लेखक को यह देखना पडता है कि नायक का सम्पूर्ण व्यक्तित्व कहाँ तक समाज के नियमो पर चलने के लिए सफल हुआ है कहाँ तक उन बनाये हुए नियमो का उल्लघन किया है एव किन किन नियमो का आवश्यकतानुसार उसने सशोधन किया है। कई सामाजिक व्यक्ति जिनका समाज म प्रतिष्ठित स्थान होता है अपना सारा ही जीवन समाज की सेवा म व्यतीत कर देते हैं तो उनके जीवन म हम समाज सुधार आन्दोलनो का वर्णन करना पडेगा। ऐसे लोग समाज के बने हुए नियमो पर चलने का उपदेश देते है और आवश्यकतानुसार अन्य व्यक्तियो के बनाए हुए नियमो का खडन करते हैं। साधारण व्यक्ति के जीवन चरित्र म तो कोई विशेष बात दृष्टिगोचर नही होती लेकिन जिस भी सवप्रतिष्ठित एव सवमान्य व्यक्ति के जीवन का उल्लेख लेखक करता है वहा वह अवश्य ही समाज से सम्बन्धित नियमो की ओर दृष्टिपात करते हुए यह देखता है कि वह इन्हे निभाने म कहाँ तक सफल हुआ है। लेखक को यह देखना पडता है कि उसका जीवन परिवार के प्रति माता पिता के प्रति बहन भाइयो के प्रति पत्नी के प्रति एव अन्य सम्बन्धियो के प्रति कहाँ तक अपने कत्तव्य को निभा सकता है। कुछ व्यक्ति तो इन सामाजिक बन्धनो से दूर हो जाते हैं और कुछ इनके अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत कर लेते हैं। इस प्रकार जीवन के इस भाग का वर्णन करना भी लेखक का कत्तव्य हो जाता है। जीवन का यह भाग अर्थात् जीवनी सम्बन्धी इस तत्त्व का उल्लेख करना लेखक के लिए इसलिए भी आवश्यक है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज म फले हुए इस चतुर्दिक वातावरण का प्रभाव उस पर पडता है। इस समाज म ही उसका व्यक्तित्व प्रफुल्लित होता है। सामाजिक व्यक्ति होने के कारण समाज से तो वह प्रभावित होता ही है साथ म अपने व्यक्तित्व के गुणो से वह समाज को भी प्रभावित करता है। कुछ सामाजिक नियमो को भी वह इच्छानुसार बदल देता है। जब वह इन नियमो का उल्लघन करता है तब उसका व्यक्तित्व समाज म अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वह नायक के सामाजिक जीवन सम्बन्धी तत्त्व का अवश्य चयन कर वरन् जीवन चरित्र अधूरा रह जाता है।

प्राय देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई विशेष धर्म होता है चाहे वह ईश्वर को सगुण रूप म मान ले चाहे निर्गुण रूप म। बिना धर्म के कोई भी व्यक्ति अभी तक देखने म नही आया। यदि कोई ईश्वर के इन दोनो ही रूपो को नही मानता तो जिन विशेष प्रकार के नियमो के अनुसार वह जीवन व्यतीत करता है वह उसका धर्म कहलाते हैं। जीवन म धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक

व्यक्ति का जीवन अपने ही ढग का होता है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका समस्त जीवन अपने धमप्रचार म ही व्यतीत हो जाता है। ऐसे व्यक्तियो का जीवन आदश जीवन कहलाता है। जो लेखक ऐसे व्यक्तियो को अपना नायक बनाते ह वह उपदेश कथन के उद्देश्य से ही उनको ग्रहण करते हैं। लेखक को अपने नायक के जीवन म यह देखना होता है कि कहा तक उसन अपने जीवन मे पाप या पुण्य कम किए हैं, कहाँ तक वह धार्मिक नियमा पर चला है और कहा तक उनका उल्लघन किया है। इन सभी बाता का वणन, चाहे वह अपन जीवन का उल्लेख करे चाहे अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विवेचन करे, अवश्य ही करता है। इस प्रकार लेखक को नायक के सम्पूर्ण मस्तिष्क के विकास का अपनी जीवनी म वणन करने के लिए उसके चतुर्दिक फैले हुए राजनतिक, सामाजिक, धार्मिक वातावरण का वणन करते हुए उसके व्यक्तित्व का इनम स्थान निधारित करना पडता है। इससे स्पष्ट है कि लेखक नायक के जीवन सम्बन्धी सभी तत्वा का चयन करके जीवन चरित्र लिखता है।

साहित्यिक व्यक्ति का जीवन चरित्र लिखने के लिए लेखक को जहा उपरिलिखित जीवन सम्बन्धी तत्वो का चयन करना पडता है वहा उसे तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितिया का वणन करते हुए यह सिद्ध करना पडता है कि इनके अनुसार चलने मे कहाँ तक उसका व्यक्तित्व सफल हुआ है और कहाँ तक उसका व्यक्तित्व सफल हुआ है और कहा तक इसने परिस्थितियो के प्रतिकूल होकर साहित्यिक रचना की है। कुछ साहित्यिक व्यक्ति परिस्थितिया से प्रभावित ही रहते हैं और कुछ आवश्यकतानुसार परिवतन कर लेते हैं। वे अपने को परम्परावादी मानने से इनकार कर देते हैं और अपने ही व्यक्तित्व के अनुसार साहित्य को लिखते हैं। साहित्यिक व्यक्ति का जीवन चरित्र लिखने म उसकी कृतियाँ भी विशेष रूप से सहायक हो जाती हैं। लेखक को उन कृतिया को पढ़ना आवश्यक हो जाता है क्योंकि उन्हीं से उसके मस्तिष्क के विकास का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि लेखक को जीवन चरित्र लिखने के लिए जीवन सम्बन्धी किन तत्वो का चयन करना पडता है और वे तत्व उसके व्यक्तित्व म कितना स्थान रखते हैं। इसके साथ ही लेखक को यह वणन करना पडता है कि व्यक्ति जिसका वह जीवन चरित्र लिख रहा है उसके व्यक्तित्व म अर्थात् उसके जीवन म किस तत्व की अधिकता है और कहाँ तक वह अन्य तत्वा को सफल बना सका है।

जीवनीपरक तथ्य और इतिहास की प्रवृत्तिया

जीवनीपरक साहित्य और इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जीवन चरित्रकार और इतिहासकार म समानता कम है और विषमताएँ अधिक हैं। समानता तो केवल इस बात की है कि दोनो लेखको म सत्य का आग्रह रहता है लेखक अपनी इच्छानुसार घटनाचक्र मे परिवतन नहीं कर सकता। जीवनीपरक साहित्य के लेखक को भी उन्हीं घटनाओ का वणन करना पडता है जो कि सत्य पर आधारित होता

है। उसके अपने जीवन सम्बन्धी घटनाएँ तो होती ही रहती हैं परन्तु यदि वह अन्य व्यक्ति के जीवन का वर्णन करता है तो उसके जीवन सम्बन्धी घटनाओं का वह तभी वर्णन कर सकता है यदि उसकी रचना के विषय में उसके पास प्रमाण होते हैं। इतिहासकार भी इतिहास वर्णन में कल्पना का प्रयोग नहीं कर सकता। इस समानता को विभिन्न आलोचकों ने भी स्वीकार किया है। जीवनी साहित्य और इतिहास की सत्यता शत प्रतिशत अनिवार्य है। जिसमें बाह्य कल्पना और व्याख्या का स्थान जीवनी साहित्य में नहीं हो सकता है।[1]

जीवनीपरक साहित्य में लेखक का उद्देश्य किसी एक व्यक्ति के जीवन को चित्रित करना होता है। इसमें प्रधानता व्यक्ति को मिलती है। जीवन चरित्र के पीछे कोई न कोई व्यक्ति रहता है। इतिहास में प्रधानता देश को मिलती है। इतिहास देश की पृष्ठभूमि पर घटनाओं का चरित्र चित्रण करना चाहता है अथवा दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अभी देश रहता है व्यक्ति तो उसका अंग होकर ही आता है ठीक इसके विपरीत जीवनी में प्रधानता व्यक्ति को मिलती है इस का घटनाएँ उसकी अनुवर्तिनी होकर आती हैं। यह सम्भव है कि जीवनी में जुड़ कर किसी संस्था अथवा देश का इतिहास गौण रूप से आ ही जाए किन्तु मुख्य लक्ष्य नायक का कार्य-कलाप होता है देश या संस्था का इतिहास नहीं।[2] इससे स्पष्ट है कि जीवनीपरक साहित्य में मुख्य स्थान व्यक्तित्व का होता है और इतिहास में देश का। जीवनीपरक साहित्य लेखक जिन भी देश की परिस्थितियों का वर्णन करता है वह अपने नायक के व्यक्तित्व को अधिक स्पष्ट करने के लिए करता है इस बात को गुलाबराय ने भी पूर्णतया स्पष्ट कर दिया है। इतिहास में सत्य का आग्रह अवश्य रहता है किन्तु उसमें व्यक्ति देश का अंग होकर आता है। अभी देश ही रहता है। जीवनी में मुख्यता व्यक्ति को मिलती है उसके सहारे किसी देश या जनता का इतिहास भले ही आ जाय।[3]

किसी भी व्यक्ति की जो बातें इतिहासकार के लिए अनावश्यक हैं वही बातें एक जीवन चरित्रकार के लिए आवश्यक हैं। जीवन चरित्रकार यह बतलाता है कि उसके नायक के व्यक्तित्व में क्या क्या दुर्बलताएँ हैं और कौन-कौन सी दृढ़ताएँ। उन छोटी छोटी बातों को जो चरित नायक के व्यक्तित्व के उद्घाटन में सहायता पहुँचाती है जीवन चित्रकार कभी छोड़ नहीं सकता। इससे स्पष्ट है कि जीवनी लेखक के लिए चरित्र नायक की सामान्य से सामान्य बातें भी महत्व रखती है। वह चरित्र नायक के खाने पहनने की रुचि प्रातःकाल ईश्वर वन्दना या भ्रमण आदि का वर्णन उतने ही उल्लास के साथ करता है जितने उत्साह के साथ इतिहासकार किसी बड़े युद्ध या

---

१ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह पृ० ८

२ समीक्षा शास्त्र ले० डा० दशरथ ओझा पृ० १९८

३ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० २३७

रूपपरिवर्तन का वर्णन करता है। इतिहासकार के लिए ऐसी बातें अनावश्यक प्रतीत होती हैं किन्तु जीवनीकार के लिए व अत्यावश्यक हैं।[1] इससे स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति का जीवन इतिहास को समृद्ध करने का सहायक बन सकता है परन्तु स्वयं इतिहास नहीं कहला सकता। इसीलिए जीवनीपरक साहित्य और इतिहास म भिन्नता है। इतिहास उन घटनाओं के क्रम का वर्णन करता है, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक उत्थान-पतन का उल्लेख करता है जिसम असंख्य व्यक्ति एक साथ भाग लेते हुए या सधि करते हुए या अन्य अनेक कार्यों म सम्मिलित होकर भी उसका स्व अलग और परे रह सकता है। इतिहास की असम्बद्ध घटनाओं म उसका अपनापन बहुत ही नगण्य सा होता है। जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति का जो क्रम बनता है जिसम उसकी भावनाएँ, मुद्राए उसके काय और अपनेपन की छाप होती हैं जिसम उसकी जीवनी शैली होती है जिसम उसकी आस्था होती है और जिसम उसके व्यक्तित्व का चित्र स्पष्ट पडता है इतिहास का विषय नहीं बन सकता है परन्तु यही जीवनी साहित्य का विषय बनता है और इसीलिए दोनो इतिहास और जीवन चरित्र के अलग अलग क्षेत्र हैं दोनो अलग अलग दो वस्तुएँ हैं।[2]

यद्यपि जीवनीपरक साहित्य म और इतिहास म घटनाओं का वर्णन होता है परन्तु वर्णन म भी भिन्नता होती है। इतिहासकार तो इतिहास म किसी भी प्रमुख व्यक्ति के किए हुए कार्यों का वर्णन ही कर देता है और वह वर्णन भी कुछ पंक्तियों म ही होता है परन्तु जीवन चरित्र लेखक या आत्मकथा लेखक जीवन सम्बन्धी घटनाओं का वर्णन ही नहीं करता अपितु विश्लेषण भी करता है। इस प्रकार व्यक्तित्व का जो विवेचन एव विश्लेषण हम जीवनीपरक साहित्य म देखते हैं वह इतिहास म नहीं। अत विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि जीवनीपरक साहित्य म इतिहास का क्या स्थान है।

जीवनीपरक तथ्यो की रचना शैलियाँ

जीवनीपरक साहित्य के अन्तर्गत जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण पत्र एव दैनंदिनी गद्य की ये सभी विधाएँ स्वतन्त्र रूप से आती हैं। गद्य की ये विधाएँ पृथक्-पृथक् ढंग से लिखी जाती हैं। इस प्रकार इनकी रचना शैलियां भी पृथक् पृथक् हैं। जीवनी लेखक की शैली आत्मकथा लेखक की शैली से पृथक होती है। इसी प्रकार संस्मरण भी अपने ही ढंग से लिखे जाते हैं। रेखाचित्र शैली का भी साहित्य म अपना ही स्थान है। पत्र एव डायरी शैली तो है ही इनसे बिल्कुल भिन्न। इस प्रकार जीवन सम्बन्धी इन तथ्यो की भिन्न भिन्न शैलियाँ हैं।

जीवन चरित लिखने की 'शैली' इन विधाओं की पृथक् पृथक् शैलियों म अपना ही स्थान रखती है। जीवनी लेखक को अपने नायक के समस्त जीवन का वर्णन करना होता है इसलिए वह अपनी जीवनी म विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी कर

१ समीक्षा शास्त्र ले० डा० दशरथ ओझा पृ० १६८

२ हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० ६

सकता है। जीवन चरित शैली में सुसंगठितता, रोचकता सरसता स्वाभाविकता आदि विशेषताएँ होती हैं। इन गुणों से युक्त होने पर ही जीवनचरित शैली प्रभावोत्पादक बन सकती है। इसके अतिरिक्त लेखक आवश्यकतानुसार अपने नायक के जीवन को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए अन्य शैलियों का प्रयोग भी कर सकता है। लेखक का मुख्य उद्देश्य नायक के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण-दोषों का विवरण ही नहीं अपितु विश्लेषण भी करना होता है। इसलिए नायक के जीवन के प्रति अपने विचारों को भी प्रकट करना होता है। इसीलिए जीवन चरित शैली में वर्णनात्मक, कथात्मक एवं भावात्मक शैली का कहीं कहीं प्रयोग लक्षित होता है।

आत्मचरित शैली में लेखक स्वयं नायक होता है। उसे अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण स्वयं करना होता है। यह कोई सुगम कार्य नहीं है। इस कार्य के लिए लेखक को स्पष्ट एवं निरसंकोच रूप से कार्य करना पड़ता है। यही कारण है कि आत्मकथा वही लेखक लिख सकता है जिसका व्यक्तित्व साधारण व्यक्तियों जैसा नहीं होता। उसके व्यक्तित्व में ईमानदारी और सच्चाई होती है तभी वह अपने गुण दोषों का विवेचन स्वयं करता है। इस प्रकार आत्मकथा शैली में स्पष्टता, स्वाभाविकता एवं सम्बद्धता आदि गुणों का समावेश होता है। अपने व्यक्तित्व को अधिक विकसित करने के लिए अर्थात् स्पष्ट रूप से गुण दोषों का विवेचन करने के लिए वह आवश्यकतानुसार अन्य शैलियों की सहायता भी ले सकता है।

रेखाचित्र शैली इन दोनों ही शैलियों से पृथक है इस शैली का लेखक तो चित्रकार की तरह समस्त व्यक्तित्व का चित्रण करता है। रेखाचित्रकार का कार्य चरित्र को उद्घाटित करना ही है विश्लेषण करना नहीं। विश्लेषण तो स्वयं ही हो जाता है। रेखाचित्र लेखक को तो सीमित क्षेत्र में समस्त चित्र चित्रित करना होता है। इसलिए इस प्रकार की शैली में संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता, चित्रात्मकता आदि विशेषताएँ होती हैं। इस शैली में भी गौण रूप से लेखक अन्य शैलियों की सहायता ले सकता है। रेखाचित्र लेखक को तो शैली का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। उसकी सफलता तो शैली पर ही निर्भर होती है।

संस्मरण शैली का जहाँ तक प्रश्न है इसमें भी वे सभी विशेषताएँ होती हैं जो अन्य शैलियों में पाई जाती हैं। संस्मरण आत्मकथात्मक शैली में भी लिखे जाते हैं और जीवन चरित शैली में भी परन्तु फिर भी इस शैली की अपनी ही विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य शैलियों से पृथक करती हैं। संस्मरण चाहे लेखक के अपने जीवन से सम्बन्धित हों चाहे किसी और व्यक्ति के, दोनों में ही लेखक का व्यक्तित्व मुख्य रूप से लक्षित होता है। इसलिए इस शैली में आत्मीयता का गुण विशेष रूप से पाया जाता है। प्रत्येक घटना का वर्णन जो भी लेखक करता है जिस भी व्यक्ति के विषय में वह इस शैली में लिखता है अवश्य ही उसका सम्बन्ध इसके व्यक्तित्व के साथ होगा। यही कारण है कि संस्मरण रोचक एवं प्रभावोत्पादक होते हैं। संस्मरण लेखक को भी अपनी शैली को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसमें संक्षिप्तता सुसंगठितता

एव रोचकता आदि गुणो का समावेश करना पडता है। अपनी इन प्रमुख विशेषताओ के कारण ही यह शैली अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

पत्र साहित्य की शैली तो इन सभी शैलियो से पृथक होती है। पत्र शैली म आत्मीयता का गुण प्रमुख रूप से पाया जाता है। लेखक का सम्बन्ध अपने व्यक्तित्व से तो होता ही है दूरस्थ व्यक्ति के साथ भी होता है। यही कारण है कि लेखक को पत्र का विषय भावग्राहक के अनुकूल ही चुनना पडता है। इस शैली की सबसे बडी महत्ता इसलिए है कि लेखक का जो व्यक्तित्व हम पत्रो म प्राप्त करते हैं वह अन्यत्र नही। लेखक अपने जीवन की गोपनीय घटनाओ का वर्णन अपने पत्रो म ही करता है, इसलिए उसके व्यक्तित्व का निखरा हुआ जो रूप हम पत्रो मे मिलता है वह अन्यत्र नही। लेखक जिस भी घटना, स्थान व दृश्य का वर्णन पत्रो मे करता है वे समस्त उसके व्यक्तित्व से सम्बन्धित होते हैं। जिन पत्रो म हम किसी व्यक्ति के जीवन के विषय म झाकी प्राप्त करते हैं उनम जीवनचरित शैली का प्रयोग होता है। इसी प्रकार लेखक विषयानुसार शैलियो का प्रयोग कर सकता है परन्तु फिर भी प्रधानता लेखक के अपने व्यक्तित्व की होती है। इस शैली का आकार भी सीमित होता है। लेखक को अपने विचार का वर्णन समास शैली म करना होता है।

डायरी लेखक की शैली भी अपने ही ढग की है। इसम लेखक को अपने समस्त जीवन की घटनाओ का दिन तिथि, समय और स्थान के अनुसार करना पडता है। इस शैली म स्वाभाविकता, सत्यता एव सुसम्बद्धता आदि विशेषताएँ होती हैं। डायरी म लेखक अपने जीवन की सभी घटनाओ को स्पष्ट रूप से लिखता है। जिन जीवन सम्बन्धी तथ्यो का किसी भी व्यक्ति को पता नही होता वह उस व्यक्ति की डायरी म देखे जा सकते हैं। इस प्रकार इस शैली मे निःसकोचशीलता का जो गुण प्राप्त होता है वह अन्यत्र नही पाया जाता। इस शैली का लेखक भी आवश्यकतानुसार विभिन्न शैलियो का प्रयोग कर सकता है।

2 जीवनीपरक साहित्य की विधाएँ एव उनके अन्तवन्ध

जीवनीपरक साहित्य की विधाएँ

१ जीवनी—साहित्य म जीवन का विस्तत वणन होता है जीवन की गूढ़तम समस्याओं एव उलभनो का उसके सौंदय और विभूतियो का साहित्य म स्पष्ट रूप मे विवेचन होता है। इसीलिए जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्य का मूल प्रेरणा स्रोत मनुष्य जीवन है और साहित्य जीवन को व्यक्त करन का साधन है। इसलिए वह साहित्य जिसम जीवन के गूढ़तम तत्वो का विवेचन नही होता कोई महत्व का स्थान और आकषण नही रखता है। इसीलिए जीवन और साहित्य का अटूट सम्बन्ध है।

वसे तो साहित्य के सब रूपो म किसी न किसी रूप म मानव जीवन का उल्लेख होता है। अत सारा ही साहित्य जीवनी है। यहा हमारा अभिप्राय जीवनी के सामान्य अथ से नही है प्रत्युत व्यक्ति विशेष की जीवनी से है। इसके लिए सामा य मानव समाज म से किसी विशिष्ट व्यक्ति को चुन लिया जाता है और अधिक गहराई तथा वास्तविकता स उसके जीवन की घटनाओ एव परिस्थितियो का अध्ययन किया जाता है। जब लेखक इस अध्ययन के परिणामस्वरूप अपनी प्रतिक्रियाओ को इतिहास रूप म वर्णित करता है तब वह एक प्रकार के साहित्य का निर्माण करता है अपने अथ मे जीवनी शब्द इसी साहित्यिक रूप का परिचायक है।

वास्तव म जीवनी घटनाओ का अकन नही वरन् चित्रण है। वह साहित्य की विधा है और उसम साहित्य और काव्य के सभी गुण है। वह एक मनुष्य के अन्तर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण है। जिस प्रकार चित्रकार अपने विषय का एक एसा पक्ष पहचान लेता है जो विभिन्न पक्षों म ओतप्रोत रहता है और जिसम नायक की सभी कलाए और छटाएँ समन्वित हो जाती हैं उसी प्रकार जीवनीकार अपने नायक के आपे की कुञ्जी समझकर उसके आलोक म सभी घटनाओ का चित्रण करता है।[1] इस परिभाषा के अनुसार जीवनी म लेखक के आन्तरिक और बाह्य स्वरूप का विवेचन कलात्मक रूप स होना है। 'कलात्मक' शब्द के प्रयुक्त होने स ही यह परिभाषा अधिक उपयुक्त जान पडती है। इस शब्द के प्रयोग करन से

१ काव्य के रूप लेखक गुलाबराय पृ० २३८

लेखक का अभिप्राय है कि 'जीवनी मे वे सभी गुण होने चाहिए जोकि साहित्यिक कृति मे होते हैं।

जीवन चरित्र जीवन की ऐतिहासिक घटनाओ का स्थूल साहित्यिक उल्लेख भी नही है, जीवनी साहित्य एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य की मुद्रा और भावना उसके मन की क्रिया प्रतिक्रियाएँ और जीवन के क्रम मे उसके मस्तिष्क के विकास का अध्ययन एक अत्यन्त गूढ विषय है। मनुष्य का व्यक्तित्व मानसिक क्रियाओ का परिणाम है। इन मानसिक क्रियाओ का अध्ययन और उनका सफल चित्रण जीवनी साहित्य का अनिवार्य विषय है।[1]

इस परिभाषा म लेखिका ने जीवनी साहित्य को एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन माना है जिसमे मनुष्य के मस्तिष्क के विकास क्रम को स्पष्ट रूप स लिखा जाता है। जहा इन्होने मानसिक क्रियाओ के सफल चित्रण' का उल्लेख किया है उसस स्पष्ट है कि यह जीवनी म उन सभी विशेषताओ का समावेश रखने के पक्ष म है जो कि इनको एक उत्कृष्ट साहित्यिक जीवनी बना सकती हैं।

जीवनी शब्दो मे सगृहीत ज्ञान प्रमाण है। इसमे मानवीय स्वभाव एव भावनाओ का ऐसा प्रवाहित रूप से दृढ वर्णन होता है जसे किसी पारे जसा तरल पदार्थ के बहाव का होता है।[2]

A biography is a record in 'words of something that is as mercurial and as flowing as compact of temperament and emotion as the human spirit itself

इसस स्पष्ट है कि जीवनी म मनुष्य जीवन के उत्थान पतन, सभी पक्षो का धारावाहिक रूप स वर्णन होता है।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जीवनी म लेखक व्यक्ति के आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप से विवेचन करता है उसके वर्णन म एक विशेष प्रकार की कलात्मकता होती है, जो उस गद्य की अन्य विधाओ से पृथक करती है। इतिहास की अपेक्षा इसम अधिक वयक्तिकता होती है और साहित्य के अन्य रूपो की अपेक्षा इसम वास्तविकता होती है। अत जीवनी का परिभाषा इस प्रकार हो सकती है—जब कोई लेखक कुछ वास्तविक घटनाओ के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति की जीवनी कलात्मक रूप स प्रस्तुत करता है तो साहित्य का वह रूप 'जीवनी' कहलाता है।

तत्व

वर्ण्य विषय—जीवनी साहित्य का यह महत्वपूर्ण तत्व है। इसम नायक के

१ हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास, लेखिका चन्द्रावती सिंह पृ० ११

२ Literary Biography by Leon Edel Page I

सम्पूर्ण जीवन का विश्लेषण होता है। नायक के जीवन का यह विश्लेषण लेखक वास्तविक घटनाओं के आधार पर करता है। जहाँ तक नायक का प्रश्न है वह साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक कोई भी हो सकता है परन्तु उसका जनता में यथेष्ट स्थान होना आवश्यक है जिसके चरित्र को पढ़ कर पाठक कुछ प्रेरणा एवं विशिष्ट ज्ञान ग्रहण कर सकें।

वर्ण्य विषय को उत्कृष्ट एवं सफल बनाने के लिए उसमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम वर्ण्य विषय में सत्यता का होना है। जानसन ने भी इसको स्वीकार किया है। जहाँ इन्होंने अपनी पुस्तक 'One Mighty Torrent' में एक उत्कृष्ट जीवनी के गुणों के विषय में वर्णन किया है वहाँ इस गुण को इन्होंने सर्वप्रथम स्वीकार किया है— सर्वप्रथम मेरे विचार में जिसको कि हम कह सकते हैं सचाई है—चित्रित मानव जीवन के चरित्र की सचाई। बिल्कुल निष्पक्ष—जो कि न तो उसके पतन का दमन करे न ही उपेक्षा करे जो भी स्पष्ट रूप से समझता हो उसका वर्णन करे। ऐसे उद्देश्य के लिए विश्लेषण एवं समीक्षा की आवश्यकता है। केवल सीधे तथ्य ही आवश्यक नहीं अर्थात् वे ही कार्य को पूरा नहीं कर सकते। विश्लेषण कार्य को पूरा करने के लिए अवश्य किया जाता है। कभी कभी केवल एक चारित्रिक विशेषता की सचाई को व्यक्त करने के लिए सारी सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि देनी आवश्यक हो जाती है और इससे कभी कभी आत्मा की अत्यन्त कपटी समस्याओं को भी खोजा जाता है। इससे स्पष्ट है कि जीवनी एक मनोवैज्ञानिक प्रमाण पुस्तक ही नहीं है प्रत्युत एक कला है।[1]

(Primarily I think we must say truth—truth to the character of the human life it portrays An absolutec andouy, seeking neither to blacken nor to palliate but as clearly as man be, to understand Such an aim necessarily involves interpretation for a mere recital of fact will not do Analysis must coml to the aid of the deed Sometimes an entire background of socia and historical color may be needed to reveal the truth about a single characteristic and sometimes a delving into the most elusive problems of the soul In saying these things it becomes clear that a biography is not a psychological casebook but a work of art)

इससे स्पष्ट है कि वर्ण्य विषय में सत्यता का होना नितान्त आवश्यक है। 'सत्यता' से यहाँ अभिप्राय घटनाओं की सचाई है। लेखक वास्तविक घटनाओं के आधार पर ही नायक के जीवन का चरित्र चित्रित कर सकता है। नायक के चरित्र सम्बन्धी गुण दोषों का स्पष्ट एवं विस्तृत रूप से वर्णन करने से ही लेखक द्वारा

१ One Mighty Torrent by Fdger Johnson, P 40

लिखी हुई जीवनी सफल कही जा सकती है। 'जीवनीकार सत्य पथ से कभी विचलित नहीं होता। यह हो सकता है कि दोष-दर्शन म उसके हृदय मे सहृदयता की भावना ऐसी हो कि वह यथार्थता की रक्षा करता हुआ चरित्र नायक की दुर्बलताओं का परिहास न कर। जीवनीकार सत्य का पल्ला कभी नहीं छोडता। वह इस मर्यादा की रक्षा के लिए सब कुछ त्याग करने को तैयार रहता है।'[1] इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि वर्ण्य विषय मे वास्तविकता एव सत्यता का होना आवश्यक है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जो कि वर्ण्य विषय को उत्कृष्ट बना सकती है वह है—प्रासादात्मकता व रोचकता। लेखक को नायक के सम्पूर्ण चरित्र का विश्लेषण इस ढग से करना चाहिए जाकि पाठक को सरस एव रोचक प्रतीत हो। नीरस जीवनी पढने के लिए कोई भी पाठक नहीं तैयार होता है। इस प्रकार रोचकता का विषय म होना अत्यन्त आवश्यक है।

तीसरा महत्वपूर्ण गुण वर्ण्य विषय म वैज्ञानिकता का होना है। वही जीवनी सफल कही जा सकती है जिसम नायक के सम्पूर्ण जीवन का मनोवैज्ञानिक रूप से विश्लेषण होता है। इस वैज्ञानिकता म त्रुटि आने स जीवन चरित्र भी दूषित हो जाता है। मनुष्य जीवन का क्रमिक विकास वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत करना ही जीवनी म लेखक का उद्देश्य होना है। यदि वैज्ञानिकता मे कुछ कमी रह जाएगी तो वह जीवन चरित्र काल्पनिक हो जाएगा इसलिए विषय वर्णन मे वैज्ञानिकता का होना आवश्यक है।

वर्ण्य विषय म सक्षिप्तता एव सुसगठितता का होना भी अत्यन्त आवश्यक है। लेखक को समस्त जीवन की घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन करना चाहिए। ऐसा न हो कि उनम एकसूत्रता का अभाव हो। घटना का इस ढग स वर्णन करना चाहिए कि वह सम्पूर्ण जीवन पर प्रकाश भी डाले और साथ म सक्षिप्त रूप से भी कही गई हो।

अत वही जीवनी सफल कही जा सकती है जिसके वर्ण्य विषय म उपयुक्त गुणों का समावेश होगा।

चरित्र चित्रण

जीवनी साहित्य का यह विधायक तत्व है। इसम लेखक अपने नायक का चरित्र चित्रित ही नहीं करता अपितु उसका सफलपूर्ण विश्लेषण एव विवेचन भी करता है। नायक के आन्तरिक एव बाह्य व्यक्तित्व का विश्लेषण चरित्र चित्रण म किया जाता है।

जहाँ तक नायक के आन्तरिक विश्लेषण का प्रश्न है उसम गुण भी होते हैं और दोष भी। गुणों का वर्णन तो सभी कर सकते हैं पर दोषों का वर्णन कोई ही

---

1 समीक्षाशास्त्र, ले० दशरथ ओझा, पृ० १६६ द्वितीय सस्करण जुलाई, १९५१

व्यक्ति कलात्मक रूप से कर सकता है। चारित्रिक त्रुटियों का वर्णन लेखक को इस ढंग से करना चाहिए कि पाठक को यह भी अनुभव न हो कि स्पष्ट एवं कड़वे रूप से नायक की दुर्बलताओं को ही वर्णन करना लेखक का लक्ष्य है। इसमें लेखक को अपनी सहानुभूतिशीलता का प्रयोग करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में गुण दोष होते हैं यह अन्य बात है कि किसी में गुण अधिक हो और दोष कम पर दोनों का अवश्य समावेश होता है। वही जीवनी उत्कृष्ट कही जाएगी जिसमें नायक के चारित्रिक गुण दोषों का विवेचन हो। यदि लेखक नायक के केवल गुणों का उल्लेख ही अपनी जीवनी में कर पाएगा तो वह एक आदर्श जीवनी बन जाएगी जिसका अनुसरण पाठक भी नहीं कर सकेंगे। इस मत का समर्थन ब्रजरत्नदास ने भी किया है—

मनुष्य तभी मनुष्य रहेगा जब उसके दोष आदि भी प्रकट कर दिए जाएंगे। मनुष्य देवता नहीं है उसमें दोष रहेंगे किसी में एक है तो किसी में कुछ और हैं। यदि एक महात्मा की जीवनी से हम दोषों को निकाल देते हैं तो हम एक ऐसा निर्दोष आदर्श उपस्थित कर देते हैं जिसका अनुमान करने का लोग साहस छोड़ बैठेंगे।—तात्पर्य यह है कि जीवन चरित्र में गुणों का विवेचन करते हुए दोषों को भी यदि हों, तो विश्लेषण अवश्य कर देना चाहिए।'[1]

जहाँ तक बाह्य व्यक्तित्व का प्रश्न है लेखक को नायक की बाह्य वेशभूषा का ज्ञान भी पाठक को करवा देना चाहिए। उसके शारीरिक अवयवों का लेखक को अवश्य वर्णन करना चाहिए। बाह्य वेशभूषा के वर्णन से सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि पाठक नायक के समस्त व्यक्तित्व का अनुमान उसकी वेशभूषा से ही लगा लेता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जीवनी में लेखक नायक के आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्व का विश्लेषण स्पष्ट रूप से करता है।

देशकाल

जीवनी साहित्य का यह भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। वर्ण्य चरित्र किसी देश या काल में ही अपना जीवन व्यतीत करता है। इसलिए उसके समस्त जीवन की घटनाएँ देश और काल से सम्बन्धित होती हैं। परन्तु अन्य प्रबन्धात्मक साहित्य की भाँति जीवनी साहित्य में देश काल का चित्रण मुख्य रूप से नहीं किया जाता। जीवन साहित्य में तो गौण रूप से ही इसका चित्रण किया जाता है। जो भी चित्रण किया जाता है यथार्थ जिन भी परिस्थितियों का वर्णन लेखक जीवनी में कर पाते हैं वह नायक के व्यक्तित्व के अनुसार ही होता है।

अत स्पष्ट है कि नायक के व्यक्तित्व को उभारने के लिए ही लेखक तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन करता है। यदि नायक कोई साहित्यिक व्यक्ति है तो उसकी जीवनी में हमें तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों का परिचय ही पाठक को

---

1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ले० ब्रजरत्नदास पृ० १५०

ज्ञान होता। यदि नायक राजनैतिक व्यक्ति होगा तो हमें तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का ज्ञान हो जाएगा। इस प्रकार यहाँ देशकाल वातावरण से यही अभिप्राय है कि किन किन परिस्थितियों का सामना करते हुए लेखक का नायक अपने व्यक्तित्व का स्पष्ट करता है।

उद्देश्य

जीवनी साहित्य का यह भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। प्रत्येक लेखक का कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। वह कोई भी रचना निरुद्देश्य नहीं लिखता। इस प्रकार जीवनीकार का उद्देश्य भी उसकी रचना में प्रकारान्तर से समाविष्ट हो जाता है।

जीवन चरित हमें चरित नायक के शरीर और आत्मा में प्रवेश कराकर एक ऐसे सुरक्षित स्थान पर बैठा देता है जहाँ से हम निष्पक्ष दृष्टि से अधिकार के साथ व्यक्ति के कार्य व्यापार, विचारधारा और इन दोनों के समन्वय को ध्यान से देखकर किसी निर्णय पर पहुँच सकते हैं। व्यक्ति का हृदय और मस्तिष्क एक व्यवच्छेद अथवा अगच्छेद की भाँति स्फटिक की तरह स्पष्ट दिखाई देता है। किसी ने कविता ही क्या लिखी? अथवा उपन्यास ही क्या लिखा? कोई राजनैतिक नेता ही क्या बना? किसी ने दर्शन क्षेत्र में ही क्या विजय प्राप्त की? कोई भक्त ही क्या बना? आदि असंख्य प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे। अतएव मनुष्य को समझने के लिए उसके जीवन चरित्र का अध्ययन आवश्यक है।[1]

इससे स्पष्ट है कि जीवनीकार नायक के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से वर्णन करता है। नायक के चरित्र का संश्लेषण विश्लेषण एवं विवेचन करना ही लेखक का उद्देश्य है।

जीवन की घटनाओं के विवरण का नाम जीवनी नहीं है। लेखक जहाँ नायक के जीवन में छिपे उसके विकास को उसके व्यक्तित्व के रहस्य को, उसकी मुख्य जीवन धारा को खोलकर पाठकों के सामने रख देता है वहाँ जीवनी लेखक की कला सार्थक होती है। ऊपर से मनुष्य के दिखाई पड़ने वाले रूप को दिखाकर ही जीवनी लेखन कला सन्तुष्ट नहीं होती। वह उस आवरण को भेदकर अन्तःस्वरूप और आन्तरिक सत्य का प्रत्यक्ष करती है।[2]

इस प्रकार जीवनीकार का उद्देश्य निरपेक्ष रूप से श्रद्धेय व्यक्ति के चरित्र को चित्रित करने का यह है कि पाठकगण इसके पठन से कुछ विशिष्ट ज्ञान ग्रहण कर सकें। वह जैसा व्यक्ति होता है उसका स्पष्ट रूप से वैसा ही चित्रण करता है। उसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति की भावना नहीं दृष्टिगोचर होती। जीवनीकार का

---

१ आलोचना के सिद्धांत ले० डॉ० सोमनाथ गुप्त, पृ० २२२
२ हमारे नेता, ले० रामनाथ सुमन, पृ० १२

उद्देश्य अपने चरित्र नायक का व्यक्तित्व अभिव्यक्त करना होता है किन्तु विरुद बखानने वाले चारण का उद्देश्य चरित्रनायक के राई समान गुण को सुमेरु के समान विशाल दिखाकर उसकी कृपा का भाजन बनना होता है। जीवनीकार एक चित्रकार के सदृश अपने नायक के व्यक्तित्व को कुन्जी समझकर उसके आधार पर सभी घटनाओं का चित्रण करता है।[1]

इस प्रकार जीवन चरित्र लिखने का एक उद्देश्य तो यह हुआ कि हम मनुष्य के बाह्य व्यक्तित्व के साथ साथ उसके आन्तरिक व्यक्तित्व को भी जान जाते हैं। दूसरी बात यह है कि दुनिया में विशाल स्मारक भवन एवं मन्दिर आदि तो नष्ट हो जाते हैं केवल अमर ग्रन्थ ही रह जाते हैं। किसी भी सहृदय व्यक्ति की जीवनी अमरत्व की भावना को लेकर ही लिखी जाती है।

भाषा शैली

शैली अनुभूत विषय-वस्तु के सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाता है। जीवनी लेखन एक अत्यन्त दुरूह कला है। सम्पूर्ण व्यक्ति को शब्दों में चित्रित करना असाधारण कौशल का कार्य है। जीवन चरित्र लिखने की कला इसलिए भी अत्यन्त दुष्कर है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक अलग शैली होती है वह प्रत्येक दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है और प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र चित्रण एक गूढ़ विषय होता है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन चरित्र लिखना एक लम्बे समय के अध्ययन और मनन के पश्चात् ही सम्भव है। जीवन सम्बन्धी बातों की छानबीन विवेकपूर्ण परिश्रम का कार्य है। उत्कृष्ट जीवन चरित्र लम्बे और विवेकपूर्ण परिश्रम से ही तैयार हो सकता है। एक व्यक्ति के जीवन भर के वृत्तान्त को ऐसी रूप रेखा में उपस्थित करना कि पाठक उस व्यक्ति की पहचान और समझ सके सरल कार्य नहीं है। इसलिए जीवनी लेखन एक उत्कृष्ट और असाधारण कला है।[2] इस प्रकार जीवनी शैली में कुछ विशेषताओं एवं गुणों का होना आवश्यक है जिससे वह उत्कृष्ट शैली कहला सकती है।

जीवनी शैली में सर्वप्रथम सुसंगठितता का होना आवश्यक है। जीवनीकार को नायक के जीवन की समस्त घटनाओं को इस ढंग से वर्णन करना चाहिए जिससे उनमें एकसूत्रता रहे। चरित्र लेखक को नायक की घटनाओं के पुंज में से अपेक्षित तथ्य का ग्रहण करने और अनपेक्षित को त्यागने में ऐसी बुद्धिमत्ता से काम लेना पड़ता है कि सामंजस्य कहीं भी विछिन्न न पाये और सर्वत्र एकसूत्रता भी बनी रहे।[3] इस प्रकार सुसंगठित शैली का होना अत्यन्त आवश्यक है। अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जिसका जीवनी शैली में होना अत्यन्त आवश्यक है वह है – निरपेक्षता। जीवन चरित लेखक

---

१ समीक्षा शास्त्र ले० डा० दशरथ ओझा पृ० १६६

२ हिन्दी साहित्य में जीवन शास्त्र — ललिता चन्द्रावती — १२

को बड़े सतुलन की आवश्यकता होनी है। उसका प्रत्येक विवरण पाठक के मन में सत्या-सत्य धारणा बनाता है। यदि यह धारणा सत्य पर अवलम्बित न रही तो असत्य के समर्थन से जो हानि समाज में हो सकती है उसका डर सदैव बना रहेगा। अतएव जीवनीकार को निष्पक्ष अनुभवी वगहीन दृष्टिकोण धारक, स्पष्ट और सहनशील तथा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।[1] इस प्रकार शैली में लेखक के मस्तिष्क की तटस्थता का होना अत्यन्त आवश्यक है। जीवनीकार को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह नायक के चारित्रिक गुण दोषों का वर्णन तटस्थ एवं निरपेक्ष रूप से करे। जीवनी की कृति में उसके चरित्र नायक का 'आपा' या उसकी स्वरूपता (Personality) उभर आती है वह न भलाइयों को राजदरबार के कवीन्द्रों की भाँति राई को सुमेरु कर के दिखाता है और न बुराइयों को चवाई लोगों की भाँति तिल का ताड़ रूप देता है। वह अनुपात का सदा ध्यान रखता है।[2] ऐसा करने से ही जीवनी शैली उत्कृष्ट बन सकती है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता सहृदयता का होना है। केवल यही एक ऐसा गुण है जिसके द्वारा हम अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझ सकते हैं। कुछ भी हो हम यह पूरी तरह से विश्वास है कि लेखक के वास्तविक चरित्र को हम तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि लेखक में काफी मात्रा में सहानुभूतिशीलता नहीं है। जीवन में साहित्य को ऊँचा स्थान प्राप्त करवाने के लिए सहानुभूति सर्वप्रथम तत्व है। केवल सहानुभूति से ही हम दूसरी आत्मा को समझ सकते हैं।[3]

In any event we may rest assured that without some amount of initial sympathy we shall never understand an author's real character To reach the best in literature as in life, sympathy is a preliminary condition Only through sympathy can we ever get into living touch with another soul

जीवनीकार को यह ध्यान रखना चाहिए कि चद्रमा में कलंक है अवश्य किन्तु वे साधारण हैं। सहानुभूति अंधभक्ति से भिन्न है। अंधभक्ति दोषों को भी गुण समझती है सहानुभूति दोष को दोष ही समझती है किन्तु उसके कारण दोष की हँसी नहीं उड़ायी जाती। जीवनीकार छोटे-मोटे दोषों को अर्थात् गुणों के समूह या बाहुल्य में इस प्रकार छिपा जाता है जैसे चन्द्रमा की किरणों में उसका कलंक—दोषों के वर्णन में सहृदयता का पल्ला नहीं छोड़ना चाहिए।[4] इस प्रकार जीवनी शैली में लेखक की सहृदयता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। विषया-नुकूल एवं भावानुकूल भाषा ही उत्कृष्ट होती है। भाषा में प्रसाद गुण का होना आव

१ आलोचना के सिद्धान्त ले० डा० सोमनाथ गुप्त पृ० २२५
२ काव्य के रूप, ले० गुलाबराय, पृ० २३९
३ वही, पृ० २३९
४ वही, पृ० २३९

श्यक है। जीवनी को आकर्षक एवं रुचिकर बनाने के लिए उत्कृष्ट भाषा का प्रयोग आवश्यक है। भाषा ही एक ऐसा साधन है जिससे चरित्र के वास्तविक स्वरूप का पता चलता है। इस प्रकार जीवन चरित्र लिखने में सरल, सुबोध, आकर्षक और रुचिकर भाषा का प्रयोग आवश्यक है।

विभाजन

वर्ण्य चरित्र क्षेत्र के आधार पर जीवनी साहित्य को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—

१ साहित्यिक पुरुषों की जीवनियाँ—साहित्यिक पुरुषों से अभिप्राय है जिन व्यक्तियों ने कुछ लिखकर हिन्दी साहित्य की प्रगति में सहयोग दिया है, इनमें कवि, कथा लेखक एवं आलोचकगण आते हैं। इस प्रकार की जीवनियों में हम तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों के साथ इनका हिन्दी साहित्य में जो स्थान है उसका भी अनुमान हो जाता है। कुछ साहित्यिकों की जीवनियाँ तो लिखी ही इस उद्देश्य से जाती हैं कि उनका हिन्दी साहित्य में स्थान अमर रहे।

२ राजनैतिक पुरुषों की जीवनियाँ—इस श्रेणी में उन लोगों की जीवनियाँ आती हैं जो कि अपना समस्त जीवन अपनी मातृभूमि के लिए न्योछावर कर देते हैं। ऐसे पुरुषों का जीवन तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों में जूझा हुआ होता है। लेखक को नायक के व्यक्तित्व का पूरा चित्र उपस्थित करने के लिए उन परिस्थितियों का पाठक को परिचय करवाना ही पड़ता है। इसलिए ऐसी जीवनियाँ एक तो विशेष व्यक्ति के जीवन का परिचय देती हैं और दूसरे देश की तत्कालीन परिस्थितियों के विषय में पाठकगण को परिचय देती हैं।

३ ऐतिहासिक वीर पुरुषों की जीवनियाँ—कुछ जीवन चरित्र इस उद्देश्य से लिखे जाते हैं कि जनता उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर सके और साथ में हमारा मृत इतिहास पुनर्जीवित हो जाए तो ऐतिहासिक वीर पुरुषों की जीवनियाँ भी इस उद्देश्य से लिखी जा सकती हैं। ऐसी जीवनियों में वीर पुरुषों की वीरता एवं साहस का अधिकतर वर्णन होता है। ऐसी जीवनियों के पढ़ने से हम अपने इतिहास का विशेष रूप से ज्ञान हो जाता है।

४ धार्मिक पुरुषों की जीवनियाँ—धार्मिक पुरुषों की जीवनियाँ भी लिखी जा सकती हैं। जिन पुरुषों ने अपने समय में प्रचलित धर्म में जो त्रुटियाँ देखी और उनका जो भी विरोध किया और साथ में मानव धर्म का प्रचार जनता में किया उन पुरुषों की जीवनियाँ अवश्य लिखी जानी चाहिए। ऐसे पुरुषों की जीवनियों में धार्मिक विषयों पर अधिक चर्चा होती है। धर्म के विषय में जो भी उनकी मान्यताएं होती हैं उनका उनकी जीवनियों में उल्लेख होता है। ऐसी जीवनियों में भी लेखक केवल उनके गुणों का ही वर्णन नहीं करता अपितु आरम्भ से अन्त तक उनके जीवन में जो भी गुण दोष होते हैं उनका पूरी तरह से उल्लेख करता है। वे व्यक्ति भी तो एक तरह से साधारण पुरुष ही होते हैं कोई काल्पनिक व्यक्ति नहीं। इस प्रकार ऐसी जीवनियों में न तो

कल्पना का आधार लिया जाता है और न अप्रामाणिक बातें कही जाती हैं। जीवनी का मानवीय चित्र उपस्थित किया जाता है जिसको लोग ग्रहण कर सकें।

शैली के आधार पर

जीवन चरित जैसे कई प्रकार के हो सकते हैं अर्थात् कई प्रकार के व्यक्तियों के हो सकते हैं तो उनके लिखने के भी ढग कई हो सकते हैं। जहा तक शैली का सम्बन्ध है जीवन चरित संस्मरणो मे शैली मे भी लिखे जा सकते हैं। इस प्रकार की शैली मे लेखक किसी अन्य व्यक्ति का जीवन संस्मरण मे ही लिख डालता है। ऐसी शैली मे रोचकता एव प्रभावोत्पादकता अधिक होती है।

कुछ इस प्रकार के जीवन चरित भी हो सकते हैं जो कि निबन्धात्मक शैली मे लिखे जाते हो। ऐसे जीवन चरित स्फुट निबन्धो के रूप मे लिखे जाते हैं। कुछ जीवन चरित इस ढग से भी लिखे जाते हैं जिनको लिखने का ढग उपन्यास की शैली के समान हो अर्थात जिनको पढने हुए ऐसा अनुभव हो कि हम किसी वास्तविक जीवन चरित्र को पढ़ रहे हैं। ऐसी शैली मे लेखक उपन्यास की तरह से जीवनी मे वार्तालाप आदि का समावेश भी करता है। नायक के जीवन की समस्त घटनाओ को क्रमानुसार बडे ही रोचक ढग से प्रस्तुत करता है। जीवनी मे किसी प्रकार की असम्भवता नही आने देता। काल्पनिक घटनाओ का प्रयोग वह किंचित् रूप से भी नही करता। ऐसी शैली मे लेखक नायक के जीवन की छोटी से छोटी घटना का वर्णन भी करता है परन्तु इस ढग मे करता है कि उसमे तनिक भी विस्तार नही होता।

आत्मकथा

आधुनिक गद्य की नवीनतम विधाओ मे आत्मकथा भी गद्य की नवीनतम विधा है। आत्मचरित्र जीवनी साहित्य का उन्नतिशील अग है जैसे इस नाम से ही स्पष्ट है। आत्मचरित्र वह है जिसमे चरित्रनायक ने स्वय अपनी जीवनी लिखी हो लेखक स्वय अपना जीवन चरित्र लिखता है। विभिन्न देशो मे जब से मनुष्य ने चेतना की अवस्था प्राप्त की उसी समय से अपनी मनोभावनाओ को, अपने को और अपने व्यक्तित्व को व्यक्त करने लगा, उसी समय से आत्मचरित्र जीवनी साहित्य का अग हो गया। परन्तु कुछ लोग आत्मचरित्र की विशालता और महानता का क्षेत्र असीम कहने मे सकोच रहा करते। आत्मचरित मे लेखक जीवन की घटनाओ की महत्ता और विशेषता को मनोभावो की क्रिया प्रतिक्रिया को पहचानता है।[1] इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा मे लेखक अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओ को एव अपनी मानसिक क्रिया प्रतिक्रियाओ को स्वय लिखता है।

आत्मकथा जीवन की या उसके किसी एक भाग की वास्तविक घटनाओ को

---

१ हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास ले० चन्द्रावती सिंह पृ०१४

जिस समय म वह घटित हुइ उन समस्त चेष्टाओ को पुनगठित करती है। इसका मुख्य सम्बन्ध आत्मविवेचन से होता है, बाह्य विश्व से नही यद्यपि व्यक्तित्व का अद्वितीय बनाने के लिए बाह्य विश्व को भी लिया जा सकता है और अनावश्यकतानुसार छोडा भी जा सकता है। जीवन को पुनगठित करना एक असम्भव काय है। एक ही दिन के आगे-पीछे का अनुभव असीम होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आत्मकथा बीती हुई घटनाओ से बनती है। यह वयक्तिक जीवन की कुछ स्थितियाँ बना देती है। उनम सम्ब ध स्थापित करती है और उनकी व्याख्या करती है। इसके साथ ही वह नि सदेह और स्पष्ट रूप से अपने और बाह्य विश्व के निश्चित दृढ सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।[1]

It involves the reconstruction of the movement of life or part of a life in the actual circumstances in which it was lived, its centre of interest is the self not the outside world, though necessarily the outside world must appear so that in give and take with it the personality finds its peculiar shape But reconstruction of a life is an impossible task A single day's experience is limitless in its radition backward and forward so that we have to hurry to qualify the above assertions by adding that autobiography is a shaping of the past It imposes a pattern on a life constructs out of it a coherent story It establishes certain stages in an individual life makes links between them, and defines implicitly or explicitly a certain consistency of relationship between the self and the outside world

इससे स्पष्ट है कि गद्य के बहुत स प्रकारो म आत्मकथा ही केवल एक ऐसा ढग है जिसम लेखक अपने विषय म एव अपने व्यक्तिगत अनुभवो क विषय म कहता है।[2]

Autobiography is only one fotm among many in which a writer speaks of himself and the incidents of his personal experiences

इस प्रकार आत्मकथा म लेखक अपने ही व्यक्तित्व का निरीक्षण करता है। इसम लेखक अपने बीते हुए जीवन का सिहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठभूमि म अपने जीवन का महत्व दिखाता है। इसम लेखक का उद्देश्य आत्मनिरीक्षण आत्मविश्लेषण एव आत्मकथन ही है। अत एक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का निरूपण है इतिहास ही नही बल्कि इसम वर्णित घटनाओ की क्रिया प्रतिक्रियाओ का भी उल्लेख है। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा अपने ही ढग का पुनर्कथित इतिहास है और इसके साथ ही व्यक्ति के बाह्य विश्व के साथ सम्बन्धित आत्मनिरीक्षण

१ Design and Truth in Autobiography by Poy Pascal P 6
२ Design and Truth in Autobiography by Poy Pascal P 2

का प्रतिरूप है।[1]

Autobiography is on the contrary historical in its method and at the same time the representation of the self in and through its relations with the outer world

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा गद्य का वह रूप है जिसमें लेखक व्यक्तिगत जीवन का विवेचन विश्लेषण नि संकोच रूप से प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही वह बाह्य विश्व में सम्बन्धित मानसिक क्रियाओं प्रतिक्रियाओं का विवेचन भी कलात्मक रूप से करता है।

आत्मकथा का लेखक सामान्यत सामान्य व्यक्ति नही होता। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति ही आत्मकथा लिखने में प्रवृत्त हो सकता है। सामान्यत मानव अपने से उच्च एवं महान व्यक्ति के प्रति ही कुतूहल अनुभव करता है। जाति में, राष्ट्र में अथवा सम्प्रदाय विशेष में जो व्यक्ति अपने उदात्त चरित्र के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है परवर्ती जनसमुदाय उसके इतिवृत्त को जानने के लिए उत्सुक हो उठता है। ऐसी स्थिति में वह सम्मानित व्यक्ति अपने अनुयायियों के सतत अनुरोध से प्रेरित होकर अपने जीवन के सम्बन्ध में उत्सुकता को शान्त करने के लिए आत्मकथा लिखता है। जिस व्यक्ति का अपने धर्म में समाज में, सम्प्रदाय में जाति में राष्ट्र में कोई विशेष स्थान नहीं वह व्यक्ति अपने हृदय में आत्मकथा लिखने की प्रेरणा ही नहीं अनुभव करता। इससे स्पष्ट है कि 'आत्मकथा का लेखक प्रतिष्ठित व्यक्ति ही होता है।[2]

इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा का लेखक सर्वमान्य एवं प्रतिष्ठित होना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों द्वारा लिखा हुआ जीवन ही जनता को प्रेरणादायक एवं उत्साहवर्द्धक हो सकता है।

तत्व

वर्ण्य विषय—आत्मकथा साहित्य का यह महत्वपूर्ण तत्व है। जैसा कि आत्मकथा शब्द से ही स्पष्ट है इसमें लेखक अपने सम्पूर्ण जीवन का वर्णन नहीं करता अपितु विश्लेषण भी करता है। इस प्रकार आत्मकथा का विषय आत्मविवेचन, आत्मविश्लेषण के साथ-साथ विश्व की बाह्य घटनाओं की क्रिया प्रतिक्रियाओं का वर्णन है। उसी व्यक्ति द्वारा लिखी हुई आत्मकथा प्रभावित करती है अर्थात पाठक उससे प्रेरणा ग्रहण कर सकता है जिसका लेखक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो। इस प्रकार लेखक का जनता में प्रसिद्ध होना आवश्यक है।

वर्ण्य विषय को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम विषय में मान्यता एवं यथार्थता का होना आवश्यक है। मान्यता से

---

१ Design and Truth in Autobiography by Poy Pascal P 9

२ सिद्धान्तालोचन ले० क्षेमचन्द सुमन्त बनन्द कृष्ण पृ० २०६

अभिप्राय है लेखक अपने जीवन का विवेचन इस ढंग से करे कि उसमें किसी भी प्रकार कृत्रिमता न आने पाए। वस्तुतः आत्मकथा का विषय ही अनुभूत्यात्मक होता है काल्पनिक नहीं, इसलिए इसमें यथार्थता होती है। आत्मकथा में सत्य से अभिप्राय विषयगत सत्य से नहीं कुछ सीमित विषय तक का सत्य है जिससे लेखक का जीवन बनता है एवं जिसके विशेष गुण एवं घटनाओं के परिपक्व होने की इच्छा एव व्यावहारिक गुण एवं आकृति स्पष्ट होती है।[१]

It will not be an objective truth but the truth in the confines of a limited purpose—a purpose that grows out of the author's life and imposes itself on him as his specific quality and thus determines his choice of events and the manner of his treatment and expression

आत्मकथा लेखक को पूर्ण इमानदारी और सचाई के साथ अपने जीवन का वर्णन करना चाहिए। उसको यह भी नहीं करना चाहिए कि वह केवल गुणों का ही वर्णन करे। ऐसा करने से विषय दोषपूर्ण हो जाता है। आत्मकथा लेखक की यही विशेषता है कि वह अपने विषय का जितना वास्तविक बना सकता है उतना अन्य लेखक नहीं। आत्मकथा लेखक जितना अपने बारे में जान सकता है उतना लाख प्रयत्न करने पर भी कोई दूसरा नहीं जान सकता। इसमें कहीं तो स्वाभाविक आत्मश्लाघा की प्रवृत्ति बाधक होती है और किसी के साथ शीलसंकोच आत्मप्रकाश में रुकावट डालता है। यद्यपि सत्य के आदेश से दोनों ही प्रवृत्तियाँ निन्द्य हैं। तथापि अनावश्यक आत्म विस्तार कुछ अधिक अवांछनीय है। शीलसंकोच के कारण पाठक को सत्य और उसके अनुकरण के लाभ से वंचित रखना भी वांछनीय नहीं कहा जा सकता। साधारण जीवनी लेखक की अपेक्षा आत्मकथा लेखक को अहं से बचाने और अनुपात का अधिक ध्यान रखना पड़ता है। उसे अपने गुणों के उद्घाटन में आत्मश्लाघा या अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनने की दूषित प्रवृत्ति से भी बचना चाहिए।[२] इससे स्पष्ट है कि विषय तभी उत्कृष्ट एवं परिपक्व बन सकता है यदि लेखक पूर्ण सचाई एवं इमानदारी से अपने विषय का वर्णन करता है।

अन्य महत्वपूर्ण गुण जो कि विषय वर्णन को रोचक बनाता है वह है संक्षिप्तता। आवश्यकता से अधिक विस्तार विषय को नीरस बना देता है। इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा लेखक को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि वह अनावश्यक घटनाओं का विस्तार न करे केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करे जिससे उसके व्यक्तित्व के विश्लेषण में सहायता मिले तथा पाठकों के सम्मुख मानव जीवन के यथार्थ सत्य को

१ Design and Truth in Autobiography by Roy Pascal, P 83

२ काव्य के रूप डॉ० गुलाबराय, पृ० २४६

उद्घाटित करने म उनकी उपयोगिता हो।[1]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विषय वर्णन में सत्यता, यथार्थता स्पष्टवादिता, रोचकता के साथ साथ स्वाभाविकता आदि गुणों का होना आवश्यक है।

चरित्र चित्रण

आत्मकथा म लेखक का उद्देश्य अपने ही व्यक्तित्व का विश्लेषण करना होता है। आत्मचरित्र आत्मपरिचय का साधन है। लेखक आत्मचरित्र मे अपने मस्तिष्क के विकास का क्रम लिखता है। वह स्वयं अपने मस्तिष्क का अध्ययन करता है आत्म निरीक्षण और आत्मविवेचन करता है।[2] इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा म लेखक अपने ही चरित्र का चित्रण करता है। चरित्र के सभी पक्षों का विवेचन ही नहीं अपितु विश्लेषण भी आत्मकथा म होता है।

प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र म गुण भी होते हैं और दोष भी। इसलिए यदि किसी आत्मकथा के लेखक ने अपनी प्रशंसा करवाने के लिए केवल गुणो का वर्णन अपनी आत्मकथा मे किया तो वह दोषपूर्ण माना जाएगा। उसको मानवीय चरित्र न कहकर एक अलौकिक एव आदर्श चरित्र कहा जाएगा। यह ठीक है कि आत्मचरित्र म अहंकार और आत्मश्लाघा के दोष स बच सकना कठिन है लेकिन फिर भी आत्मचरित्र स्व के उद्गारों, अहंकार, छिछोरी प्रवृत्तियां व्यक्तिगत ख्याति और क्षमायाचना या उनके सम्बन्ध म सफाई देने की भावना का उल्लेख मात्र नहीं है यह इससे भिन्न ऊँचा साहित्य है।[3]

चरित्र चित्रण म जहाँ लेखक अपने चरित्र की सभी न्यूनताओं का वर्णन करता है वहाँ वह अपनी सद्भावनाओं स पाठक को अच्छी प्रकार स परिचित करवाता है। अपने समस्त जीवन के विकास का वह बड़ी ईमानदारी स वर्णन करता है। ऐसे व्यक्तियों के चरित्र जिनमे उनके जीवन के उत्थान-पतन का वर्णन स्पष्ट रूप स होता है पाठक के लिए अधिक प्रेरणादायक हो सकते हैं।

जहाँ आत्मकथा म हम लेखक के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है वहां उसम वर्णित कुछ अन्य व्यक्तियों के विषय म भी पाठक को अनुमान हो जाता है। आत्मकथा म लेखक अपने स सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का वर्णन करता है। इसके दो लाभ होते हैं— एक तो पाठक को लेखक का व्यक्तित्व और भी स्पष्ट हो जाता है दूसरे उस व्यक्ति के विषय म भी पता चल जाता है। लेकिन यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है कि वह सभी व्यक्तियों का वर्णन लेखक अपने व्यक्तित्व को उभारने के लिए करता है।

---

१ सिद्धान्तालोचन ले० यमचन्द्र शास्त पृ०२६६

२ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास, पृ० १६, ले० चन्द्रावती सिंह

३ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास ले० चन्द्रावती सिंह पृ० १६

देशकाल

वातावरण उन समस्त परिस्थितियों का नाम है जिनसे पात्रों को गुजरना पड़ता है। देशकाल वातावरण का बाह्य स्वरूप है। वातावरण प्राकृतिक भी हो सकता है। प्राणी जिस प्रकार के समाज में रहता है वैसा ही आचरण करता ही है परन्तु उसके भाव भावना और विचार भी उसकी अनुकूलता में सहायक होते हैं।[1]

इस ओर बाह्य परिस्थितियों का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है, उसी प्रकार व्यक्ति चरित्र पर भी इनका आधिपत्य है। जिस भी प्रकार का चरित्र होता उस पर वैसा ही प्रभाव पड़ता। यही कहने का तात्पर्य यह है कि यदि लेखक साहित्यकार है तो उस पर तत्कालीन परिस्थितियों का विशेषकर साहित्यिक परिस्थितियों का अवश्य प्रभाव पड़ता। तब हम उसकी आत्मकथा में अवश्य ही तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों का परिचय मिलेगा। इन परिस्थितियों के वर्णन के बिना उसका व्यक्तित्व उभर नहीं सकता। इस प्रकार गौण रूप से हम तत्कालीन परिस्थितियों का ज्ञान हो जाता है।

यदि किसी राजनैतिक व्यक्ति की आत्मकथा दृष्टिपात करें तो उसमें विशेष तथा राजनैतिक तत्कालीन परिस्थितियों का अवश्य वर्णन होगा। सामाजिक व्यक्ति की आत्मकथा में तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का अवश्यमेव वर्णन होगा। इसके अतिरिक्त यदि ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्होंने अपने जीवन में बहुत यात्रा की होती है तो उनकी आत्मकथा में हम किसी विशेष स्थान एवं देश का वर्णन अवश्य प्राप्त होगा।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा साहित्य में देशकाल का चित्रण व्यंग्य रूप से होता है। इसमें तो लेखक ही मुख्य होता है। वह प्रमुख होता है और देशकाल अंगभूत होकर रहता है।

उद्देश्य

प्रत्येक लेखक अपनी कृति की रचना किसी न किसी उद्देश्य से करता है निरुद्देश्य रचना कोई भी लेखक नहीं करता। यदि वह अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप से पाठक के सम्मुख नहीं रख सकता तो वह परोक्ष रूप से अवश्य ही संकेत कर देता है। आत्मकथा लेखक के उद्देश्य का जहाँ प्रश्न है उसका उद्देश्य अन्य कृतियों से भिन्न होता है। आत्मकथा लेखक का उद्देश्य आत्मविवेचन आत्मविश्लेषण तो होता ही है परन्तु इसके साथ-साथ वह ख्याति एवं आत्मप्रचार भी चाहता है। इसी उद्देश्य से वह आत्मकथा को लिखता है। इस विषय में चन्द्रावती सिंह ने भी अपने मत का समर्थन किया है। आत्मचरित्र लिखने में अपनी ख्याति आत्मप्रशंसा और आत्मप्रचार की भावना भी निहित है। यद्यपि अत्यन्त प्राचीन काल से मनुष्य ने अपने को व्यक्त

---

१ समीक्षा शास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० १६१

करने के अनेक मार्ग अपनाये हैं और इस प्रकार अपने जीवन के विशेष अंगों के विज्ञापन के सर्वदा अनेक प्रयत्न किए हैं किन्तु आधुनिक युग में आत्मचरित्र लिखने की प्रथा सभ्य संसार का आविष्कार है। इसमें सन्देह नहीं कि आत्मचरित्र लिखने की इच्छा प्राकृतिक है। अपने को व्यक्त करने और अपने प्रति दूसरों की सहृदय सद्भावना प्राप्त करने का आनन्द अत्यन्त स्वाभाविक है। यही आत्मचरित्र लिखने का प्राकृतिक मूल-कारण है।[1]

इसके अतिरिक्त आत्मकथा साहित्य का उद्देश्य होता है आत्मनिर्माण, आत्म-परीक्षण या आत्मसमर्थन, अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व की उलझनों में अपने आपको अन्वेषित करने का सात्विक प्रयास। इस प्रकार के आत्मकथात्मक साहित्य के पाठकों में सर्वप्रमुख स्वतः लेखक होता है जो आत्माकन द्वारा आत्मपरिष्कार एवं आत्मोन्नति चाहता है।

आत्म सम्बन्धी साहित्य लिखने का एक दूसरा उद्देश्य यह भी है कि लेखक के अनुभवों का लाभ अन्य लोग उठा सकें। इन दोनों स्वतः सिद्ध उपयोगों के अतिरिक्त आत्मकथा लेखक के मूल में कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा भी हो सकती है। और अपनी मर्यादा अथवा ख्याति से लाभ उठाने की शुद्ध व्यावसायिक इच्छा भी।[2]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा लेखक का उद्देश्य आत्मविश्लेषण एवं आत्मविवेचन के साथ साथ बाह्य विश्व के साथ अपने सम्बन्ध को वर्णन करना है।

शैली

भावाभिव्यक्ति की कला को शैली कहते है। इसमें अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के ढंग होते हैं जिनसे विषयवस्तु की अभिव्यक्ति सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनती है। इसलिए लेखक का शैली पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है। आत्मकथा लेखक को भी शैली सम्बन्धी सभी विशेषताओं से सतर्क होना पड़ता है। आत्मकथा शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ होती हैं।

सर्वप्रथम इस शैली में प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। प्रभावोत्पादकता तभी हो सकती है यदि लेखक अपने जीवन का वर्णन निःसंकोच रूप से करता है। अमानवीय चरित्रों का कभी भी प्रभाव पाठकों पर नहीं पड़ सकता। वे ही चरित्र प्रभावशाली हो सकते हैं जिनमें मानवीयता है अर्थात् जिनमें जीवन के उत्थान-पतन एवं गुण दोषों का विवेचन हो। लेखक को यह विवेचन इस ढंग से करना चाहिए कि वह पाठक को रुचिकर प्रतीत हो तभी वह शैली प्रभावोत्पादक बन सकती है। इस प्रकार निःसंकोच आत्मविश्लेषण शैली को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए आवश्यक है।

---

१ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह पृ० १५
२ हिन्दी साहित्य कोष, पृ० ६६

अन्य महत्त्वपूर्ण विशेपता सुसगठितता एव लाघवता है। लखक को अपन समस्त जीवन का वणन इस ढग से करना चाहिए जिसस अनावश्यक विस्तार भी न हो और साथ म गठन भी हो। क्रमानुसार वणन अधिक रोचक होता है।

इस प्रकार उपयु क्त विवचन से स्पष्ट है कि प्रभावोत्पादकता, लाघवता, नि सकोच आत्मविश्लेपण सुसगठितता आदि गुणा स युक्त ही आत्मकथात्मक शली श्रेष्ठ एव परिपक्व हो सकती है। इसके अतिरिक्त प्रत्यक लेखक कई ढग से अपनी आत्मकथा लिख सकता है। अपनी इच्छानुसार वह निब धात्मक शली को भी अपना सकता है और सस्मरणात्मक शली को भी। जो भी उस उपयुक्त लगे उसी को वह ग्रहण कर सकता है।

जहा प्रश्न भाषा का है वह ता है ही भावाभिव्यक्ति का साधन। भाषा का भावानुकूल एव विषयानुकूल होना आवश्यक है। माधुय और प्रसाद गुण का भाषा म होना आवश्यक है। शुद्ध एव परिपक्व भाषा द्वारा ही लखक अपन विचारो का प्रभाव पाठका पर डाल सकता है। भाषा को श्रेष्ठ बनान के लिए शब्दचयन का भी विषय एव भावानुकूल होना आवश्यक है।

वर्गीकरण

आत्मकथा साहित्य का वर्गीकरण दो प्रकार मे किया जा सकता है। सव प्रथम लखको के आधार पर—इसम कवि कथानेखको आलोचको एव राजनतिक एव धार्मिक पुरुषा की आत्मकथाएँ आती हैं। द्वितीय शली के आधार पर—इसम निब धात्मक शली म लिखी हुई आत्मकथा सस्मरणात्मक शली म लिखी हुई आत्म कथाएँ एव डायरी शली म लिखी हुई सभी आत्मकथाएँ आती है। इस प्रकार आत्म कथा साहित्य के विभाजन क दो ही आधार हो सकते है।

रेखाचित्र

हिंदी साहित्य म गद्य की अनेक नूतन विधाओ का विकास हुआ है जिनम रखाचित्र भी एक नया कला रूप है। रेखाचित्र कहानी स मिलता जुलता साहित्य रूप है। यह नाम अग्रजी क स्कैच शब्द को नाप-तौल पर गढा गया है। स्केच चित्रकला का अग है। इसम चित्रकार कुछ गिनी गिनी रेखाओ द्वारा किसी वस्तु व्यक्ति या दृश्य को अकित करता है—स्कच रखाओ की बहुलता और रगो की विविधता म अकित कोई चित्र नही है न वह एक फोटो ही जिसम नहीं स नहीं और साधारण स साधारण वस्तु भी खिच जाती है। साहित्य म जिस रेखाचित्र कहत है उसम भी कम स कम शब्दो म कलात्मक ढग स किसी वस्तु व्यक्ति या दृश्य का अकन किया जाता है। इसम साधन शब्द हैं रखाएँ नही। इसीलिए इस शब्द चित्र भी कहत हैं। रखाचित्र किसी वस्तु व्यक्ति घटना या भाव का कम स कम शब्दो म मर्मस्पर्शी

भावपूर्ण एव सजीव अकन है।[1] इसस स्पष्ट है कि रेखाचित्र म किसी भी व्यक्ति का, घटना का एव भाव का चित्रण कम से कम शब्दो म कलात्मक ढग से किया जाता है जिससे वह सजीव, भावपूर्ण एव मर्मस्पर्शी हो। रेखाचित्र के अकन म सक्षिप्तता एव लाघवता का होना आवश्यक है।

रेखाचित्र चित्रकला और साहित्य क सुन्दर सुहाग स उद्भूत एव अभिनव कला रूप है। रेखाचित्रकार साहित्यकार के साथ ही साथ चित्रकार भी होता है। जिस प्रकार चित्रकार अपनी तूलिका के कलामय स्पर्श स चित्रपटल पर अकित विशृ-खला रेखाओ म से कुछ अधिक उभरी हुई रेखाओ को सँवारकर एव सजीव रूप प्रदान कर देता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार मन पटल पर विशृखला रूप म बिखरी हुई शतशत स्मृति रेखाओ म से उभरी हुई रमणीय रेखाओ को अपनी कला की तूलिका से स्वानुभूति क रग म रजित कर जीते जागते शब्द चित्र म परिणत कर देता है। यही शब्द चित्र रेखाचित्र कहलाता है।[2] इस परिभाषा से स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार चित्रकार की भाँति असख्य घटनाओ म से कुछ प्रभावशाली घटनाओ का वर्णन ही ऐसे ढग स करता है जिससे वे सजीव एव प्रभावोत्पादक हो और उनके वर्णन से भावो एव विचारो का स्पष्ट चित्रण हो।

साहित्य म रेखाचित्रकार को अत्यत कठोर साधना का पथ अपनाने की आवश्यकता है। वह ही एक मात्र ऐसा कलाकार है जो अपने चारो ओर फैले हुए विस्तृत समाज क किसी भी अग तथा पक्ष का चित्रण अपनी लेखनी तूलिका से ऐसा सजीव करता है कि पाठक यह अनुभव करने लगता है कि मैं वर्ण्यवस्तु के अत्यन्त सान्निध्य म हूँ।[3] इससे स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार का विषय कुछ भी हो सकता है। वह किसी भी व्यक्ति घटना एव स्थान का चित्रण कर सकता है, पर वह चित्रण ऐसा होता है जिससे पाठक प्रभावित होता है।

वह प्रकृति की जड अथवा चेतन किसी भी वस्तु को अपने शब्द शिल्प से सजीव कर देता है। जिस आदमी को जीवन क विविध अनुभव प्राप्त नहा हुए, जिसने आँखें खोलकर दुनिया को नही देखा जिसे कभी जीवन सग्राम म जूझने का अवसर नही मिला जो ससार क भले बुरे आदमियो के ससग म नही आया और जिसने एकात म बैठकर जिन्दगी के भिन्न भिन्न प्रश्नो पर विचार नही किया भला वह क्या सजीव चित्रण कर सकता है।[4] बनारसीदास चतुर्वेदी क अनुसार रेखाचित्रकार वही हो सकता है जिसे जीवन का अधिक स अधिक अनुभव हो, इसके साथ ही जिस व्यक्ति ने जीवन के अनेक उतार चढाव देखे हो विद्वान एव अनुभवी व्यक्ति ही

१ हिन्दी साहित्य कोष, पृ० ७३१
२ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, ले० गोविन्द त्रिगुणायत पृ० ४६०
३ साहित्य विवेचन ले० क्षेमेन्द्र सुमन
४ रेखाचित्र, ले० बनारसीदास चतुर्वेदी, पृ० ७

रेखाचित्रकार बन सकता है क्योंकि ऐसा योग्य व्यक्ति ही विचारों एवं भावों का स्पष्ट चित्रण कर सकता है।

जिस प्रकार रेखाचित्र की दृष्टि जितनी पनी होगी तथा उसकी अनुभूति जितनी चित्रित सत्य के निकट होगी उतना ही उसके द्वारा अंकित किया गया रेखा चित्र सजीव और प्रभावोत्पादक होगा।[1]

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र न कहानी है और न गद्यगीत न निबंध है और न संस्मरण रेखाओं में जीवन के विविध रूपों को आकार देने की प्रणाली की विशेषता को अपनाकर ही शब्द द्वारा जीवन के विविध रूपों को साकार करने वाले शब्द चित्रों को रेखाचित्र की संज्ञा प्रदान की गई है। इस प्रकार रेखाचित्र साहित्य का वह गद्यात्मक रूप है जिसमें एकात्मक विषय विशेष का शब्द रेखाओं से संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है।

तत्व

वर्ण्य विषय—यह रेखाचित्र साहित्य का प्रमुख तत्व है। रेखाचित्र वस्तु व्यक्ति अथवा घटना का शब्दों द्वारा विनिर्मित वह मर्मस्पर्शी और भावमय रूप विधान है जिसमें कलाकार का संवेदनशील हृदय और उसकी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि अपना निजीपन उँडेलकर प्राण प्रतिष्ठा कर देती है।[2] इससे स्पष्ट होता है कि रेखाचित्रकार का विषय कोई भी व्यक्ति घटना अथवा वस्तु जिसका कि उससे जीवनभर अधिक प्रभाव हो जाता है। जहाँ तक व्यक्ति का प्रश्न है इसमें यह कोई आवश्यक नहीं कि वह किसी महान् पुरुष की रेखा ही चित्रित करता है वह तो साधारण से साधारण व्यक्ति के विषय में भी लिख सकता है। यह तभी हो सकता है यदि उस व्यक्ति में कुछ ऐसे गुण हों जिनसे लेखक विशेष रूप से प्रभावित हुआ हो। ऐसे ही घटना के विषय में है। वह किसी भी ऐसी घटना का चित्रण करता है जिससे कि वह अधिक प्रभावित हो। वह किसी विशेष स्थल का चित्रण भी कर सकता है। इस प्रकार रेखाचित्रकार का विषय जड़ भी हो सकता है और चेतन भी।

विषय चुनाव के पश्चात् वर्ण्य विषय में कुछ ऐसे गुणों का होना आवश्यक है जो कि रेखाचित्र को सफल बनाते हैं। वर्ण्य विषय में सर्वप्रथम सत्यता एवं यथार्थता का होना आवश्यक है। प्रत्येक रेखाचित्र का विषय अनुभूत्यात्मक होता है काल्पनिक नहीं। इसलिए इसमें वास्तविकता होती है। रेखाचित्र में जितनी वास्तविकता होगी उतना ही वह सफल माना जायेगा। पाठकगण पर जितना प्रभाव वास्तविक घटनाओं का पड़ता है उतना काल्पनिक घटनाओं का नहीं। रेखाचित्र जितना सत्य के निकट हो उतना अच्छा है। इसमें थोड़ी अतिरंजना विनोद की सामग्री अवश्य उपस्थित कर

१ सिद्धान्तालोचन ले० रामचन्द सन्त पृ० १७६

२ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त ले० गोविन्द त्रिगुणायत, पृ० ४६०

देती है किन्तु विनोद चुटीला न होना चाहिए। रेखाचित्र म भी स य शिव सुन्दरम का आदश पालन करना पडता है।[1]

अन्य महत्वपूर्ण गुण जिसका विषय मे होना आवश्यक है वह है रोचकता। लेखक को अपने जीवन की अनुभूतियों का इस रूप से वणन करना चाहिए जिससे वह पाठक को रुचिकर प्रतीत हो। न तो स्केच इतना काल्पनिक ही होना चाहिए कि हमारी कल्पना तक ही सीमित रहे और न इतना वास्तविक ही कि कवल हमारी दृष्टि तक ही सीमित रहे। 'स्केच' का साहित्यिक मूल्य और सुन्दरता केवल सामयिक अथवा स्थानीय ही न हो वरन् प्रत्यक युग म और प्रत्येक जगह उसकी रोचकता बनी रह और वह नीरस न हो जाए।[2] इस प्रकार वण्य विषय म रेखाचित्रकार को रोचकता लाने के लिए उचित कल्पना का भी प्रयोग करना पडता है।

अन्य महत्वपूर्ण गुण जिसका विषय वणन म होना आवश्यक है वह है संक्षिप्तता। रेखाचित्रकार की सीमाएँ निश्चित हैं। उस कम स कम शब्दों मे सजीव मे सजीव रूप विधान और छोटे से छोटे वाक्य से अधिक तीव्र और ममस्पर्शी भाव व्यजना करनी पडती है।[3] रेखाचित्र की विशेषता विस्तार म नही तीव्रता म होती है।[4] इससे स्पष्ट है कि वण्य विषय मे संक्षिप्तता का होना आवश्यक है। अावश्यक विस्तार विषय को नीरस बना देता है।

इस प्रकार वही विषय उत्कृष्ट कोटि का माना जाएगा जिसम वास्तविकता, स्पष्टता, रोचकता एव संक्षिप्तता आदि गुणा का समावेश हो।

चरित्रोदघाटन

रेखाचित्र साहित्य का यह अ य महत्वपूर्ण तत्व है। रेखाचित्रकार का उद्देश्य किसी भी व्यक्ति के चरित्र का विश्लेपण करना नही है वरन चरित्रोदघाटन करना है। रेखाचित्रकार का काय तो प्रभावित व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं का वणन करना ही है उसी से पाठक को उसके व्यक्तित्व का अनुमान हो जाता है। पाठक को प्रभावित करने के लिए वह नायक के व्यक्तित्व से सम्बधित घटनाओं का ऐसा चित्रण करता है कि वह उसके चरित्र को स्वय स्पष्ट कर देती हैं। उसका कारण यह है कि रेखाचित्र मे प्रधानता सकेता की होती है इसम खुलकर बात बहुत कम का जाती है। इस प्रकार थोडी सी रेखाओं द्वारा एक सजीव चित्र बना देना किसी कुशल कलाकार का ही काम हो सकता है थाडे से शब्दो म किसी घटनाओं को चित्रित कर देना अथवा किसी व्यक्ति का सजीव चित्र उपस्थित कर देना अत्यन्त

---

१ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० २४८

२ स्केच 'एक अध्ययन , घनश्यामदास सेठी, अजन्ता, जनवरी, १९५२

३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त ले० गोविन्द त्रिगुणायत

४ हिन्दी साहित्य कोष

कठिन काय है। इसके लिए लेखक को कठोर साधना की जरूरत है। जहाँ रग क थोड गहरे या किंचित हलके होने से ही तस्वीर बिगड सकती है, वहाँ तूलिका को कितनी सफाई कितने चातुय के साथ चलाना चाहिए, इसका अन्दाज किसी विशेष चित्रकार को ही हो सकता है। इसके लिए सरस्वती मदिर की आराधना तो अनिवाय है ही पर साथ ही साथ अपने व्यक्तित्व को सजीव तथा उन्मुक्त बनाये रखना भी अत्यन्त आवश्यक है।[1] इस प्रकार उत्कृष्ट चरित्रोदघाटन के लिए लेखक के व्यक्तित्व का भी उत्कृष्ट होना आवश्यक है। अनुभवी लेखक ही चरित्र सम्बन्धी उत्कृष्ट रेखाए प्रस्तुत कर सकता है।

इसके अतिरिक्त रूचना म साहित्यकार व्यक्ति विशेष के आचरण एव आकृति मात्र की ही अभिव्यक्ति नही करता वरन् उसके व्यक्तित्व के कुछ विशेष तत्वो को उभारता भी है। साधारण शब्दो म चरित्र चित्रण एव चरित्र विश्लेषण का अधिक दखल नही है। उच्च स्तर का स्केच वही होता है जिसम व्यक्ति विशेष की रचना होती है। चरित्र चित्रण से दूर हटकर केवल व्यक्तित्व का विश्लेषण करना निश्चय ही बडा कठिन काय है। वहाँ कलाकार छोटी छोटी घटनाओ से सहायता लेता है। Anecdots से शब्द चित्र लेखक व्यक्ति विशेष का व्यक्तित्व खडा करता है इनसे कभी वह उसके व्यक्तित्व की नोक पलक सँवारता है और कभी तवर की झलक दिखलाता है और कभी कृश भावनाओ के खेल का उल्लेख करके बाद के चेष्टित व्यवहार का विश्लेषण कर देता है। माडल की सूरत, उसके चेहरे का उतार चढाव तवरो का अन्दाज, स्वभाव की मृदुता कोमलता कठोरता अथवा कटुता आदि और फिर इन Anecdots मे सम्बन्ध क्रम का पूरा पूरा ध्यान रखना पडता है। इनके परस्पर गठन सम्बन्ध और अनुरूपता स कुल की रचना होती है।[2]

इससे स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार किसी भी व्यक्ति के चरित्र का चित्रण नही अपितु उदघाटन करता है। चरित्रोदघाटन के लिए उसका अपना व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होना आवश्यक है।

देश काल वातावरण

रेखाचित्र का सम्बन्ध अधिकतर देश से होता है काल से नही। क्योकि वण्य विषय किसी स्थान विशेष म विद्यमान रहता है उसके आस-पास की कुछ परिस्थितियाँ होती हैं। य पाश्ववर्ती भाग गतिशील नहा होत हैं और वण्य विषय के साथ नित्य सपृक्त रहत हैं। उनके बिना पात्र या वस्तु का अस्तित्व गोचर नही हो सकता। *रेखाचित्रकार उन स्थायी सम्बन्ध रखने वाले अगो का वणन करता है।*[3] *इस प्रकार*

१ रेखाचित्र ले० बनारसी दास चतुर्वेदी पृ० १

२ रेखाचित्र एव अध्ययन ले० घनश्यामदास सेठी अजन्ता १९५५

३ सिद्धान्तालोचन ले० धर्मचन्द सन्त पृ० १७१

देश व किसी विशेष स्थल का चित्रण करना रेखाचित्रकार के लिए आवश्यक है।

प्रत्येक घटना के घटित होने का कोई न कोई विशेष स्थल होता है। जब लेखक उस घटना का वणन करता है तो उसके लिए उस स्थान विशेष का वणन करना भी आवश्यक हो जाता है जहाँ वह घटित हुई हो। इसलिए देश का चित्रण रेखाचित्र म होता है। कई यात्रा सम्बन्धी रेखाचित्रो म इसका प्रमुख रूप से वणन होना है।

जहाँ तक वातावरण का प्रश्न है लेखक साकेतिक रूप से पाठक को तत्कालीन परिस्थितियो का ज्ञान करवा देता है। उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र साहित्य मे प्रमुखता देश चित्रण की ही होती है वातावरण का वणन तो गौण रूप से होता है।

उद्देश्य

यह रेखाचित्र साहित्य का प्रमुख तत्व है। इसम लेखक का जीवन दशन अथवा उसकी जीवन दष्टि, जीवन की व्याख्या या जीवन की आलोचना होती है। कोई भी लेखक निरुद्देश्य रचना नही करता बिना उद्देश्य के साहित्यिक कृति प्रयोजनहीन एव व्यथ होती है। रेखाचित्रकार का प्रमुख उद्देश्य होता है चरित्र विशेष के बाह्य और आभ्यान्तर दोनो ही के मार्मिक एव सवदनशील तत्वो को उभारकर पाठको के सम्मुख प्रस्तुत कर देना।[1] इससे स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के बाह्य और आन्तरिक दोनो स्वरूपो का चित्रण करना है। बाह्यरूप का चित्रण तो किसी भी साहित्यकार को करना कठिन है परन्तु आन्तरिक मस्तिष्क का विश्लेषण रेखाचित्रकार स्पष्ट रूप से न करके अपनी रेखाओ से साकेतिक रूप से करता है। यहाँ लेखक का उद्देश्य नायक के चरित्र का उदघाटन करना है विश्लेषण नही, विश्लेषण तो स्वय हो जाता है। यहा पर लेखक उस व्यक्ति के चित्रण म ही अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओ, मान्यताओ एव आदर्शों को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है इस प्रकार वह व्यक्ति के माध्यम से ही अपने आदर्शों की अभिव्यक्ति करता है। मानवेतर रेखा चित्र भी किसी न किसी सत्प्रेरणा को लेकर लिखे जाते है।

अत स्पष्ट है कि रेखाचित्रो म लेखक का दष्टिकोण उसका जीवन सम्बन्धी दष्टिकोण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाविष्ट,हो जाता है।

भाषा शैली

शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीको का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एव प्रभावपूर्ण बनाते हैं। रेखाचित्र शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका होना इसमे आवश्यक है।

सवप्रथम रेखाचित्र शैली म चित्रात्मकता का होना आवश्यक है। स्केच

1 शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धात, ले० गोविन्द त्रिगुणायत, पृ० ४६२

चित्रकला का अंग है। जिस प्रकार चित्रकार कुछ इनी गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु व्यक्ति के दृश्य को अंकित कर देता है इसी प्रकार रेखाचित्रकार भी शब्दों से चित्र को बनाता है। इस तरह चित्रात्मकता का इस शैली मे होना आवश्यक है। चित्रात्मकता का गुण तो इस शैली म ऐसा है कि वह अर्थात् लेखक नायक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चित्रण शब्दो द्वारा ऐसे ढग से करता है कि उसका स्पष्ट अनुमान पाठक को हो जाता है।

शैली वही उत्कृष्ट मानी जाती है जिसका प्रभाव पाठको पर स्थायी रूप से रहे। इसलिए शैली म प्रभावोत्पादकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रभावपूर्ण शैली तभी हो सकती है यदि लेखक नायक का वर्णन रोचकपूर्ण ढग से करे। इस प्रकार शैली म प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करने के लिए रोचकता का होना भी आवश्यक है।

संक्षिप्तता का गुण भी इस शैली म आवश्यक है। लेखक को सीमित परिधि म शब्दो से रेखाओ का काम लेकर कोण का सम्पूर्ण बनाना होता है जो विशेषलाघव संक्षिप्तता स्फूर्ति का काम है। इस प्रकार लाघवता का होना इस शैली म अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ ही शैली मे आत्मीयता का होना भी आवश्यक है। इससे वर्ण्य विषय पर लेखक के व्यक्तित्व की छाप पडती है। इस विशेषता स शैली अधिक प्रभावपूर्ण बन जाती है और इसे गद्य की अन्य विधाओ से पृथक करती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र शैली मे चित्रात्मकता, प्रभावोत्पादकता, रोचकता, लाघवता एव आत्मीयता आदि गुणो का होना आवश्यक है। इन्ही से युक्त शैली परिपक्व शैली बनती है।

भाषा का जहा तक प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। भावानुकूल एव विषयानुकूल भाषा का प्रयोग कृति को अधिक प्रभावपूर्ण बना देता है। रेखाचित्र म शब्द विन्यास तथा वाक्य विन्यास की विशिष्टता होती है। एक शब्द का एक वाक्य तथा अपने म चित्र हो सकता है। रेखाचित्र म यथार्थ के लिए ध्वन्यात्मक शब्दो से ध्वनि चित्र रगो का उल्लेख कर वर्ण चित्र अकित किए जाते है। मिलते जुलते शब्दो म से प्रभाववर्द्धन किया जाता है। चुभते चित्रोपम विशेषण साम्यमूलक अलकार लक्षणा-व्यजना आदि कवित्वपूर्ण प्रसाधनो से चित्र को सजीव किया जाता है। इस प्रकार भावानुकूल एव विषयानुकूल भाषा का प्रयोग ही इस शैली म अत्यन्त आवश्यक है।

वर्गीकरण

वर्ण्य विषय के अनुसार रेखाचित्र चार प्रकार के होते है—

१ साहित्यिक लेखको के रेखाचित्र।

२ मानवीय गुणो से सम्पन्न साधारण पुरुषो के रेखाचित्र।

३ राजनैतिक पुरुषो के रेखाचित्र।

४ मानवेतर जड या चेतन सम्बन्धी।

इसम पशु पक्षी एव खण्डहरो इमारता के रेखाचित्र आते हैं। शैली के अनुसार रेखाचित्र तीन प्रकार से लिखे जा सकते हैं—कथात्मक शली सस्मरणात्मक शैली एव प्रतीकात्मक शली। इस प्रकार शली की दृष्टि से रेखाचित्र तीन प्रकार के हो सकते हैं।

सस्मरण

हिन्दी साहित्य मे गद्य की अन्य नवीनतम विधाओ म सस्मरण साहित्य का भी विशेष स्थान है। सस्मरण कुछ असम्बद्ध घटनाओ का नाट हो सकता है जो लेखक के जीवन से सम्बन्ध रखता है और जिस या तो चरित्रनायक स्वय लिखे अथवा उसे अन्य व्यक्ति लिखे। जीवन की बहुत सी बाता म ससार की हलचलो म दफ्तर की किसी कायवाही म या किसी सभा मे जो समय समय पर बातें घटी हैं उनका अलग अलग वणन सस्मरण कहा जा सकता है। इसम आत्मचरित्र की एकता नही हो सकती है और न व्यक्तित्व का कोई चित्र उपस्थित हो सकता है। उसम मनुष्य की कुछ मुख्य मुख्य प्रसिद्ध बातें जानी जा सकती हैं। लेकिन मनुष्य का आत्मा, उसका मस्तिष्क नही पहचाना जा सकता है। किसी का सस्मरण उसका जीवन चरित्र लिखन वाले लेखक के लिए सामग्री का काम दे सकता है और निस्सन्देह जीवनी लेखक को इससे बडी सहायता मिल सकती है। सस्मरण जीवन सम्बन्धी घटनाओ का केवल एतिहासिक उल्लेख कहा जा सकता है।[1] इससे स्पष्ट है कि सस्मरण साहित्य जीवनी साहित्य का एक अग है इसमे मनुष्य की कुछ प्रमुख घटनाआ का जिनसे लेखक प्रभावित होता है उल्लेख होता है व्यक्ति के सम्पूण जीवन का वणन नहीं होता।

स्मरण और सस्मरण शब्द विषय और प्रवृत्ति की अव्यवस्थता को सूचित करते हैं लेखक लिखते समय जो भी याद कर सकता है, उन्ही का इनम वणन होता है।[2]

The very words reminiscence and memoirs imply a certain informality of nature and purpose they are what the writer can remember at the time of writing

इस परिभाषा म सस्मरण की अव्यवस्थता पर अधिक लिखा है। इसम सस्मरण का अथ लेखक की स्मरण शक्ति को लक्षित करता है। याद की हुई घटनाओ का जिसम वणन हो उन्ही को सस्मरण साहित्य म लिया है।

सस्मरण म सम्पूण जीवन क कुछ विशिष्ट अगा का प्रकाशन किया जाता है। सस्मरण म केवल उन्ही घटनाओ का उल्लख रहता है जिनस लेखक के जीवन म घटित होने वाल परिवतना का सकेत मिलता है और जो अन्य जना के कौतूहल को

१ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० १९-२०
२ One Mighty Torrent by Edgar Johnson, P 125

शान्त करने में सहायक हो सकती हैं।—संस्मरण सामान्यत प्रसिद्ध व्यक्ति ही लिख सकता है। अपने काय क्षेत्र में सामान्य प्रसिद्धि प्राप्त करके लेखक अपने जीवन के कुछ खंड जिनमें अन्य जनों की सहज रुचि हो सकती है संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है। इस स्थिति में वह लेखक आत्मपण का कारण नहीं होता अपितु उसके संस्मरण में वर्णित वृत्त में आकर्षण रहता है।[1]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सस्मरण प्रसिद्ध व्यक्ति ही लिख सकता है। इसके साथ ही वह अपने जीवन से सम्बन्धित सस्मरण भी लिख सकता है और अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी। कुछ भी हो चाहे वह अपने जीवन के विषय में लिखे चाहे अन्य व्यक्ति के विषय में ये सभी संस्मरण उसके व्यक्तित्व से अवश्य प्रभावित होंगे वर्णन शैली में लेखक अपनी कोमल कल्पना की सहायता ले सकता है तभी वह अपने संस्मरणों को प्रभावशाली बना सकता है इन सभी विशेषताओं को एकत्रित रूप से यदि वर्णित किया जाय तो संस्मरण की परिभाषा यह हो सकती है—जब लेखक अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रमणीय एवं प्रभावशाली रूप से वर्णन करता है तब उसे संस्मरण कहते हैं।

तत्व

वर्ण्य विषय—संस्मरण साहित्य का यह प्रमुख तत्व है। इसमें लेखक अपने या अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित विशिष्ट या रमणीय घटनाओं का वर्णन करता है। घटनाओं में उन्हीं का वर्णन होता है जिनसे लेखक स्वयं प्रभावित होता है और यह अनुभव करता है कि अन्य व्यक्ति भी प्रभावित होंगे। संस्मरण किसी विशेष व्यक्ति के ही लिखे जाते हैं। जिस भी व्यक्ति के संस्मरण लेखक लिखे उसे जनता में अवश्य प्रतिष्ठित होना चाहिए। ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संस्मरण ही जनता के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रतिष्ठित व्यक्ति राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक कोई भी हो सकता है।

वर्ण्य विषय की कुछ विशेषताएँ होती हैं जोकि उसे उत्कृष्ट बनाती हैं। उनमें सर्वप्रथम रोचकता है। लेखक को अपने विषय का वर्णन इस ढंग से करना चाहिए जिससे कि वह पाठक को सरस प्रतीत हो। नीरस विषय को पढ़ने के लिए कोई भी व्यक्ति तैयार नहीं होता। इस प्रकार रोचकता का विषयवर्णन में होना अत्यन्त आवश्यक है।

अन्य महत्वपूर्ण गुण जिसका वर्ण्य विषय में होना आवश्यक है वह है स्पष्टता। यदि लेखक अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन

---

१ सिद्धान्तालोचन ले० धर्मचन्द सन्त पृ० २१२

पूर्ण ईमानदारी से करता है तभी वह सफल संस्मरण लेखक हो सकता है। किसी भी व्यक्ति का संस्मरण तभी सच्चा उतर सकता है जबकि लेखक का संस्मरण-नायक से निकट सम्पर्क रहा हो और उसको उसने हर पहलुओं से देखा और समझा हो। ऐसा न होने से परिणाम यह होता है कि मनुष्य कुछ है और उसका चित्रण उसके बिल्कुल विपरीत होता है।[1]

इसके पश्चात् वर्ण्य विषय में सुसंगठितता का होना भी आवश्यक है। लेखक जिस भी घटना का वर्णन करना चाहे उसमें भावों और विचारों का तारतम्य होना आवश्यक है। जीवन की समस्त अनुभूतियों का वर्णन क्रमबद्ध रूप से करना आवश्यक है। ये सभी विशेषताएँ वर्ण्य विषय को रोचक एवं प्रभावशाली बनाती हैं। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्ण्य विषय को दो प्रकार से वर्णन किया जा सकता है यदि संस्मरण लेखक अपने सम्बन्ध में लिखे तो उसकी रचना आत्मकथा के निकट होगी यदि अन्य व्यक्ति के विषय में लिखे तो जीवनी के निकट।[2]

चरित्र चित्रण

यदि लेखक अपने जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन संस्मरणात्मक शैली में करता है तो वह उसकी संस्मरणों में लिखी आत्मकथा बन जाती है। यदि वह अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन करता है तो वह जीवनी संस्मरणों में लिखी हुई मानी जाती है इन दोनों में लेखक केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करता है जिनका प्रभाव जनता पर स्पष्ट रूप से पड़ सकता है। वे सभी घटनाएँ केवल उसके चरित्र के गुणों को ही स्पष्ट करने के लिए नहीं लिखी जाती उनमें कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन भी होता है जोकि उसकी चारित्रिक दुर्बलताओं की ओर संकेत करती हैं। इस प्रकार संस्मरणों में चरित्र सम्बन्धी गुण दोषों का वर्णन स्पष्ट रूप से किया जाता है।

लेखक द्वारा लिखा हुआ प्रत्येक पृष्ठ उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है। लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव उसकी प्रत्येक कृति में स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। यदि लेखक मनोविज्ञानकार है तो वह अपने नायक का चरित्र मनोवैज्ञानिक ढंग से लिखेगा उसके चरित्र का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक ढंग में प्रस्तुत करेगा। ऐसे लेखक अपने नायक के चरित्र का चित्रण तो करते ही हैं इसके साथ उसके मस्तिष्क में छिपी हुई उसकी भावनाओं एवं उलझनों का भी स्पष्ट रूप से विश्लेषण करते हैं। कुछ ऐसे संस्मरण भी लिखे जा सकते हैं जोकि नायक के जीवन की कुछ घटनाओं को ही व्यक्त करते हैं। ऐसे संस्मरण यद्यपि नायक के सम्पूर्ण जीवन को नहीं स्पष्ट करते

---

१ बालकृष्ण भट्ट (संस्मरणों में जीवन), ले० ब्रजमोहन व्यास, पृ० १० आमुख
२ हिन्दी साहित्य कोष, पृ० ८७०

प्रत्युत फिर भी उन कुछ वर्णित पृष्ठों का वर्णन ही ऐसे ढंग से लेखक करता है कि नायक के सम्पूर्ण चरित्र का अनायास ज्ञान हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि संस्मरण साहित्य में भी लेखक नायक के चारित्रिक गुण दोषों का वर्णन स्पष्ट रूप न करता है जिससे कि उसका चरित्र स्पष्ट हो जाता है।

देशकाल वातावरण

वातावरण उन समस्त परिस्थितियों का सकुल नाम है जिनसे पात्रों को सघर्ष करना पड़ता है। संस्मरण साहित्य को वास्तविकता का मान दन की कसौटियों म वातावरण मुख्य उपकरण है। संस्मरण लेखक भी देश और काल की जजीर म जकडे हुए होते हैं। नायक के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए देशकाल का चित्रण आवश्यक है। नायक के व्यक्तित्व के अनुसार ही वातावरण एव परिस्थितियों का चित्रण लेखक करता है। यदि लेखक का नायक साहित्यिक है तो उसक संस्मरणों म लेखक जहाँ उसके साहित्यिक व्यक्तित्व को स्पष्ट करेगा वहाँ उसका स्थान निर्धारित करने के लिए उसे तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों का अवश्य वर्णन करना पड़ेगा।

यदि नायक राजनतिक व्यक्ति है तो उसम पाठक को तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का ज्ञान होगा। क्योंकि उनके नायक का व्यक्तित्व इन्हीं परिस्थितियों मे निखरता है इसलिए य सभी वर्णन उसके लिए आवश्यक हो जाते हैं। यही नहीं कुछ राजनतिक व्यक्ति अच्छे लेखक भी होते हैं। इसलिए उनके जीवन म दोनों ही प्रकार की परिस्थितियों का वर्णन होता है। धार्मिक एव सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान हमे ऐसे पुरुषों के जीवन से मिलता है जिनका सम्पूर्ण जीवन इन्हीं म व्यतीत हुआ हो। इस प्रकार विवेचन स स्पष्ट है कि परिस्थितियों का वर्णन केवल नायक के व्यक्तित्व को उभारने के लिए ही किया जाता है प्रमुख रूप मे नहीं।

देश और काल म वास्तविकता लाने के लिए स्थानीय ज्ञान आवश्यक है। इसलिए चरित्र को और उज्ज्वल एव प्रभावशाली बनाने के लिए जहा लेखक तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन करते हैं वहाँ विशेष स्थान का वर्णन भी करते हैं जहाँ ये सभी घटनाएँ घटित होती हैं। कई संस्मरण तो लिखे ही इसी दृष्टिकोण से जाते हैं। यात्रा सम्बन्धी संस्मरणों म नगरों एव विशेष स्थलों का चित्रण होता है। इस प्रकार संस्मरणों म वास्तविकता एव प्रभावोत्पादकता लाने के लिए देशकाल वातावरण का चित्रण आवश्यक है।

उद्देश्य

यह संस्मरण साहित्य का प्रमुख तत्व है। इसम लेखक की जीवन दृष्टि का विवेचन होता है। इस लेखक का जीवन-दर्शन अथवा उसकी जीवन दृष्टि या जीवन की व्याख्या कह सकते हैं। निरुद्देश्य रचना प्रयोजनहीन एव व्यर्थ होती है। संस्मरण साहित्य का उद्देश्य अन्य विधाओं से पृथक है। इसम लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है परन्तु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिल्कुल अलग

है। संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है जिसका वह स्वयं अनुभव करता है उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ भी रहती हैं। इस दृष्टि से शैली में वह निबन्धकार के समीप है। वह वास्तव में अपने चतुर्दिक के जीवन का सर्जन करता है सम्पूर्ण भावना और जीवन के साथ इतिहासकार के समान वह विवरण प्रस्तुत करने वाला नहीं।[1] इससे स्पष्ट है कि संस्मरणों में लेखक केवल उन्हीं घटनाओं का चित्रण करता है जिनसे वह प्रभावित होता है और उसके सम्मुख घटित हुई होती है। लेखक केवल उन घटनाओं का वर्णन ही नहीं करता अपितु उनके विषय में अपनी विचारधाराओं का भी वर्णन करता है जिससे हमें लेखक के विचारों का भी आभास हो जाता है।

संस्मरणों में लेखक केवल उन्हीं घटनाओं का चित्रण करता है जिनसे वह स्वयं प्रभावित होता है। अपने अतीत की स्मृतियों को साकार रूप देने का उसका अवश्य कोई न कोई उद्देश्य होता है। एक तो लेखक इस उद्देश्य से इनका वर्णन करता है कि ये वर्णित घटनाएं समय-समय पर उसे प्रेरणा देती रहें। जब भी जीवन में प्रेरणा की आवश्यकता पड़े पाठक इनको पढ़ सकें। अन्य बात यह है कि कुछ संस्मरण इस उद्देश्य से लिखे जाते हैं कि उनको लिखकर लेखक को मानसिक संतोष प्राप्त होता है।

लेखक अपने जीवन के अनुभवों का वर्णन इसी दृष्टिकोण से करता है कि शायद इनके पढ़ने से कुछ लोग प्रेरणा ग्रहण कर सकें क्योंकि संस्मरण में तो लेखक केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करता है जिनसे लेखक के जीवन में घटित होने वाले परिवर्तनों का संकेत मिलता है और जो अन्य जनों के कौतूहल को शान्त करने में सहायक हो सकते हैं।[2] इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि संस्मरण लेखक का उद्देश्य जहाँ स्वान्तः सुखाय रचना करना है वहाँ प्रभावशाली अतीत की स्मृतियों का चित्रण करना भी है जिससे उसे एवं पाठकगण को प्रेरणा मिलती रहे।

भाषा शैली

शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं। संस्मरण शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जो इसको सम्पन्न एवं प्रभावोत्पादक बनाती हैं। सर्वप्रथम इस शैली में प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। संस्मरण इस ढंग से लिखने चाहिए जिससे वे पाठक पर अपना प्रभाव स्थायी रूप से डाल सकें। यह प्रभाव तभी डाल सकते हैं जबकि इनका रोचकता से वर्णन हो। उत्तम ढंग से कही हुई बात ही अधिक प्रभाव डाल सकती है इस प्रकार रोचक शैली का होना भी आवश्यक है।

---

१ हिन्दी साहित्य कोष, पृ० ८७०

२ सिद्धान्तालोचन ले० धर्मचन्द सन्त

जब तक प्रत्येक भाव एवं विचार का वर्णन सुसगठित रूप से न किया गया हो तब वह पाठक को रुचिकर न प्रतीत होगी और प्रभावित करने के लिए असमर्थ प्रतीत होगी। इसलिए शैली में रोचकता, सुसगठितता एवं प्रभावोत्पादकता आदि गुणों का होना आवश्यक है।

संस्मरण लिखने के कई ढंग हो सकते हैं। ये निबन्धात्मक शैली में लिखे जा सकते हैं। जब लेखक अपने जीवन से सम्बन्धित संस्मरणों का वर्णन करता है तब वे आत्मकथा शैली में लिखे जाते हैं। कई बार लेखक अपने संस्मरणों का विवेचन पत्रात्मक एवं डायरी शैली में भी करता है। इस प्रकार संस्मरण लिखने की कई शैलियाँ है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध परिमार्जित एवं भावानुकूल होगी तभी वह पाठक को प्रभावित कर सकती है। स्वाभाविक एवं प्रसाद गुण का भाषा में होना अत्यन्त आवश्यक है। शब्दचयन भी विषयानुकूल होना चाहिए।

वर्गीकरण

संस्मरण लेखकों के आधार पर संस्मरण साहित्य का विभाजन यदि किया जाय तो संस्मरण साहित्यिक व्यक्ति एवं राजनतिक व्यक्ति भी लिख सकते हैं। साहित्यिक व्यक्ति से अभिप्राय है जिस व्यक्ति ने अपनी रचना द्वारा हिन्दी साहित्य की प्रगति में सहयोग दिया हो। इसमें कवि, कथा लेखक, आलोचक आते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्मरण केवल साहित्यिक व्यक्ति ही नहीं लिख सकते राजनैतिक व्यक्ति भी लिख सकते हैं।

यदि विषयवस्तु के आधार पर संस्मरण साहित्य का विभाजन किया जाय तो हमें ज्ञात होता है कि संस्मरण केवल साहित्यिक व्यक्तियों पर ही नहीं लिखे जा सकते अपितु राजनतिक व्यक्तियों पर भी लिखे जा सकते हैं। कई संस्मरण लेखक जिनको यात्रा का शौक होता है यात्रा सम्बन्धी संस्मरण भी लिख सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे व्यक्तियों पर भी संस्मरण लिखे जा सकते हैं जो होते तो साधारण हैं परन्तु अपने मानवीय गुणों के कारण वे असाधारण होते हैं।

शैली के आधार पर भी संस्मरण कई प्रकार के होते हैं। संस्मरण आत्मकथात्मक शैली, निबन्धात्मक शैली, पत्रात्मक एवं डायरी शैली में भी लिखे जा सकते हैं।

पत्र

आधुनिक काल में गद्य की अन्य विधाओं के साथ पत्र साहित्य की भी प्रगति हुई है। गद्य की यह विधा गोपनीय आत्मकथा का रूप है। आत्मकथा में व्यक्ति का इतिहास सम्बद्ध होता है। पत्रों में कुछ असम्बद्ध सा रहता है। पत्रों से हमें लेखक के सहज व्यक्तित्व का पता चलता है। इसमें हमको बन ठने सजे सजाये मनुष्य का चित्र

नही, वरन् एक चलत फिरते मनुष्य का स्नेप नॉट' मिल जाता है। लेखक के वैयक्तिक सम्बन्ध उसके मानसिक और वाह्य सघप तथा उसकी रुचि तथा उस पर पडने वाले प्रभावा का हमको पता चल जाता है। पत्रों म कभी-कभी तत्कालीन सामाजिक राज नतिक व साहित्यिक इतिहास की झलक भी मिल जाती है।[1] इसके अनुसार पत्र साहित्य म लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। जहा हमे लेखक के व्यक्तित्व का अनुमान होता है वहाँ उस पर पडने वाले सभी प्रभावा का एव तत्कालीन परिस्थितिया का भी ज्ञान होता है। इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप से समझने के लिए उसके लिखे पत्रा का पढना आवश्यक है।

वास्तव म पत्र जीवन का दपण है जिसम उसका निखरा हुआ चित्र स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। दपण म से लेखक की मनोवत्तिया उसकी आकाक्षाएँ उसके जीवन की कठिनाइया उसकी विचारधाराएँ उसकी प्रगतिया उसके जीवन का मानसिक विकास तथा कायक्रम चित्रित हो उठते हैं। किसी भी व्यक्ति का यह निखरा हुआ चित्र उसक पत्रा क अतिरिक्त उसकी अन्य किसी रचना अथवा मौखिक वार्तालाप स प्राप्त नहीं होता।[2] इसस स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति क वास्तविक व्यक्तित्व स परिचित होने के लिए उसक पत्रो को पढना आवश्यक है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का जो स्पष्ट चित्रण हम पत्रा म पाते हैं वह अन्यत्र नही।

पत्र वह लेख है जो किसी दूर रहने वाल व्यक्ति विशेष को प्रेषित किया जाता है और जिसम उस दूरस्थ व्यक्ति क प्रति अपनी भावनाओं का प्रकाशन रहता है। अंग्रेजी म इस रूप को Letter कहत हैं। अंग्रेजी कोष म भी इसकी यही परिभाषा अंकित है—

A writing directed or sent communicating intelligence to a distant person

अर्थात् एक दूरस्थ व्यक्ति का निजी वृत्तान्त जब लिखकर प्रेषित किया जाता है तब वह पत्र कहलाता है।

आत्मकथा की भांति कुछ पत्रा का महत्व उनके विषय पर निभर रहता है, कुछ का शैली पर। जिन पत्रा क विषय और शैली दोना ही महत्वपूण हों वे साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन जात हैं।[3] इस प्रकार पत्र का विषय और शैली दोना दृष्टिकोणा स महत्वपूण होना आवश्यक है।

पत्र लेखक अपने विचारा और भावों को पत्र म भावग्राहक के अनुकूल ही लिखता है। पत्र जनता क प्रयोग क लिए नहा होते। यह एक ही व्यक्ति को लिखे जाते हैं पर लिखे छोटे छोटे समूहा म जात हैं। यह भाव ग्राहक अर्थात् पाने वाले

1 काव्य के रूप ल० गुलाबराय
2 आधुनिक पत्रलेखन ल० यज्ञदत्त शर्मा
3 काव्य के रूप, ल० गुलाबराय

व्यक्ति के स्वाद, समझ और सहानुभूति के अनुसार ही लिखे जाने चाहिएँ।[1]

A letter is not a public performance Letters are written to single persons or, at most, to small groups, they should be fitted to the tastes, understandings and sympathies of their recipients

इस प्रकार पत्र पाने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व अनुसार ही होने चाहिए। इसके अतिरिक्त पत्र लेखक जिस व्यक्ति के लिए पत्र लिखता है उस व्यक्ति का ध्यान रखता है। सामान्यत साहित्यकार अपने भावों के प्रकाशन के लिए प्रवृत्त होता है। उस समय उसके सम्मुख भावग्राहक उपस्थित नही रहता है। पत्र लेखक की स्थिति इससे कुछ भिन्न होती है। लेखन काल में भावग्राहक उसकी आँखों से ओझल नही होता है वह लिखता ही उसके लिए है। साहित्य के अन्य रूपों में लेखक अपने भावो के प्रकाशन के उद्देश्य से प्रवृत्त होता है परन्तु वह लेख जनसाधारण की रुचि का विषय बन जाता है। पत्र लेखक अपने भावों को एक व्यक्ति विशेष के उद्देश्य से लिपिबद्ध करता है परतु जनसाधारण भी उसे आत्म सतुष्टि का साधन बना सकता है। इस प्रकार पत्र साहित्य द्विमुखी होता है उसमें भावों और भावग्राहक दोनों की ओर दृष्टि रहती है।[2]

अत उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पत्र वह लेख है जो किसी दूर रहने वाले व्यक्ति विशेष को प्रेषित किया जाता है और जिसमें उस दूरस्थ व्यक्ति के प्रति अपनी भावनाओं का उसकी रुचि, समझ एव योग्यता के अनुसार, कलात्मक ढग से प्रकाशन किया जाता है।

तत्व

वर्ण्य विषय—किसी भी साहित्यिक व्यक्ति के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से समझने के लिए उसके वैयक्तिक पत्रों का अध्ययन करना आवश्यक है। इनके अध्ययन से ही पाठक लेखक के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से समझ जाता है। इसलिए पत्रों का प्रमुख विषय लेखक स्वय है। यह ठीक है कि कुछ पत्र ऐसे भी लिखे जाते हैं जिनमें रोजमर्रा के काम काज का जीवन की जटिल समस्याओं का व्यावसायिक धधों का एव साहित्यिक राजनैतिक पहलुओं का वर्णन होता है परन्तु इन सभी में उसका व्यक्तित्व झलका करता है। पत्रों का प्रमुख विषय लेखक के व्यक्तित्व का दिग्दर्शन ही होता है।

वर्ण्य विषय को उत्कृष्ट बनाने के लिए उसमें स्वाभाविकता रोचकता स्पष्टता एव सक्षिप्तता आदि गुणों का होना आवश्यक है। पत्र में लेखक को अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण रोचकपूर्ण ढग से करना चाहिए। पाठक को किसी भी प्रकार की कृत्रिमता का आभास नहीं होना चाहिए। लेखक को चाहिए कि वह अपने विषय को

---

१ One Mighty Torrent by Edgar Johnson, P 159

२ सिद्धातालोचन, ले० धर्मचन्द सत

परिपक्व करने के लिए इन विशेषताओं का ध्यान रखे। अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए उसे चारो ओर के वातावरण से परिचित होना आवश्यक है। उन सभी परिस्थितियों का वर्णन आवश्यक है जिनमे उसका व्यक्तित्व उभरा हो।[१] पत्र लेखक को कुछ निश्चित सुविधाओं की आवश्यकता है शिष्टाचार में हल्कापन भी हो सकता है। कुछ अपने को एव अपने चारो ओर से घिरे हुए वातावरण को वास्तविकता से देखने की योग्यता होनी आवश्यक है परन्तु यह कोई आवश्यक नहीं कि वह संस्कृति की गहराई में या पूर्ण प्रभावित शक्तियों से परिचित हो परन्तु उसमें इतनी सामर्थ्य का होना आवश्यक है जो उसे दुनिया की हलचल से परे ले जाए और वह अपने बीते हुए अनुभवों को सोच सके।[१]

Letter writing requires a certain ease a tinge of urbanity, some ability really to see yourself and things around you not necessarily great depths of culture or profound reflective powers but a little of the capacity to stand aside for a while from the heat and rush of activity and realise imaginatively what your experiences has been

इन सुविधाओं के होने से ही उसके पत्र मे स्वाभाविकता का समावेश हो सकता है। शान्त वातावरण में ही वह अपने जीवन के अनुभवों को लिख सकता है। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि पत्रों का प्रमुख विषय व्यक्तित्व को स्पष्ट करना है। यदि वह किसी अन्य विषय के सम्बन्ध मे पत्र लिखता है तो उससे भी परोक्ष रूप से उसका व्यक्तित्व ही झलकता है।

पात्रों और घटनाओं से सम्बन्ध और उनके प्रति प्रतिक्रिया—प्रत्येक पत्र लेखक जिन घटनाओं का वर्णन अपने पत्रों में करता है उनका उससे विशेष सम्बन्ध होता है। यदि वह किसी व्यक्ति का वर्णन अपने पत्र में करता है तो अवश्य रूप से उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का उससे सम्बन्ध होगा। या तो उसका व्यक्तित्व लेखक को प्रभावित करता होगा या उसमे उसको कष्ट होगा। लेखक उसके व्यक्तित्व का वर्णन ही नहीं करता अपितु उस पर टीका टिप्पणी भी करता है। उसके व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण-दोषों का विवेचन वह स्पष्ट रूप से करता है। यही बात घटनाओं के विषय मे कही जा सकती है जहा लेखक अपने जीवन में घटित घटनाओं का वर्णन करता है वहाँ पर उन घटनाओं का प्रभाव भी दिखलाता है। उसके जीवन में जो भी घटना घटती है उसका उसमे सीधा सम्बन्ध होता है। यही नहीं कई बार किसी अन्य व्यक्ति जिससे कि उसका सम्बन्ध होता है उसके जीवन मे घटित घटना का प्रभाव भी लेखक पर पड जाता है तो उसका विवेचन भी लेखक अपने पत्रों मे करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पत्र लेखक अपने पत्रों में घटनाओं एव पात्रों का वर्णन ही नहीं करता अपितु उनके प्रति मन में उठी हुई प्रतिक्रियाओं का उल्लेख भी करता है।

१ One Mighty Torrent by Edgar Johnson, P 156

उद्देश्य

पत्र लेखक का उद्देश्य आत्मजीवन की व्याख्या होती है। पत्र व्यक्तिगत व्यवहार होता है। इसलिए इसमें व्यक्तित्व की सुगंध का होना आवश्यक है। पत्र का विषय लेखक एवं उसका व्यक्तित्व होता है जिसे सर्वत्र ऐसा वर्णन करने का अधिकार होता है। उसके पृष्ठों में यह प्रधान रूप से होता है कि वह क्या करता है और क्या अनुभव करता है। यहां तक कि उसके फले हुए व्यक्तित्व का जो कि प्रत्येक मुहावरे और विशेषण से युक्त होता है उसका भी हम आनन्द लेते हैं। लेखक अपने व्यक्तित्व का सीधा सम्बन्ध हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए जो भी जादूभरे आकर्षण का प्रयोग कर सकता है अपनी भावनाओं को उस जादूभरे आकर्षण से रंग कर हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। यही उसका मानसिक साहस होता है। अस्पष्ट विचारों की श्रेणी के स्वभाव में, सहानुभूति के शब्दों में, व्यक्तिगत व्यक्तित्व कथन में या अनर्थ वार्तालाप में प्रभावित विष्कम्भक के रूप में एक चरित्र का निर्माण हमारे सम्मुख होता है उस व्यक्ति का चरित्र जोकि लेखक होता है।[1]

Letters are personal communications Therefore they should have the flavor of personality The subject of the letter is the writer and his personality has every where the right to appear In his pages who speaks and what he feels about things is central part of our pleasure is tasting and suffusion of personality even in every phrase and turn of epithet The direct presence of the writer s personality by whatever magical touches he can use to conjure his breathing self up before us the very aim and heart of the enterprise In glimining sequence of moods in gossip or abmonition or nonsense in news or words of sympathy in personal narration or reflective interludes, a character should take place before us the character of the man who wrote there

इससे स्पष्ट है कि पत्र लेखक का उद्देश्य आत्मीय जीवन की व्याख्या ही होती है। प्रसंगानुसार वह अन्य विषयों का ज्ञान पाठक को करवा सकता है। उद्देश्य की दृष्टि से पत्र साहित्य गद्य के अन्य रूपों से भिन्न होता है। जहां यह निर्दिष्ट व्यक्ति को किसी विशिष्ट विषय का ज्ञान मात्र देना चाहता है तब उसका उद्देश्य अन्य साहित्यिकों के सदृश होता है। उसमें आत्मीयता की मात्रा कम रहने से निबन्ध रूप के समीप हो जाता है। जब वह अपना वृतान्त ही प्रेषित करना चाहता है तब उसमें मानसिक प्रतिक्रियाओं की बहुलता से आत्मीयता बढ़ जाती है। इस स्थिति में लेखक का उद्देश्य सामान्य मानव जीवन की व्याख्या न होकर आत्मजीवन की

---

1 One Mighty Torrent by Edgar Johnson, P 160 161

व्याख्या होनी है ।[1]

इससे पूणतया स्पष्ट है कि पत्र लेखक का प्रमुख उद्देश्य आत्मजीवन की व्याख्या होना है। प्रसगानुसार वह अ य विषया के सम्ब ध मे लिख सकता है पर प्रमुख रूप से व्याख्या वह अपन जीवन की ही करता है।

देशकाल वातावरण

प्रत्येक लखक व कलाकार अपने समय की परिस्थितिया से प्रभावित होता है। वह प्रसगानुसार अवश्य ही उन परिस्थितिया का उल्लेख करता है। यही बात पत्र लेखक म भी पाइ जाती ह। यह ठीक है कि उसका उद्दश्य आत्मजीवन की व्याख्या है पर अपन व्यक्तित्व को निखारने के लिए वह उन परिस्थितिया का उल्लख भी करता है जिनम उसका सहयोग होता है। राजनतिक व्यक्ति का सम्ब ध अपने समय की राजनतिक परिस्थितिया से प्रमुख रूप स होगा। तो उसके द्वारा लिखे हुए पत्रा मे हम प्रमुख रूप से तत्कालीन परिस्थितियो का वणन मिल जाएगा। साहित्यिक व्यक्ति के पत्रा म भी तत्कालीन साहित्यिक राजनतिक परिस्थितियो का वणन परोक्ष रूप से अवश्य मिलेगा। प्रत्यक लेखक अपने समय से अवश्य प्रभावित होता है वह कही न कहीं अवश्य ही इन परिस्थितिया का वणन कर देता है।

कई पत्र लेखक ऐसे होते है जिनको घूमने फिरने का अधिक शौक होता है। वह अपने मित्रा को सम्ब धियो को उन स्थाना का वणन भी लिख देते हैं तो एसे पत्रा मे प्रधानता विषय की होती है। इनम विषय-वणन के साथ-साथ लेखक के व्यक्तिगत विचार भी होते हैं ता इस प्रकार व पत्र भी उनके व्यक्तित्व का दिग्दशन करवात है।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि पत्र लेखक अपने समय की परिस्थितिया से प्रभावित होकर उनका स्वाभाविक रूप से वणन अपने पत्रों म करता है।

शैली

पत्र लेखक की शैली गद्य की अ य विधाआ से पृथक होती है। इसम लेखक का मुख्य उद्देश्य आत्माख्यान ही होता है। इसलिए इस शली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका इसम होना अत्य त आवश्यक है।

सवप्रथम इस शली मे आत्मीयता का होना आवश्यक है। पत्र म लेखक की आत्मीयता प्रकट होनी चाहिए। वण्य विषय की दृष्टि से जब लेखक लिखता है तब उसका अपनापन दबा रहता ह वह सीधे रूप म सम्मुख नही आता। पत्र साहित्य मे आत्मीयता अर्थात् सापेक्ष दृष्टि की अत्य त आवश्यकता होती है। आत्मीयता का

१ सिद्धातालोचन, ल० धमच द

सम्बन्ध लेखक के अपने व्यक्तित्व के साथ भी है और दूरस्थ व्यक्ति के साथ भी।[1] इस प्रकार शैली में आत्मीयता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जिसका पत्र शैली में होना आवश्यक है वह है संक्षिप्तता। मुक्तक काव्य की तरह पत्र का आकार छोटा होता है इसलिए लेखक को अपनी विचारधारा संक्षिप्त रूप से प्रकट करनी चाहिए। अधिक लम्बे आकार का पत्र, पत्र नहीं बल्कि निबन्ध कहलाता है। अपने विषय एवं शैली को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक को पत्र संक्षिप्त लिखना चाहिए।

बात को थोड़े शब्दों में अधिक से अधिक स्पष्टता देना पत्र की सबसे बड़ी माँग है। पत्रों में कुछ लोग तो अपना सारा व्यक्तित्व उड़ेल देना चाहते हैं और कुछ उनको निर्वैयक्तिक तथा रंगीनी से खाली रखना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में मध्यम मार्ग का अनुसरण करना श्रेयस्कर है।[2]

पत्र शैली में स्वाभाविकता का होना आवश्यक है। लेखक को व्यक्तिगत विवेचन इस ढंग से करना चाहिए जिससे पाठक को यह न प्रतीत हो कि इसमें कुछ कृत्रिमता या बनावटीपन है। स्वाभाविक रूप से किया गया वर्णन अधिक प्रभावशाली होता है।

इसकी शैली भावग्राहक के अनुकूल होनी चाहिए। भावग्राहक की योग्यता अनुसार लिखा हुआ पत्र ही सार्थक होता है। भावग्राहक की योग्यता से अधिक लिखा हुआ पत्र प्रभावहीन हो जाता है।

इन सब विशेषताओं से युक्त पत्र शैली ही पाठक को प्रभावित कर सकती है। भाषा का भी भावानुकूल एवं विषयानुकूल होना आवश्यक है। भाषा में माधुर्य एवं प्रसाद गुण का होना आवश्यक है। भाषा को उत्कृष्ट बनाने के लिए शब्दचयन सजीव एवं सशक्त होना चाहिए।

वर्गीकरण

पत्र कई प्रकार के होते हैं—

१ साहित्यिक पत्र—ऐसे पत्रों का विषय साहित्य से सम्बन्धित होता है। किसी भी साहित्यिक कृति के विषय में भाषा व्याकरण एवं शैली के विषय में लेखक जिन पत्रों में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं उनको साहित्यिक पत्र कहा जाता है। ऐसे पत्रों में प्रधानता विषय की होती है परन्तु उनमें लेखक के व्यक्तिगत विचारों का ब्यौरा अधिक होता है। ऐसे पत्रों में लेखक किसी भी कृति एवं साहित्यिक योजना के विषय का वर्णन तो करता ही है परन्तु निःसंकोच रूप से अपने सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

२ आत्मकथात्मक-पत्र—जिन पत्रों में लेखक अपने जीवन की व्याख्या प्रमुख

---

१ सिद्धान्तालोचन, ले० धर्मचन्द संत

२ काव्य के रूप ले० गुलाबराय

रूप से करता है उनको आत्मकथात्मक पत्र कहा जाता है। स्वाभाविकता, स्पष्टता एवं आत्मीयता आदि विशेषताएँ इन पत्रों में विशेष रूप से पाई जाती हैं। ऐसे पत्र आत्मकथा एवं जीवनी के लिए सहायक होते हैं। गोपनीय घटनाओं का वर्णन होने से ये हृदय का दर्पण होते हैं।

३ अन्य चरित्रमूलक पत्र—जिन पत्रों में लेखक किसी व्यक्ति के चरित्र पर प्रकाश डालता है उनको अन्य चरित्रमूलक पत्र कहा जाता है। प्राय ऐसे पत्र भी लिखे जाते हैं। इन पत्रों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हम लेखक से सम्बन्धित कुछ व्यक्तियों के जीवन के विषय में पता चल जाता है। इनके वर्णन से हम लेखक का व्यक्तित्व और स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

४ वर्णनात्मक पत्र—जिन पत्रों में लेखक किसी भवन, स्थान या नगर विशेष का वर्णन करता है उनको वर्णनात्मक पत्र कहा जाता है। ऐसे पत्रों की शैली सजीव एवं प्रभावोत्पादक होती है।

५ विचार प्रधान पत्र—जिन पत्रों में किसी विशेष समस्या एवं उलझन पर प्रकाश डाला जाता है वे विचारप्रधान पत्र कहलाते हैं। यह समस्या राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक कुछ भी हो सकती है। इन पत्रों में उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति अधिक होती है।

डायरी

आधुनिक काल में जहां गद्य की नाटक, उपन्यास एवं कहानी विधाओं का पूर्ण रूप से विकास हुआ है वहाँ डायरी साहित्य भी कम नहीं रहा। योरोपीय साहित्य के प्रभाव से ही हिंदी में इसका आविर्भाव हुआ। हिंदी साहित्य में अभी हमें उतनी पूर्ण और विकसित डायरियाँ नहीं देखने में आतीं जितनी कि आंग्ल भाषा के साहित्य में हैं। डायरी जीवनी साहित्य का एक रूप है। यह आत्मकथा का आरम्भिक रूप कहा जा सकता है।

डायरी के माध्यम से लेखक के सद्य स्फुरित भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति मिलती है। डायरी के रोजनामचा, दैनिकी, दैनंदिनी पर्याय हैं और ये पर्याय इस दृष्टि से सार्थक भी हैं कि वे डायरी के इस प्रमुख ध्येय की ओर संकेत करते हैं कि डायरी में लेखक का अनुभव उसके सबसे अधिक निकट रहकर अंकित होता है। डायरी में लेखक के मन पर पड़े प्रभाव उसी दिन लिखित रूप पाते हैं। इस प्रकार लेखक के व्यक्तित्व प्रकाशन का सर्वाधिक प्रामाणिक माध्यम डायरी है। प्रामाणिक इस अर्थ में कि प्राय डायरियां अपने निजी भावों विचारों को नोट कर लेने के उद्देश्य से लिखी गई हैं पुस्तक प्रकाशन के उद्देश्य से नहीं। विशुद्ध डायरी सम्भवत इस दृष्टि से कभी नहीं लिखी जाती कि बाद में वह पुस्तक रूप में प्रकाशित होगी।

डायरी लेखक के अत्यधिक निकट होती है। इसलिये ऐसा भी सम्भव है कि उसमें कलात्मक तटस्थता का अभाव रह जाय। अत यह कहा जा सकता है कि डायरी

कोई विशेष कलापूर्ण साहित्य रूप नहीं है पर डायरी अपने पूर्ण अभिप्राय में कलात्मक साहित्य रूप है ही नहीं। साहित्यिक दृष्टि से डायरी में गम्भीरता या मार्मिकता और निजगत कलात्मकता की कमी हो सकती है पर स्पष्ट कथन, आत्मीयता और निश्छल आदि विशेषताएँ डायरी की उक्त कमी को पूरा कर देती हैं।[1]

इससे स्पष्ट है कि डायरी में लेखक अपनी नित्यप्रति घटित घटनाओं, भावों और विचारों का वर्णन निःसंकोच रूप से करता है।

जीवनी साहित्य में डायरी का भी अपना विशेष स्थान है। डायरी में मनुष्य अपना सच्चा चित्र खींचता है। अपने को साकार व्यक्त करता है। प्रतिदिन घटी-बड़ी गुप्त और प्रकट सभी बातें डायरी में लिखी जाती हैं। निर्भीकता से व्यक्ति डायरी में उन घटनाओं का उल्लेख करता है जिन्हें वह और कहीं लिखने में संकोच करेगा। इस प्रकार डायरी व्यक्ति का वास्तविक रूप प्रकट करने का श्रेष्ठ साधन कही जा सकती है। लेकिन यदि डायरी में लेखक इस विचार से प्रभावित है कि उसका प्रकाशन होगा तो उसमें भी वास्तविकता के छिपाने और बातें बढ़ा-चढ़ा कर कहने का भय है।

एक बात विशेष रूप से डायरी के सम्बन्ध में खटकने योग्य है—यदि एक व्यक्ति ८० वर्ष तक जीवित रहता है तो एक लम्बे समय की दैनिक घटनाओं में लगाव का इतना विशाल समूह होगा कि उस व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए और उसका चित्र उपस्थित करने के लिए एक दूसरी पुस्तक तैयार करनी पड़ेगी जो उस व्यक्ति का जीवन चरित्र बन जायेगी। डायरी के सम्बन्ध में एक बात और ध्यान देने योग्य है—यदि पूरे जीवन काल की डायरी मिली तब तो व्यक्ति का पूरा जीवन चरित्र मिल सकता है अन्यथा जिस काल की डायरी मिली उसी समय का रूप जाना जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति के पूरे चित्र को समझने में कोई सहायता नहीं मिल सकती है। इसलिए पूरे काल की डायरी न होने से न केवल जीवन के एक भाग का चित्र उपस्थित होगा वरन् भ्रमपूर्ण जीवन उपस्थित करने की भी अधिक सम्भावना है। इसमें सन्देह नहीं कि जीवन चरित्र लिखने में डायरी से सर्वाधिक सहायता मिली है। डायरी भी जीवनी साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग है।[2] इस प्रकार डायरी व्यक्तित्व प्रकाशन का एक साधन है। इससे मनुष्य के वास्तविक रूप का ज्ञान होता है।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में डायरी की परिभाषा इस प्रकार दी है—

The book in which are preserved the daily memoranda regarding events and actions which come under the writer's personal observation or are related to him by others

---

१ हिन्दी साहित्य कोष पृ० ३४६,

२ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह पृ० २०-२१

अर्थात् डायरी वह पुस्तक है जिसमे लेखक के प्रतिदिन स्मरण लेख, घटनाएँ, एव साहसिक क्रियाएँ जिसम उसका व्यक्तिगत निरीक्षण होता है या अन्य व्यक्तिया द्वारा वर्णित घटनाएँ होती हैं।

आत्मकथाकार की भाँति डायरी लेखक भी सवविदित, सवप्रिय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होना चाहिए[1] क्योंकि इस दिनचर्या म केवल सोन, उठने, भोजन आदि का विवरण न देकर अपने जीवन म अनुभव की हुई कोई ऐसी घटना, नई अनुभूति, विचित्र वस्तु आदि का विवरण हो जो सामान्यत मानव समाज के लिए भी शिक्षाप्रद नवीन अद्भुत रुचिकर तथा लाभकर हा।[2] इस प्रकार वही डायरी साहित्य मे अपना स्थान निर्धारित कर सकती है जिसका लेखक प्रतिष्ठित एव सवप्रिय व्यक्ति होता है।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि डायरी वह आत्मीय पुस्तक है जिसम लेखक प्रतिदिन घटित होन वाली घटनाआ का ही वणन नही करता अपितु इसके साथ ही साथ मानसिक प्रतिक्रियाआ का वणन भी सक्षिप्त, रोचक एव सुसगठित रूप से करता है।

तत्व

विषयवस्तु का विस्तार—डायरी मे विषयवस्तु से अभिप्राय लेखक के केवल खाने, पीने, सोन एव उठने से नही है प्रत्युत जीवन मे अनुभव की हुई कोई ऐसी घटना, नई अनुभूति विचित्र वस्तु आदि का विवरण हो जो सामान्यत मानव समाज के लिए भी शिक्षाप्रद, नवीन, अदभुत, रुचिकर तथा लाभकर हो।[3] इससे स्पष्ट है डायरी म लेखक को केवल उन घटनाआ का वणन नही करना चाहिए जिनके पढ़ने से पाठक को कोई लाभ न हो। छोटी छोटी घटनाआ का वणन डायरी को नीरस बना देता है। इसलिए लेखक को अपने जीवन के प्रमुख अगो का वणन विशेष रूप से करना चाहिए।

विषय को उत्कृष्ट बनाने के लिए लेखक को अपने जीवन का वत्तात इस ढग से वणन करना चाहिए जिससे वह सरस एव रोचक प्रतीत हो। एक घटना पढने के पश्चात् पाठक के मन म यह कौतूहल उत्पन्न हो कि आगे क्या होगा ? इस प्रकार रोचकता का डायरी म हाना नितान्त आवश्यक है।

अनावश्यक विस्तार विषय का नीरस बना दता है। इसलिए लेखक को अपने जीवन की प्रत्येक घटना का वणन इस ढग से करना चाहिए कि बात भी स्पष्ट हो जाए और अधिक विस्तार भी न हो। सक्षिप्तता का विषय म होना अत्यन्त आवश्यक है।

---

१ सिद्धातालोचन ले० धमच द बलदव कृष्ण
२ शली और कौशल, ले० सीताराम चतुर्वेदी
३ वही

डायरी म लेखक को अपने जीवन की घटनाओ का वणन स्पष्ट रूप से करना चाहिए। डायरी लेखक अपने जीवन या जीवन के किसी महत्वपूर्ण प्रसग को लेकर डायरी लिखता है। डायरी लेखन म वह यथाथ घटनाओ को इस प्रकार सक्षेप म व्यक्त करता है कि सारी बात भी स्पष्ट हो जाय और विस्तार भी न हो।[1]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वही डायरी उत्कृष्ट मानी जा सकती है जिसके विषय म रोचकता स्पष्टता सक्षिप्तता एव सुसगठितता आदि गुण हो। डायरी लेखक विषयवस्तु को दो प्रकार से लिखा करता है। जब व्यक्ति स्वय अपनी डायरी लिखता है तो वह आत्मचरित्र का रूप हो जाता है। जब कोई अन्य व्यक्ति डायरी अन्य व्यक्ति के सम्बन्ध म लिखता है तो वह जीवन चरित्र की श्रेणी म आ जाता है।[2] इस प्रकार विषयवस्तु का लिखन के दो ढग हो सकते हैं।

सम्पक म आए हुए व्यक्तियो एव घटनाओ से लेखक का सम्बन्ध और उनके प्रति प्रतिक्रियाएँ

डायरी म लेखक केवल अपने जीवन का ही विश्लेषण नही करता अपितु अपने से सम्बन्धित सभी व्यक्तियो एव घटनाओ का विवेचन भी करता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे कुछ ऐसे व्यक्ति आते हैं जिनका उन पर पूर्ण रूप से प्रभाव पडता है तब वे व्यक्ति अवश्य ही उनका वणन अपनी डायरी म करते हैं। डायरी लेखक उन व्यक्तियो का वणन ही नही अपितु आवश्यकतानुसार टीका टिप्पणी भी करते हैं।

जहा तक घटनाओ का प्रश्न है लेखक जिस भी वातावरण म रहता है उसका वणन वह आवश्यकतानुसार अपनी कृति मे करता है। इसी प्रकार डायरी लेखक भी अपनी डायरी मे तत्कालीन परिस्थितियो का अवश्य ही वणन करता है। यदि लेखक राजनतिक व्यक्ति है तो वह अपनी डायरी मे प्रमुख रूप से उन परिस्थितियो का अवश्य वणन करेगा जिनसे उसका व्यक्तित्व उभरता है। यही बात साहित्यिक एव सामाजिक व्यक्ति के विषय म भी कही जा सकती है। राजनतिक, सामाजिक एव साहित्यिक परिस्थितियो का वणन डायरी लेखक के व्यक्तित्व के अनुसार ही होता है। इन सभी के वणन के साथ-साथ उनका प्रभाव भी वर्णित होता है।

इस प्रकार डायरी म लेखक अपने से सम्बन्धित व्यक्ति एव घटनाओ का वणन ही नही करते बल्कि आवश्यकतानुसार उन पर टीका टिप्पणी भी करते हैं।

देशकाल वातावरण

अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए लेखक का तत्कालीन परिस्थितियो का वणन करना आवश्यक है। इसलिए

---

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त ले० गोविन्द त्रिगुणायत

२ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित्र का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह पृ०२१

वातावरण का वणन करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लेखक साहित्यिक है तो वह अवश्य ही उन साहित्यिक परिस्थितिया का वणन करेगा जिनका प्रभाव उस पर पडा होगा। इसके साथ ही उन परिस्थितिया क वणन मे वह अपना स्थान भी निर्धारित करेगा। पराक्ष रूप स वह देश की राजनतिक परिस्थितिया का तत्कालीन साहित्य पर भी प्रभाव बताएगा। इसलिए वातावरण का किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण मे प्रमुख हाथ है। यह ता हुई देश की एव साहित्यिक परिस्थितिया की बात जहा तक पारिवारिक परिस्थितिया का प्रश्न है लेखक उन सभी परिवार की घटनाओ का वणन भी करता है जिनका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पडता है। य सभी वणन लेखक व्यक्तित्व प्रकाशन के उद्देश्य स ही करता है।

कई लेखक ऐसे हाते हैं जिनको घूमने फिरने का विशेष शौक होता है तो उनकी कृति म विशेष रूप से देश का चित्रण होता है। किसी विशेष स्थान नगर एव भवन का वणन उनकी डायरी मे अवश्य रूप स पाया जाएगा। इस प्रकार देश-काल एव वातावरण का चित्रण डायरी म लेखक अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए करता है।

उद्देश्य

डायरी लेखक का प्रमुख उद्देश्य आत्मविश्लेषण है। डायरी म लेखक अपने जीवन की विवेचना ही करता है। जीवन के सभी उतराव चढावा का वणन डायरी म ही होता है। इसलिए डायरी आत्मविवेचन के उद्देश्य से ही लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त प्रत्यक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के जीवन से कुछ न कुछ अवश्य प्रेरणा ग्रहण करता है जिससे उसकी आत्मा व मन को शांति प्राप्त होती है। इसी भावना से प्रेरित होकर लेखक अपनी डायरी लिखते हैं। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की डायरी से ही लेखक प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। डायरिया स्वान्त सुखाय के उद्देश्य से भी लिखी जाती हैं। इस प्रकार डायरी लेखक का उद्देश आत्मविश्लेषण आत्मविवचन तो है ही लेखक डायरी इस उद्देश्य से भी लिखता है कि लोग इससे कुछ लाभ व प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

भाषा शैली

डायरी म लेखक दिनचर्या के रूप मे ही जीवन की घटनाओ और मानसिक विचारा का लेखा जोखा करता है। इसकी शैली गद्य की अन्य विधाओ की अपेक्षा पृथक होती है। इस शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका इसम होना अत्यन्त आवश्यक है—सवप्रथम विशेषता नि सकोच आत्मविश्लेषण है। दिनचर्या के रूप म लेखक अपने जीवन की घटनाओ और मानसिक विचारो का लेखा रखता जाता है यद्यपि इन सबका विवरण भी वह बिलकुल तटस्थ होकर नहीं कर सकता परन्तु आत्मचरित्र की अपेक्षा उसका सकोच इस शैली की व्याख्या म कम रहता है। लेखक

जानता है कि उसके विवरण दूसरा के पास आएँगे अतएव वहाँ अपने मन का विषय पर अवांछित प्रसग को ज्यादा टकता नही। उसका आवरणहीन वणन स्वच्छन्द की तरह अकित होता रहता है। घटनाओ एव विचारो म असम्बद्धता भी उस असन सान को काम म लान स रोक लेती है। प्राय देखा जाता है कि सराव का उद्भव तभी होता है जब घटनाओ का सामूहिक प्रभाव दिखाया जाय। डायरी शैली म यह स्थिति होन नही पाती परिणामत तटस्थ रूप स लेखक अपेक्षाकृत अधिक आत्मविश्लेषण करता है।[1] डायरी शैली म निसकोच आत्मविश्लेषण क साथ साथ घटनाओ की सम्बद्धता स्पष्टता, सजीवता मानसिक प्रतिक्रियाओ का सक्षिप्त विवरण पर्याप्त सामग्री एव स्वाभाविकता आदि गुणो का होना आवश्यक है। माधुर्य और प्रसाद गुण का भाषा म होना भी अत्यन्त आवश्यक है। इसक अतिरिक्त शब्दचयन भी विषयानुकूल होना चाहिए।

वर्गीकरण

यदि डायरी साहित्य का विभाजन लखक अनुसार किया जाय तो डायरियाँ कवि, कथालेखक आलोचक, राजनतिक एव सामाजिक व्यक्ति भी लिख सकत हैं। विषय अनुसार भी डायरी साहित्य का विभाजन हो सकता है। कई डायरियो म प्रकृति चित्रण प्रधान रूप से होता है ऐसे विषय को कवि ही लिख सकत हैं। कई लेखको की डायरियो म किसी भी साहित्यिक विषय का वणन होता है। कई एसी भी डायरिया होती हैं जिनम सामाजिक एव सास्कृतिक विषय को लिया जाता है। इसी प्रकार कई डायरियो म किसी विशेष स्थल व नगर का वणन होता है।

जीवनीपरक साहित्यरूपो के अतबन्ध

आत्मकथा और जीवनी—जब कोई लखक कुछ वास्तविक घटनाओ के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति की जीवनी कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है तो साहित्य का वह रूप जीवनी कहलाता है। इससे स्पष्ट है कि जीवनी कोई दूसरा व्यक्ति लिखता है। आत्मकथा गद्य का वह रूप है जिसम लेखक व्यक्तिगत जीवन का विवेचन निसकोच रूप से करता है और इसके साथ ही वह बाह्य विश्व स सम्बन्धित मानसिक क्रियाओ प्रतिक्रियाओ का विवेचन भी करता है। आत्मकथा लेखक स्वय लिखता है। जीवनी और आत्मकथा दोनो ही एसे व्यक्तियो की लिखी जाती हैं जिनका जनता म सम्मान होता है। वही व्यक्ति आत्मकथा लिखता है जिसका जीवन साधारण पुरुषो के जीवन से ऊचा होता है। यही बात जीवनी के विषय म कही जाती है। आत्मकथा का लेखक स्वय होता है इसलिए यह अधिक प्रामाणिक कही जा सकती है। इसम लेखक अपने ही जीवन का विश्लेषण निसकोच रूप से करता है। इसलिए इसमे किसी भी प्रकार का सदेह उत्पन्न नही हो सकता। लेखक पूर्ण ईमानदारी स अपने जीवन एव मस्तिष्क का विकास पाठक के सम्मुख रखता है। इस प्रकार सत्यवादिता एव स्पष्टता का

1 आलोचना उसके सिद्धान्त ले० डा० सोमनाथ गुप्त

लेखक म होना अत्यन्त आवश्यक है। आत्मकथा म सत्य से अभिप्राय विषयगत सत्य से नही कुछ सीमित विषय तक का सत्य है जिससे लेखक का जीवन बढता है एव जिसमे उसके विशेष गुण एव घटनाओ के परिपक्व होने की दृढता एव व्यावहारिक गुण एव आकृति स्पष्ट होती है।[1]

It will not be an objective truth but the truth in the confines of a limited purpose, a purpose that brows out of the author's life and imposes itself on him as his specific quality and thus determines his choice of events and the manners of his treat ment and expression

जीवनीकार भी अपने नायक के जीवन की प्रत्येक घटना का वणन तभी करता है जबकि उसके पास उसके विषय म कोई प्रमाण हो। वह भी अपने नायक के समस्त जीवन का नि सकोच रूप स वणन करता है। जीवनीकार भी सत्यपथ से कभी विचलित नही होता। यह हो सकता है कि दोष दशन मे उसके हृदय म सहृदयता की भावना ऐसी हो कि वह यथार्थता की रक्षा करता हुआ चरित्र नायक की दुबलताओ का परिहास न करे। जीवनीकार सत्य का पल्ला कभी नही छोडता। वह इसम मर्यादा की रक्षा के लिए सब कुछ त्याग करने को तयार रहता है।[2] इस प्रकार उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि आत्मकथा एव जीवनी मे जो कुछ भी वर्णित होता है वह सत्य होता है परन्तु जीवनी मे कई बार ऐसा देखा जाता है कि लेखक कभी-कभी श्रद्धा और प्रेम के अतिरेक म आकर नायक के गुणो का आवश्यकता स अधिक वणन कर जाता है परतु इसका यह अथ नही कि उसने दोषो का वणन नही करता वह भी करता है लेकिन अतर केवल *यही है कि उन दोषो का वणन वह ऐसे ढग से करता है* जिनका प्रभाव पाठक पर बुरा न पडे। इस प्रकार जीवनीकार अपने नायक के गुण दोषो का वणन सहृदयतापूवक करता है।

आत्मकथा लेखक का उद्देश्य आत्मनिर्माण आत्मपरीक्षण के साथ-साथ अतीत की स्मृतियो का पुनर्जीवित करने का मोह होता है। आत्मकथा लेखक आत्माकन द्वारा आत्मपरिष्कार एव आत्मोन्नति करना चाहता है इसके अतिरिक्त अन्य उद्देश्य यह भी हो सकता है कि लेखक के अनुभवो का लाभ अन्य लोग भी उठा सकें। यही बात जीवनीकार के उद्देश्य के विषय म भी कही जा सकती है। वही जीवनी उत्कृष्ट कही जा सकती है जिसको पढकर पाठक कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकें इस प्रकार आत्मकथा एव जीवनी लेखक का उत्तरदायित्व बडा गहन है। उन्ह यह देखना पडता है कि जो कुछ वे कह रहे हैं वास्तव म वह कथनीय है और उसमे कुछ भी अमगल नही है। उन्हें यह भी देखना पडता है कि जो कुछ वह दे रहे हैं वह सामान्य से ऊँचा है कि

1 Design And Truth in Autobiography by Prof Roy Pascal, P 83
२ समीक्षा शास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० १९९

नही और वह प्रेरणात्मक एव उत्साहवर्धक हैं इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी वर्णन शैली म सक्षिप्तता एव सत्यता का ध्यान रखना पडता है।

इस प्रकार उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि जीवनी और आत्मकथा दोनो का घनिष्ठ सम्बन्ध है। आत्मकथा सम्बन्धी प्रमाणो के बिना कोई भी जीवनी पूर्ण नही हो सकती। जिस व्यक्ति के विषय म लेखक लिखता है, उसके जीवन में घटित घटनाओ का वर्णन वह तभी करता है जब उसके पास नायक द्वारा कथित प्रमाण होते हैं। इस प्रकार दोनो विधाओ का परस्पर सम्बन्ध है। जहा जीवनी लेखक अपने नायक के समस्त जीवन का विश्लेषण करता है वह उन सभी प्रमाणो का सहारा लेता है परन्तु आत्मकथा म लेखक स्वय होता है और उसे किसी प्रकार की असुविधा नही होती है।

आत्मकथा लेखक एव जीवनीकार मे जहाँ कुछ समानताए हैं वहाँ अन्तर भी है। आत्मकथा लेखक के लिए भी उतनी ही समस्याएँ हैं जितनी जीवनी लेखक के लिए। दोनो विधाओ म विषय और बनावट दोनो दृष्टिकोणों से अन्तर है। यह स्पष्ट है कि आत्मकथा आन्तरिक दृश्य उपस्थित करती है जिसे रूसो ने मस्तिष्क का विकास कहा है एव जिस पर केवल आत्मकथा लेखक का ही अधिकार होता है। दूसरी ओर जीवनीकार कथित व्यक्तित्व म से जैसा कि उसका नक्शा होता होगा बडी गहराई और पीछे की ओर देखता है एव उसके साथ किए हुए व्यवहार का पूरी तरह से अनुभव करता है परन्तु सम्भाव्य चेतना का नही। व्यक्तित्व जोकि बाह्य विश्व को लक्षित होता है एव जैसीकि इसकी परिभाषा की जाती है अवश्य ही सम्भाव्य अप्रत्यय अनिश्चित एव अनुभवहीन सम्भावनाओ म युक्त होता है।

This is a problem for the biographer as much as for the autobiographer but the two forms are distinct in purpose as well as in form Obviously the autobiographer gives us the 'inside view' what Rousseau calls the chain of feelings' for which the autobiographer is often the only authority The biographer on the other hand works back inwards from the defined personality the portrait as it were realised behaviour is for him decisive not the conciousness of potentiality The personality that strikes the outer world as most defined must in self be conscious of multiple uncertainties and unrealised possibilities

इसम भाग आत्मकथा और जीवनी में और भी अन्तर है। हम ही अपने मस्तिष्क के विकास का प्रकट करने का अधिकार है जिस कि केवल हम स्मृति द्वारा ही व्यक्त कर सकते हैं लेकिन जीवनीकार केवल नोट किए हुए लाक पर ही निर्भर होता है एव जहाँ तक सम्भव हो सकता है उन नोट किए गए विषय सम्बन्धी संस्मरणो का ही विश्लेषण करता है—स्मृति पर विश्वास किया जा सकता है क्योंकि आत्मकथा म केवल भूतकाल की घटनाओ का एकत्रित ही नहीं किया जाता अपितु उनका विश्लेषण भी होता है। वास्तविक बात तो यह है कि मनुष्य अपने भूतकाल के

विषय मे क्या याद कर सकता है। यह वतमान काल मे भूत का निणय है जिसे एक बहुमूल्य पत्र या वाक्य कहा जा सकता है।

There is further es ential difference between autobiography and biography We are the only authority for the 'chain of feeling' in our lives and we establi h this chain mainly through memory The biographer depends on recorded data and as far as possible checks all subjective memories against records often in fact recti fying faulty recollections —Memory can be trusted because autobiography is not just reconstruction of the past but interpretations, the significant thing is what the man can remember of his past It is a judgment on the past within the framework of the present, a document in the case as well as a sentence [1]

इसस स्पष्ट है कि आत्मकथा और जीवनी म सम्बन्ध भी है और अन्तर भी है गद्य की दोना ही विधाएँ साहित्य म अपना विशेष स्थान रखती हैं।

आत्मकथा और डायरी

डायरी वह आत्मीय पुस्तक है जिसमे लेखक अपने जीवन म घटने वाली घटनाओं का वणन तो करता ही है परन्तु इसके साथ मानसिक प्रतिक्रियाओं का भी सक्षिप्त एव रोचक ढग स वणन करता है। यह आत्मकथा की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय होती है। इसम जिस समय घटना घटित हो रही होती है उस समय जो मन की स्थिति होती है उसका भी विवेचन होता है इसलिए इसम किसी भी प्रकार का बनावटीपन नही होता। आत्मकथा म भी लेखक जहाँ अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं का वणन करता है वहा उनके प्रति मानसिक प्रतिक्रियाओं का भी विश्लेषण करता है। इसकी दोना ही विधाओं म लेखक आत्म विश्लेषण एव आत्मविवेचन करता है।

गद्य की इन दोनो ही विधाओं म लेखक अपने व्यक्तित्व के गुण दोषो का विवेचन करता है अन्तर कवल इतना है कि आत्मकथा म इन घटनाओं का वणन सक्षिप्त होता है। डायरी म थोडा विस्तारपूवक होता है यद्यपि उसमे दिन प्रतिदिन का ब्यौरा होता है। इसके अतिरिक्त आत्मनिरीक्षण तो इनमे होता है कुछ अन्य व्यक्तियो के चरित्र पर भी प्रकाश डाला हुआ होता है जिनका प्रभाव लेखक के व्यक्तित्व पर पडा हुआ होता है। दोना ही विधाओं म तत्कालीन प्रसिद्ध व्यक्तियो के विषय मे लेखक के व्यक्तित्व के साथ साथ पाठक को पता चल जाता है।

आत्मकथा एव डायरी लखक का सवप्रिय एव सवप्रतिष्ठित होना आवश्यक है। प्रसिद्ध व्यक्ति ही अपनी डायरी एव आत्मकथा लिखते हैं। साधारण व्यक्ति के जीवन चरित्र का प्रभाव पाठकों पर नही पड सकता। इन लोगो के डायरी एव

1 Design And Truth in Autobiography by Roy Pascal, P 18 19

आत्मकथा लिखने का उद्देश्य यह होता है कि उनके जीवन से लोग कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकें। इसके साथ ही यह आवश्यक बात है कि कुछ ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं जिनके विषय में अनेक भ्रांतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। उनको दूर करने के लिए इनको प्रायः लिखा जाता है जिसमें उनके वास्तविक व्यक्तित्व की जानकारी लोगों को हो जाय।

इन समानताओं के होते हुए भी इन दोनों में कुछ भेद भी हैं जिससे इनको पृथक् पृथक् रखा गया है। डायरी में प्रत्येक घटना का जब वर्णन किया जाता है तब उसमें लेखक उसके घटित होने का स्थान, विशेष समय और सन का विशेष रूप से ध्यान रखता है और उनका उल्लेख करता है। इसके साथ ही जिस दिन वह घटना घटती है उस विशेष दिन का भी नाम लिखा हुआ होता है। आत्मकथा में ऐसा नहीं होता। इसमें किसी विशेष घटना का जिसका प्रभाव लेखक के जीवन पर आवश्यकता से अधिक पडता हो उसका ही विस्तारपूर्वक उल्लेख होता है वरन् तो उल्लेख मात्र ही होता है।

इसके अतिरिक्त आत्मकथा में जो सुसंगठितता एवं सुसम्बद्धता पाई जाती है वह डायरी में प्रायः नहीं होती। आत्मकथा में तो लेखक अपने जीवन का क्रमबद्ध इतिहास लिखता है। यदि उसमें कुछ टेढ़ापन आ जाये तो उसे तो समझना ही कठिन हो जाये। इसलिए जितनी सुसम्बद्धता का ध्यान आत्मकथा लेखक रखता है उतना डायरी लेखक नहीं। इसमें प्रायः असम्बद्धता पाई ही जाती है।

आत्मकथा और डायरी दोनों का अंतर प्रायः स्पष्ट ही है। आत्मकथा तो किसी विशेष समय और क्षण के जीवन की झाँकी होती है जबकि डायरी चाहे वह कितना ही प्रभावदायक क्यों न हो उसमें एक समय के क्षण में घटित अनेक घटनाओं का वर्णन क्रमानुसार होता है। डायरी लेखक उस समय में घटित घटनाओं में से महत्वपूर्ण घटनाओं को नोट कर लेता है जबकि उसके अंत की और विस्तृत भ्रम को वह नहीं उसमें संकलित कर सकता।[1]

> The formal difference between diary and autobiography is obvious The letter is a review of a life from a particular moment in time while the diary however reflective it may be, moves through a series of moments in time The diarist notes down what at that moment seems of importance to him its ultimate long range significance cannot be assessed

कुछ भी हो डायरी और आत्मकथा का सम्बन्ध भी है। आत्मकथा लेखक अपने विचारों और व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए डायरी की पंक्तियों को अवश्य लिखता है जिससे उसकी रचना अधिक प्रामाणिक बन जाय। डायरी और आत्मकथा में अंतर केवल इतना ही है कि डायरी में घटनाओं का वर्णन होता है और उस समय की

---

१ Design And Autobiography by Roy Pascal P 3

मानसिक एव अन्य परिस्थितियों का वर्णन होता है परन्तु आत्मकथा में लेखक उन घटनाओं का वर्णन कर उनके अन्तिम परिणाम का एव उनके प्रभाव का वर्णन कर आवश्यकतानुसार टीका टिप्पणी करता है। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि डायरी और आत्मकथा मे जहा परस्पर समानताएँ हैं वहा कुछ अन्तर भी है, दोनों का परस्पर सम्बन्ध भी है।

आत्मकथा और सस्मरण

जब लेखक अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरजित कर व्यजनामूलक सकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रमणीय एव प्रभावशाली रूप से वर्णन करता है तो उसे 'सस्मरण' कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि सस्मरण मे लेखक केवल अपने जीवन के उल्लेखनीय क्षणों का उल्लेख करता है। इसके साथ ही केवल उन्ही घटनाओं का उल्लेख होता है जिनसे लेखक के जीवन में घटित होने वाले परिवर्तनों का सकेत मिलता है और जो अन्य लोगों के कौतूहल को शान्त करने में सहायक होती है इसके अतिरिक्त आत्मकथा मे जीवन का आद्योपान्त सुसम्बद्ध विवरण प्रस्तुत किया जाता है। आत्मकथा मे लेखक अपने जीवन की प्राय आद्योपान्त कहानी लिखता है किन्तु आत्मसस्मरण में जीवन के एक खड के सस्मरण लिखता है। आत्मसस्मरण में जीवन को नई दिशा में मोडने वाली या औरो को सुनने वाली घटनाओं का उल्लेख किया जाता है। इस प्रकार का कार्य आत्मकथा से सरल है। आत्मकथा में अपने जीवन से सम्बन्ध रखने वाले अनेक व्यक्ति जीवित रहते हैं। उनके साथ सभी प्रकार का प्रिय अप्रिय व्यवहार समयानुकूल करना पडता है। अत उन सबको बचाते हुए राग द्वेष से पृथक होकर अपनी जीवनी लिखना अत्यन्त दुष्कर हो जाता है किन्तु आत्मसस्मरण में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करना होता है जिनको आसानी के साथ सबके सामने रखा जा सकता है।[1]

आत्मकथा लेखक का सम्बन्ध अन्तर्जगत् से अधिक रहता है जबकि सस्मरण लेखक का बाह्य जगत् से। आत्मकथा में लेखक प्राय उन्ही स्थलों का वर्णन अधिक मात्रा में करता है जिनसे उसका आन्तरिक विश्लेषण होता है। इसीलिए आत्मकथा में देशकाल कुछ गौण रहता है। सस्मरणों मे भी कुछ स्थल ऐसे आते हैं जिनमे लेखक आत्मविश्लेषण करता है परन्तु इसमें कई स्थल ऐसे आते हैं जिनमे लेखक को बाह्य जगत का विश्लेषण करना अनिवार्य हो जाता है। यात्रा सम्बन्धी सस्मरणों मे बाह्य जगत् का विश्लेषण प्रमुख रूप में होता है।

शैली की दृष्टि से आत्मकथा एव सस्मरण में समानता है। आत्मीयता, स्पष्टवादिता सुसगठितता एव स्वाभाविकता आदि गुण दोनों की ही शैली में होते हैं जो कि कृति को प्रभावोत्पादक बनाते हैं।

---

[1] समीक्षा शास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० २०२-२०३

संस्मरण और आत्मकथा दोनों ही प्रसिद्ध व्यक्ति लिख सकते हैं। दोनों लेखकों का उद्देश्य समान होता है। इस प्रकार कोई भी आत्मकथा ऐसी नहीं जिसे किसी न किसी रूप से संस्मरण न कहा जा सकता हो और कोई भी संस्मरण ऐसा नहीं है जिसमें आत्मकथात्मक सूचनाएँ न हों। दोनों ही काल क्रमानुसार, प्रभावात्मक, व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। परन्तु लेखक के ध्यान में एक साधारण अन्तर होता है। आत्मकथा में लेखक का ध्यान उसके अपने तक सीमित होता है पर तु संस्मरण में दूसरों की ओर होता है।[1]

There is no autobiography that is not in some respect a memoir and no memoir that is without autobiographical information both are based on personal experience chronological and reflectivo But there is a general difference in the direction of the author s attention In the autobiography proper attention is focused on the self in the memoir on others

रेखाचित्र और संस्मरण

रेखाचित्र साहित्य का वह गद्यात्मक रूप है जिसमें एकात्मक विषय विशेष का शब्द रेखाओं से संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि रेखाचित्र व्यक्ति के सम्पूर्ण चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। यह संस्मरणों की भांति जीवन के किसी एक पक्ष का विवरण न देकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का दृश्य-सा उपस्थित कर देते हैं। यह दृश्य इस ढंग का होता है कि उससे व्यक्ति के बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व की झाँकी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। संस्मरण लेखक तो अपने नायक का विश्लेषण स्वयं करता है परन्तु रेखाचित्र लेखक तो पाठक के सम्मुख शब्द रेखाओं द्वारा एक चित्र सा रख देता है जिससे पाठक को उस चित्रित व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वयं अनुभव हो जाता है। इस प्रकार रेखाचित्रकार चित्रकार की भांति होता है। वह तो चित्रकार की तरह चित्र खींच कर पाठक के सम्मुख रख देता है। अब यह पाठकों का कर्तव्य हो जाता है कि वे उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण करें। संस्मरण लेखक की भांति वह स्वयं नायक के चरित्र का विश्लेषण नहीं करता। संस्मरण चरित्र के किसी एक पहलू की झाँकी देते हैं किन्तु रेखाचित्र व्यक्ति के व्यापक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते है। उनमें व्यक्ति का भीतरी और बाहरी आपा या स्वल्पता कुछ स्पष्ट रेखाओं में व्यक्त हो जाती है। उसमें कुछ कुछ व्यंग्य चित्रकार की सी प्रवृत्ति रहती है। उसमें व्यक्ति की प्रवृत्तिगत विशेषताएं कुछ बढ़ा चढ़ाकर दिखाई जाती हैं जिससे वह सहज में आकर्षण का विषय बन सकें।[2]

संस्मरण और रेखाचित्र में एक प्रमुख भेद यह है कि संस्मरण में लेखक पर

1 Design and Truth in Autobiography by Roy pascal P 5

२ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० २५०

शब्द-योजना और वाक्य विन्यास सम्बन्धी कोई नियन्त्रण नही होता किन्तु रेखाचित्र के विषय म ऐसा नहीं है। रेखाचित्रकार की सीमाए निश्चित हैं उसे तो कम से कम शब्दो म सजीव रूप विधान और छोटे से छोटे वाक्य स अधिक से अधिक तीव्र और मर्मस्पर्शी भाव व्यजना करनी पडती है। अपने इस काय मे वही कलाकार सफल हो सकता है जिसका हृदय अधिक सवेदनशील और जिसकी दृष्टि सूक्ष्मपयवेक्षण, निपुण एव मर्म भेदी होती है।[1] रेखाचित्र वणनात्मक अधिक होते हैं और सस्मरण विवरणात्मक अधिक होते हैं। सस्मरण जीवनी साहित्य के अन्तगत आते हैं। य प्राय घटनात्मक होते है किन्तु वे घटनाएँ सत्य होती हैं और चरित्र की परिचायक भी। रेखाचित्र म वणन का प्राधान्य होता है किन्तु इनके विषय काल्पनिक नही होते हैं। ये सजीव और निर्जीव दोनो ही व्यक्तियो के होते है।[2]

इससे स्पष्ट है कि रेखाचित्र और सस्मरण म यद्यपि विषय और शैली की दृष्टि से भेद है फिर भी इन दोनो का घनिष्ठ सम्बन्ध है। रेखाचित्र मे जिन घटनाओ का वणन किया जाता है वे सस्मरण पर आधारित होती हैं और सस्मरण म जिस घटना व व्यक्ति के जीवन के जिस भी भाग का चित्रण किया जाता है उस चित्रण म अवश्य ही रेखाचित्र की शैली का प्रयोग किया हुआ होता है। यद्यपि वह चित्रण उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की झलक नही देता पर जितना भी वह होता है उतना ही बहुत तीव्र एव स्पशदायक होता है।

इन विधाओ द्वारा विशिष्ट शैलियो का अवधारण

गद्य की इन विधाओ द्वारा कुछ विशिष्ट शैलियो का हिन्दी साहित्य म अवधारण हुआ है जो इस प्रकार है—

जीवन चरित शैली

शैली अनुभूत विषय-वस्तु को सजाने के उन तरीको का नाम है जो उस विषय-वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एव प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

जीवन चरित्र लेखक को अपने नायक के काल्पनिक रूप की सृष्टि नही करनी पडती उसे तो केवल साचा तैयार करना पडता है। यह साचा शैली के नाम से पुकारा जा सकता है।[3] चरित्र नायक के व्यक्तित्व को लेखक इस ढग से वणन करता है जिसस वह पाठको को प्रभावोत्पादक प्रतीत हो। उसके व्यक्तित्व को ही प्रेरणादायक एव आकषक बनाने के लिए लेखक को अपनी शैली का बहुत ध्यान रखना पडता है।

नायक के समस्त जीवन को क्रमानुसार वणन करना पडता है जिससे वह असम्बद्ध प्रतीत न हो। इसके लिए उसे अनावश्यक घटनाओ का निवारण करना पडता है। अन्य प्रमुख बात यह है कि उसे तटस्थ होकर नायक के व्यक्तित्व के गुण दोषो

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धात, ले० त्रिगुणायत पृ० ४६०
२ काव्य के रूप, ले० गुलाबराय पृ० २५२
३ समीक्षा शास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० १६६

का ब्योरा करना पडता है। आवश्यकता से अधिक गुणों का कथन हानिकारक होता है। इसी प्रकार दोषों के वर्णन में कहा जा सकता है। इस कार्य में लेखक का तटस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार जीवन चरित शैली में सुसंगठितता सम्बद्धता निरपेक्षता तटस्थता एवं स्वाभाविकता आदि गुणों का समावेश होता है।

जीवन चरित लिखने में लेखक कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग करता है जिनके सम्मिश्रण से वह अपने भावों को व्यक्त करता है। जब लेखक नायक के नख-शिख एवं वेशभूषा का वर्णन करता है तब वहाँ हम वर्णनात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। जहाँ वह उसके जीवन में सम्बन्धित घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है वहाँ विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इतर परिचित जीवनियों में कहीं कहीं औपन्यासिक शैली का भी आभास होता है। लेखक नायक के जीवन को और भी स्पष्ट करने के लिए कहीं कहीं उसके वार्तालाप को ज्यों का त्यों स्पष्ट रूप से रख देता है जो कि इस शैली का एक विशिष्ट गुण है। इस कथात्मक शैली का प्रयोग नायक के जीवन सम्बन्धी घटनाओं यात्राओं और तथ्यों आदि के कथन में करता है। जीवनी लिखने में लेखक संस्मरणों का प्रयोग भी करता है इसलिए जितने भी संस्मरणों का समावेश जीवनी में होता है वे प्रभावोत्पादक होने के साथ-साथ नायक की प्रामाणिकता की ओर संकेत करते हैं। इन सभी के सम्मिश्रण को ही जीवन चरित शैली कहा जा सकता है। आवश्यकतानुसार इन सभी शैलियों का प्रयोग जीवन चरित शैली में किया जाता है।

आत्म चरित शैली

इस शैली की जीवनियों का लेखक स्वयं चरितनायक होता है। लेखक के लिए अपने चरित्र का विश्लेषण सुगम काम नहीं है सब ओर से साहस बटोरकर लेखक आत्मविश्लेषण करने बैठता है। ऐसा करने से पहले उसे अपनी आत्मा को उज्ज्वल और गर्वहीन बनाने की आवश्यकता होती है। अपनी कमजोरियों को पहचानना और सब के सामने उन्हें स्वीकार करना साधारण आत्मा का कार्य नहीं है।[1] इसलिए लेखक को आत्म चरित लिखने में निःसंकोच आत्मविश्लेषण करना पडता है। आत्मकथा को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए लेखक को अपनी शैली सुदृढ बनानी पडती है। शैली को सुदृढ बनाने के लिए उसमें वह सुसम्बद्धता स्पष्टता संक्षिप्तता एवं स्वाभाविकता आदि गुणों का समावेश करता है। इन गुणों से युक्त होने पर ही आत्मकथा शैली को उत्कृष्ट एवं परिपक्व कहा जा सकता है।

आत्मचरित शैली में भी हमें अनेक शैलियों का प्रयोग लक्षित होता है जिनके सम्मिश्रण से यह शैली परिपक्व बनती है। आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए डायरी के कुछ अंशों का समावेश अवश्य करता है।

---

१ आलोचना के सिद्धांत, ले० डा० सोमनाथ गुप्त, पृ० २२६

इसके अतिरिक्त कही-कही वह अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध दिखाने के लिए या अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विषय म कुछ कहने के लिए पत्रो का भी समावेश करता है। कही-कही सस्मरणो के रूप मे भी आत्म विवेचन होता है। जब लेखक सम्पर्क मे आए अन्य व्यक्ति की वेशभूषा व नख शिख का वर्णन करता है तब वर्णनात्मक शली का भी दिग्दर्शन होता है। जब वह अपना सम्बन्ध किसी अन्य पुरुष से या किसी विषय सम्बन्धी विवाद को ज्यो का त्यो अपनी आत्मकथा म रखता है वहा कथात्मक शैली की झलक दिखाई पडती है। मेरा यहा यह कहने का अभिप्राय नही कि इन सभी शैलियो का प्रयोग करना उसका उद्देश्य है बल्कि अपनी कृति को अधिक स्पष्ट एव प्रामाणिक बनाने के लिए उसे ऐसा करना पडता है। इस प्रकार आत्मचरित शैली मे आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार की शलियो का प्रयोग लेखक कर सकता है। इन सभी का प्रयोग तो वह गौण रूप स करता है, प्रधानता तो आत्मकथात्मक जीवन चरित शली की ही होती है।

रेखाचित्र शली

रेखाचित्र की कला बहुत कुछ फोटोग्राफी की कला की तरह है। रेखाचित्रकार विश्व की किसी भी चेतन अथवा अचेतन वस्तु का चित्र अपने शब्दो द्वारा बना लेता है। वह जसा चित्र होता है वैसा ही अकित करता है इसलिए रेखाचित्र शैली म चित्रात्मकता की प्रधानता होती है।

रेखाचित्रकार सीमित क्षेत्र म ही भावाभिव्यक्ति कर सकता है। इसलिए इस शली मे सक्षिप्तता होती है। प्रत्येक चित्र जो भी लेखक खीचता है उस पर उसके व्यक्तित्व का अवश्य ही प्रभाव पडा हुआ होता है। प्रत्यक व्यक्तित्व का चित्रण इस ढग से होता है जो कि प्रत्येक पाठक को आकर्षक, प्रेरणादायक एव प्रभावोत्पादक प्रतीत होता है। इस प्रकार रेखाचित्र शली म चित्रात्मकता, सक्षिप्तता, स्वाभाविकता एव प्रभावोत्पादकता आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

कही-कही लेखक अपने विभिन्न विचारो और भावो को स्पष्ट रूप से वर्णन करने के लिए विभिन्न शैलियो का प्रयोग अपनी इस शली के भीतर करता है। जब लेखक ऐतिहासिक, पौराणिक वस्तुओ और घटनाओ के रेखाचित्र प्रस्तुत करता है वहा कथात्मक शली का प्रयोग करता है क्योकि एसे रेखाचित्रो मे उसकी चित्रण शैली वस्तुपरक अधिक होती है। इस शली म लखक अपने विषय एव वर्णन को स्पष्ट करने के लिए कथोपकथन का भी प्रयोग कर लेता है। कई रेखाचित्रो म लेखक सस्मरण शली का प्रयोग करता है। जब लेखक किसी वस्तु घटना या व्यक्ति का स्मृतिमूलक अकन करता है तब वह इस शली का प्रयोग करता है। कही कही लेखक किसी वस्तु एव घटनाओ के चित्रण स कोई लाक्षणिक अर्थ या सन्देश व्यजित करता है तो वहाँ वह प्रतीकात्मक शली का प्रयोग करता है। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार अपनी शैली म इन विभिन्न शलियो का प्रयोग कर सकता है। इन

शलियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करके वह अपनी रेखाचित्र शैली को परिपक्व बनाता है।

संस्मरण शैली

संस्मरण लेखक अपने जीवन से सम्बन्धित भी लिख सकता है और अन्य व्यक्ति के जीवन के विषय में भी पर दोनों में उसके व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव पड़ा हुआ होता है। इस शैली में प्रभावोत्पादकता रोचकता स्पष्टता, आत्मीयता आदि विशेषताएं होती हैं।

जब लेखक व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित संस्मरण लिखता है तो उसमें आत्मकथात्मक शैली की विशेषताएं पायी जाती हैं। जब लेखक कुछ घटनाओं एवं यात्राओं का वर्णन संस्मरणों में प्रकट करता है तो इसमें वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। कुछ लेखक निबन्धात्मक शैली में संस्मरण लिखते हैं उनके जीवन का प्रत्येक संस्मरण निबन्धों की भाँति स्वतन्त्र होता है। परन्तु इन सभी शैलियों के वर्णन में वह संस्मरण शैली की विशेषताओं को नहीं भूलता जो कि उसे परिपक्व बनाती हैं। विषय की आवश्यकतानुसार इन सभी शैलियों का प्रयोग वह कर सकता है। इस शैली की विशेषता यह है कि इसमें लेखक चरित्र के चित्रण के साथ साथ उसका विश्लेषण भी करता है। संस्मरण शैली में चरित्र नायक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं होता यह तो जीवन की किसी एक झाँकी का वर्णन विश्लेषणात्मक ढंग से करता है। प्रत्येक वर्णित विषय अपने में स्वतन्त्र होता है।

पत्र एवं डायरी शैली

पत्र शैली—पत्रात्मक शैली गद्य की अन्य विधाओं की शैलियों से पृथक होती है। इस शैली में सर्वप्रमुख विशेषता आत्मीयता है। पत्र साहित्य में लेखक का अपनापन स्वतन्त्र रूप से प्रकट होता है। इस आत्मीयता का सम्बन्ध लेखक के अपने व्यक्तित्व के साथ तो होता ही है दूरस्थ व्यक्ति से भी होता है। अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि पत्र लेखक पत्र भाव ग्राहक के अनुकूल लिखता है। इन दोनों विशेषताओं से सम्बद्ध होने पर ही यह पत्र शैली प्रभावोत्पादक हो सकती है।

कुछ पत्र ऐसे होते हैं जिनमें लेखक किसी विषय का वर्णन करता है। यह विषय साहित्यिक राजनैतिक कोई भी हो सकता है। ऐसे पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व गौण होता है और विषय प्रधान होता है। ऐसे पत्रों में व्यास शैली और समास शैली दोनों का ही प्रयोग होता है। जो आत्मकथात्मक पत्र होते हैं उनमें आत्मकथा शैली की विशेषताएं पाई जाती हैं। जो पत्र किसी अन्य व्यक्ति के चरित्र को स्पष्ट करने के लिए लिखे जाते हैं उनमें जीवन चरित शैली का दिग्दर्शन होता है। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग पत्रों में वहाँ पाया जाता है जहाँ किसी विशेष स्थान नगर का वर्णन होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पत्र शैली में भी अन्य शैलियों का प्रयोग आवश्यकता

नुसार होता है परन्तु इसके मूल म पत्र शैली की प्रमुख विशेषताएँ सुदृढता से रहती हैं इसलिए यह परिपक्व शैली बन जाती है।

डायरी शैली —डायरी शैली भी गद्य की अन्य शलियो से पृथक है। इस शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि इसम लेखक अपने प्रतिदिन का वणन समय तिथि एव स्थान के आधार पर करता है। नि सकोच आत्मविश्लेषण घटनाओ मे सम्बद्धता सजीवता पर्याप्त स यता, स्वाभाविकता आदि विशेषताएँ इस शैली म होती हैं। इस शैली म कुछ एसी घटनाओ का वणन करता है जो ससमरण प्रधान होती हैं इसलिए उनमें ससमरण शैली की विशेषताएँ प्राप्त होती ह। जिन डायरियो का विषय सामाजिक एव सास्कृतिक होना है उनकी शैली चिन्तनात्मक होती है। कई स्थानो पर लेखक किसी विशेष नगर व स्थान का वणन करता है वहा वणनात्मक शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होना है। कवि लोगो द्वारा लिखी हुई डायरियो मे भावात्मक शैली का पुट होता है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि डायरी शैली मे आवश्यकतानुसार विभिन्न शैलियो का प्रयोग हो सकता है परन्तु इसके मूल म वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो कि डायरी शैली म बताए गय हैं।

इन विधाओं में अन्य विधाओ का पारस्परिक सयोग तथा इनके अन्तर्बन्ध

नाटक, उपन्यास और जीवनी—उपन्यास गद्य की वह विधा है जिसम लेखक नायक के समस्त जीवन का चित्रण, आद्योपान्त करता है परन्तु नाटक की स्थिति इससे कुछ भिन्न है। इसम नाटककार नायक के जीवन के कुछ विशेष स्थल एव समय का चित्रण करता है।

नाटक यद्यपि दृश्यकाव्य के भीतर आता है पर उपन्यास मे भी कुछ विशष स्थल ऐस होते हैं जिनमे नाटकीय शैली का प्रयोग होता है। इससे प्रतीत होता है कि नाटक उपन्यास म स ही निकला हुआ एक टुकडा है जो कि जीवन के किसी विशेष भाग का चित्रण नाटकीय ढग से प्रस्तुत करता है।

नाटककार अपने पात्रो का एव नायक का व्यक्तित्व अन्य पात्रो के वार्तालाप एव हावभाव क्रियाओ स ही व्यक्त कर सकता है। वह पाठको के सम्मुख नहीं आ सकता परन्तु उपन्यास म ऐसा नहीं होता। उपन्यासकार के लिए इस प्रकार की कोई पाबन्दी नहीं है। उस इस बात की स्वतन्त्रता रहती है कि वह पाठको तक अपने पात्रो के माध्यम स पहुचे या सीधा ही उनके सामने आ जाए। वह उपन्यास मे प्रत्यक्ष (Direct) या नाटकीय (Indirect) दोनो प्रणालियो मे स जब जिसकी आवश्यकता हो उसका प्रयोग कर सकता है। जब वह दखता है कि नाटकीय प्रणाली द्वारा उसके पात्र पाठको पर पूरी तरह नहीं खुल पाए तो वह उपन्यास म प्रकट होकर उनके क्रियाकलापो के पीछे काम करने वाले आन्तरिक प्रेरको पर प्रकाश डालता हुआ उनम सामजस्य ला दता है। नाटककार को यह स्वतन्त्रता उपलब्ध नहीं है। उसके पात्र नाटकीय प्रणाली स जितना खुल पाएँ दर्शको को उतने मे ही सन्तोष करना पडता

है। यह नाटककार की लाचारी है। इसलिए नाटककार के पात्रों का चारित्र बहुधा स्पष्ट नहीं हो पाता।[१] उपन्यास में कल्पना का पूरा संयम और व्यायाम रहता है। उपन्यासकार विश्वामित्र की भी सृष्टि बनाता है किन्तु ब्रह्मा की सृष्टि के नियमों से भी बँधा रहता है। उपन्यास में सुख, दुःख प्रेम, ईर्ष्या द्वेष, आशा, अभिलाषा, महत्वाकांक्षाओं, चरित्र के उत्थान-पतन आदि जीवन के सभी द्वन्द्वों का समावेश रहता है। उपन्यास में नाटक की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्रता है किन्तु नाटक के मूर्त साधनों के अभाव में उपन्यासकार उन सभी को शब्द चित्रों द्वारा करता है। नाटक में पात्र कुछ शब्दों द्वारा व्यंजित करते हैं कुछ भाव भंगी द्वारा। दर्शक की कल्पना पर अधिक जोर नहीं देना पड़ता। उपन्यासकार को नाटककार की भांति समय और आकार का भी प्रतिबन्ध नहीं है नाटककार ईश्वर की भांति अपनी सृष्टि में अव्यक्त ही रहता है वह प्रत्यक्षरूप से स्वयं कुछ नहीं कहता जो कुछ कहना होता है पात्रों द्वारा ही कहलाता है।[२] इससे स्पष्ट है कि नाटक और उपन्यास में अन्तर होते हुए भी सम्बन्ध है। उपन्यास में से ही निकला हुआ एक टुकड़ा है। इस नाटकीय शैली का प्रयोग उपन्यासकार आवश्यकतानुसार अपनी कृति में करता है। अगर उसको अथवा उस विशेष स्थल को जिसमें इस शैली का प्रयोग हो निकाल कर रख दिया जाए तो कुछ आवश्यक परिवर्तनों के पश्चात् उसे नाटकीय शैली से सम्बद्ध जीवन का वर्णन कहा जा सकता है।

उपन्यास और जीवन चरित्र में भी जहाँ कुछ समानताएँ हैं वहाँ अन्तर भी हैं। यद्यपि इन दोनों विधाओं में किसी व्यक्ति के जीवन का चित्रण होता है परन्तु अन्तर इतना है कि उपन्यास का नायक कल्पित होते हुए भी समाज में दृष्टिगोचर होने हुए व्यक्तियों में से एक होता है और जीवनी लेखक का नायक कोई विशिष्ट एवं श्रद्धेय व्यक्ति होता है।

नायक के जीवन चरित्र को स्पष्ट करने के लिए दोनों ही लेखक कल्पना का प्रयोग करते हैं। उपन्यास में रचनात्मक कल्पना का कुछ अधिक पुट रहता है। जीवनीकार भी कल्पना का प्रयोग करता है किन्तु वह सामग्री के संयोजन और प्रकाशन की विधि में उससे काम लेता है। फिर भी उसकी कल्पना वास्तविकता से सीमित रहती है वह कल्पना के अलंकारों से अपने चरित्र नायक की इतनी ही साज-सम्भाल कर सकता है जितनी में कि उसका आकार प्रकार न बदलने पाए। वह उस माँ की भाँति है जो अपने बालक को नहला धुलाकर बाल सम्हालकर तथा धुले कपड़े पहना कर समाज में भेजती है। कपड़ों के चुनाव में वह अपनी रुचि और कल्पना से काम लेती है किन्तु वह आकृति की असलियत को बदलने वाले पाउडर पेंट का कम प्रयोग

---

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त ले० गोविन्द त्रिगुणायत पृ० ४१८

२ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० १५८

करती है।[1] इसस यह प्रतीत होता है कि दाना ही विधाओ मे कल्पना का प्रयोग होता है परन्तु जीवनी मे लेखक वास्तविकता का अधिक महारा लेता है। जीवनी मे कल्पना और अत्युक्ति की इतनी कम व अल्पमात्रा मिलती है जितनी आटे मे नमक की होती है। उपन्यासकार अपनी कला के वल स ऐसी रचना करता है जिसे पढकर सोचना पडता है कि यह चरित नायक कौन हो सकता है। उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य नायक के चरित्र को कल्पना से अलकृत कर आकर्षक रूप म पाठका के सामने रखने का होता है और इसके लिए वह जीवन की घटनाओ पर कई ऐस झीन आवरण चढाता है जिनम नायक का रूप सुन्दरतर होकर झाकता रहता है किन्तु जीवनी लखक इस माह म अधिक नही फँसता, वह आकृति को सुन्दरतर करने के लिए मस्तक को बिन्दी स वक्षस्थल को चदन से केशो को पुष्प से भले ही सजा द किन्तु वास्तविक रूप को आवरण म ढकता नही।[2]

उपन्यासकार अपने पात्रा की नस नस से परिचित होना है उनके वाह्यान्तर का भली प्रकार जानता होता है इसलिए उपन्यास म उन पात्रो के व्यक्त और अव्यक्त दोना ही रूपा का चित्रण मिल जाता है। उनके बारे मे कुछ अज्ञात नही रहता। जीवनीकार अपन पात्रो को उतना ही जान पाता है जितना उसके सामने वे खुले हुए होते है। शेष उसके लिए रहस्य रहता है। इसलिए जीवनी मे पात्रो का व्यक्त रूप ही चित्रित हो पाता है और पाठको की उनका अधूरा परिचय ही मिल पाता है। उपन्यास के पात्रा की तरह वे जीवनी के पात्रा के मन की गहन गहराइयो म गोता नही लगा पाते और उनका वह रूप पाठका के लिए अज्ञेय ही रह जाता है।[3] इस प्रकार उपन्यासकार अपने चरित नायक क व्यक्तित्व का जीवनीकार की अपेक्षा अधिक जानता है। जीवनीकार तो उपन्यासकार की भाति सर्वज्ञता का भी दावा नही कर सकता है। वह द्रष्टा के रूप म रहता है। वह अपन चरित्र नायक के बहुत से रहस्या को जानता है किन्तु फिर भी वह उसके मन की सब बातो को पूरी दृढता के साथ नही कह सकता है। अज्ञात विषया के सम्बध म वह अनुमान ही से काम लेता है।[4] इसी बात को डा० दशरथ ओझा ने भी पूर्ण रूप स स्वीकार किया है। वह लिखते हैं कि उपन्यासकार को अपरिचित होत हुए भी यह गर्व है कि वह चरित्र नायक की नस नस को पहचानता है किन्तु जीवनी लेखक सब भेदा और रहस्या को जानत हुए भी सर्वज्ञता का दावा नही करता। जीवनीकार चरित्र नायक की वाह्य और आभ्यान्तर स्थितिया का सामजस्य करता हुआ कहता चलता है क्योकि उपन्यासकार

---

१ काव्य क रूप, ले० गुलाबराय पृ० २३७
२ समीक्षा शास्त्र, ले० दशरथ ओझा, पृ० १९८
३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धात ले० गोविन्द त्रिगुणायत, पृ० ४१६
४ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० २३७

रखता है उसमे उसका पूर्णतया वर्णन होने पर भी आकार सीमित होता है। इसी प्रकार रेखाचित्र का भी सीमित ही आकार होता है।

रेखाचित्र म जीवन क किसी एक भाग का वर्णन नही होता, वह तो समस्त जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता हैं। इनम सबस मुख्य बात यह ध्यान देनी है कि इनम वर्णन के अतिरिक्त विश्लेषण नहीं होता, इस रेखाचित्रो की झाँकी अन्य चरित्रमूलक पत्रो म पाई जाती है। जिन पत्रो का उद्देश्य किसी अन्य व्यक्ति के चरित्र का वर्णन होता है उनम पत्र लेखक रेखाचित्रकार की भांति नायक के चरित्र का वर्णन करता है। आकार सीमित होने के कारण रेखाचित्र की झलक दिखाई देने लगती है।

जिस प्रकार रेखाचित्रो का विषय चेतन और अचेतन दोनों म होता है उसी प्रकार पत्र भी दोनो विषयो स सम्बन्धित होते हैं। जिन पत्रो म किसी स्थान एव नगर का वर्णन होता है व उन रेखाचित्रो जसे होते हैं जिनम निर्जीव पदार्थों का चित्रण होता है। विषय एक होते हुए भी पत्र और रेखाचित्र म अन्तर यह है कि पत्र लेखक अपने व्यक्तित्व की विद्वत्ता के अनुसार साथ-साथ कही टीका टिप्पणी भी संक्षिप्त रूप से कर सकता है परन्तु रेखाचित्र तो चित्रकार की तरह चित्र ही खींच देता है।

जिस प्रकार आत्मकथात्मक पत्रो म लेखक का व्यक्तित्व झलकता दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार संस्मरणात्मक शैली म लिखे हुए रेखाचित्रो म जिनम किसी वस्तु घटना या व्यक्ति का वर्णन होता है लेखक का व्यक्तित्व उभरता है य समस्त रेखाचित्र वर्णनात्मक होते है। इन सबका चित्रण लेखक तटस्थ भाव से नही कर पाता व उसकी अनुभूति और आस्थाओ स प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। इन सबका सम्बन्ध लेखक के साथ होता है इसलिए आत्मानुभूति का स्वर साथ-साथ मुखरित हो जाता है।

डायरी किसी व्यक्ति के समस्त जीवन का प्रतिबिम्ब होती है। इसम लेखक अपने जीवन म घटित घटनाओ का वर्णन समय व स्थान के अनुसार करता है। रेखाचित्रकार भी जिस भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करता है वह उसके समस्त व्यक्तित्व की झाँकी होती है वह अपनी शब्द रेखाओ से ऐसा चित्रण करता है कि स्वय ही उसका बाह्य और आन्तरिक रूप स्पष्ट हो जाता है। इसका उद्देश्य तो चित्रण करना ही होता है। इसी प्रकार डायरी लेखक भी अपनी घटनाओ का वर्णन इस प्रकार करता है कि उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण स्वय ही हो जाता है।

डायरी म जब लेखक किसी विशेष स्थान या नगर का चित्रण करता है तब उसकी शैली रेखाचित्रकार की सी हो जाती है जिस प्रकार रेखाचित्रकार शब्द रेखाओ से ऐसा चित्र खींचता है जोकि आकार म सीमित होते हुए भी आकर्षक प्रतीत होता है। ठीक इसी प्रकार डायरी लेखक भी किसी स्थान या नगर के चित्रण म करते हैं। अत स्पष्ट है जब डायरी लेखक किसी वस्तु स्थान या घटना का वर्णन करते हैं वहाँ रेखाचित्रकार की शैली को अपनाते हैं अन्तर केवल इतना है कि डायरी म सभी घटनाओ का वर्णन समय एव स्थान के अनुसार होता है परन्तु रेखाचित्र म इस ओर कोई

विशेष ध्यान नही दिया जाता। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र का सम्बन्ध डायरी और पत्र दोनो से ही है।

नाटक, काव्य तथा गद्यगीत

'काय एक यापक श द है इसमे गद्य और पद्य दोनो का ही विस्तत समावेश हो जाता है। इसलिए नाटक का समावेश काय के भीतर ही हो जाता है। नाटक की उत्पत्ति ही नत्य, सगीत और काव्य से हुई है। इसलिए काव्य और नाटक का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

नाटक समय और स्थान की सीमाओ से बँधा हुआ होता है और यह दृश्य काव्य के भीतर आता है। नाटक म जीवन के किसी भी भाग का सीमित चित्रण होता है। काय म लखक सम्पूण जीवन का चित्रण भी कर सकता है और एकागी जीवन का भी अतर केवल इतना है कि नाटक गद्यमयी रचना है और काव्य गद्य-पद्यमयी।

काव्य म लखक अपने नायक एव पात्रो की भावनाओ और अनुभूतियो का अलकृत शली म वणन करता है परतु नाटको म यह बात केवल काव्य नाटको म ही पायी जाती है। काय नाटक कायत्व और रूपकत्व का सगम स्थल है। काव्य तव और नाटक तव आकर इसम एक स्वरूप विधान की सष्टि कर देत है जिसम काव्यत्व के कारण मानव जीवन के रागतत्व बडी स्पष्टता से उभर कर आते हैं व भावनाएँ और अनुभूतिया अपनी तीव्र और वेगवती धारा म हम अपने साथ बहा ले जाते है। आवगो की तीव्रता क कारण काव्य नाटक म छन्दोबद्ध लयपूण और अलकृत भाषा का यवहार किया जाता है।[1]

काव्य म लेखक अपने व्यक्तित्व को प्रयक्ष एव परोक्ष दोनो ही प्रकार से व्यक्त कर सकता है। कवि की कृति म उसका व्यक्तित्व नायक नायिका के रूप मे अभि यक्त होता है। कवि का उद्देश्य है अपने कवि जीवन के अनुभव को अभिव्यक्त करना। कवि की कल्पना एव उसके अनुभव म जीवन की जो मूर्ति झलकती है उसी की प्रतिमूर्ति उसक नायक नायिका म प्रस्फुटित होती है—कवि का व्यक्तित्व उसकी कृतिया म नायक नायिका की प्रतिमूर्ति बनकर पाठक के सामन उपस्थित होता है। कवि के व्यक्तित्व और उसक काय का यही अविच्छिन्न सम्बन्ध है।[2] गीतिकाय म तो कवि का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप स ही दखन म आता है। नाटक म लेखक अपने व्यक्तित्व एव विचारो को परोक्ष रूप से उनम वर्णित पात्रो के सवाद द्वारा व्यक्त करता है।

दोनो ही विधाओ का उद्देश्य रस की उत्पत्ति करना है। प्रसादात्मकता और मनोरजन के उद्देश्य से ही इनकी रचना की जाती है। अत स्पष्ट है कि काव्य और नाटक का घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी दोनो म अतर है।

---

१ हिन्दी साहित्य कोष पृ० २५५

२ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह,

गद्यकाव्य एव काव्य का भी पारस्परिक सम्बन्ध है। गद्यकाव्य गद्य और पद्य के मध्य की वस्तु है। इसमे पद्य के अनुरूप भावना और अनुभूति की प्रधानता रहती है साथ ही गद्य की स्वच्छदता भी रहती है। उसमे छन्द के बन्धन नही होते पर उनकी सी लय अवश्य रहती है। दूसरे शब्दो म छन्द का आनन्द इसमे विद्यमान रहता है।[1] गद्यकाव्य जिसे दूसरे शब्दो मे गद्यगीत कहा जा सकता है इसका सम्बन्ध गीतिकाव्य से है। दोनो मे अन्तर इतना है कि गीतिकाव्य मे छन्द का बन्धन होता है परन्तु गद्यगीतो म नही।

गद्यकाव्य की भाषा गद्य की होती है किन्तु भाव प्रगीत काव्यो म से। गद्य के शरीर म से पद्य की सी आत्मा बोलती हुई दिखाई देती है। भाषा का प्रवाह भी साधारण गद्य की अपेक्षा कुछ अधिक सरस और सगीतमय होता है। गद्यकाव्य म रूपको और अन्योक्तियो का प्राधान्य रहता है। इसमे कहानी की भाति एक ही सवेदना रहती है किन्तु जहा वह प्रलाप शैली का अनुकरण करता है वहा अन्विति का अभाव भी भावातिरेक का द्योतक होता है—गद्यकाव्य की अपेक्षा कुछ गद्यगीत भी लिखे गए हैं। उनम साधारण गद्यकाव्य की अपेक्षा गति और लय कुछ अधिक होती है और पक्तियो का विन्यास भी कुछ कुछ गीतो का सा होता है। अपेक्षाकृत आकार भी छोटा होता है।

इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि गद्यगीत गीतिकाव्य से समता रखते हैं। इस प्रकार काव्य और गद्यगीत का पारस्परिक सम्बन्ध है। काव्य की एक विशिष्ट धारा गीतिकाव्य म जो विशेषताएँ पाई जाती हैं वे सभी गद्यगीतो मे हैं अन्तर केवल छन्दोबद्ध होने का है। फिर भी इस प्रकार के गद्य म भावावेश के कारण एक प्रकार की लययुक्त झकार होती है जो सहृदय पाठक के चित्त को भावग्रहण के अनुकूल बनाती है।

उपयुक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि काव्य का सम्बन्ध नाटक और गद्य दोनो से ही है।

रिपोर्ताज और पत्रकारिता

जब किसी घटना या वृत्त का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उस वृत्त का सक्षिप्त रूप पाठक के समक्ष उपस्थित हो जाता है साथ ही उसमे वह प्रभावित हो जाता है तब वह रूप रिपोर्ताज कहलाता है। किसी घटना का ऐसा वणन करना कि वस्तुगत सत्य पाठक के हृदय को प्रभावित कर सके रिपोर्ताज कहलायगा। कल्पना के आधार पर रिपोर्ताज नही लिखा जा सकता। इससे स्पष्ट है कि रिपोर्ताज लेखक केवल उन्ही घटनाओ का वणन करता है जोकि उसने आखो देखी और कानो सुनी हुई होती हैं। रिपोट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही

---

1 हमारा हिन्दी साहित्य, ले० भवानी शकर त्रिवेदी पृ० ४२२

रिपोर्ताज कहते हैं वस्तुगत तथ्य को रेखाचित्र की शैली में प्रभावोत्पादक ढंग से अंकित करने में ही रिपोर्ताज की सफलता है। आंखों देखी और कानों सुनी हुई घटनाओं पर रिपोर्ताज लिखा जा सकता है कल्पना के आधार पर नहीं।[1] पत्रकार भी उन्हीं घटनाओं का वर्णन करता है जोकि सत्य पर आधारित होती हैं। पत्रकार के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह उन्हीं घटनाओं का वर्णन करे जोकि आंखों देखी हुई हों वह भी सुनी हुई घटनाओं का वर्णन कर सकता है।

रिपोर्ताज लेखक छोटी से छोटी घटना का वर्णन इस प्रकार से करता है कि वह पाठक के व्यक्तित्व पर सामूहिक प्रभाव डालती है। रिपोर्ट की भांति वह घटना या घटनाओं का वर्णन तो अवश्य होता है किन्तु इसमें लेखक के हृदय का निजी उत्साह रहता है जो वस्तुगत सत्य पर बिना किसी प्रकार का आवरण डाले उसको प्रभावमय बना देता है। इसमें लेखक छोटी छोटी घटनाओं को देकर पाठक के मन पर एक सामूहिक प्रभाव डालने का प्रयत्न करता है। इसका सम्बन्ध वर्तमान से होता है। ये घटनाएं कल्पनाप्रसूत नहीं होती हैं इन घटनाओं के वर्णन द्वारा वह चरित्र को भी प्रकाश में लाता है। इसका लेखक घटनास्थल पर उपस्थित होता है और वह प्रायः आँखों देखी बातें ही लिखता है। वह कलम का शूर तो होता ही है साथ ही चन्दबरदाई की भाँति साहसी तथा वीर भी होता है।[2] इधर पत्रकारिता में लेखक जैसी घटनाएँ देखता या सुनता है उनका वैसा ही विवरण प्रस्तुत कर देता है। उसके वर्णन में किसी भी प्रकार की साहित्यिकता नहीं होती।

रिपोर्ताज की गणना स्थायी साहित्य में की जाती है और पत्रकारिता की अस्थायी साहित्य में। पत्रकारिता साहित्य का बड़ा ही प्रतिष्ठित और दायित्वपूर्ण अंग है यद्यपि पत्र पत्रिकाओं का अधिकांश साहित्य स्थायी नहीं समझा जाता है किन्तु बहुत सी दृष्टियों से वह स्थायी साहित्य से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। हमारे नित्यप्रति के जीवन की जो झाँकी इस साहित्य में दृष्टिगोचर होती है वह स्थायी साहित्य में इस रूप में नहीं मिलती। हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने के कारण इस साहित्य का महत्व भी स्थायी साहित्य से अधिक है। साथ ही साथ इस प्रकार के साहित्य स्रष्टाओं का दायित्व भी स्थायी साहित्य स्रष्टाओं की अपेक्षा अधिक है।[3]

स्थायी एवं अस्थायी साहित्य में वर्णित घटनाओं के सत्य में अन्तर होता है। यही कारण है कि रिपोर्ताज और पत्रकारिता में वर्णित सत्य में अन्तर है। स्थायी साहित्य में सत्य के जिस स्वरूप पर बल दिया जाता है वह इस साहित्य के स्वरूप से थोड़ा भिन्न होता है—कहने का अभिप्राय यह है कि पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य का सत्य

१ हिन्दी साहित्य कोष पृ० ७१७
२ काव्य के रूप ले० गुलाबराय पृ० २८०
३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, ले० गोविन्द त्रिगुणायत

शुद्ध स्थायी साहित्य के रूप में बिल्कुल अनुकूल नहीं हो सकता। उसे लौकिक सत्य की रक्षा के साथ-साथ ही काव्य सत्य की सीमा का स्पर्श भी करना पड़ेगा। पत्रकार को केवल सत्य के स्वरूप की सुरक्षा का ही ध्यान नहीं रखना पड़ता वरन् उसे साहित्य के नित्य और सौन्दर्य तत्वों को भी कुछ अधिक वास्तविक रूप में जनता के सामने लाना पड़ेगा इसके लिए उसे जनरुचि और जनकल्याण भावनाओं के मनोविकारों से पूर्ण परिचित होना पड़ेगा। जो पत्रकार इन भावनाओं व मनोविकारों से परिचित नहीं होते वे इस साहित्य की रचना में कदापि सफल नहीं होते। वास्तव में पत्र पत्रिकाओं का साहित्य हमारे प्रत्यक्ष जीवन को बल प्रदान करने वाला वह अक्षय स्रोत है जिसके समुचित प्रयोग से हम नवजीवन की धारा की गतिविधि तक पहुँचने में समर्थ होते हैं।[1]

रिपोर्ताज और पत्रकारिता दोनों की सीमा सीमित होती है। साहित्य का यह सबसे लचीला रूप है जिसकी सीमा एक पृष्ठ से लेकर कई पृष्ठों तक हो सकती है। वर्तमान पत्रकार कला से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। पत्रों में जैसे लम्बे उपन्यास एक साथ नहीं छप सकते वैसे ही उनमें बहुत लम्बी रिपोर्ताज भी नहीं छप सकती।[2] इससे स्पष्ट है कि इन दोनों विधाओं का पारस्परिक सम्बन्ध है।

रिपोर्ताज लेखक को इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है कि वह अपने लेख को घटना प्रधान बनाए अथवा चरित्र प्रधान, वह उसमें आत्मीयता का पुट दे या गीतात्मकता का परन्तु पत्रकारिता के लेखक को इतनी स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त होती।

रिपोर्ताज में लेखक घटना का विवरण तो प्रस्तुत करता ही है उसके साथ उसके व्यक्तिगत विचार भी प्रस्तुत होते हैं। इसलिए पत्रकारिता के लेखक की अपेक्षा रिपोर्ताज लेखक अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण स्वयं करता है। उसके वर्णन में उसका व्यक्तित्व मुखरित हो उठता है। लेख में घटना का विवरण होता है स्केच में रेखा चित्र और संस्मरण में जीवन का स्पन्दन पर विवरण चित्र और स्पन्दन का समन्वय ही रिपोर्ताज है। दूसरे शब्दों में रिपोर्टिंग में समाचार होता है सम्पादकीय में विचार, पर रिपोर्ताज में समाचार और विचार का संगम है। शायद यह कहकर मैं और समाप्त हो जाऊँ कि इसमें दृश्य और चिन्तन का संगम है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि रिपोर्ताज में लेखक घटनाओं के विवरण के साथ साथ विचारों का भी वर्णन करता है जिससे शैली में आत्मीयता के साथ साथ प्रभावोत्पादकता आ जाती है। यही कारण है कि रिपोर्ताज लेखक को पत्रकार तथा कलाकार की दोहरी जिम्मेवारी निभानी पड़ती है।

---

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, ले० गोविन्द त्रिगुणायत
२ हमारा हिन्दी साहित्य, ले० भवानीशंकर पृ० ४२३

3 जीवनी

जब कोई लेखक कुछ वास्तविक घटनाओं के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति की जीवनी कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है तो साहित्य का वह रूप जीवनी कहलाता है। साहित्य की इस विधा का विस्तृत विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया है।

तत्व

प्रकाशित जीवनी साहित्य के आधार पर 'जीवनी' के तत्व निम्नलिखित हैं—

वर्ण्य विषय—जीवनी साहित्य का यह महत्वपूर्ण तत्व है। इसमें लेखक के नायक का विश्लेषण होता है। नायक के चरित्र का वास्तविक घटनाओं के आधार पर संश्लेषण, विवेचन एवं विश्लेषण ही वर्ण्य विषय में कलात्मक रूप से किया जाता है। लेखक अपनी रुचि अनुसार किसी भी व्यक्ति का जीवन चरित्र लिख सकता है। यह आवश्यक नहीं कि वह साहित्यिक व्यक्ति ही हो, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक कोई भी व्यक्ति हो सकता है पर इतना आवश्यक है कि ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसका जीवन चरित्र पढ़ने से पाठक कुछ प्रेरणा अथवा विशिष्ट ज्ञान ग्रहण कर सके।

वर्ण्य विषय को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम विषय में वास्तविकता एवं सत्यता का होना है। यही एक ऐसा तत्व है जिस पर जीवनीकार की कला कुशलता एवं सफलता निर्भर है। चरित्र नायक के गुण दोषों का स्पष्ट विश्लेषण करने से ही जीवनी सफल कही जा सकती है। जीवनीकार सत्य पथ से कभी विचलित नहीं होता। यह हो सकता है कि दोष दर्शन में उसके हृदय में सहृदयता की भावना ऐसी हो कि वह यथार्थता की रक्षा करता हुआ चरित्र नायक की दुर्बलताओं का परिहास न करे। जीवनीकार सत्य का पल्ला कभी नहीं छोड़ता। वह इस मर्यादा की रक्षा के लिए सब कुछ त्याग करने को तैयार रहता है।[1] वर्ण्य विषय में जीवनीकार किसी भी ऐसी घटना का उल्लेख नहीं करता जो काल्पनिक हो प्रत्येक घटना सत्य पर आधारित होनी है। "जीवन चरित्र के निर्माण में गुण और दोष, जीवन के काले और उज्ज्वल पक्ष सत्य रूप में अंकित होने चाहिए।"[2] यही एक ऐसा गुण है जो कि जीवनी साहित्य को गद्य की अन्य विधाओं से पृथक करता है। लेखक की प्रत्येक घटना सत्य एवं वास्तविकता पर आधारित

---

१ समीक्षा शास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० १६६, द्वितीय संस्करण जुलाई, १९५७

२ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह पृ० १३

होती है। शिवनन्दन सहाय ने भारतेन्दु के जीवन की प्रत्येक घटना का वर्णन इस ढंग से किया है कि उसकी प्रामाणिकता का आधार यह साथ ही-साथ देते गए हैं। भारतेन्दु के पूर्वजों के निवास स्थान का जहाँ इन्होंने वर्णन किया है वहाँ उसकी वास्तविकता का आधार भी पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया है—

बाबू हरिश्चन्द्र के पूर्वज मुर्शिदाबाद में रहते थे यह बात तो निर्विवाद है क्योंकि ये यू साहब के स्वर्गवास के थोड़े ही काल के अनन्तर 'इण्डियन आनिकल' नामक अंग्रेजी समाचार पत्र में लिखा था कि बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म एक धनाढ्य वश्य कुल में हुआ था जिसके पूर्वज बंगाल की प्राचीन राजधानी गौड़नगर की बस्ती के समय वहाँ वास करते थे फिर राजमहल आए और जब बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद हुई तो लोग वहाँ आए।[1]

यही नहीं भारतेन्दु के चरित्र का विश्लेषण इन्होंने स्पष्ट रूप से किया है। जहाँ इन्होंने इनके गुणों का विश्लेषण किया है वहाँ दोषों का वर्णन करने में यह पीछे नहीं रहे। चतुर्विंश परिच्छेद में माधवी और मल्लिका के साथ इनके अनुराग का वर्णन इसी बात का द्योतक है। लेखक ने इस परिच्छेद का शीर्षक "गुलाब में काँटे" इसीलिए रखा है।

विषय के स्पष्ट एवं सत्य वर्णन से ही रोचकता एवं प्रामाणिकता का समावेश होता है। पाठक तभी पढ़ने में रुचि लेगा यदि जीवन का स्पष्ट चित्रण हो। केवल गुण ही किसी व्यक्ति में नहीं होते दोष भी होते हैं। इन सभी के वर्णन से ही विषय में रोचकता आ सकती है।

तीसरा महत्वपूर्ण गुण जो कि विषय को उत्कृष्ट बना सकता है वह वैज्ञानिकता का होना है। विज्ञान और विवेक की नितान्त आवश्यकता जीवन चरित्र में अनिवार्य है। यदि लेखक की वैज्ञानिकता में लेशमात्र भी अन्तर आया तो जीवनचरित्र उसी अंश तक दूषित हो जाएगा। जीवन की घटनाओं की वैज्ञानिक छान-बीन और उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना और उपस्थित करना आवश्यक है। यदि वैज्ञानिक विवेचना में कमी आई तो जीवन चरित्र कल्पना की कहानी हो जाएगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीवन साहित्य को एक ऊँची मर्यादा प्रदान करता है।[2]

वर्ण्य विषय में संक्षिप्तता एवं सुसंगठितता का होना अत्यन्त आवश्यक है। यद्यपि जीवनीकार मूर्ति रचक की भाँति अनुपातपूर्ण सुगठित और चमत्कार जीवनी नहीं दे सकता है क्योंकि उसे सत्य का आग्रह रहता है और एक सजीव और संकुल चरित्र के उद्घाटन में अर्चित के साथ विरोध और व्याघात भी रहते हैं जिनके बिना जीवनी शायद निर्जीव हो जाय तथापि उसे अपनी कृति को ब्यौरे के वैविध्य को खोए बिना ऐसा सुसंगठित रूप देना चाहिए कि उसमें थोड़े में बहुत प्रसादात्मकता आ

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

२ हिन्दी में जीवन चरित का विकास ले० चन्द्रावती सिंह पृ० ११

जाए।[1] इससे स्पष्ट है कि जीवनीकार विषय को संक्षिप्त एवं सुसंगठित रूप से वर्णन करे।

अन्त विवेचन से स्पष्ट है कि उपरिलिखित गुणों से युक्त विषय ही आकर्षक एवं स्फूर्तिदायक हो सकता है। इन्हीं को दृष्टि मे रखते हुए तो लिओन ईडेल (Leon Edel) ने जीवनीकार के लिए कुछ सीमाएं निश्चित की है। जीवनीकार जितना चाहे उतना कल्पनाशील बन सकता है जितना वह कल्पनाशील होगा उतना ही सामग्री को अच्छे ढंग से एकत्रित कर सकता है, पर उसकी सामग्री कल्पित नहीं होनी चाहिए। उसको भूतकाल का अवश्य अध्ययन करना चाहिए, पर उस भूतकाल को वर्तमान की दृष्टि में रखते हुए अध्ययन आवश्यक है। उसको तत्वों का अनुमान करना चाहिए पर उसे निर्णय मे नहीं बैठना चाहिए। उस बीती हुई घटनाओं का सम्मान करना चाहिए पर सत्य अवश्य कहना चाहिए।[2]

The Biographer may be as imaginative as he pleases—the more imaginative the better—in the way in which he brings together his materials, but he must not imagine the materials He must read himself into the past but he must also read that past into the present He must judge the facts but he must not sit in judgment He must respect the dead—but he must tell the truth

चरित्र चित्रण

जीवनी साहित्य का यह अन्य महत्वपूर्ण तत्त्व है। जीवनीकार इतिहास में तथा सामयिक समाज में प्रसिद्ध व्यक्ति को ही अपनी रचना का विषय बनाता है। वही उसका प्रधान पात्र होता है। इसी मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण करना ही उसका प्रमुख लक्ष्य होता है। इसलिए चरित्र चित्रण जीवनी का विधायक तत्त्व माना जा सकता है।

जीवनी में घटनाओं का अंकन नहीं होता वरन् चित्रण होता है। किसी भी मनुष्य के अंतर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक रूप से इसमें विवेचन होना है। इसमें जीवनीकार अपने श्रद्धेय पात्र के जीवन का अध्ययन, सश्लेषण एवं विश्लेषण करता है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं का अनुशीलन करता है। जीवनीकार का विशेष ध्यान वर्ण्य चरित्र की सत्प्रवृत्तियों उदात्त भावनाओं एवं सराहनीय कार्यों पर ही रहता है। फिर भी जब वह अपने चरित्र नायक की गम्भीरता, समीपता से चित्रण करने का उपक्रम करता है तब उसे उसकी दुर्बलताएँ भी दृष्टिगोचर होने लगती हैं। जीवनीकार इन दुर्बलताओं से मुह नहीं मोडता। उसमें अपने वर्ण्य चरित्र के प्रति श्रद्धा होती है सहानुभूति होती है पर अनन्य भक्ति नहीं। वह उन दोषों को दोष रूप में ही

१ काव्य के रूप, ले० गुलाबराय, पृ० २३६

२ 'Literary Biography' by Leon Edel, Page 1, 1957

ग्रहण करता है। वह उसका प्रधान वर्ण्य चरित्र के व्यक्तित्व के स्पष्टीकरण में उपयोग करता है। शेष तो उसके व्यक्तित्व की बाह्य रेखाओं को उभार में ला देते हैं।[1] इस प्रकार चरित्र निर्माण में लेखक चरित्र के सभी गुण दोषों का वर्णन करता है।

जहाँ तक बाह्य व्यक्तित्व का प्रश्न है लेखक चरित्र नायक के वेशभूषा का एवं शारीरिक सौन्दर्य का भी पाठक को अवश्य ज्ञान करवाता है। ब्रजरत्नदास ने भारतेन्दु की आकृति का वर्णन इसीलिए किया है—

'भारतेन्दुजी कद के लम्बे थे और शरीर से छरहरे थे, न बहुत कृश और न मोटे ही। आँखें कुछ छोटी और धँसी हुई सी थीं तथा नाक अच्छी नुकीली थी। बाल कुछ बड़े थे जिन पर घुँघराले बालों की लटें लटकती रहती थीं। उन्नत ललाट इनके भाग्य का द्योतक था। इनका रंग साँवलापन लिए हुए था। शरीर की गठन बनावट सुडौल थी।'[2]

इस बाह्य वेशभूषा के वर्णन का प्रभाव आरम्भ से ही पाठक पर पड़ जाता है। यदि सीधी सादी वेशभूषा होगी तो व्यक्तित्व एवं स्वभाव भी वैसा ही होगा, यदि चटकीली होगी तो वैसा ही चरित्र नायक का व्यक्तित्व होगा।

इस बाह्य व्यक्तित्व के पश्चात् चरित्र नायक का आन्तरिक विश्लेषण है। इसमें दो बातें होती हैं—नायक के गुण एवं दोष। जिस व्यक्ति में गुण अधिक होते हैं उसके प्रति लोग अधिक आकृष्ट हो जाते हैं पर इसका यह अर्थ नहीं है कि उनमें दोष नहीं होते, होते हैं पर गुणों की संख्या अधिक होती है। आज से साठ वर्ष पूर्व शिवनन्दन सहाय ने जो भारतेन्दु की जीवनी लिखी है उसमें जहाँ भारतेन्दु के साहित्यिक गुणों का विस्तार रूप से वर्णन किया है वहाँ उन्होंने उनकी चारित्रिक दुर्बलताओं का परिचय 'गुलाब में काँटा' शीर्षक में दिया है। भारतेन्दु के चरित्र सम्बन्धी गुण दोषों के वर्णन में इन्होंने सप्तविंश परिच्छेद में लिखा है—

> हम भी इनके गुण अवगुण को पूर्व परिच्छेदों में स्पष्ट वर्णन करते आए हैं जिसको देखकर बहुत से लोग आक्षेप करेंगे और कहेंगे कि केवल इनकी सुख्याति के ध्यान से अनेक बातों को प्रकाशित करने के बदले हमको उन पर पर्दा ही देना चाहिए था पर हमारी क्षुद्र बुद्धि में यह बात नहीं जचती। ऐसा करने से इनके यथार्थ सद्गुणों की कथाएँ भी अविश्वसनीय हो जातीं क्योंकि कोई व्यक्ति सर्वगुण आगर ही हो कहीं किसी दोष का लेश भी उसमें न हो, सर्वदा जेठ बैसाख के सूर्य की चमक ही हो सर्वत्र उज्ज्वल धूप ही हो कहीं श्यामल छाया का नाम तक न हो यह बात प्रकृति के विरुद्ध है। किसी प्राणी के विषय में ऐसा कहना कब सच माना जा सकता है। और कोई अर्थ लोलुप कवि ऐसा करे तो करे, परन्तु सत्यकवि या चरित्र लेखक को ऐसा करना कब उचित

१ सिद्धान्तालोचन,' ले० धर्मचन्द बलदेवकृष्ण पृ० २०५
२ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० ब्रजरत्नदास, पृ० १५

है। उसको जो कुछ घटना हो सब ही वणन कर देनी चाहिए चाहे वह गुण हो वा दोष।'[1]

ब्रजरत्नदास ने भी भारतेन्दु पर लिखी जीवनी म अपने इस मत का समथन 'चन्द्र म कलक' शीषक म दिया ह—

"मनुष्य तभी मनुष्य रहेगा जब उसके दोष आदि भी प्रकट कर दिए जायेंगे मनुष्य देवता नही है, उसम दोष रहगे, किसी म एक है तो किसी मे कुछ और ह। यदि एक महात्मा की जीवनी स हम दोनो को निकाल देते हैं तो हम एसा निर्दोष आदश उपस्थित कर देत है जिसको अनुगमन करने का लोग साहस छोड बठगे—तात्पय यह ह कि जीवन चरित्र म गुणो का विवचन करत हुए दोषो का भी यदि हो, तो विश्लेषण अवश्य कर देना चाहिए।"[2]

इस प्रकार उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट ह कि चरित्र नायक क व्यक्तित्व के गुणो के वणन के साथ साथ उसकी दुबलताओ एव त्रुटियो का विवेचन भी जीवनीकार को अवश्य करना चाहिए।

देशकाल

देशकाल भी जीवनी साहित्य का एक महत्वपूण तत्व है। वण्य चरित्र किसी देश या काल म ही अपना जीवन व्यतीत करता है। इसीलिए उसके समस्त जीवन की घटनाएँ देश एव काल से सम्बन्ध रखती हैं। अन्य प्रबन्धनात्मक साहित्य की भाति जीवनी साहित्य मे देशकाल का चित्रण मुख्य रूप से नही किया जाता। यह तो गौण रहता है। अन्य साहित्य म देशकाल का चित्रण स्वतन्त्र रूप से किया जाता है। जीवनी म व्यक्ति ही मुख्य होता है वही अगी होता है।

हिन्दी जीवनी साहित्य के अध्ययन स ज्ञात होता है कि चरित्र नायक के जीवन को उभारने के लिए तो लेखक ने देशकाल का वणन किया है अन्य किसी उद्देश्य से नही। साहित्यिक जीवनी मे अधिकतर तत्कालीन साहित्यिक दशा का तो वणन मिल जाएगा परन्तु जहा तक राजनतिक परिस्थितियो का प्रश्न है वह तो न के बराबर ही है। साहित्यिक जीवनी म तो अधिकतर लेखक तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितिया का वणन कर चरित्र नायक का उसमे स्थान निर्धारित करता है। शिवनन्दन सहाय न भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का स्थान पचम परिच्छेद मे 'हिन्दी भाषा और हिन्दी प्रचार' मे तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितिया का वणन करत हुए निर्धारित किया है। परन्तु ब्रजरत्नदास न अपनी लिखित जीवनी म थोडा बहुत तत्कालीन राजनतिक परिस्थितियो का आभास पाठक को करवा दिया है। उनका "राजभक्ति' शीषक इसी प्रकार का है। इसमे लेखक ने भारतेन्दु के व्यक्तित्व को परिस्थितिया से प्रभावित दिखलाया है—

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० शिवनन्दन सहाय, पृ० ३४६ प्रथम सस्करण, १६०५

२ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० ब्रजरत्नदास, पृ० २५०

"भारतेन्दुजी का रचनाकाल सं० १९२४ से सं० १९४१ तक था और वह समय था जब भारतवर्ष में पूर्ण शान्ति रहा हो चुकती थी। उनके जन्मस्थान काशी ही में उन्हीं के समय सन्ध्या के बाद किसी अमीर आदमी का आगे-पीछे दस-पाँच सिपाही साथ लिए बिना निकलना कठिन था। ऐसे समय शान्ति-स्थापक अंग्रेजी राज्य को ईश्वर का चिर कारि बाप कहना ही देशप्रेम था। साथ ही अंग्रेजी राज्य के दोषों का कथन उनके निवारणार्थ प्रार्थना करना आदि 'राजद्रोह' नहीं कहा जा सकता था। व अंग्रेजी राज्य को उसके दूषणों से रहित देखना ही देशप्रेम समझते थे और वही उस समय के लिए उचित भी था।[1]

इसी प्रकार 'प्रेमचन्द कलम का सिपाही' में भी अमृतराय ने जहाँ उचित समझा वहीं तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन किया है—

'सन् १९१४ तक आते आते देश पूरी तरह निष्प्राण हो चुका था। जुलाई १९१४ में महायुद्ध छिड़ा। नवम्बर में जर्मन सेनाएँ फ्रांस के दरवाजे पर थीं। इंगलैंड फ्रांस के जीवन मरण का संकट उपस्थित था। ऐसे समय में *हिन्दुस्तान के बड़े लाट हार्डिंग ने बड़ी हिम्मत करके हिन्दुस्तान से अपनी गोरी* और काली फौजें हटायीं और उन्हें योरोप के मोर्चों पर भेजा। साथी सेना की प्राण रक्षा हुई। प्रेमचन्द भी इसी बीच इतहाई पस्ती के दौर से गुजरे। शरीर मन दोनों बिल्कुल टूटा हुआ।[2]

यह तो हुई साहित्यिक व्यक्ति की जीवनी की बात जहाँ तक राजनैतिक व्यक्ति का प्रश्न है उसका तो सम्पूर्ण जीवन देश की राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में ही निखरता है बापू का समस्त जीवन इस बात का प्रतीक है। घनश्यामदास बिड़ला द्वारा लिखा हुआ 'बापू' के जीवन में पाठक को एक तो तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का पता चलता है दूसरे उन परिस्थितियों में बापू का क्या हाथ रहा यह भी ज्ञात होता है। ऐसे महापुरुषों का समस्त जीवन इन सभी परिस्थितियों से प्रभावित होता है—

'गाँधीजी ने सरकार के साथ कई लड़ाइयाँ लड़ी और कई मर्तबा सरकार के संसर्ग में आए। इन सभी लड़ाइयों में या संसर्गों में सत्याग्रह की *झलक मिलती है पर मेरा ख्याल है कि १९१४-१८ का योरोपीय महाभारत* और उसी जमाने में किया गया चम्पारन सत्याग्रह और वर्तमान योरोपीय महाभारत—ये तीन प्रकरण इनके स्वदेश लौटने के बाद ऐसे हुए हैं कि जिनमें हम शुद्ध सत्याग्रह का दिग्दर्शन होता है।[3]

इन पंक्तियों से एक तो यह अनुमान होता है कि गाँधीजी ने तात्कालीन देश

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ले० ब्रजरत्नदास, पृ० २०६

२ प्रेमचन्द *कलम का सिपाही*, ले० अमृतराय, पृ० १६२

३ बापू ले० घनश्यामदास बिड़ला, पृ० १०३

की परिस्थितियो से वाध्य होकर सत्याग्रह किए। दूसर उनके तपस्वी जीवन का ज्ञान पाठक को होता है फिर भी लेखक का उद्देश्य राजनैतिक परिस्थितियो का वणन करना नही था। जीवनी लेखक इसी ढग स वणन कर सकता है। जहाँ तक सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितियो का प्रश्न है इन जीवनियो के पढने से पाठक अनुमान लगा सकता है लेकिन इनका कही भी स्पष्ट चित्रण हम नही प्राप्त होता। धार्मिक व्यक्तियो की जीवनियो म विशेषतया तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियो का चित्रण है फिर उन परिस्थितियो म लेखक न चरित्र नायक का स्थान निर्धारित करने का प्रयत्न किया है।

उद्देश्य

जीवनी साहित्य का यह एक महत्वपूण तत्व है। इस तत्त्व म लेखक क्या कहना चाहता है उसके अमुक पुस्तक लिखन का क्या आशय है, इन सब बातो का उल्लेख होता ह वसे तो प्रत्येक लखक जो कुछ भी लिखता है वह किसी न किसी उद्देश्य स ही लिखता है। निरुद्देश्य कोई भी रचना नही लिखी जाती। जीवनीकार का उद्देश्य भी उसकी रचना मे प्रकारातर से समाविष्ट हो जाता ह।

कोई भी व्यक्ति जिसने भी अपने समय म जो भी महत्वपूण काय किए उन सभी का पूणतया ज्ञान हम उसकी जीवनी पढने से ही मिलती ह। यदि वह राजनतिक व्यक्ति है तो अवश्य ही देश क प्रति उसकी विचारधारा का एव राजनतिक परिस्थितियो के वणन म उसक सहयोग का आभास हम उसके जीवन चरित्र से मिले। यदि वह सच्चा देशभक्त है तो वह किस प्रकार आग के अगारो से जूझता हुआ सोना बनता ह और अपने कतव्य म सफल होता है—इन सभी बातो का पता उसके जीवन चरित्र से प्रामाणिक रूप स लगता है। लेखक इसीलिए ऐसे महापुरुषो का जीवन जनता के सामने निखकर रखत हैं कि हम भी उससे कुछ प्रेरणा ग्रहण करें और अपने जीवन को साथक बनाए। घनश्यामदास बिडला ने इसी उद्देश्य से बापू और जमना लाल बजाज के जीवन चरित्र लिखे। बिडला के इन लोगो के जीवन चरित्र लिखने का यही उद्देश्य था कि जनता का पता चल जाए कि भारत को स्वतन्त्रता किन कठिनाइयो से प्राप्त हुई ह और उसकी प्राप्ति म किन किन महापुरुषों का हाथ रहा ह।

जहा तक साहित्यिक जीवनी लिखन के उद्देश्य का प्रश्न है वह भी इसी उद्देश्य स लिखी जाती है कि हिन्दी साहित्य की प्रगति म जो भी व्यक्ति अधिक पुस्तकें लिखकर सहयाग देता ह और कोई नई पुस्तक जनता क सम्मुख रखता है जिससे समाज एव साहित्य है नई चेतना उत्पन्न होती ह तो उस व्यक्ति की जीवनी लिखने क लिए लेखकगण आकृष्ट होत है। यहाँ मेरे कहने का तात्पय यह ह दो चार पुस्तकें लिखकर कोई भी व्यक्ति साहित्य म अपना नाम लिखवा सकता ह पर ऐसे व्यक्तियो की जीवनी लिखने स कोई भी लाभ नही ह। मेरा अभिप्राय तो ऐसे साहित्यिक लोगो की जीवनी लिखने से है जिन्होने कोई विशेष योग हिन्दी साहित्य

की प्रगति म िया है जसे 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सवप्रथम विस्तृत जीवनी इनकी शिवन दन सहाय ने लिखी ह 'भूमिका' म अपने उद्देश्य को उन्होंने प्रकट किया ह —

'इस पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि मातृभाषा हिंदी को नीरस एव सारहीन समझने वाले अग्रेजी भाषी रसिकजनो की हिन्दी पढ़ने म रुचि ज मे, और व लोग सब प्रकार की प्रवृत्ति क अनुसार सब प्रकार क रसा से पूण हरिश्चन्द्र क ग्रन्थो का पन्कर देख कि हिंदी की उन्नति के लिए केवल एक व्यक्ति ने कितना यत्न तथा परिश्रम किया है एव उसी निष्काम मातृभाषा की सेवा स वह देश विन्श म कसा सम्मानित हुआ है और सवस्ट इसकी और अधिक गौरव वद्धि क निमित्त यत्नवान हो। इसी कारण यह जीवनी अग्रजी पुस्तक क ढग स लिखी गई है।'[1]

इसीलिए महापुरुषो की जीवनिया लिखी जाती है। जीवन चरित्र लिखने का एक तो यह उद्देश्य है कि हम मनुष्य के बाह्य स्वरूप क साथ साथ उसके आ तरिक स्वरूप को भी जान सकते है। दूसरी बात यह ह कि दुनिया म विशाल स्मारक, भवन, दृढतम मन्दिर, चित्र आदि सभी नष्ट हो जाते है कवल अमरग्रन्थ ही रह जाते हैं। किसी भी श्रद्धेय महापुरुष की जीवनी इसी अमरत्व की भावना को लेकर ही लिखी जाती ह।

किसी भाषा क समग्र साहित्य को देखिए—सभी म मनुष्य तथा उसकी कृति और विचार भरे है। इसलिए सुलिखित जीवन चरित्र क पढ़ने म देखा जाता है कि मनुष्य को सबसे अधिक आनन्द मिलता है। कहानियो तथा उपन्यासो म मनोहर कल्पित चरित्र चित्रण होने से उनसे अधिक मनोरजन होता है और नाटको म भी इसी कारण अधिक तमाशाई इकट्ठे होते है। इतिहास भी सकडो मनुष्यो की जीवनिया का सग्रह मात्र है। बड़े-बड़े सत्काय आदश नायको क चरित्र ही चित्रित करते हैं जिन्हें लोग बड़े प्रेम स सुनते हैं।

जीवन चरित्र यह भी उपदेश देता है कि मनुष्य क्या हो सकता ह और क्या कर सकता ह। एक महान व्यक्ति की जीवनी पाठको के हृदय म उत्साह आशा, शक्ति और साहस भर देती ह और उ ह उस आदश तक उठने को प्रोत्साहित करती है। साहित्य का इन कारणो स जीवन चरित्र एक विशेष अग ह।[2]

कलमानकार की सवश्रेष्ठ जीवनी प्रेमचन्द कलम का सिपाही भी अमृतराय ने इसी उद्देश्य स लिखी है। उस जीवनी के पढ़ने क पश्चात् पाठक को यह पता चल जाता है कि किस प्रकार इस कलम क सिपाही ने अपने जीवन म कष्टो एव उलझनो का सामना करते हुए हिन्दी साहित्य की प्रगति की ओर ध्यान रखा है। कलम के

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स० शिवनन्दन सहाय, भूमिका
१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स० व्रजरत्नदास पृ० २३

सम्मुख किसी भी जीवन को आकर्षित करने वाली एव सुख देने वाली बातो की ओर ध्यान नही दिया। पाठक को यह अनुभव हो जाता है कि जीवन म परिश्रमी व्यक्ति ही कुछ प्राप्त कर सकता है। अमृतराय न जिस उद्देश्य से यह जीवनी लिखी है वह इसमे पूणतया सफल हुए हैं, बहुत से आने वाले साहित्यिको को इससे प्रेरणा मिलेगी।

भाषा शैली

शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीको का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एव प्रभावपूण बनाते हैं। जीवन चरित्र लेखक को अपने नायक के काल्पनिक रूप की सृष्टि नही करनी होती, उसे तो केवल एक साँचा तयार करना पडता है। यह साचा शैली के नाम से पुकारा जा सकता है। जीवनी लेखक के पास नायक के सम्बन्ध म लिखित, अलिखित अथवा विश्वस्त सूत्रो से उपलब्ध तथ्यो को सकलित करके ऐसे कौशल से सजाना पडता है कि पाठक के मन म वे सीधे घर कर लें।[1] इस प्रकार जीवनी की शैली म कुछ विशेषताएँ एव गुणो का होना आवश्यक है जिनके होते हुए वह उत्कृष्ट शैली कहला सकती है।

जीवनी शैली मे सवप्रथम सुसगठितता का होना आवश्यक है। जीवनीकार को समस्त सामग्री को इस ढग से वणन करना चाहिए जिससे उसम अन्विति हो। जीवन की समस्त घटनाए एक-दूसरे से बधी हुई हो। उनम किसी प्रकार का बिखरापन न हो। इस बात के लिए अनावश्यक बातो का निवारण एव आवश्यक बातो का समावेश करना पडता है जसे शिवनन्दन सहाय ने भारतेन्दु के जीवन की प्राप्त सामग्री को क्रमानुसार रक्खा है। किसी भी प्रकार का बिखरापन उसमे दृष्टि गोचर नही होता। यही बात गोस्वामी तुलसीदास म अकित तुलसी के जीवन चरित्र म भी पायी जाती है। इसी गुण के कारण वह जीवनी लिखने म कुशल माने गए हैं। उन्होने अपने चरित्र नायको के जीवन को परिच्छेदो म बाट लिया है इससे सभी सामग्री अच्छी प्रकार से सुगठित हो गई है।

जीवनी म शैली सम्बन्धी दूसरी विशेषता निरपेक्षता की है। निरपक्षता से मेरा अभिप्राय यह है कि लेखक अपने चरित्र नायक के गुण दोषो का निष्पक्ष होकर वणन करे। ऐसा न हो कि वह श्रद्धावश गुणो का ही वणन करता जाय और दोषो को भूल जाय। श्रद्धा रखने पर उसे अन्ध भक्त नही होना चाहिए। लेखक को अपनी स्वतन्त्रता नही खानी चाहिए। कभी कभी आदर एव पूज्य भाव के कारण लेखक का विश्लेषण निष्पन्न न होकर अतिरजित हो जाता है। कभी-कभी अपनी तुलनात्मक प्रतिभा के कारण वह अपने चरित्र नायक को आवश्यकता से अधिक ऊँचा उठाकर दूसरे का अपमान भी कर देता है। जीवनीकार को इस सम्बन्ध म विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए और अपने नायक का चरित्र यथातथ्य रूप म निष्कपट भाव से वणन करना

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० ब्रजरत्नदास पृ० २३

चाहिए। हिन्दी साहित्य मे जितनी भी साहित्यिक व्यक्तियो की जीवनियाँ प्राप्त होती हैं उनकी शली म यह गुण विशेष रूप से पाया जाता है जोकि उनकी शली को परिपक्व बनाता है।

तीसरा महत्त्वपूण गुण शली म लेखक की तटस्थता का होना है। जीवन चरित्र का लेखक बिल्कुल तटस्थ रहकर ही चरित्र चित्रण कर सकेगा।[1] इसलिए जीवनीकार को अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग उचित अनुपात म करना चाहिए। उसकी अपनी धारणा का आधार पर्याप्त सत्य होना चाहिए। जीवनी म सत्य का पुट न होने से वह समाज को प्रभावित करने म असमय रहेगी। वहा जीवन चरित्र उच्चकोटि का होगा जिसकी शली मे सन्तुलन होगा एव लेखक का मस्तिष्क तटस्थ होगा।[2]

चौथी विशेषता सहृदयता की है। जीवनीकार को यह ध्यान रखना चाहिए कि चन्द्रमा म कलक है अवश्य किन्तु वह साधारण है। सहानुभूति अन्ध भक्ति से भिन्न है। अन्ध भक्ति दोपा को भी गुण समझती है, सहानुभूति दोप को दोप ही समझती है किन्तु उसके कारण दोप की हँसी नही उडाई जाती। जीवनीकार छोटे मोटे दोपा को अर्थात गुणो के समूह या बाहुल्य म एक दोप इस प्रकार छिपा जाता है जसा चन्द्रमा की किरणा मे उसका कलक। दोपा के वणन मे सहृदयता का पल्ला नही छोडना चाहिए।[3] इसलिए शली मे लेखक की सहृदयता का होना आवश्यक है।

उपरिलिखित गुणा से युक्त शली ही जीवनी को प्रभावोत्पादक बना सकती है। इसलिए जीवनी की शली म इन सभी विशेषताओ का होना आवश्यक है। इन इन गुणा से सम्मिलित जीवन चरित्र ही विशुद्ध जीवन चरित्र कहला सकता है। हैराल्ड निकलसन ने तभी तो जीवन चरित्र को दो मार्गों म विभाजित किया है। १ शुद्ध जीवन चरित्र, २ अशुद्ध जीवन चरित्र[4] (Pure and Impure Biography)। शुद्ध जीवन चरित्र इन्होंने उसको माना है जिसकी शली म सभी उपरिलिखित गुण ह और अशुद्ध जीवन चरित्र तो है ही इससे विपरीत।

जीवनी लेखन कला की सफलता के लिए भाषा अत्यन्त महत्त्वपूण अग है। जीवन चरित्र लिखन म सरल सुबोध, आकपक और रुचिकर भाषा का प्रयाग आवश्यक है। जीवन भर की घटनाओ के समूह को थोडे म इस प्रकार सगठित और सुसज्जित करके उपस्थित करना आवश्यक है कि भाव म लेशमात्र भी कमी न आने पावे उसकी भव्यता बढ जाय और रूप अधिक स्पष्ट हो जाए। इसीलिए जीवनी लेखक का भाषा पर पूण अधिकार हाना चाहिए। जीवनी साहित्य जीवन की घटनाओ का नीरस एतिहासिक उल्लेख मात्र नही है। और न यश देने के लिए केवल मनोरञ्जना का

१ समीक्षाशास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा प० १६६
२ हिन्दी म जीवन चरित्र का विकास ले० चन्द्रावती सिंह पृष्ठ १३
३ काव्य के रूप नमक गुलाबराय पष्ठ २३६
४ Development of English Biography by Harold Nicolson

वैज्ञानिक विश्लेषण है। इसमे साहित्य का माधुर्य अनिवार्य है जो पाठक की उत्सुकता और जिज्ञासा, उसके आनन्द की अनुभूति और मन के आमोद को उत्तरोत्तर बढाता जाय। भाषा इतनी सुबोध हो कि घटनाओ की गुत्थियाँ और नायक के मानसिक विकास तथा मस्तिष्क की क्रिया प्रतिक्रिया के गूढ तत्व सरलता से पाठक को स्पष्ट होने जाएँ। भाषा ऐसा आवरण और परिधान है जो चरित्र को सुसज्जित एव वास्तविक रूप देता है और व्यक्तित्व को ठीक रूप मे व्यक्त करता है।'[1]

इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा ही लेखक की भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध परिमार्जित एव भावानुकूल होगी तभी वह कृति पाठक को प्रभावित कर सकती है। प्रसाद गुण का भाषा म होना अनिवार्य है परन्तु विषयानुसार एव आवश्यकतानुसार लेखक आलकारिक भाषा का प्रयोग भी कर सकता है। यह विशेषता विशेष रूप से शिवनन्दन सहाय मे पाई जाती है। जहाँ वह भारतेन्दु की कविता के विषय मे लिखते हैं वहाँ उनकी भाषा अलकारमयी दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त जहाँ उन्होने एक विस्तृत लेख उनकी 'हिन्दी भाषा और हिन्दी प्रचार' के विषय म लिखा है उसम इतनी सरसता नही। 'कविता' म तो इनकी भाषा म भी माधुर्य और अलकारो की छटा है।

"हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य वाटिका के प्रवीण माली थे। इनकी इसी वाटिका मे काव्य नाटक आदि की कैसी-कैसी सुन्दर क्यारियाँ कटी हुई हैं, ललित लेख, प्रबन्ध एव पुस्तको के कैसे-कैसे अपूर्व वृक्षो से यह सुशोभित है। उसमे कविता लता कैसे लहरा रही है, अलकारो के पुष्पो की कैसी छटा छहरा रही है, अर्थ का कैसा पराग झर रहा है, भाव का कैसा सुगन्ध उड रहा है, सरसता से कैसा मधु टपक रहा है सच तो यह है कि इस वाटिका की सैर निसन्देह आमोद प्रमोद है। परन्तु इस वाटिका मे स्वय भ्रमण किए बिना किसी को यथार्थ आनन्द नही मिलता।"[2]

अत जीवनीकार की भाषा एव शैली शुद्ध परिमार्जित, परिनिष्ठित एव सधी हुई होनी चाहिए। विषय एव भावानुकूल शैली ही अपना स्थायी प्रभाव लेखक पर डाल सकती है। इसलिए लेखक का भाषा शैली म सिद्धहस्त होना आवश्यक है।

विकास

हिन्दी जीवनी साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतेन्दु युग से पहले जीवनी साहित्य तीन प्रकार का प्राप्त होता है—रासो शैली का जीवनी साहित्य, भक्तों की जीवनियां एव बनारसीदास का अर्धकथा आत्मचरित। रासो काल मे जितने भी जीवन चरित्र लिखे गए उनम स कोई भी एसा जीवन चरित्र नही जो किसी मानवेतर व्यक्ति का हो। इसी प्रकार भक्तिकाल के चरित्रो म भी सभी

---

१ हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० १३

२ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० शिवनन्दन सहाय, पृ० ११४

साधारण व्यक्ति है। 'भक्तमाल', 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' या 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता या अष्ट सखान की वार्ता' के चरित्र भी साधारण व्यक्तियों के ही हैं। चमत्कारपूर्ण बातें तो उनके व्यक्तित्व में हैं पर उससे वे मानवेतर नहीं हो पाते हैं। उनके अध्ययन से केवल यही ज्ञात होता है कि वे भक्त थे जिन पर भगवान् की असीम कृपा थी। अर्ध कथानक का लेखक बनारसीदास भी साधारण व्यक्ति है। 'पृथ्वीराज रासो' एवं 'अर्ध कथानक' के सिवाय कोई चरित्र जीवनी लिखने के उद्देश्य से नहीं लिखा गया था। भक्तों की भक्ति और उनके चमत्कारपूर्ण कार्यों के वर्णन में भी प्रसंगवश जीवन वृत्तान्त लिखे गए। अतः १००० ई० से १६०० ई० के पूर्वार्द्ध के पहले तक के हिन्दी जीवनी साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इस काल का जीवनी साहित्य उन लक्षणों अथवा तत्वों से शून्य था जिनके आधार पर किसी साहित्य को हम जीवनी साहित्य कह सकें। भक्तमाल तथा ८४ वैष्णवन की वार्ता आदि की जीवनियाँ व्यक्तित्व का पूरा चित्र उतना नहीं प्रस्तुत करती जितना वे भक्ति का प्रचार करती हैं। सबसे महत्वपूर्ण कमी इस काल तक के जीवनी साहित्य में वृत्तान्त की प्रामाणिकता में अभाव पाया जाता है। सभी वृत्तान्त सुने सुनाए हैं सिवाय पृथ्वीराज रासो के। इस काल में जीवनी साहित्य के प्रफुल्लित न होने के कारण तत्कालीन राजनतिक सामाजिक, देश की परिस्थितियाँ है, इन्हीं के कारण हिन्दी जीवनी साहित्य का वैज्ञानिक विकास न हो सका। केवल अर्ध कथानक में जीवनी साहित्य की वैज्ञानिक रूपरेखा को बहुत कुछ अंशों में पूरा किया है। लेकिन फिर भी आधुनिक युग में ही जीवनी साहित्य पर्याप्त रूप से लिखा गया है। इसका आरम्भ भारतेन्दु युग से होता है।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग के सर्वप्रथम जीवनी लेखक भारतेन्दु स्वयं ही हैं। यद्यपि इनके द्वारा लिखे हुए जीवन चरित्र इस श्रेणी के नहीं जिनमें जीवन का सम्पूर्ण चित्र खींचा गया हो प्रत्युत फिर भी जीवनी लिखने का यह नवीन प्रयास था। 'चरितावली' में इन्होंने सोलह जीवन चरित्र लिखे हैं जो कि निबन्धों के रूप में हैं। कालिदास, रामानुजाचार्य जयदेव सूरदास वल्लभाचार्य जैन विद्वानों के जीवन चरित्रों के अतिरिक्त लाइम्यो एवं महाराजाधिराज जार के जीवन चरित्र भी लिखे हैं। इनके अध्ययन से नायक के चरित्र की पूर्ण जानकारी पाठकों को नहीं हो सकती—ये तो छोटे छोटे निबन्ध हैं जिनमें इनके जीवन की दो-एक घटनाओं का वर्णन है। सूरदास की जीवनी लिखने का इन्होंने प्रयत्न किया था परन्तु ये उसमें भी सफल नहीं हो सके।

'बादशाह दर्पण' इनकी दूसरी जीवन चरित सम्बन्धी पुस्तक है। इसमें कासिम द्वारा जीते गए सिन्ध देश से लेकर मुगल साम्राज्य के अन्तिम बादशाह तक का वर्णन है। इसमें जीवनी साहित्य के तत्व का अभाव है। 'पंच पवित्रात्मा में

मुहम्मद बीबी फातिमा एव इमाम हुसन की जीवनियाँ हैं। इनके अतिरिक्त 'उदय पुरोघ्य' और 'बूँगी का राज्यवन' भी भारतेन्दु द्वारा लिखे गए ग्रथ हैं। इन ग्रथा मे केवल वश-परम्परा, राज्यारोहण एव विजय पराजय का, इसके साथ ही मृत्यु का वणन है।

हिन्दी जीवनी साहित्य के तत्वा की ओर दृष्टिपात करने हुए यदि भारतेन्दु के जीवनी साहित्य का विश्लेषण किया जाय तो इसम कई त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। जहाँ तक चरित्र चित्रण का प्रश्न है, इन्होंने किसी भी अपने चरित नायक का विस्तत रूप से वणन नहीं किया उनके जीवन की दो चार घटनाओं को लेकर इन्होंने एक निबन्ध-सा लिखा है। इनके चरित्र चित्रण म वह तटस्थता नही जो कि एक जीवनी लेखक की जीवनी म होनी चाहिए। फिर भी 'पच पवित्रात्मा' मे इतनी कुछ तटस्थता दृष्टिगोचर होती है। जहाँ तक घटनाओं और वृत्तान्तो की छानबीन का प्रश्न है वह भी नकारात्मक है। कुछ ही लेखो म इसका प्रयत्न किया है। इन जीवन चरित सम्बधी निबधो को लिखने का उद्देश्य लेखक ने कही भी स्पष्ट नही किया। इनके अध्ययन से यही अनुमान लगाया जा सकता है कि लेखक का उद्देश्य इन चरित्रो को लिखने का यह था कि हिन्दी साहित्य की उन्नति हो, यह गद्य की इस विधा से भी वंचित न होने पाए दूसरे कुछ महान् व्यक्तियो के चरित्रो का जनता को परिचय करवाना था।

जहाँ तक इनकी भाषा शैली का प्रश्न है भारतेन्दु के जीवन चरित्र सम्बन्धी लेखो मे शुद्ध एव साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है। भाषा प्रसाद गुण युक्त है। भावानुकूल एव विषयानुकूल भाषा का प्रयोग इन्होंने किया है। जीवनी साहित्य का भाषा से घनिष्ट सम्बन्ध है। भारतेन्दु के जीवन चरित्र सम्बन्धी लेखो मे साहित्यिक भाषा का रोचक प्रयोग है। भाषा सरल तथा सुन्दर है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग कर चरित्र चित्रण म सजीवता उत्पन्न करने की क्षमता भारतेन्दु म यथेष्ट रूप से थी मानव हृदय के व्यापक भावो, हर्ष, शोक, क्षोभ आदि को व्यक्त करने म सफल थे।[1]

१८८३ ई० मे श्री रमाशंकर व्यास द्वारा लिखी हुई नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन चरित्र पुस्तक प्राप्त होती है। यह पुस्तक २० पृष्ठो मे लिखी गई है। इसम नेपोलियन के जीवन की कुछ घटनाओं का वणन किया है। इस जीवनी मे भी वही कमी है जो कि भारतेन्दु के जीवन चरितो म पायी जाती है। नेपोलियन के चरित्र का पूर्णतया विश्लेषण इसम नही किया गया है। लेखक जो कुछ कहना चाहता है वह उसमे निष्पक्ष रूप मे ही कहा है। कही भी उसके व्यक्तित्व का स्पष्ट विवेचन नही प्राप्त होता। भाषा शैली भी जीवनी साहित्य के अनुकूल नही है। १८८३ ई० म ही काशीनाथ खत्री द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतवर्ष की विख्यात स्त्रियो के जीवन चरित्र' प्राप्त होती है। जीवनी साहित्य की दृष्टि से इस पुस्तक का भी कोई विशेष

१ हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० १२४

महत्व नही है। इसके प श्चात १८८८ ई० मे जगन्नाथ द्वारा लिखित 'महर्षि श्री स्वामी दयान द सरस्वती का जीवन चरित्र' प्राप्त होता है। इस पुस्तक म स्वामी जी के जीवन सम्ब धी कुछ घटनाम्रा का वणन करत हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला है।

१८९३ ई० मे सवप्रथम किसी साहित्यिक व्यक्ति पर लिखी हुई जीवनी हमे कार्त्तिक प्रसाद खत्री द्वारा प्राप्त होती है। इनकी जीवनी का नाम मीराबाई का जीवन चरित्र है। इस पुस्तक म लेखक ने मीराबाई के जीवन पर लिखने का प्रयास किया है। जीवन चरित लिखने मे लेखक काफी सीमा तक सफल हुम्रा है। जिन भी जीवन के पक्षा को लेकर लेखक ने मीरा के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है वह इसका प्रयास श्रवणनीय है। लेकिन फिर भी इसमे एक त्रुटि है वह यह कि यह जीवनी भी मीराबाई के सम्पूण चरित्र का ज्ञान पाठक को नही कराती। इसमे लेखक की भाषा परिमार्जित है। वणन शली मे भी रोचकता है। इ ही द्वारा लिखी हुई शिवाजी पर जीवनी हमे १८९० ई० म प्राप्त होती है। इसमे खत्रीजी ने शिवाजी के जीवन का वणन स्पष्ट एव सत्य रूप से किया है। समय, स्थान एव घटनाम्रो की वास्तविकता पर लेखक ने पूरा ध्यान दिया है। इसमे भी पूण जीवन का वणन नही है। १८९३ ई० मे हमे कई राजनतिक पुरुषा के जीवन चरित प्राप्त होते हैं। प्रेमचन्द्र द्वारा लिखा हुम्रा महाराजा विक्रमादित्य का जीवन चरित्र' एव 'महाराजा छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र,' प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त १८९५ ई० मे राधाकृष्ण दास द्वारा लिखित 'कविवर बिहारीलाल पुस्तक प्राप्त होती है। इस पुस्तक म भी अनेक त्रुटिया हैं इसलिए इसको उच्च जीवनी साहित्य की श्रेणी मे नही रखा जा सकता। श्री नागरीदास का जीवन चरित' भी इन्होने लिखा है। इसके अतिरिक्त 'सूरदास एव भारतेन्दु के जीवन विषयक लेख भी इन्होने लिखे। इन सभी जीवन चरितो म किसी भी चरित्र नायक क सम्पूण व्यक्तित्व का वणन नहीं है। ये तो केवल जीवन चरित्र सम्बन्धी निबन्ध हैं। इनको जीवन चरित्र लिखन का प्रारम्भिक प्रयास कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त बालमुकुन्द गुप्त का १८९६ ई० म हरिदास गुरयानी १८९७ ई० म गोकुलनाथ शर्मा द्वारा लिखित 'श्री देवी सहाय चरित्र एव बलभद्र मिश्र का स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज का जीवन चरित्र' प्राप्त होत हैं।

भारतेन्दु युग म अन्य भाषाम्रा के जीवन ग्रन्थो का हिन्दी अनुवाद भी प्राप्त होता है। इससे यह पता चलता है कि इस काल मे जीवनी साहित्य की ओर न कवल रुचि और आकषण बना बल्कि सजग चेतना के साथ साहित्य के इस क्षेत्र म उन्नति और विकास की ओर भी ध्यान दिया गया। १८९९ ई० म स्वामी विरजानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र परमहस शिवनारायण स्वामीजी का जीवन चरित्र एव 'क्रिस्टाफर कोलम्बस' जीवनिमा प्राप्त होती हैं। स्वामी विरजानन्द सरस्वती क जीवन चरित्र का अनुवाद जगदम्बा प्रसाद न सन् १८९९ ई० म उर्दू स हिन्दी म किया। इसक

मूल लेखक पंडित लेखराम हैं। परमहंस शिवनारायण स्वामीजी का जीवन चरित्र मोहनी मोहन चटर्जी ने बंगला से हिन्दी मे अनुवाद करके १८६५ ई० मे प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त 'क्रिस्टोफर कोलम्बस' का अनुवाद गोपालद देवगण शर्मा ने १८६६ ई० म किया।

भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध जीवनीकारो म दवी प्रसाद मुसिफ का नाम उल्लेखनीय है। इनका इतिहास का अच्छा ज्ञान था इसलिए ऐतिहासिक अनुसन्धान के आधार पर इन्होने अनेक महापुरुष की जीवनिया लिखी हैं। महाराज मानसिंह कछवाला वाले अमीर का जीवन चरित्र (१८८६ ई०), राजा मालदेव का चित्र और जीवनी चरित्र, (१८८६ ई०) अकबर बादशाह और राजा बीरबल का जीवन चरित्र (१८६३) ई०, श्री रणधीर महाराजा प्रतापसिंह जी का जीवन चरित्र (१८६३ ई०), राणा भीम रत्नसिंह (१८६३ ई०), यदुपति महाराजा उदयसिंहजी (१८६३ ई०), मीराबाई का जीवन चरित्र (१८६८ ई०) श्री जयवन्त सिंह सिसोत का जीवन चरित्र १८६८ ई० मे प्राप्त होते हैं। ये सभी प्रामाणिक जीवनिया हैं। भाषा की दृष्टि स भी य अपना अद्वितीय स्थान रखती हैं।

विदेशी मिशनरियो ने भी जीवनी साहित्य की प्रगति मे इस युग म सहयोग दिया है। यह ठीक है कि इन मिशनरियो का उद्देश्य अपने मजहब का प्रचार करना था साहित्य या साहित्य के किसी अंग का विकास करना इनका उद्देश्य नही था फिर भी इनके द्वारा प्रकाशित हमे कुछ जीवनिया प्राप्त होती हैं। सन् १८६६ ई० म महाराणी विक्टोरिया का वृत्तान्त' पुस्तक क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। १८६६ ई० म सिकन्दर महान का वृत्तान्त' भी इंडियन क्रिश्चियन प्रेस, इलाहाबाद से ही प्रकाशित करवाया। इन पुस्तकों म भाषा का स्तर बहुत नीचा है इसे बाजारू साहित्यिक भाषा की श्रेणी मे रखा जा सकता है। यह भाषा भारतेन्दु युग के साहित्यिक स्तर स बहुत नीची है।

भारतेन्दु युग क जीवनी साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि प्राय सभी जीवनियो म जीवनी की स्थूल घटनाओ का वणन मात्र कर दिया है। जीवनी साहित्य इन्हें नही कहा जा सकता। इन्हें नायक के जीवन सम्बन्धी वणनात्मक लेख कहना अधिक उपयुक्त है।

द्विवेदी युग

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ के साथ ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र म आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रादुर्भाव हुआ। आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य म प्रवेश करते ही हिन्दी भाषा को शुद्ध परिमार्जित एव उसका परिपक्व रूप स्थापित किया। भाषा के व्याकरण शली और वाक्य विन्यास पर ध्यान दते हुए उन्होंने साहित्यिक समालोचना इतिहास, अथशास्त्र, राजनीति और जीवन चरित्र आदि विषयो पर गम्भीरता तल्लीनता तथा परिश्रम के साथ लिखना अपना कत्तव्य

निर्धारित कर लिया था। द्विवेदीजी ने जीवनी साहित्य के विषय में जो कुछ भी लिखा वह 'सरस्वती' पत्रिका में प्राय प्रकाशित हुआ। ये सभी जीवन चरित्र लेख के रूप में प्रकाशित हुए उनका सकलन पुस्तक रूप में हो गया। जीवन चरित्र सम्बन्धी इनकी पाँच पुस्तकें हैं। 'प्राचीन पडित और कवि' पुस्तक में आठ प्राचीन विद्वानों के जीवन सम्बन्धी लेख हैं। इसमें सुखदेव मिश्र एव लोलिंव राज के जीवन के विषय में लिखा है। द्विवेदीजी प्रत्येक बात अच्छी प्रकार से छानबीन करने के पश्चात् कहते थे। इस पुस्तक की भूमिका में इन्होंने सुखदेव मिश्र की चर्चा करते हुए लिखा है इसके सिवाय उनके चरित्र में विलक्षणतापूर्ण कुछ अलौकिक बातें भी हैं जिनसे विशेष मनोरजन हो सकता है।[1] इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में विशेष रूप से नायक की कविताओं का उल्लेख मात्र है।

'सुकवि सकीर्तन' में सात जीवनियाँ १५० पृष्ठों में लिखी गई हैं। इसमें महामहोपाध्याय पडित दुर्गाप्रसाद बगकवि माइकेल मधुसूदन और कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे कवियों की जीवनियाँ हैं। इनमें द्विवेदीजी ने इनके कवि जीवन को ही विशेष रूप से लिया है जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाएँ अनायास ही आ गई हैं।

'चरित चर्चा' में १२ व्यक्तियों के जीवन चरित्र हैं जिनमें रामकृष्ण परमहस', 'सीताराम शरण भगवान प्रसाद' बाबू शिशिर कुमार घोष प्रसिद्ध नायक मौला बक्श आदि विद्वान हैं। इन सभी जीवनियों में द्विवेदीजी ने नायक के कार्यों की प्रशसा की है। ये सभी जीवनियाँ उन्होंने उपदेशात्मक दृष्टिकोण से लिखी हैं जैसाकि उन्होंने पुस्तक की भूमिका में भी स्वय कहा है— 'इस चरित माला के आधार सत्पुरुषों में से दो एक को छोडकर बाकी के सभी आधुनिक कहे जा सकते हैं इन सभी के चरित्रों में अनेक विशेषताएँ हैं वे सभी गेय हैं अनुकरणीय हैं।'[2]

'वालेस का जीवन चरित्र' अनूदित जीवनी ग्रन्थ लिखकर द्विवेदीजी ने जीवनी साहित्य को उन्नतिशील बनाने का प्रशसात्मक कार्य किया है। वालेस का जीवन देश प्रेम एव त्याग से सम्पन्न है। इसी उपदेशात्मक दृष्टिकोण को सम्मुख रखते ही इन्होंने बगला से हिन्दी में अनुवाद किया।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि द्विवेदीजी ने सभी प्रकार के व्यक्तियों के जीवन चरित्र लिखे। कवि लेखक, विद्वान और वक्ता सम्पादक, राजनीतिज्ञ बादशाह सुल्तान और अमीर एव नूतन पथ प्रदर्शक सभी प्रकार के जीवन चरित्र लिखे हैं। इन्होंने अपने जीवन चरित्र उपदेश के लिए चरित्र निर्माण के लिए यशस्वी तथा महान् व्यक्तियों की उपादेयता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हिन्दी पाठकों को देश के इतिहास से परिचित कराने के लिए

---

१ प्राचीन पडित और कवि पृ० ७, द्वितीय प्रवृत्ति ले० महावीरप्रसाद द्विवेदी।
२ चरित चर्चा, ले० महावीरप्रसाद द्विवेदी पृ० २

समाज की बुराइयो से लोगो को परिचित कराने के लिए और हिन्दी लेखको को हिन्दी सेवा के लिए प्रेरणा देन के लिए तथा अन्य एसे ही उद्देश्यो का ध्यान म रखकर जीवनिया लिखी थी।[1] कई पुस्तको मे द्विवेदीजी ने अपने उद्दश्य को स्वय लिखा है। 'चरित चर्चा' की भूमिका म लिखते हैं—

'विद्वानो और महात्माओ क चरित से कुछ न कुछ अच्छी शिक्षा अवश्य मिलती है और समय ऐसी शिक्षा के प्रभाव को मलिन या कम नही कर सकता—इस चरित सग्रह से यदि पाठक का घडी दो घडी मनोरजन ही हो सका तो इसके प्रकाशन का प्रयास सफल हो जाएगा।"[2] उनके समस्त जीवनी लेख सन् १९०४ स १९३८ के बीच लिखे गए हैं।

बालमुकुन्द गुप्त

भारतेन्दु और द्विवेदी युग के सधिस्थल पर बालमुकुन्द गुप्त हुए हैं। इनके द्वारा लिखे हुए १७ जीवन चरित्र सम्बन्धी लेख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए हैं। प्रतापनारायण मिश्र पर लिखा हुआ इनका जीवन चरित्र लेख १९०७ सन् मे प्राप्त होता है। गुप्तजी ने प्रतापनारायण मिश्रजी का जीवन उनकी 'ब्राह्मण पत्रिका' मे लिखी स्वलिखित जीवनी के आधार पर लिखा है। इसमे गुप्तजी ने उनके जीवन मे यद्यपि विस्तारपूवक घटनाओ का वणन नही कर सके प्रत्युत फिर भी इनकी शली उत्तम है। अय जीवन चरित्रा म देवकीनन्दन तिवारी अम्बिकादत्त व्यास', पडित देवीसहाय बाबूराम दीन, पडित गौरी दत्त, 'पडित माधवप्रसाद मिश्र' 'मुन्शी देवी प्रसाद' यागन्द्रचन्द्रबसु मक्समूलर', अकबर बादशाह एव शेखसादी हैं। शेखसादी के जीवन चरित्र लिखने से पहल यह लिखत हैं—

> कुछ ऐसे लोग हैं कि जो जीत हैं पर लोग नही जानते कि वह जीते हैं या मर गए। कुछ ऐसे हैं कि जो मरकर मर गए और कुछ जी कर जीते हैं। पर कुछ ऐसे भी हैं कि सकडो साल हुए मर गए, भूमि उनकी हडिडयो को कबर समत चाट गई तथापि वह जीत हैं। फारिस के मुसलमान कविया म शेखसादी भी वस ही लोगों मे से हैं।[3]

इस उक्ति स इनके जीवन चरित्र लिखने का उद्देश्य एव उत्कृष्ट भाषा शैली के प्रयोग का अनुमान हो जाता है। गुप्तजी के य सभी जीवन चरित सम्बन्धी निब ध सन् १९०० से १९०७ ई० तक लिखे गए। ये सभी भारत मित्र पत्रिका म प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार हम देखत हैं कि गुप्तजी ने भी जीवन की कुछ घटनाओ को आधार मान कर ही जीवनी साहित्य लिखा है लेकिन इनम वज्ञानिकता एव सत्यता का पूण रूप स ध्यान रक्खा है।

---

१ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० १४१

२ चरित चर्चा प्रथम सस्करण, पृ० २

३ गुप्त निबन्धावली, पृ० ६६, ले० बालमुकुन्द गुप्त

इसके अतिरिक्त स्व० बाबू जमनादास की 'सजीवनी चरित्र' १९०० ई० में, रामविलास सारडा द्वारा लिखित 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन महर्षि' १९०१ ई० म पूर्ण कवि द्वारा लिखित विक्टोरिया चरितानद, लज्जा राम शर्मा का 'विक्टोरिया का चरित्र' १९०२ ई० मे गौरीशकर हीराचन्द ओझा का 'कनल जेम्सटाड', राजाराम का 'स्वामी शकराचार्य', लाला काशीनाथ खत्री का 'भारतवर्ष की विख्यात नारियों के चरित्र,' बलदेव प्रसाद मिश्र का 'पृथ्वीराज चौहान' प्रकाशित हुए। इनमे राजाराम द्वारा लिखित स्वामी शकराचार्य का जीवन वृत्तान्त उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त रामविलास सारडा ने महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भी 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन महर्षि' धार्मिक जीवन चरित्रो की श्रेणी मे उल्लेखनीय पुस्तक है। इसमे स्वामीजी के जीवन का वर्णन अत्यन्त रोचक एव आकर्षक है।

सन् १९०३ म देवीप्रसाद का 'महाराणा प्रतापसिह' माधवप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'स्वामी विशुद्धानन्द', क्षेत्रपाल शर्मा का डॉ० हरनामसिह एव लज्जाराम मेहता का अमीर अब्दुरहमान खा जीवनियाँ प्रकाशित हुइ। इनमे देवीप्रसाद द्वारा लिखित महाराणाप्रतापसिह की जीवनी अधिक प्रामाणिक आधारो को लेकर लिखी गई है। तत्कालीन इतिहास का यह पाठक को अच्छा दिग्दर्शन करवाती हैं।

सन् १९०४ ई० म कन्हैयालाल शास्त्री द्वारा लिखित 'श्री वल्लभाचार्य दिग्विजय' गगाप्रसाद गुप्त की 'रानी भवानी' दयाराम द्वारा लिखित 'दयानन्द चरितामृत', देवीप्रसाद का 'राणा सग्रामसिह', विज्ञानन्द द्वारा लिखित 'रामकृष्ण परमहस और उनके उपदेश' कार्तिक प्रसाद द्वारा लिखित 'अहिल्याबाई का जीवन चरित्र,' सखाराम गणेश का 'आनन्दीबाई', विश्वेश्वरानन्द का 'महिला महत्व', गोकर्णसिह की 'श्रीयुत सप्तम एडवड की सक्षिप्त जीवनी' सुन्दरलाल शर्मा द्वारा लिखित विश्वनाथ प्रसाद पाठक एव परमानन्द द्वारा लिखित 'पतिव्रता स्त्रियो का जीवन चरित्र' प्रकाशित हुए। इन प्राप्त जीवनियो मे गोकर्णसिह की सप्तम एडवड पर लिखी हुई जीवनी का विशेष महत्व है क्योकि यह विदेशी शासक के जीवन पर लिखने का प्रयास है। दयाराम ने स्वामी दयानन्द का जीवन भी अत्यन्त श्रद्धापूर्वक लिखा है। इस जीवनी का धार्मिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व है। श्रद्धा का अतिरेक होने से जीवनी साहित्य के सिद्धातों का लेखक ने पूर्णरूप से प्रयोग नही किया है।

शिवनन्दन सहाय

हिन्दी साहित्य म सर्वप्रथम एव सफल साहित्यिक जीवनी लेखक शिवनन्दन सहाय हैं। जीवनी लेखको म इनका नाम सर्वमान्य एव उल्लेखनीय है। सत्य तो यह है कि जीवनी लेखन म व मार्गदर्शक हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र गोस्वामी तुलसीदास, बाबू साहिब प्रसादसिह की जीवनी चैतन्य महाप्रभु एव मीराबाई की जीवनियाँ इनकी अमर देन हैं।

'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' नामक जीवनी

शिवनन्दन सहाय द्वारा लिखित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' जीवनी सन् १९०५ में पटना—'खग विलास' प्रेस बाँकीपुर से प्रकाशित हुई। इस समस्त जीवनी को इन्होंने सुसगठित एवं संक्षिप्त रूप देने के लिए परिच्छेदों में विभाजित किया है। इसके अष्टविंश परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में लेखक ने भारतेन्दु के 'वंश परिचय' का वर्णन किया है जिसमें अमीचन्द को भारतेन्दु का पूर्वज मानते हुए इनके निवास स्थान की प्रामाणिकता के विषय में 'इण्डियन ऐन्टीक्वेरी (?) क्रोनिकल मैगजीन', रमाशंकर व्यास और राधाकृष्णदास के मत को स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त सेठ अमीचन्द के वर्णन में अनेक आंग्ल भाषा की एतिहासिक पुस्तकों को आधार माना है।

द्वितीय परिच्छेद में 'बाल्यावस्था' का वर्णन है। इसमें बचपन से ही इनकी कुशाग्र बुद्धि का परिचय इन्होंने पाठक से करवा दिया है। तृतीय परिच्छेद में इनकी 'यात्रा' का वर्णन है। जिन जिन देशों एवं नगरों में ये घूमे उन सभी स्थानों का वर्णन प्रमाण युक्त लेखक ने किया है।

चतुर्थ परिच्छेद में इन्होंने जो भी लोकहित कार्य किए उन सभी का उल्लेख है। लोकहित कार्य में लेखक ने चौखम्भा स्कूल, समाचार पत्रों में—बनारस अखबार सुधाकर पत्र कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका बालबोधिनी काशी पत्रिका, आर्यमित्र, मित्र विलास भारत मित्र एवं हिन्दी प्रदीप पत्रिकाओं के जन्म के प्रधान कारण भारतेन्दु को बतलाते हुए लेखक ने इनके पूर्ण सहयोग का वर्णन किया है। इसके पश्चात् लोगों के हित के लिए जो इन्होंने सभाएं—'कविता वर्द्धिनी सभा' सं० १९२७ में, १८७३ में पेनिंग रीडिंग क्लब' एवं श्रावण शुक्ल १३ बुधवार १९३० (१८७३ ई०) को इन्होंने 'तदीय समाज' जो स्थापित किया था इन सभी का वर्णन कवि समाज शीर्षक में है। इसके अतिरिक्त वैश्य लोगों के हित के लिए १८७४ ई० में 'वैश्य हितैषिणी' सभा जो इन्होंने स्थापित की थी उन सभी का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इनके अतिरिक्त भारतेन्दु की स्थापित अन्य सभाएं अनाथ रक्षिणी सभा, काशी सार्वजनिक सभा यंग मेन्स असोसियेशन एवं हिन्दी डिबेटिंग क्लब का भी इसमें उल्लेख है। अन्य देशहित कार्य भी इन्होंने किए जैसे १८६८ ई० में 'होमियोपैथिक दातव्य चिकित्सालय' की स्थापना जो इन्होंने की उन सभी का उल्लेख है।

'पंचम परिच्छेद' हिन्दी भाषा तथा 'हिन्दी अक्षर' नाम से है। इसमें लेखक ने हिन्दी भाषा एवं हिन्दी वर्णमाला के विषय में लिखा है। इसको लिखने का लेखक का विशेष उद्देश्य था जैसा कि उसने भूमिका में स्पष्ट किया है—

'इसमें एक परिच्छेद हिन्दी भाषा' और हिन्दी वर्णमाला के विषय में लिखा गया है। इसको हमने निज प्रिय पुत्र बाबू ब्रजनन्दन सहाय वकील के अनुरोध से लिखा है। निःसन्देह यह परिच्छेद बहुतेरों के लिए उपयोगी होगा। यह विषय यद्यपि कदाचित् किसी पुस्तक में सन्निवेशित नहीं हुआ है। इस विषय का लेख

कभी-कभी किसी किसी पत्र में लेखन में आया है यहीं। यह विषय इस पुस्तक में इस अभिप्राय से सन्निवेशित किया गया है कि हिन्दी रसिकों को इस विषय में आगे अधिक अनुसन्धान करने का उत्साह होगा। इसमें कतिपय अंग्रेजी पुस्तकों तथा मित्रों से सहायता ली गई है।[1]

षष्ठ परिच्छेद में भारतेन्दु की कविता के समस्त गुणों का वर्णन किया है—

'विषय और प्रबन्ध की उत्तमता, सरलता, भाव की गम्भीरता, भाषा की सरलता और शब्द विन्यास की निपुणता का प्रदर्शन ही श्रेष्ठ कवि के मुख्य गुण हैं। जिस कवि की कविता इन गुणों से भूषित हो वही उत्तम कवि कहलाने का अधिकारी है। विचारपूर्वक देखने से हरिश्चन्द्र की कविता इन गुणों से भूषित पाई जाती है। भाषा मानो उनकी आज्ञाकारिणी पर की चेरी थी। कठपुतली के समान जिधर इच्छा हुई है उधर ही उसे नचाया है।'[2]

सप्तम परिच्छेद में प्रारम्भ में ही लेखक ने इसके विषय को स्पष्ट किया है—

'काव्य क्यारी की साधारण छवि दिखलाने के अनन्तर इस परिच्छेद में उसके कई मनोहर तरुवर तथा लतादि के सौन्दर्य विज्ञान अर्थात् हरिश्चन्द्र कृत काव्य ग्रन्थों के कुछ विवरण लिखने की चेष्टा की जाती है किन्तु अवकाशाभाव से उन सबकी समालोचना सविस्तार नहीं हो सकती। कविता रसिक जन स्वयं पुस्तकों को देखकर पूरा आनन्द उठा सकेंगे केवल नमूने की भाँति जहाँ तहाँ पूर्ववत् उनमें से कविता का उल्लेख किया जाएगा।'[3]

अष्टम परिच्छेद में नाटक, नवम परिच्छेद में धर्मग्रन्थ एवं दशम परिच्छेद में इनकी पुस्तकों का जो कि इतिहास सम्बन्धी हैं उनका उल्लेख है।

एकादश परिच्छेद में इनके परिहास एवं व्यंग्य सम्बन्धी लेखों का वर्णन है। द्वादश परिच्छेद में विश्लेषण भी लेखक ने स्पष्ट रूप से किया है। इस प्रकार शैली सम्बन्धी सभी गुण—सत्यता, वास्तविकता, रोचकता, कथानिकता एवं सुसंगठितता इनकी जीवनी में पाए जाते हैं। हिन्दी साहित्य की यह प्रथम जीवनी है जो कि एक साहित्यिक व्यक्ति के विषय में विस्तार रूप से प्रकाश डालती है। साहित्यिक लेखक होने से इसका और ही महत्व है। लेखक ने अन्य लोगों में इसकी प्रसिद्धि हो इसलिए स्थान स्थान पर अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग किया है। भाषा भावानुकूल एवं विषयानुकूल है।

'गोस्वामी तुलसीदास' शीर्षक जीवनी

शिवनन्दन सहाय की यह दूसरी महत्वपूर्ण जीवनी है। इसका प्रकाशन काल

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० शिवनन्दन सहाय, 'भूमिका'
२ वही पृ० ११५
३ वही, पृ० १३७

९१६ ई० है। इस पुस्तक के दो खड हैं। पहले मे बडे विस्तार से सग्रह परिच्छेदो मे
लसीदास के जीवन पर प्रकाश डाला है। इन परिच्छेदो के शीर्षक तुलसी के जीवन
निरूपित विभिन्न पक्षो को स्पष्टत द्योतित करते है शीर्षक हैं – जन्मकाल और
न्मस्थान जाति और जनक जननी बाल्यावस्था, विवाह राजापुरवास, श्री रामदर्शन,
ी हनुमानजी विषयक दो एक अन्य बातें काशी वास वृत्तात, दिल्ली गमन, ब्रजगमन,
चत्रकूट तथा अवधवास, मित्र और सम्मान, बधु और वंशज, भ्रमण स्वभाव तथा
वग पयान। इस जीवनी म लेखक ने जन श्रुतियो के महत्व को बहुत समझा है इसी-
लए वह सजीव व्यक्तित्व के निर्माण म सफल हुए हैं। दूसरी ओर, अतस्साक्ष्य मे
उपलब्ध तथ्य विशेष म जनश्रुति की सहायता से प्राण सचार कर दिया है। यही
ारण है कि इस पुस्तक का जीवनी खड भक्तमाल प्रकार का न होकर वास्तविक
जीवनी की कोटि म परिगणनीय है।

इस पुस्तक के द्वितीय खड मे तुलसीदास की कृतियो के साहित्यिक महत्व
पर साधारणत पृथक कृतियो को ध्यान मे रखते हुए तथा समवेत रूप स भी
विचार किया गया है। शिवनन्दन सहाय ने उन सभी प्राचीन भक्तचरित लेखको तथा
समसामयिक विद्वानो एव टीकाकारो आदि के मत मतातरो का यथास्थान उल्लेख
कर अपने ग्र थ को प्रामाणिक बनाने की चेष्टा की है, जिन्होने सविस्तार या सक्षेप्त
पुस्तको या पत्र पत्रिकाओ म तुलसीदास के जीवन या साहित्य पर लिखा था। जिनम
भक्तमाल, प्रियादासकृत भक्तमाल की टीका वेणीमाधवकृत मूल गोसाई चरित,
शिवसिंह सरोज इपीरियल गजेटियर राधाचरण गोस्वामी कृत नव भक्तमाल आदि।
गोस्वामी तुलसीदास पर लिखी हुई यह सर्वप्रथम जीवनी है जिसम इतना विशद वर्णन
गोस्वामीजी का प्राप्त होता है। माताप्रसाद गुप्त ने इस ग्र थ की उपादेयता के विषय
मे कहा है— ग्रन्थ दो द ष्टयो से उपादेय है एक तो उसके पहले कवि के सम्बन्ध मे
जो कुछ लिखा गया था, इस ग्रन्थ म उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया है और
दूसरे मानस म अपने पूर्ववर्ती सस्कृत ग्रन्थो की जो प्रतिच्छाया मिलती है उसकी
ओर स्पष्ट रूप से पहल पहल इसी ग्रन्थ मे तुलसीदास के पाठको का ध्यान आकर्षित
किया है।[१] इस जीवनी म कही-कही लेखक न तुलसीदास की तुलना शेक्सपीयर से
की है। श्रद्धावश तुलसी को शेक्सपीयर स श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।
भाषा एव शैली की दृष्टि से जीवनी सर्वश्रेष्ठ है।

इनके पश्चात् १९०५ ई० म उमापति दत्त शर्मा की नेपालियन बोनापार्ट की
जीवनी भी प्राप्त होती है। सन् १९०६ मे गगाप्रसाद गुप्त का दादा भाई नौरोजी,
देवराज की समीराभिस, मु० देवीप्रसाद की रसानामृत भाग १ जीवनियाँ लिखी गइ
जिनका एतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्व है। इसके पश्चात् १९०७ ई० म चिमनलाल
वश्य द्वारा लिखित स्वामी दयान द ठाकुरप्रसाद खत्री द्वारा 'हैदरअली, महादेव भट्ट
की लाजपत महिमा, सतीशचन्द्र मिश्र द्वारा 'रणधीर महाराणा प्रतापसिंह जी,

१ तुलसीदास ले० माताप्रसाद गुप्त, प्र० स० भूमिका, पृ० १२

मुंशी कन्हैया जू द्वारा 'बुन्देलखण्ड केसरी', कामताप्रसाद गिरि द्वारा 'वीरेन्द्र बाजीराव', हनुमतसिंह पन्नालाल द्वारा 'रमणीरत्नमाला', ब्रजनन्दनसहाय द्वारा लिखित 'बलदेवप्रसाद मिश्र' एवं ब्रजनन्दन सहाय वकील द्वारा लिखित 'राधाकृष्णदास जी की जीवनी' प्रकाशित हुई। इनके अतिरिक्त इसी सन् में गंगाप्रसाद गुप्त का 'बाबू राधाकृष्णदास का जीवन चरित्र', रामशंकर शर्मा का 'गौरीशंकर उदयशंकर' का 'रा० दुर्गाप्रसाद साहब बहादुर का जीवन चरित्र' चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद का 'गौरीशंकर उदयशंकर ओझा' भी प्रकाशित हुए। इन सभी में जीवनी लेखन कला का सफल प्रयास है।

द्विवेदी युग के जीवनी साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि सन् १९०८ से १९२६ तक कोई भी उत्कृष्ट साहित्यिक व्यक्ति की जीवनी किसी भी साहित्यिक लेखक ने नहीं लिखी। जो भी जीवनियाँ प्राप्त होती हैं वे सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक पुरुषों की हैं। १९०८ ई० में वृन्दावनलाल वर्मा का 'भगवान बुद्ध का जीवन चरित्र', बलदेव प्रसाद मिश्र का 'तात्या भील', सूर्यकुमार वर्मा का 'कांग्रेस चरितावली', पं० रामचन्द्र वैद्य शास्त्री का 'भारत नर रत्न चरितावली' प्रकाशित हुए। १९०९ ई० गोचरण स्वामी का 'भगवानप्रसादजी', रूपनारायण पांडेय का 'श्री गौराङ्ग चरित', परमानन्द स्वामी का 'बुद्ध', सूर्यकुमार वर्मा का 'मुगल सम्राट अकबर', मुं० देवीप्रसाद का 'खानखाना नामा दो भाग', पद्मसिंह शर्मा का 'सिक्खों के दस गुरु', ब्रजनाथजी का 'सच्चा साधु' एवं पारसनाथ त्रिपाठी का 'तपोनिष्ठ महात्मा अरविन्द घोष' प्रकाशित हुए। इन जीवनियों में से सूर्यकुमार द्वारा लिखित अकबर की जीवनी में हम तत्कालीन देश की परिस्थितियों के विषय में अच्छा अनुमान हो जाता है।

सन् १९१० में देवीप्रसाद की 'बाबरनामा', अखिलानन्द शर्मा की 'दयानन्द दिग्विजय', किशोरीलाल गोस्वामी की 'नन्हे लाल गोस्वामी', दयाचन्द्र गोयलीय की 'कांग्रेस के पिता ए० ओ० ह्यूम', ब्रजनाथ शर्मा चौबे द्वारा लिखित 'सर विलियम वेडरबर्न', नवनीत चौबे की 'हरिदास यशानु चरित्र', मुं० सूर्यमल का 'जैन जीवन चरित्र', जगन्नाथप्रसाद शुक्ल का 'शंकर चरित्र', ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा का 'महारानी बायजा बाई सिंधिया', तिलक सिंह का 'रामलाल सिंह जीवन चरित्र' प्रकाशित हुए। ये सभी जीवन चरित साधारण कोटि के हैं। इनमें कोई विशेष बात नहीं किन्तु इनका महत्व ऐतिहासिक दृष्टि से ही है।

सन् १९११ में मुं० राम जिज्ञासु का 'नेपोलियन बोनापार्ट', उदयनारायण तिवारी का 'सम्राट जार्ज पंचम का जीवन चरित्र', विलियम ए० थेयर का 'गारफील्ड जीवन चरित्र' प्रकाशित हुए। इनमें उदयनारायण तिवारी का 'जार्ज पंचम का जीवन चरित्र' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस जीवन चरित्र के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भारतीय लेखकों को विदेशी पुरुषों के जीवन चरित्र लिखने का शौक था। हिन्दी लेखकों का यह प्रयास भारतीय जीवनी साहित्य की प्रगति के लिए एक सराहनीय प्रयास है।

सन् १९११ म द्वारिकाप्रसाद शर्मा की 'भीष्म पितामह', 'आदश महारमागण भाग १', 'आदश महिलाएँ भाग १', लज्जा राम शर्मा की 'उम्मेदसिंह चरित्र', ललिता प्रसाद शर्मा की विदुषी स्त्रिया भाग १', विदुषी स्त्रियाँ भाग २', देवेन्द्र प्रसाद जन की ऐतिहासिक स्त्रिया बजनाथ शर्मा की 'श्रीगुरुचरित्र', रामप्रताप पडित की राम गोपाल सिंह चौधरी की संक्षिप्त जीवनी' एव यशोदादेवी की 'वीरपत्नी सयोगिता, जोवनियाँ प्रकाशित हुई। य सभी जीवनियाँ धार्मिक एव सामाजिक व्यक्तियो की हैं। ये सभी जीवन चरित्र निबन्धात्मक शली म लिखे गए हैं। इसलिए इन्हें जीवन चरित्र सम्बन्धी निबन्ध कहना अधिक उपयुक्त है। राधामोहन गोकुलजी की 'देशभक्त लाजपत एव नारायण प्रसाद अरोडा का स्वामी रामतीथ का जीवन चरित्र, भी इसी सन् म प्राप्त होते हैं। यही दो जीवनियाँ इसी सन् म ऐसी हैं जो मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की झाकी प्रस्तुत करती है। इसलिए इनका विशेष महत्व है।

सन् १९१३ मे भी धार्मिक एव सामाजिक व्यक्तियो की जीवनिया ही प्राप्त होती हैं। परमानन्द स्वामी की 'शकराचाय मुकुन्दी लाल वर्मा का 'कम वीर गाँधी, लज्जाराम शर्मा का 'उम्मेदसिंह चरित', भगवती नारायण सिंह की 'हिज हाइनेस श्री सर प्रभुनारायण सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० काशी की संक्षिप्त जीवनी, गगाप्रसाद शास्त्री का 'महिला जीवन', गणेश लाल का सचित्र भारत रत्न', ललिताप्रसाद वमा की भारतवष की वीर माताएँ, कु० छत्रपति सिंह जू देव का रमेश जीवन, देवीप्रसाद शर्मा का 'हृदयोद्गार' बलदेव प्रसाद शमा का 'हकीकत राय धर्मी, एव लक्ष्मी धर वाजपेयी का स्वामी नित्यानन्द' जीवन चरित्र प्रकाशित हुए।

सन् १९१४ मे आनन्द किशोर महता का गुरु गोविन्दसिंह जी, वेनीप्रसाद द्वारा लिखित 'गुरु गोविन्दसिंह', स्वामी श्रद्धानन्द की 'आय पथिक लेखराम', महात्मा मुन्शीराम की 'आय पथिक लेखराम', रघुनन्दन प्रसाद मिश्र की 'शिवाजी और मराठा जाति', सम्पूर्णानन्द की 'धमवीर गाधी सूय नारायण त्रिपाठी की 'रानी दुर्गावती' गणपति कृष्ण गजर की 'स्वामी रामतीथ की जीवनी और व्याख्यान रामानन्द द्विवेदी का गांधी चरित्र, नन्दकुमार देव शमा का महात्मा गोखले', ब्रह्मानन्द का 'जमनी के विधाता या कैसेर के साथी, लक्ष्मीधर वाजपेयी की गोसिफ मँजिनी', बद्रीप्रसाद गुप्त की मि० दादाभाई नौरोजी अखौरी कृष्ण-प्रसाद सिंह की 'नलसन', रामचन्द्र वर्मा की 'महादेव गोविन्द रानाडे ताराचरण अग्निहोत्री की महाराष्ट्र केसरी शिवाजी, नाथूराम प्रेमी की 'कर्णाटक जन कवि' जनन्द किशोर की मु० कु० वा० रामदीन सिंह, मेहता लज्जाराम शर्मा का जुभारतेजा', पंडिय लाचन प्रसाद शर्मा की 'चरित्र माला, एव नारायणसिंह जी की भारतीय आत्मकथा इसी सन् मे प्रकाशित हुई। इन सभी म स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखी हुई 'आय पथिक लेखराम', एव बेनीप्रसाद की गुरु गोविन्द सिंह की जीवनी उत्कृष्ट हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से इनका विशेष महत्व है। सम्पूर्णानन्द एव

रामानन्द द्विवेदी ने गाधीजी के जीवन की कुछ घटनाओं का आधार लेकर जीवन चरित्र लिखने का प्रयास किया है। इसी प्रकार ताराचरण अग्निहोत्री एव रघुनन्द प्रसाद मिश्र ने शिवाजी की जीवनी लिखी है। इसका ऐतिहासिक दृष्टि स महत्व है। दुर्गावती का जीवन चरित्र भी सूयनारायण त्रिपाठी न लिखा है। इन इतिहास के बीत हुए समय के प्रसिद्ध वीर पुरुषो एव वीरागनाओ क जीवन चरित्र इस समय म उपदेशात्मक दृष्टिकोण से लिखे जात थ जिसस लोग इनके अध्ययन से कुछ प्ररणा ग्रहण कर सकें।

१६१५ सन् म द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी का रामानुजाचाय' शानचद्र का वीरागना केदारनाथ पाठक का लक्ष्मण द्विवेदी, लाला भगवानदीन की श्रीमती ऐनी बसेंट, द्वारिका प्रसाद शर्मा का 'साक्रटीज महात्मा श्री किशोरीदास का 'निम्बाक महामुनीन्द्र इद्रवेदालकार का प्रिंस बिस्माक', केशव प्रसाद उपाध्याय का भारतीय आरकान', रामश्वर प्रसाद शर्मा का मि० दादाभाई नौरोजी नरेन्द्र कुमार देव शर्मा की 'स्वामी रामतीथ की जीवनी और व्याख्यान, ब्रज मोहन झा ओकारनाथ वाजपेयी का समय रामदास एव चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा का भाष्यकार श्री रामानुजाचाय का सचित्र जीवन चरित्र जीवनिया प्रकाशित हुइ।

१६१६ ई० म जगमोहन वर्मा की राणा जगबहादुर', सम्पूर्णानन्द की 'महाराज छत्रसाल' चन्द्रशेखर पाठक का नेपोलियन बोनापाट बजबिहारी शुक्ल का मदन मोहन मालवीय शिव कुमार सिह की मानवीय पडित मालवीयजी के साथ और हिन्दू विश्वविद्यालय के काशीराम नारायण मिश्र की महादेव गोविन्द रानाड एव अज्ञात की 'सच्ची स्त्रिया भी प्रकाशित हुई। इनके अतिरिक्त १६१६ सन् म अन्य भाषाओ की जीवनिया का हिन्दी मे अनुवाद हुआ। श्याम सु दर दास की बुद्धदेव जिसके मौलिक लेखक जगमोहन वर्मा हैं इसी सन् मे प्राप्त होती हैं। चडीचरण बनर्जी द्वारा लिखित जीवनी विद्यासागर का हिन्दी अनुवाद रूपनारायण पाडेय ने लिखा। बकिमचन्द्र लाहिडी द्वारा लिखी जीवनी नेपोलियन बोनापाट, का हिन्दी अनुवाद जनादन झा ने किया।

सन् १६१७ म पदमन दन प्रसाद मिश्र की राजा राम मोहन राय शिवनारायण द्विवेदी की राजाराम मोहन राय एव कोलम्बस बजमोहन लाल की हजरत मुहम्मद साहब रामानन्द द्विवेदी का नूरजहा यदुनदन प्रसाद एव बालमुकुद वाजपेयी की एनी बसट' जयशकर प्रसाद का सम्राट चन्द्रगुप्त मौय लक्ष्मीधर वाजपेयी की छत्रपति शिवाजी शीतला चरण वाजपेयी की 'रमेशचन्द्र दत्त हरिदास माणिक की 'भारत की छत्राणी भाग २ राधामोहन गोकुल जी की 'नपोलियन बोनापाट', जीवनिया प्रकाशित हुई।

सन् १६१८ सन् म पूर्णसिह वर्मा की भीमसेन शर्मा, लालमणि वाडिया की प० ज्वाला प्रसाद मिश्र राधाकृष्ण का 'नवरत्न ओकारनाथ वाजपयी का जे० एन० टाटा' अभयकुमार मनेय का सिराजुद्दौला, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

का 'रूस का राहु' 'वीर सत्याग्रही भवानी दयाल की संक्षिप्त जीवनी' अनात द्वारा लिखी गई। इनके अतिरिक्त लोकमान्य तिलक, गुरु गोविन्द सिंह की जीवनियां भी माना सेवक एव राधेमोहन गोकुल आवार द्वारा लिखी गई।

सन् १९१९ म रूपनारायण पाडेय की 'बकिम चन्द्र चटर्जी की जीवनी' प्राप्त होती है। यह तथ्यपूर्ण एव सप्रमाण जीवनी लिखी गई है। पाडेयजी न अत्यन्त स्वाभाविक ढग स नायक के चरित्र गुणो का उल्लेख किया है। एक भारतीय हृदय द्वारा लिखी हुई केशवचन्द्र सेन की जीवनी भी इसी सन् म प्राप्त होती है। इस युग मे जीवनी साहित्य म यदि सर्वोत्तम नही तो सवश्रेष्ठ पुस्तको म इस पुस्तक का स्थान ऊँचा है। चरित्र नायक का व्यक्तित्व इस ग्रन्थ म देखा जा सकता है। उसकी आत्मा पहचानी जा सकती है। जीवन का सच्चा चित्र इस पुस्तक म मिलता है। पाठक यह अनुभव करता है कि एक तटस्थ लेखक न एक व्यक्ति के जीवन की मीमासा दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक ढग स करने का प्रयत्न किया है। चरित्र नायक का मानवीय रूप उसके गुण और दोष के साथ इस ग्रन्थ म चित्रित है। इसका मुख्य आधार अग्रेजी पुस्तक है। इनके अतिरिक्त विश्वम्भरनाथ शर्मा का 'रूस का शत्रु', महावीर प्रसाद का 'आदर्श सम्राट', चन्द्रशेखर पाठक का 'पृथ्वीराज', केदारनाथ गुप्त का 'भारत के दश रत्न' जैसी जीवनियाँ प्राप्त होती है।

१९२० सन् सम्पूर्णानन्द की लिखी हुई 'सम्राट हर्षवर्द्धन' 'महादाजी सिन्धिया' जैसी जीवनियां प्राप्त होती हैं। इन जीवनियो को न तो इतिहास की श्रेणी म रक्खा जा सकता है और न जीवन चरित्रो की। इनम लेखक ने नायक के जीवन की कुछ घटनाओ का वर्णन किया है। 'महादाजी सिंधिया' म इसी वीर पुरुष का जीवन चरित्र लिखा है। इसम नायक के सम्बन्ध का साधारण इतिहास है जो केवल सर्व साधारण की जानकारी के लिए लिखा गया है। लेखक न इसकी पुस्तक की भूमिका म ही कह डाला है—'उनके जीवन का परिचय सर्वसाधारण को करवाने के लिए ही यह पुस्तक लिखी गई।' इन पुस्तको म हिन्दू संस्कृति और भारत के गौरव के महत्व पर जोर दिया है। व्यक्तिगत स्वभाव परिवार की बातें इन पुस्तको म वर्णित हैं। इसलिए उन्हे ऐतिहासिक जीवनी साहित्य म लिया गया है।

यही नही १९२० सन् म ही चन्द्रशेखर पाठक ने राणा प्रताप सिंह एव सिकन्दर शाह के जीवन चरित लिखे। नवजादिकलाल श्रीवास्तव का 'देशभक्त लाला लाजपत राय' भगवानदास केला का 'देशभक्त दामोदर' लक्ष्मीबाई का धन्नो देवी, सुखसम्पत राय भडारी का 'भगवान बुद्ध', बेनीप्रसाद का महाराजा रणजीत सिंह एव ईश्वरी प्रसाद शर्मा, अनात एव माता सेवक की बाल गगाधर तिलक पर लिखी जीवनियाँ भी इसी सन् म प्रकाशित हुई।

सन् १९२१ म श्यामसुन्दरदास की कोविद रत्नमाला भाग २, सुरेन्द्रनाथ तिवारी की 'कन्न मक्समूलेर', विश्वेश्वरनाथ मेहर की 'अब्राहम लिंकन' एव राम दयाल तिवारी की गाधी मीमासा प्रकाशित हुई। इनम डा० श्यामसुन्दरदास

की कोविद रत्नमाला का साहित्यिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। सन् १९२२ में दुलारेलाल भार्गव की द्विजेन्द्र लाल राय, श्री रूपनारायण पाण्डेय की मारवाड़ के प्रसिद्ध महात्मा की बानी और जीवन चरित्र, मथुराप्रसाद दीक्षित की 'नादिरशाह', शिवव्रत लाल की 'प्राचीन हिन्दू माताएं', वासुदेवपति वाजपेयी की एडमस्मिथ, स्वामी मुरली धर का निम्बादित्य चरितम, राधामोहन गोकुल जी की जोजेफ गैरीवाल्डी' प्रकाशित हुई। सन् १९२३ में भाई परमानन्द की वरागीवीर, गुलबदन ब्रजनन्दनदास की सर हेनरी लारेंस, सुरसम्पति राय भंडारी की 'श्री जगदीशचन्द्र बोस' कृष्ण कुमारी की भारत की विदुषी नारियां एवं पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित दादा भाई नौरोजी जीवनियां प्रकाशित हुई हैं। सन् १९२४ में रामनारायण सिंह जायसवाल की स्वामी शंकराचार्य का जीवन वृत्तान्त एवं बनारसीदास चतुर्वेदी की महादेव गोविन्द रानाडे प्राप्त होती है। १९२५ सन् में केवल दो ही जीवनियाँ चक्रवर्ती वाप्पारल एवं शिवाजी रामशंकर त्रिपाठी एवं रामबक्ष शर्मा द्वारा लिखी हुई प्रकाशित हुई। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि १९१६ से १९२५ सन् के भीतर जितनी भी जीवनियाँ लिखी गई हैं वे सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक की हैं चाहे उनके लेखक साहित्यिक ही हैं।

बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित जीवनी साहित्य

इस समय की अन्य महत्त्वपूर्ण जीवनी बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी है। यह भी एक मौलिक जीवनी है। इसका प्रकाशन काल १९२६ सन् है। लेखक ने चरित्र नायक के दोषों का भी पूर्ण रूप से उल्लेख किया है। इसमें किसी भी प्रकार की कृत्रिमता नहीं देखने में आती। लेखक ने नायक का वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से किया है। इसके अतिरिक्त नायक की व्यक्तिगत घटनाओं को लेखक ने सप्रमाण व्यक्त किया है। लेखक ने नायक के घर जाकर उनके जीवन के सम्बन्ध में पता लगाया जो नायक के व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालता है। जीवनी में लेखक ने कुछ पत्रों का भी समावेश किया है। इनके समावेश से जीवनी के चरित्र नायक का स्तर और भी ऊंचा उठ जाता है। लेखक ने जीवन की प्रत्येक घटना को सप्रमाण प्रस्तुत किया है। जहाँ इन्होंने नायक के विद्यार्थी जीवन के विषय में लिखा है वहाँ यह पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हैं जो कि इनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता का द्योतक है—

'सत्यनारायण के विद्यार्थी जीवन को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक तो अध्ययन काल सन् १८९० से १८९६ तक और दूसरा अंग्रेजी अध्ययन सन् १८९७ से १९०० तक। यद्यपि सन् १८९० से पहले सत्यनारायण ने लुहार गली आगरे में वयोवृद्ध पंडित रामदत्त के साथ, सारस्वत पत्ना आरम्भ किया था जबकि वे अपनी माता के साथ रामदत्तजी के पिता देवदत्तजी के यहाँ रहा करते थे तथापि नियमानुसार पढ़ाई धाँधूपुर पहुँचने पर ही प्रारम्भ हुई। धाँधूपुर आगरे के निकट भी है और दूर भी। वास्तव में सत्यनारायण की

शिक्षा का आरम्भ इसी ग्राम से समझना चाहिए। पहले वे ताजगज के मदर्से म पढने के लिए बिठलाए गए थ।'[1]

यह जीवनी सरल, रोचक एव मार्मिक भाषा म लिखी गई है। इस जीवनी का महत्व इसलिए है कि लेखक ने एक साधारण व्यक्ति का चरित्र चित्रण करके मानवता का सुन्दर चित्रण उपस्थित किया है।

इसके अतिरिक्त १९२६ ई० म उमादत्त शर्मा की शकराचाय जटाधरप्रसाद शर्मा विमल की अहिल्याबाई, रामवृत्त शर्मा का 'लगट सिह', रामनाथ लाल सुमन का 'माइकेल' मधुसूदन दत्त उमादत्त शर्मा का शिवाजी' जीवनियाँ भी प्रकाशित हुई। १९२२ ई० म विश्व की 'पृथ्वीराज चौहान, वल्लभभट्ट शास्त्री की 'राजा बीरबल, अमरलाल सोनी की मेवाड के महावीर' द्वारिका प्रसाद शर्मा की 'प्राचीन आय वीरता, हरिहर नाथ शास्त्री की मीरकासिम प० शीतानाथ चौधरी की 'भगवान बुद्ध', गौरी शकर हीराचन्द ओझा की महाराणा प्रताप जसी जीवनियाँ प्रकाशित हुई। इस युग म डॉ० श्यामसुन्दरदास द्वारा लिखित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' की जीवनी प्रकाशित हुई। शिवनन्दन सहाय के पश्चात् डॉ० श्यामसुन्दरदास ने भारतेन्दु की जीवनी लिखने का प्रयास किया। आलोचक होने के कारण लेखक ने भारतेन्दु के जीवन की अच्छी प्रकार से छानबीन की है, भाषा भी उच्चकोटि की है।

सन् १९२८ म लक्ष्मी सहाय माथुर की बेजामिन फ्रेकलिन का जीवन चरित्र, बटुक सिह की वेचसिह नाम पढा करने वाला, सूयदेवसिह की 'महाराणा हम्मीरसिह, शिवकुमार शास्त्री की नेलसन की जीवनी, प्रवासी लाल वर्मा की कर्मदेवी एव सत्य व्रत की अब्राहम लिंकन जीवनियाँ प्राप्त होती हैं। सन् १९२९ म भक्तवर तुकाराम जी का जीवन चरित्र चतुर्भुजसहाय द्वारा लिखा हुआ अवतारकृष्ण कौल का शिवाजी महाराज, रामगोपाल का वीर सन्यासी श्रद्धानन्द', उदयभानु शर्मा का 'देवी अहिल्याबाई' जीवनियाँ प्रकाशित हुई। सन् १९३० म सरदार वल्लभभाई पटेल एव 'बादशाह हुमायू सुरेन्द्र शर्मा एव ब्रजरत्नदास द्वारा लिखे हुए चरित्र प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार द्विवेदी युग के प्राप्त जीवनी साहित्य से स्पष्ट है कि भारतेन्दु युग से इसमे अधिक उन्नति हुई है। इससे पूव की जीवनी शैली से इसम विशेष अन्तर उत्पन्न हुआ। इसके साथ एक और महत्वपूण बात है कि सभी लेखको का ध्यान जीवन चरित्र लिखने की ओर आकर्षित हुआ। आवेश म आकर जसा भी लिख सकते थे उन्होंने लिखा केवल कुछ ही जीवन चरित्र उच्चकोटि के हैं। अधिकतर लेखको ने सामाजिक राजनैतिक एव धार्मिक व्यक्तियो के विषय म ही लिखा है। स्वय द्विवेदीजी ने भी अधिकतर एतिहासिक पुरुषो के विषय म ही लिखा है क्योंकि इनका दृष्टिकोण उपदेशात्मक था एव हिन्दी का प्रचार करना इनका उद्देश्य था। इसलिए इन्होंने

---

१ सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी, प्रथम सस्करण, पृष्ठ ७ ८, ले० बनारसीदास चतुर्वेदी।

इतिहास से अपना जीवन चरित्र का लिया। इनके लिखे हुए सभी जीवन चरित निबन्ध शैली में हैं। लेकिन फिर भी द्विवेदीजी ने वैज्ञानिक ढंग से उनका विवेचन किया है। यह ठीक है कि श्रद्धा की भावना होने से निन्दा प्रकट करने का उद्देश्य था। ये जीवन के उन्हीं पक्षों का चित्रण है जिन पर प्रकाश कुछ प्रदान कर सकें। एक महत्त्व-पूर्ण बात यह है कि इस काल में अन्य भाषाओं की जीवनियों का हिन्दी भाषा में अनुवाद हुआ। रूपनारायण पाण्डेय ने विद्यासागर एवं श्यामसुन्दरदास ने 'बुद्धदेव' लिखकर विशेष प्रशंसनीय कार्य किया। इनके अतिरिक्त अन्य भी अनूदित जीवनियाँ प्रकाशित हुईं। राष्ट्रीय चरित्र में जहाँ 'लोकमान्य तिलक' 'सरोजिनी नायडू' 'दादा भाई नौरोजी' लिखे गये उन विदेशी महापुरुषों के जीवन चरित्र भी लिखे जो त्याग और बलिदान से ओतप्रोत हैं। इनमें गैरीबाल्डी, बैंजामिन फ्रैंकलिन आदि उल्लेखनीय हैं। ऐतिहासिक चरित्रों की भी कमी नहीं है। राणा प्रताप, महाराणा प्रतापसिंह, सम्राट अशोक आदि जीवनियाँ प्राप्त होती हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी जीवनियाँ हैं जो मानव जीवन को ऊँचा उठाती हैं जैसे—शंकराचार्य, गुरु गोविन्दसिंह, केशव चन्द्र सेन, महर्षि सुकरात आदि।

जहाँ तक साहित्यिक व्यक्तियों के जीवन चरित्र का प्रश्न है वह भी इस युग में लिखे गए। शिवनन्दन सहाय ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं गोस्वामी तुलसीदास लिखकर इस श्रेणी को प्रगतिशील बनाया है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु पर लिखी हुई यह जीवनी अधिक प्रामाणिक एवं सर्वप्रथम जीवनी मानी जा सकती है। इसमें लेखक ने भारतेन्दु के समस्त जीवन का वर्णन प्रामाणिक रूप से किया है। इनकी गोस्वामी तुलसीदास पर लिखी हुई जीवनी भी उत्कृष्ट है। इस प्रकार शिवनन्दन सहाय से ही साहित्यिक जीवनी लेखन का आरम्भ माना जाना चाहिए यद्यपि इनसे पहले जो भी साहित्यिक व्यक्तियों के विषय में हमें प्राप्त होता है वह निबन्धात्मक रूप में ही है। किसी भी लेखक ने पूर्ण एवं विस्तृत जीवनी जीवनी शैली में नहीं लिखी। यही नहीं बनारसीदास चतुर्वेदी की कवि सत्यनारायण की जीवनी भी अपना स्थान रखती है। इनके पश्चात् डा० श्यामसुन्दरदास ने भी भारतेन्दु पर जीवनी लिखी। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिवनन्दन सहाय से ही हिन्दी साहित्यिक पुरुषों की जीवनी का आरम्भ होता है।

वर्तमान काल

वर्तमान काल १९३० ई० के पश्चात् आरम्भ होता है। १९३१ ई० में देवव्रत द्वारा लिखित गणेशशंकर विद्यार्थी, रामबिहारी शुक्ल की अनमोल रत्न, प्यारे मोहन चतुर्वेदी की क्रान्तिकारी राजकुमार एवं कृष्णरमाकान्त गोखले की वीरवर दुर्गादास' जीवनियाँ प्रकाशित हुई। ये सभी साधारण कोटि के जीवनग्रन्थ हैं।

सन् १९३२ म गगाप्रमाद मेहता द्वारा लिखित 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' जीवनी प्राप्त होती है। गगाप्रसाद मेहता ने यह जीवनी अत्यन्त छानबीन के साथ लिखी है जसा कि इन्होंने स्वय भी कहा है।

> राजाधिराजदि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का वृत्तान्त विद्यमान एतिहासिक साधना मे जितना कुछ उपलब्ध हुआ है उसका विवेचन और विचार मैंने यथाशक्ति इस पुस्तक म किया है।[1]

इस जीवनी मे गुप्तकालीन इतिहास के साथ चन्द्रगुप्त का जीवनी का वणन है। लेखक न इसम जीवन चरित्र की अपेक्षा तत्कालीन इतिहास का सीमा से अधिक वणन किया है।

इसी सन् म इसक अतिरिक्त और जीवनिया भी प्राप्त होती हैं—श्री सतोष सिंह का 'गुरुनानक प्रकाश' मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव एव राजावल्लभ सहाय की 'ग्रीस और राम के महापुरुष', नारायण प्रसाद अरोडा की 'ईमन डी वेलेरा का जीवन चरित्र', विश्वेश्वरनाथ रऊ का 'राजा भोज', उमादत्त शर्मा की 'डी वेलेरा गोपीनाथ दीक्षित की 'हृदयद्वय' एव माता सेवक पाठक की 'रणधीर महाराणा प्रताप सिंह' है। य सभी जीवनिया साधारण कोटि की ह। इनम एसी कोई विलक्षण बात नही जाकि वणनीय हो।

ब्रजरत्नदास कृत 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'

ब्रजरत्नदास की 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' जीवनी १९३३ ई० म प्राप्त होती है। हिन्दी साहित्य म प्राप्त साहित्यिक जीवनियो म इसका अद्वितीय स्थान है। लेखक ने यह जीवनी प्रामाणिक रूप मे लिखी है। जिन व्यक्तियो की सहायता स इन्होंने भारतेन्दु के जीवन को प्रामाणिक रूप दिया है उन सभी का उल्लेख लेखक न आरम्भ मे ही दे दिया है। इसके साथ जीवनी लिखने के सभी साधना का भी वणन है—

> 'इस काय म मुझे बहुत सज्जना से सहायता मिला है और उन लोगा का मैं हृदय स अनुगृहीत हूँ। बाबा राधाकृष्णदासजी क पितृव्य बा० पुरुषात्तम दासजी, रायकृष्णदासजी बा० जयशकरप्रसादजी बा० गोकुलदासजी जयपुरी, बा० जगन्नाथ दासजी बी० ए० रत्नाकर प० गणेशदत्त त्रिपाठी आदि सज्जनों ने भारतेन्दु के विषय म जितनी ज्ञातव्य बातें बताई हैं इसके अनन्तर ईश्वर की कृपा स बहुत स कागजात, पत्र पत्रिकाएँ आदि आप स आप मिलती गई, जिनस इस जीवनी के लिखन म बहुत सहायता मिली। कुछ कागजात की नकल कचहरी स ली गई।[2]

इस जीवनी मे लेखक न भारतेन्दु के जीवन का पूण रूप से विश्लेषण किया

---

१ चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, ले० गगाप्रसाद मेहता, पृ० १०
२ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० ब्रजरत्नदास, पृ० ७

है। गुण दोषों को प्रकट करने मे किसी भी प्रकार का सकोच नहीं दृष्टिगोचर होता। इन्होंने उनके विषय म स्पष्ट रूप से लिखा है—

"भारतेन्दु की जीवनी देखने से ज्ञात होता है कि घर के शुभचिन्तकों ने उन्हें जितना ही लायक बनाने का प्रयत्न किया उतने ही व मीराबाई के समान 'नालायक' होते गए। और दोनों ही पक्ष अन्त तक अपने अपने प्रयास म डटे रहे। फलत आरम्भ मे यह परकीया नायिकाओं के फेर म कुछ दिन पडकर अपने चित्त को सान्त्वना देते रहे।'

इस प्रकार वणन से स्पष्ट है कि लेखक ने नायक के गुण-दोष दोनों का वणन पूर्ण रूप से किया है। भाषा एव वणन शैली उत्तम है। प्रत्येक घटना का वणन लेखक ने कोमलता स किया है।

इसके अतिरिक्त १६३३ ई० मे और भी कई जीवनियाँ प्रकाशित हुई। रामनाथ सुमन की 'हमारे राष्ट्र निर्माता' वेनीमाधव अग्रवाल का 'इटली का शहीद, कृष्णचन्द्र विरमानी की 'दयानन्द सिद्धान्त भास्कर, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी की 'वारेन हेस्टिंग्स लक्ष्मीचन्द्र उपाध्याय की 'महाराणा प्रताप कृष्णदेव उपाध्याय की चाम-चरितावली' अयोध्यानाथ शर्मा की 'उज्ज्वल तारे' दयाशकर दुबे की भक्त मीरा, सत्यदेव विद्यालकार की स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी', सत्यभक्त की 'कालमाक्स', सत्यदेव पडित की स्वामी श्रद्धानन्द, रमाशकरसिंह की 'ससार के प्रसिद्ध पुरुष इसी युग की देन है।

१६३४ ई० से १६४४ तक की जीवनी साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इसमे दो प्रकार की जीवनियाँ लिखी गई हैं—राष्ट्रीय जीवन चरित्र एव ऐतिहासिक जीवन चरित्र। राष्ट्रीय जीवन चरित्रों म श्री गदाधरप्रसाद की देशपूज्य श्री राजेन्द्रप्रसाद १६३४ ई० हमारे राष्ट्रपति' ले० सत्यदेव विद्यालकार १६३६ ई०, शिवनारायण टडन की पडित जवाहरलाल नेहरु' १६३७ ई० जवाहरलाल नेहरु' गोपीनाथ दीक्षित १६३७ ई० लाला लाजपतराय जगतपति चतुर्वेदी १६३८ ई० राजा राममोहन राय' ले० गणेश पाडेय १६३८ ई० देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद १६३८ ई० ले० देवव्रत शास्त्री सुभाष बोस १६३८ ई० ले० श्री ब्रजेन्द्र शकर, 'चन्द्रशेखर आजाद, १६३८ ई० ले० मन्मथनाथ गुप्त, महात्मा गांधी १६३६ ई० ले० लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज मोतीलाल नेहरु १६३६ ई० ले० रामनाथ सुमन, 'बापू १६४० ई० ले० घनश्यामदास बिडला हैं। इन प्राप्त राष्ट्रीय जीवन चरित्रों म से घनश्यामदास बिडला द्वारा लिखा हुआ बापू जीवन चरित्र विशेष रूप स उल्लेखनीय है। बिडला की यह जीवनी अत्यन्त प्रामाणिक है क्योंकि इनका सम्पर्क गांधीजी के साथ बहुत देर तक रहा। इस दीर्घकालीन निकटता क कारण ही इन्होंने यह पुस्तक लिखी है। यह सारी पुस्तक बिडलाजी की तलस्पर्शी परीक्षण शक्ति का सुन्दर नमूना है। इसम कहीं-कहीं गांधीजी के विचारों एव सिद्धान्तों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह जीवनी सस्मरणात्मक शैली म लिखी गई है।

इन जीवन चरित्रा म स पत्तनलाल का (१६४० ई०) 'बाबू जवाहरलालजी का जीवन चरित्र', एव घनश्यामदास विडला का जमनालाल बजाज (१६४२ ई०) भी उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त कई ऐसी पुस्तकें भी प्राप्त होती हैं जिनम निबन्धात्मक शैली म राष्ट्रीय पुरुषो के जीवन चरित्र लिखे हैं, इनमें—रामनाथ सुमन की हमारे नेता और निर्माता १६४२ ई०, सिद्धनाथ माधव आगरकर के 'सम्मेलन के रत्न' १६४२ ई० एव केदारनाथ गुप्त की 'भारत के दस रत्न १६३८ ई० उल्लेखनीय हैं।

ऐतिहासिक पुरुषो की प्रकाशित जीवनियो के नाम य हैं—ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा की 'महारानी वायजा बाई सिंधिया १६३५ भगवद्दत्त की 'भारतीय महिला' १६३५, महाराज पृथ्वीराज' १६३९ ई० ले० लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी, महाराज छत्रसाल बुन्देल' १६३६ ई०, ले० राधाकृष्ण तोपनीवाल, 'राठौर दुर्गादास (१६३७ ई०) ले० राम रत्न हल्दर, छत्रपति शिवाजी ले० लाला लाजपत राय (१६३६ ई०), बाबरनामा' १६४० ई० ले० देवीप्रसाद कायस्थ आदि लिखी गइ। इनके अतिरिक्त कुछ विदेशी शासकों की जीवनियाँ जो त्याग और बलिदान से भरपूर हैं प्राप्त होती हैं उनके नाम य हैं— महात्मा लेनिन' (१६३४ ई०), ले० सदानन्द भारती, हिटलर महान' (१६३६ ई०) ले० चन्द्रशेखर शास्त्री, 'सम्राट पचम जार्ज (१६३६ ई०) ले० श्री नारायण चतुर्वेदी राष्ट्र निर्माता मुसोलिनी (१६३३ ई०) ले० श्री चन्द्रशेखर रावट क्लाइव (१६३८ ई०) द्वारिकाप्रसाद शर्मा प्रिंस क्रोपाटकिन (१६३९ ई०) मूल लेखक ए० जी० गार्डनर अनु० बनारसीदास चतुर्वेदी, 'इटली का तानाशाह मुसोलिनी (१६४० ई०) लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज, स्टालिन (१६४० ई०) त्रिलोकीनाथ। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे धार्मिक व्यक्तियों की जीवनियाँ प्राप्त होती हैं जो कि मानव जीवन को ऊँचा उठाने के लिए पर्याप्त रूप स सहायता प्रदान करती हैं। इनम श्रीमन्नारायण स्वामी, श्री रामकृष्ण परमहंस (१६३६ ई०) ले० स्वामी विवेकानन्द सत तुकाराम (१६ ७ ई०) ले० हरिराम चन्द्र दिवेकर, 'गुरु नानक (१६३८ ई०) ले० म मथनाथ गुप्त रामकृष्ण चरितामृत' (१९४० ई०) ले० लल्ली प्रसाद पाडेय, स्वामी श्रद्धानन्द सत्यदान (१६४२ ई०) ले० भवानी दयाल आदि हैं। इस १६३४ ई० स १६४४ ई० तक प्राप्त जीवनी साहित्य से स्पष्ट है कि इसम किसी भी साहित्यिक लेखक की जीवनी नही प्रकाशित हुई।

शिवरानी देवी कृत 'प्रेमचन्द घर मे

म् १६४४ ई० मे शिवरानी देवी द्वारा लिखी हुई। प्रेमचन्द घर म जीवनी आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली से प्रकाशित हुई। शिवरानीजी प्रेमच द की पत्नी हैं। इसलिए इन्होंने प्रेमचन्द का जो भी जीवन लिखा है वह सप्रमाण लिखा है। इसम लेखिका की स्पष्टवादिता एव ईमानदारी पूर्णरूप से लक्षित होती है। वस लेखिका न स्वय भी कहा है—

'पुस्तक के लिखने में मैंने केवल एक बात का अधिक से ध्यान रखा है और वह है ईमानदारी सचाई। घटनाएं जैसे जैसे याद आती गई हैं मैं उन्हें लिखती गई हूँ।'[1]

संस्मरणों में लिखा हुआ यह जीवन चरित्र अत्यन्त रोचक एवं मार्मिक है। पुस्तक लिखने के उद्देश्य का लेखिका ने स्वयं ही वर्णन किया है—

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य उस महान आत्मा की कीर्ति फैलाना नहीं है जैसाकि अधिकांश जीवनियों का होता है। इस पुस्तक में आपको घरेलू संस्मरण मिलेंगे पर इन संस्मरणों का साहित्यिक मूल्य भी इस दृष्टि से है कि इनसे उस महान् साहित्यिक के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। मानवता की दृष्टि से वह व्यक्ति कितना महान् कितना विशाल था यही बताना इस पुस्तक का उद्देश्य है। उनके और उनके असंख्य प्रेमियों के प्रति यह मेरी बेवफाई होती अगर मैं उनकी मानवता का थोड़ा सा परिचय न देती। मेरा भी यह विश्वास है कि यह पुस्तक साहित्यिक आलोचकों को भी प्रेमचन्द साहित्य समझने में मदद पहुंचाएगी क्योंकि उनकी आदमियत की छाप उनकी एक एक पंक्ति और एक एक शब्द पर है।[2]

इस पुस्तक में शिवरानी देवी ने प्रेमचन्द्र के व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। भाषा भी उच्चकोटि की है।

१९४६ सन् से लेकर १९५१ तक का जो भी जीवनी साहित्य हमें प्राप्त होता है उनमें अधिकतर बापू के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इनके अतिरिक्त उन सभी महापुरुषों के जीवन चरित्र की झांकियां प्रस्तुत की हैं जिन्होंने भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए त्याग और बलिदान दिए। इनमें पण्डित जवाहरलाल नेहरू सरदार पटेल सुभाषचन्द्र बोस एवं राजर्षि टंडन मुख्य हैं। शिवनारायण टंडन एवं देवराज मिश्र ने तो राजर्षि टंडन के विषय में लिखा है श्री सुरेन्द्र शर्मा एवं विश्वम्भरप्रसाद शर्मा ने सरदार पटेल के जीवन के विषय में लिखा है। गांधीजी के जीवन के विषय में लिखा है। इनके विषय के लेखकों में डा० सुशीला नायर वियोगी हरि कमलापति प्रधान, जवाहरलाल नेहरू राजेन्द्रप्रसाद का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। इन सभी ने कुछ घटनाओं के आधार पर गांधीजी के चरित्र को आंका है। इस युग में अर्थात् १९४६ ई० में रत्नलाल बाँसल की मृत्युंजय सरदार भगतसिंह पर लिखी जीवनी प्राप्त होती है। यह भी अपना स्थान वीर पुरुषों की जीवनियों में रखती है।

सन् १९५१ में रामवृक्ष बेनीपुरी की दो जीवनियां कार्लमार्क्स एवं जयप्रकाश नारायण प्रकाशित हुई। इनके अतिरिक्त भीमसेन विद्यालंकार की शिवाजी जीवनी इसी सन् में प्राप्त होती है। इसमें शिवाजी का ऐतिहासिक जीवन चरित्र है। सन् १९५७ में लालबहादुर शास्त्री ने श्रीमती क्यूरी का अनुवाद किया। इस युग तक

१ प्रेमचन्द घर में लेखिका शिवरानी देवी, दो शब्द

२ वही

कुछ हिन्दी विद्वानों ने खोजपूर्ण जीवनी ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें नायक के जीवन पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला है। ऐसे लेखकों में माताप्रसाद गुप्त, डा० रामकुमार वर्मा डा० व्रजेश्वर वर्मा एवं डॉ० दीनदयालु गुप्त के नाम उल्लेखनीय हैं। गुप्तजी ने अपने ग्रन्थ तुलसीदास में जो कि १९४२ ई० में प्रकाशित हुआ तुलसीदास का जीवन चरित्र वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें तुलसी के ग्रन्थों तथा उसकी रचना का समय आदि बातों की सतर्क विवेचना की गई है। यह आलोचनात्मक जीवनी साहित्य है। डा० व्रजेश्वर वर्मा का भी सूरदास जीवनी और काव्य का अध्ययन भी इसी श्रेणी का ग्रन्थ है। इसमें भी सूर के ग्रन्थों के आधार पर उनके जीवन तथा व्यक्तित्व का चित्र अंकित किया गया है। समय की परिस्थिति की भी छानबीन की गई है। डा० दीनदयालु गुप्त ने अपनी पुस्तक 'अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय में अष्ट छाप के आठों सन्तों का बड़ी छानबीन के साथ जीवन प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में जीवनी के अतिरिक्त वल्लभ सम्प्रदाय का पूर्ण विवेचनात्मक साहित्य है।

कुछ अभिनन्दन ग्रन्थ भी इस काल में प्रकाशित हुए। ये अभिनन्दन ग्रन्थ विशेषतया जन्म दिवस पर भेंट किए गए। मालवीय अभिनन्दन ग्रन्थ १९३६ ई० में भेंट किया गया एवं नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ १९४८ ई० में प्रकाशित हुआ। इसी युग में गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ। इन अभिनन्दन ग्रन्थों में नायक के जीवन के प्रशंसात्मक कार्यों का ही उल्लेखमात्र है। निर्दोष जीवन चरित्र का उल्लेख इन ग्रन्थों में नहीं है। फिर भी जीवनी साहित्य की उन्नति में इन ग्रन्थों का विशेष हाथ रहा है।

राहुल सांकृत्यायन कृत जीवनी साहित्य

१९५१ के पश्चात् विदेशी शासकों के जीवन चरित्र लिखने वालों में राहुलजी का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने कई जीवनियाँ लिखी हैं। १९५३ ई० में इनकी स्तालिन की जीवनी प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त १९५४ सन् में कार्लमार्क्स लेनिन, माओ त्सेतुंग, घुमक्कड़ स्वामी, प्रकाशित हुई। ये सभी जीवनियाँ हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। इन जीवनियों की शैली सर्वसाधारण है।

सन् १९५५ में रंगनाथ रामचन्द्र द्वारा लिखित श्री अरविन्द की जीवनी साधना और उपदेश 'महायोगी' नाम से रामकुमार प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुई। अरविन्द की यह जीवनी रंगनाथ रामचन्द्र ने अत्यन्त रोचक एवं मार्मिक भाषा में प्रस्तुत की है। श्रद्धा का अतिरेक होने से यह उपदेशात्मक प्रवृत्ति को मुख्य रूप से ध्यान में रखकर लिखी गई है।

सन् १९५६ में इलाचन्द्र जोशी द्वारा लिखी हुई 'विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर' जीवनी भारतीय विद्याभवन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। जोशीजी ने रवीन्द्रनाथ की जीवनी अत्यन्त प्रामाणिक रूप से लिखी है। मनोवैज्ञानिककार होने के नाते इन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवन की प्रत्येक घटना को मनोविज्ञान के आधार पर रखा है। उनके विवाह के विषय में एक स्थान पर लिखते हैं—

"अपने भावी जीवन के सम्बन्ध में उनके मन में तरह तरह की विविध कल्पनाएँ धूप छाँह का खेल खेला करती थी। यूरोप के नारी समाज की स्वतन्त्रता का पक्ष समर्थन करते हुए उस पाश्चात्य आदर्श को अपने यहाँ के प्राचीन आदर्श से समन्वित करके योग्य जीवनी समिति की जो प्रतिमा उन्होंने निर्धारित की थी उसमें कम से कम कालिदास के गृहिणी सचिव सखी मिथ: प्रियशिष्या ललित कलाविधौ का आदर्श तो निहित था ही। पर ग्यारह वर्ष की जिस देहाती लड़की से उनका गठजोड़ होने जा रहा था उसके साथ उक्त आदर्श की चरितार्थता की सम्भावना प्रकट में कुछ विशेष न होने पर भी उसके लिए उन्होंने अपनी मौन सहमति दे दी।'[1]

विश्व कवि के चिरपरिचित होने के कारण एवं काफी समय तक सहवास के कारण इनकी जीवनी प्रामाणिक मानी जा सकती है। इलाचन्द्र जोशी ने कविवर के मस्तिष्क का काफी मात्रा में अध्ययन किया था, यह इस जीवनी से लक्षित होता है।

१९५६ सन् में ही रामकृष्णदेव के अंतरंग गृही शिष्य का जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ। यह जीवन चरित्र श्री शरच्चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा लिखा हुआ है और इसका नाम साधुनाग महाशय है।

सन् १९५७ में रांगेय राघव द्वारा लिखित तुलसीदास का जीवन चरित्र 'रत्ना की बात' नाम से विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा से प्रकाशित हुआ यह द्वितीय संस्करण है। इसमें तुलसी का जीवन वर्णित है। राहुल सांकृत्यायन की जीवनी 'अकबर' भी इसी काल में प्रकाशित हुई। १९५८ सन् में जाज वाशिंगटन का जीवनी प्रकाशित हुई जिसके अनुवादक मगनलाल जैन हैं। १९५९ में श्यामराय भटनागर ने अब्राहम लिंकन की जीवनी का हिन्दी अनुवाद किया। १९५९ में ही श्री रविशंकर द्वारा लिखी गुजराती भाषा में गुजरात के महाराज जीवनी का हिन्दी रूपान्तर नित्यानन्द परमहंस ने किया। श्री कृष्ण दत्त भट्ट की जीवनी 'बापू' जो जीवन और साधना भी इसी सन् में प्रकाशित हुई। किताब महल इलाहाबाद से 'राष्ट्रनिर्माता तिलक' जीवनी रूपाशंकर द्वारा लिखी हुई भी इसी समय में प्राप्त होती है।

सन् १९५९ एक और दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इसमें अनेकों अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हुए जिनसे जीवनी साहित्य की प्रगति और भी होने लगी। पाठक स्मृति ग्रन्थ, सुमित्रानन्दन स्मृति चित्र, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ एवं 'शिवपूजन रचनावली चौथा खण्ड' भी इसी सन् में प्रकाशित हुआ। इन स्मृति ग्रन्थों में विविध हिन्दी लेखकों द्वारा निबन्धात्मक शैली में इनके जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इन सभी जीवन चरित सम्बन्धी निबन्धों में नायक के गुणों का ही वर्णन है। इसके अतिरिक्त शिवपूजन रचनावली चौथे खंड में शिवपूजन सहाय द्वारा लिखी हुई अनेक छोटी छोटी जीवनियाँ संकलित हैं। ये सभी ग्रन्थ हिन्दी जीवनी साहित्य के

---

१ विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टगोर, ले० इलाचन्द्र जोशी, पृ० ६६

विकास में विशेष सहयोग देते हैं।

सन् १९६० में ऋषि जेमिनी कौशिक 'बरुआ' द्वारा लिखी हुई 'माखनलाल चतुर्वेदी की जीवनी' भारती ज्ञानपीठ काशी से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व का विश्लेषण सुचारु रूप से किया है। लेकिन जहाँ लेखक इनके व्यक्तित्व की कुछ दुर्बलताओं का विश्लेषण करने लगता है वहाँ उन दुर्बलताओं को और ही साँचे में ढालकर पाठक का मन उनके प्रति श्रद्धा से भर देता है। एक स्थान पर जहाँ लेखक उनके पढ़ाने के विषय में वर्णन करता है—पत्नी को उन पर किए शक का अनुमान एवं उसके प्रत्यक्ष रूप से देखने का वर्णन है वहाँ लेखक का मन उनकी चारित्रिक त्रुटियों का वर्णन करता हुआ अपनी कलम को पीछे हटा लेता है और उस मालविन के सम्बन्ध को बहन के रूप में परिवर्तित कर देता है—

'एक दिन इस शंकालु पत्नी से न रहा गया और वह निकट से सत्य की जानकारी के लिए उस समय उन जेठानी देवरानी के पास ही आ बैठी, जब परदे की दूसरी ओर उसका पति बच्चों को पढ़ा रहा था। उसने महसूस किया कि कनखियाँ तो व्यस्त रहना चाहती हैं पर परदे की दिशा पर उसकी उपस्थिति में उन कनखियों की कठिनाई बढ़ चली है। अब उससे न रहा गया और उसने उसी दिन फुरसत पाते ही पति से कह ही तो दिया कि जब आप पढ़ाते हैं, तो बच्चों की माताएं आपको कनखियों से देखा करती हैं पर शीघ्र ही समाधान का क्षण आया। उस दिन सुबह से शहर में रक्षाबन्धन का पर्व था, पर माखनलाल किसी दूसरे शहर शाम होते ही जाने की तैयारी में व्यस्त थे कि नीचे से मकान मालिक का बुलावा आया—दुबारा बुलावा आया तो माखनलाल ने स्वयं जाकर मकान मालिक से उस दिन ठहर जाने की यह शर्त ठहराई कि उनके परिवार की दोनों पत्नियाँ उसे रक्षाबन्धन का डोरा बाँध दें।'[1]

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है लेखक ने अत्यन्त सजीव एवं मार्मिक भाषा का प्रयोग किया है। यह जीवनी प्रामाणिक है। एक तो इस दृष्टिकोण से कि इसमें जहाँ भी आवश्यकता पड़ी है चतुर्वेदी की निम्नलिखित पंक्तियों का समावेश किया गया है, इसके अतिरिक्त वह स्वयं उन स्थानों पर घूमा है जहाँ चतुर्वेदी का जन्म हुआ। काफी सामग्री लेखक ने इसी प्रकार इकट्ठी की है।

सन् १९६० में ही बालकृष्ण भट्ट का जीवन व्रजमोहन व्यास द्वारा लिखा हुआ प्रकाशित हुआ। यह समस्त जीवन लेखक ने संस्मरणों में लिखा है। इसमें व्यासजी ने भट्टजी के आद्योपान्त जीवन पर नया प्रकाश डाला है। इससे त्याग और तपस्या से परिपूर्ण उनका ज्वलंत चित्र उपस्थित हो जाता है। लेखक ने ऐसे कितने ही प्रसंगों का वर्णन किया है जिनसे उनका व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाता है। भाषा की स्वाभाविकता एवं शैली की सजीवता इनकी जीवनी में लक्षित होती है।

---

१ माखनलाल चतुर्वेदी, ले० ऋषि जेमिनी कौशिक 'बरुआ', पृ० २३९

सन् १६६२ म 'प्रेमचन्द कलम का सिपाही' जीवनी अमृतराय द्वारा लिखी हुई हस प्रकाशन, इलाहाबाद स प्रकाशित हुई। हिन्दी साहित्य म प्रकाशित जीवनियो म इसका स्थान अग्रगण्य है। इस जीवनी का महत्त्व कई कारणो म है। एक तो इस ढग की लिखी हुई जीवनी हिन्दी साहित्य म किसी भी लखक की नही प्राप्त होती। यह तो एक ढग का उपन्यास है। उपन्यास और इसम अन्तर यही है कि उसकी कहानी कल्पित नही बल्कि वास्तविक है। जीवनी को प्रामाणिक सिद्ध करन क लिए लखक न तत्कालीन लिखित प्रमचन्द सम्बन्धी सस्मरणो एव पत्रो का विशष सहयाग लिया है अधिक सहायता शिवरानी दवी स प्राप्त की है। लखक ने प्रमचन्द क जीवन का इतने रोचक ढग स वणन किया है कि नीरस प्रसगो को पढन म भी पाठक रस का अनुभव करता है। जहाँ लखक ने दश की राजनतिक परिस्थितियो का वणन करत हुए उनका प्रेमचन्द क जीवन स सम्बन्ध स्थापित किया है वहाँ इसकी कला की कुशलता द्रष्टव्य है। प्रमचन्द क समस्त जीवन का चित्रण अमृतरायजी ने कथानिक ढग स किया है। देश की परिस्थितियो के परिवतन क साथ-साथ नायक क व्यक्तित्व एव विचारो म भी परिवतन आया है इसका विवेचन करत हुए लिखत हैं—

> 'देश एक नई करवट ले रहा था—वस ही जस अपने छोटे से पमाने पर खुद मुशीजी की जिन्दगी उनका दिल दिमाग एक नयी करवट ले रहा था। राष्ट्रीयता की चेतना म एक नया ज्वार आ रहा था और उस नये ज्वार को जिन लोगो ने अपने खून की गर्मी और खानी म सबस पहल महसूस किया उन्ही म एक मुशीजी भी थ।'[१]

इतना ही नही जीवनी म वर्णित कुछ प्रसग तो इतन मार्मिक हैं कि उनको पढत ही पाठक क रोगटे खडे हो जाते हैं विषयानुसार ही लखक ने भाषा का प्रयोग किया है। उनकी प्रथम पत्नी के प्रसग म जोकि नवाब को भी पसन्द न थी लिखते हैं—

> शादी हुई शादी म खूब चुहलबाजी हुई—घर पहुचकर उसन अपनी बीबी की सूरत जो दखी तो उसका खून सूख गया। उम्र मे वह नवाब स ज्यादा थी मगर वह तो एसी कोई बात नही लला भी तो मजनू स बडी थी काली थी मगर सुनते है लला भी तो काली थी। किस्सा और चीज है जिन्दगी और चीज। यथाथ का एक और यह गहरा धक्का था जो नवाब को लगा। दखने ही शक्ल से नफरत हो गयी—मद्दी थुलथुल फूहड।[२]

इस जीवनी की भाषा शली जीवन चरित शली के अनुकूल है। लेखक ने पूण तटस्थ एव निष्पक्ष रूप स प्रेमचन्द क जीवन का विवेचन किया है। प्रस्तुत जीवनी म जहाँ हम प्रमचन्द के व्यक्तिगत जीवन का अनुभव होता है वहाँ साहित्यिक जीवन एव

---

१ प्रमचन्द कलम का सिपाही, ले० अमृतराय, पृ० ८०
२ वही पृ० ६५

कृतियों का भी लेखक ने वर्णन किया है। ये सभी वर्णन इस ढंग से किए गये हैं कि पाठक का मन तनिक भी नहीं घबराता। इस प्रकार नवीनतम जीवनियों में इस जीवनी का स्थान अद्वितीय है। अभी तक हिन्दी साहित्य में ऐसे ढंग का कोई भी जीवन चरित्र प्राप्त नहीं होता।

१९६४ सन् में अमरबहादुर सिंह अमरेश का 'आचार्य द्विवेदी गाव में' जीवन चरित्र प्राप्त होता है। इसमें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के ग्रामीण जीवन का चित्रण है।

१९६० के पश्चात् कुछ अनुसंधानकर्त्ताओं के ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं जिनमें उन्होंने अपने नायक के जीवन चरित्र का उल्लेख किया है। वास्तव में हैं ये सभी आलोचनात्मक ग्रन्थ। इनमें डॉ० त्रिभुवनसिंह का महाकवि मतिराम १९६० में प्रकाशित हुआ एवं डा० सरनामसिंह का 'कबीर एक विवेचन' भी इसी समय का ग्रन्थ है। मतिराम कवि और आचार्य भी इसी श्रेणी का ग्रन्थ है। डा० त्रिभुवनसिंह एवं महेन्द्र कुमार ने मतिराम के जीवन के विषय में जो कुछ भी लिखा है वह अनेक बना निक प्रमाणों सहित लिखा है। इसके अतिरिक्त डा० सरनामसिंह ने भी कबीर का जीवनवृत्त अनेक बाह्य एवं अन्तःसाक्ष्य के आधार पर लिखा है। डा० मनोहरलाल गौड़ ने भी अपनी घनानन्द पर लिखी प्रतिनिधि पुस्तक 'घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा' में घनानन्द के जीवन वृत्त का जो भी लिखा है वह प्रामाणिक है। प्रत्येक घटना के वर्णन में पुस्तकों को आधार माना है। अनेक अंग्रेजी भाषा में लिखी हुई ऐतिहासिक पुस्तकों का आधार भी लिया है। इनके अतिरिक्त और भी कितने ही थीसिस निकले हैं जिनसे जीवनी साहित्य का विकास प्रगति की ओर अग्रसर है।

विभाजन

प्रकाशित जीवनी साहित्य के आधार पर इसका विभाजन निम्नलिखित ढंग से हो सकता है—

(क) वर्ण्य चरित्र के क्षेत्र के आधार पर

साहित्यिक पुरुषों की जीवनियां—हिन्दी जीवनी साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इसमें साहित्यिक पुरुषों की जीवनियां भी लिखी गई हैं। यहां साहित्यिक पुरुष से अभिप्राय उस व्यक्ति से है जिसने हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया है अर्थात् कुछ लिखकर अपनी विद्वता का परिचय जनता को करवाया है। शिवनन्दन सहाय द्वारा लिखित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' 'गोस्वामी तुलसीदास', डा० श्यामसुन्दरदास द्वारा लिखित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' एवं ब्रजरत्नदास की 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' इसी श्रेणी की जीवनियाँ हैं। जैसाकि हिन्दी साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है इसमें शुद्ध एवं प्रामाणिक साहित्यिक जीवनियाँ कुछ कम ही लिखी गई हैं। अधिकतर जीवनियाँ निबन्ध शैली में ही हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन चरित्र न कहकर

जीवन की एक झाँकी ही कहा जा सकता है। जैसाकि जीवनी लेखक के लिए आवश्यक है कि वह चरित्र नायक का जीवन तटस्थ एवं निरपेक्ष रूप से वर्णन करे इन जीवनियों के लेखकों ने भी अपने चरित्र नायक का जीवन चरित्र इसी ढंग से लिखा है। शिवनन्दन सहाय ने गोस्वामीजी के व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से विश्लेषण किया है। साहित्यिक लेखक होने के कारण इनकी भाषा शैली भी विषयानुकूल एवं भावानुकूल है। एक स्थान पर गोस्वामीजी के स्वभाव के विषय में लिखते है—

> इतने प्रतिष्ठित तथा सर्वमान्य पुरुषों से भेंट और मित्रता होने पर भी इन्होंने कभी किसी के सम्बन्ध या प्रशंसा में कुछ कविता नहीं की। सर्वदा अपनी जिह्वा से रामयश कीर्तन करते तथा अपनी प्रबल लेखनी को उन्हीं के गुण वर्णन में प्रचलित करते रहे और अपने इस कथन को कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लागि पछताना। जीवनपर्यन्त निर्वाह किया।'[1]

कहीं कहीं लेखक ने इनके व्यक्तित्व के विषय में इतने संक्षिप्त रूप से कहा है कि बात भी स्पष्ट हो जाती है और शैली भी सुन्दर दृष्टिगोचर होती है। जहाँ लेखक ने इनकी रचनाओं में प्राप्त पात्रों के विषय में लिखा है वहाँ इनकी शैली द्रष्टव्य है—

> उत्कृष्ट तथा निकृष्ट पात्रों का इन्होंने ऐसा सच्चा चित्र खींचा है कि कदाचित् कोई विरला ही कवि इस बात में इनकी समता कर सकता है। इनके पात्रगण कहते करते सोचते विचारते, मानो हम लोगों के नेत्रों के सामने उपस्थित किए जाते हैं। रामायण पाठ से वस्तुतः ऐसा ही प्रतीत होता है कि नाटक के पात्रगण नेपथ्य से निकल निकल कर रंगभूमि में आते और बातचीत करते हैं।[2]

हिन्दी साहित्य में कुछ ही जीवन चरित्र साहित्यिक लेखकों के प्राप्त होते हैं। जो हैं वे अपनी शैली की दृष्टि में उत्कृष्ट हैं। ब्रजरत्नदास के भारतेन्दु के लिखे गए जीवन में भी कोई त्रुटि नहीं है। वे भी प्रामाणिक जीवनी लिखने में सिद्धहस्त हैं। इन सभी लेखकों ने प्रामाणिक जीवनी सिद्ध करने के लिए अनेक साथ साथ प्रमाण दिए हैं जिसमें किसी भी प्रकार का सन्देह उत्पन्न हो ही नहीं सकता। इस प्रकार ऐतिहासिक सत्यता, निष्पक्षता, वर्णनात्मकता सुसगठितता आदि सभी विशेषताएँ इनकी जीवनी शैली में विद्यमान हैं। भाषा भी इनकी भावानुकूल एवं विषयानुकूल है। इस प्रकार सभी प्रकाशित इस श्रेणी की जीवनियों में प्रायः ये गुण हैं। ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ की माखनलाल चतुर्वेदी एवं अमृतराय की प्रेमचन्द कलम का सिपाही भी इसी ढंग की जीवनियाँ हैं।

---

१ गोस्वामी तुलसीदास, सं० शिवनन्दन सहाय, पृ० १११,

२ वही पृ० १२६

(२) राजनतिक पुरुषों की जीवनियाँ—जहाँ साहित्यिक पुरुषों की जीवनियाँ हम प्राप्त होती है वहा राजनतिक पुरुषा की जीवनिया की भी कमी नही है। जसा कि हिन्दी जीवनी साहित्य के विकास से स्पष्ट है अधिकतर जीवनियाँ इसी प्रकार की विभिन्न समया म प्रकाशित हुई हैं। महात्मा गाधी पडित नहरू, सरदार वल्लभभाई पटल पर लिखी हुई जीवनिया इसी श्रेणी की ह। घनश्यामदास बिडला' की बापू, जमनालाल बजाज सुरेन्द्र शमा की वल्लभभाई पटेल', नवजादिकलाल श्रीवास्तव की दशभक्त लाला लाजपतराय जसी जीवनिया इसी कोटि की है। इन जीवनिया की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसम पाठक को नायक के व्यक्तित्व के साथ साथ तत्कालीन परिस्थितिया का भी आभास हो जाता है। जसकि बिडला द्वारा लिख हुए 'बापू म पाठक को जहा उनके त्याग और तपस्यामय व्यक्तित्व का अनुभव होता है वहा यह भा पता चलता है कि जिस समय इनके व्यक्तित्व का उभार हुआ उस समय देश की क्या परिस्थितियो थी। सारा स्वतन्त्रता सगाम का एक चित्र सा उपस्थित हो जाता है। इन परिस्थितिया का वणन करना लेखक के लिए आवश्यक सा हो जाता है क्योकि इन्ही के बीच इनका व्यक्तित्व उभरता है। घनश्यामदास बिडला ने अत्यन्त रोचक एव सीधी सादी भाषा का प्रयोग किया है। छोटे वाक्यो का प्रयोग यह करत हैं—

'गाधीजी न सत्य की साधना की है। अहिसा का आचरण किया है। ब्रह्मचय का पालन किया है। भगवान की भक्ति की है। स्वराज्य क लिए युद्ध किया है। खादी आदोलन को अपनाया है। हरिजनो का हित साधा है।'[1]

जहा हमे भारतीय राजनतिक पुरुषो की जीवनिया प्राप्त होती हैं वहा हिन्दी लखको व विदेशी पुरुषो की भी जीवनिया लिखी ह कुछ मौलिक हैं एव कुछ का अनुवाद किया है। बनारसीदास चतुर्वेदी की भारत भक्त एण्डूज जीवनी इसी प्रकार की है। लालबहादुर शास्त्री जसे व्यक्तियो ने भी श्रीमती क्यूरी का हिन्दी अनुवाद किया।

ऐतिहासिक वीर पुरुषों की जीवनियाँ—कुछ एसी जीवनियाँ भी लिखी गई ह जिनक नायक ऐतिहासिक वीर पुरुष ह। जितना भी जीवनी साहित्य अभी तक प्रकाशित हुआ है उसम अधिकतर इसी प्रकार की जीवनियाँ है। इनके लिखने मे लेखक का यह आशय होता है कि साधारण जनता इनको पढने स कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सके और दूसरा कारण यह होता है कि मृत इतिहास को पुनर्जीवित किया जाय। द्विवदी युग म जितने भी जीवन चरित्र लिखे गए ह व सभी इन्ही भावनाओ को लेकर लिखे गए है। स्वय द्विवदीजी का उद्देश्य उन व्यक्तियो के जीवन चरित्रो को लिखना था जिनस जनता कुछ ग्रहण कर सके। गगाप्रसाद महता की लिखी हुई 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, गौरीशकर चटर्जी का हषवद्धन रूपनारायण पाडेय का 'सम्राट अशोक इसी प्रकार की जीवनिया हैं। रामवक्ष शर्मा की शिवाजी, विश्व

१ बापू ले० घनश्यामदास बिडला पृ० २३

का 'पृथ्वीराज चौहान' ब्रजरत्नदास का 'बादशाह हुमायूं' आदि जीवनियां प्राप्त होती हैं।

हिन्दी साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय लेखकों ने केवल भारतीय ऐतिहासिक पुरुषों के जीवन चरित्र नहीं लिखे अपितु जनता को जागरूक एवं परिपक्व बनाने के लिए विदेशी वीर पुरुषों के चरित्र लिखे हैं। रामप्रसाद त्रिपाठी का 'जनरल जार्ज वाशिंगटन' का जीवन चरित्र, चन्द्रशेखर पाठक का 'नेपोलियन बोनापार्ट', गुणवन्त ब्रजरत्नदास का 'सर हेनरी लारेंस' इसी प्रकार के जीवनी चरित्र हैं।

धार्मिक पुरुषों की जीवनियाँ—हिन्दी जीवनी साहित्य में जहाँ हम राजनैतिक सामाजिक साहित्यिक पुरुषों की जीवनियां प्राप्त होती हैं वहाँ धार्मिक व्यक्तियों की भी बहुत सी जीवनियां प्रकाशित हुई हैं। द्विवेदी युग में तो अनेक ग्रन्थ श्री दयानन्द सरस्वती के विषय में लिखे गए। 'दयानन्द चरितामृत' 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन महर्षि स्वामी दयानन्द' 'दयानन्द दिग्विजय' आदि अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए। इनके अतिरिक्त आर्य समाज के अन्य महापुरुषों की जीवनियाँ भी—'स्वामी विशुद्धानन्द' 'लाजपत महिमा' 'आर्य पथिक लेखराम' इसी युग में प्राप्त होती हैं। १९५० में प्रकाशित श्री बलदेव उपाध्याय की 'श्री शंकराचार्य' पुस्तक धार्मिक जीवनी ग्रंथ है। यह ग्रंथ जीवनी साहित्य का उत्कृष्ट ग्रंथ है। लेखक ने वैज्ञानिक तथा साहित्यिक दृष्टिकोण से पुस्तक लिखने का प्रयत्न किया है। कुछ अलौकिक बातों की चर्चा इस ग्रंथ में है परन्तु इस को प्रामाणिक करने की चेष्टा लेखक ने की है। पाठक शंकराचार्य के व्यक्तित्व को मानव रूप में देखता है। रंगनाथ रामचन्द्र द्वारा लिखी हुई 'अरविन्द' की जीवनी जो 'महायोगी' नाम से १९५५ ई० में प्रकाशित हुई वह भी इसी प्रकार का जीवनी ग्रंथ है। 'सन्त तुकाराम' और 'स्वामी रामतीर्थ महाराज का जीवन चरित्र' भी उच्चकोटि के हैं। इन ग्रंथों में भी कल्पनाओं का आधार नहीं लिया गया है और न अप्रामाणिक बातें कहने का प्रयत्न किया गया है। जीवन का मानवीय चित्र उपस्थित किया गया है जिसे सब ग्रहण कर सकें।

(ख) शैली के आधार पर

प्रत्येक लेखक का अपने चरित्र नायक के विषय में लिखने का अपना अपना ढंग होता है कोई तो निबन्ध रूप में अपने चरित्र नायक के विषय में लेख का जीवन संक्षिप्त रूप में कह देता है कोई संस्मरणों के आधार पर चरित्र नायक की जीवनी लिख देता है। इसी प्रकार हिन्दी जीवनी साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विभिन्न लेखकों की जीवन चरित्र लिखने की विभिन्न शैलियाँ हैं उन्हीं के अनुसार हिन्दी जीवनी साहित्य का विभाजन निम्नलिखित है—

संस्मरणात्मक शैली में लिखी हुई जीवनियाँ—इस शैली में लिखी हुई कुछ दो साहित्यिक जीवनियाँ अभी तक प्रकाशित हुई हैं। शिवरानी देवी की 'प्रेमचन्द घर में'

एव ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखित 'बालकृष्ण भट्ट'। शिवरानी ने प्रेमचन्द का समस्त वणन इस पुस्तक म सस्मरणात्मक शली म किया है। जसे कि सस्मरणात्मक शैली म प्रभावोत्पादकता, रोचकता, सुसगठितता एव सक्षिप्तता आदि गुणो का समावेश होता है वसे ही इनके द्वारा लिखे हुए प्रत्येक सस्मरण से प्रेमचन्द का व्यक्तित्व उभरता है जसा कि लेखिका ने स्वय भी कहा है—

इस पुस्तक मे घरेलू सस्मरण मिलेंगे पर इन सस्मरणो का साहित्यिक मूल्य भी इस दृष्टि से है कि इनसे उस महान् साहित्यिक के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।'

इसी प्रकार ब्रजमोहन व्यास ने 'बालकृष्ण भट्ट' का जीवन भी सस्मरणो म लिखा है। इसम लेखक ने अत्यन्त रोचक एव सजीव भाषा म बालकृष्ण भट्ट के जीवन का वणन सस्मरणो म लिखा है।

निबन्धात्मक शली मे लिखी हुई जीवनिया—हिन्दी साहित्य म बहुत से एसे जीवनीकार हुए हैं जिन्होंने अपने चरित्र नायको का जीवन निबन्धात्मक शली मे लिखा है। छोटे छोटे निबन्धो के रूप मे लिखे हुए जीवन चरित्र तो बहुत ही प्रकाशित हुए हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एव महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्वय इसी शैली का प्रयोग किया था। इनके जितने भी जीवन चरित्र हैं वे सभी निबन्ध रूप म प्राप्त होते हैं।

औपन्यासिक शली मे लिखी हुई जीवनी—हिन्दी साहित्य म केवल एक जीवनी प्रेमचन्द कलम का सिपाही अमृतराय की इस शली की प्राप्त होती है। यह जीवनी एक तरह का प्रेमचन्द पर लिखा हुआ उपन्यास है परन्तु उपन्यास और जीवनी मे अर्थात् इनकी शली म जहा कुछ समानताएँ होती हैं वहा विषमताओं की भी कमी नही होती इसी प्रकार इस जीवनी में दृष्टिगोचर होता है। आरम्भ से अन्त तक प्रेमचन्द की कथा धारावाहिक रूप स चलती है। लेखक ने स्वय भी कहा है—

यह भी एक उपन्यास ही है जिसका नायक प्रेमचन्द नाम का एक आदमी है। फक बस इतना ही है कि यह आदमी मेरे दिमाग की उपज नही है हाड मास का एक पुतला है जो इस धरती पर डोल चुका है और समय की पगडडी पर अपने परो के कुछ निशान छोड गया है। उसको मारने जिलाने की, जसा मन चाहे तोडने मरोडने की आजादी मुझे नही है घटना प्रसगो का आविष्कार करने की छूट मुझे नहीं है, कितने ही मोटे-मोटे रस्सो से मैं अच्छी तरह खूटे से बँधा हुआ हूँ। लेकिन मुझे उसकी शिकायत नही है क्योकि मैं जानता हूँ कि पूण स्वच्छन्दता उपन्यास की कहानी बहुत समय भी नहा रहती वहा भी कहानी कहने वाला जीवन के खूँटे से, प्रतीति के खूँटे से बँधा ही रहता है। एक न एक सयम अनुशासन हर सजन के साथ लगा हुआ है। लेकिन सजन के सुख म उस से कोई बाधा नही उपस्थित होती क्योकि जहा तक मैं समझ पाया हू सजन का असली सुख इसम नही है कि कथाकार अपने कल्पना लोक म अबाध विचरण कर सके बल्कि इसम कि वह जड वास्तविकता को अपनी कल्पना से स्फूर्त और स्पदित कर सके मूक बधिर तथ्यो को वाणी दे सके, जीवन के

मदभ म अपन चरित्रा को दख सके, पहचान सके खोल सके। यह सुख मुझे यहाँ भी मिला और भरपूर मिला।[1]

वास्तविक घटनाओं का वणन लखक ने इस ढग स किया है कि पाठक को यह अनुभव भी नही होता कि मैं एक सच्ची घटनाओं स युक्त प्रमचन्द का जीवन पढ रहा हूँ। उपन्यास म जसे लखक नायक के जीवन की छोटी छोटी घटनाओं का वणन भी करता है वसे ही अमृतराय न भी प्रेमचन्द क जीवन की छोटी स छोटी घटना का वणन भी किया है पर विशषता यह है कि पढत हुए यह कभी भी अनुभव नही होता कि जीवनी म अनावश्यक विस्तार सा है। उपन्यास म लेखक उसी व्यक्ति को नायक बनाता है जिनको कि वह समाज म दखता है। किसी भी ऐस व्यक्ति का चित्रण वह नही कर सकता जो कि हमारी दुनिया क बाहर का व्यक्ति हो वरना कथावस्तु म असभाव्यता का गुण आ जाता है। इस जीवनी का नायक भी एक सामान्य व्यक्ति है। परन्तु यह सामान्य व्यक्ति अपनी चारित्रिक विशषताओं के कारण विशेष बन जाता है। इस *प्रकार यह जीवनी एक ढग का उपन्यास सा है और इसकी शली बहुत कुछ उपन्यास* शली स मिलती है। वही लेखक ने प्रमचन्द के वार्तालापो का ज्यो का त्यो वणन किया है जो कि इनक जीवन को और भी रोचक बना देता है। अपन शली सम्बन्धी गुण के कारण यह हिन्दी जीवनी साहित्य म अपना विशेष स्थान रखती है।

---

१ प्रेमचन्द कलम का सिपाही, ले० अमृतराय, पृ० ११

4 आत्मकथा

आत्मकथा गद्य का वह रूप है जिसमे लेखक व्यक्तिगत जीवन का विवेचन विश्लेषण नि सकोच रूप स करता है। इसके साथ ही वह बाह्य विश्व से सम्बधित मानसिक क्रियाग्रो प्रतिक्रियाग्रो का विवेचन भी कलात्मक रूप से करता है। इसका विस्तृत विवेचन द्वितीय अध्याय म किया गया है।

तत्व

प्रकाशित पत्र-पत्रिकाग्रो एव प्राप्त पुस्तको के आधार पर आत्मकथा के तत्व निम्नलिखित हैं—

१ वण्य विषय—'आत्मकथा साहित्य का यह प्रमुख तत्व है। जसे कि आत्मकथा शब्द से स्पष्ट है इसम लखक का विषय अपने सम्पूण जीवन का वणन करना है। आत्मचरित्र अपने ही जीवन और मस्तिष्क का विश्लेषण कर जीवन और ससार का समझने का प्रयत्न है।'[१] इस प्रकार आत्मचरित्र लेखक का विषय आत्म-विश्लेषण, आत्मनिरीक्षण के साथ साथ विश्व की बाह्य घटनाग्रो की क्रिया प्रतिक्रियाग्रो का भी वणन है।

आत्मकथा तभी प्रभावित कर सकती है यदि उसका लेखक सवमान्य एव सवप्रतिष्ठित व्यक्ति हो। आत्मचरित्र लेखक किसी भी क्षेत्र का हो परन्तु उसका सवमान्य होना आवश्यक है। हिन्दी साहित्य के इतिहास से स्पष्ट है कि जहा हम साहित्यिक पुरुषो की आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं वहाँ राजनतिक, सामाजिक एव धार्मिक पुरुषो की भी आत्मकथाएँ लिखी हुई हैं। जहाँ तक विषय का प्रश्न है व्यक्ति के अनुसार ही विषय का आत्मचरित्र म उल्लेख होता है। सामाजिक व्यक्ति होगा तो उसम समाज की परिस्थितियो का वणन अवश्य होगा क्योकि उसका व्यक्तित्व उससे प्रभावित होगा इसी प्रकार राजनतिक एव धार्मिक व्यक्ति के विषय म कहा जा सकता है। जहाँ तक साहित्यिक व्यक्ति का प्रश्न है उसकी आत्मकथा म भी हमे तत्कालीन साहित्य की परिस्थितियो का अवश्य आभास मिलेगा। मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि आत्मचरित्र लेखक का विषय तत्कालीन परिस्थितियो का वणन करना नहीं है परन्तु फिर भी परोक्ष रूप स उनका वणन स्वत ही हो जाता है। इस

---

१ हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का इतिहास, ले० चन्द्रावती सिंह, पृ० ६७

परिस्थितियो के वणन के बिना वह अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट नही कर पाता।

वण्य विषय म अर्थात् आत्मकथा म कुछ गुणा का होना आवश्यक है जिनसे यह प्रभावोत्पादक बनती है। सवप्रथम आत्मकथा मे सत्यवादिता व यथार्थता का होना आवश्यक है। प्रत्येक आत्मकथा का विषय अनुभूत्यात्मक होता है काल्पनिक नही। इसलिए इसम वास्तविकता होती है। आत्मकथा म सत्य से अभिप्राय विषय गत सत्य से नही कुछ सीमित विषय तक का सत्य है जिससे लेखक का जीवन बढता है एव जिससे विशेष गुण एव घटनाओ के परिपक्व होने की दृढता एव व्यावहारिक गुण एव आकृति स्पष्ट होती है [1]

It will not be an objective truth but the truth in the confines of a limited purpose a purpo e that grows out of the author's life and imposes itself on him as his specific quality and thus determines his choice of events and the manner of his treatment and expression

हिन्दी साहित्य म प्राप्त आत्मकथाओ के अध्ययन से स्पष्ट है कि जितने भी साहित्यिको ने अपनी आत्मकथाए लिखी हैं उनम इस गुण को पूण रूप से देखा जा सकता है। उदाहरणतया यदि डा० श्यामसुन्दरदास का ही ल तो उनकी लिखी हुई *आत्मकहानी म उनकी सत्यवादिता एव स्पष्टता पूण रूप से लक्षित होती है।* यही एक प्रमुख गुण है जिसने उनकी आत्मकथा को उत्कृष्ट बना दिया है—

> 'मेरे जीवन म दो बातें मुख्यतया विशेषता रखती हैं। एक तो मेरा जीवन सदा सघर्ष म बीता। विरोध का सामना करने म मुझे प्रयत्नशील रहना पडा दूसरी विशेष बात मेरे जीवन म यह हुई कि व्यक्तिगत रूप से मैंने जिन जिन की सहायता की उनम से अधिकाश प्राय कृतघ्न सिद्ध हुए और अपने स्वार्थ के आगे मुझको हानि पहुचाने म उनको तनिक भी सकोच नहीं हुआ। [2]

पूण ईमानदारी के साथ आत्मकथा का वणन करना ही वण्य विषय को उत्कृष्ट एव परिपक्व बनाता है। आत्मचरित्र लेखक के लिए ईमानदारी ही एक विघ्न स्थान व एक महान् अशुद्धि का कारण है। अपने विषय म सत्य कह देने की जहाँ प्रतिज्ञा है यह चरित्र का एक साहसी एव कष्ट दन वाला बना देती है। ऐसे वणन में लेखक की योग्यता साधारण मनुष्य की अन्तर्दृष्टि स अधिक होती है।[3]

Honesty is the greatest stumbling block of the autobiographer The resolution to tell the truth about oneself takes a spartan rigor of character ard the ability to do so requires a more than common insight

---

१ Design ard Truth in Autobiography by Roy Pascal, P, 83

२ मेरी आत्मकहानी स० डा० श्यामसुन्दरदास पृ० २०५

३ One Mighty Torrent by Johnson P 97

अन्य महत्वपूर्ण गुण जिसका कि विषय वर्णन में होना नितान्त आवश्यक है वह है रोचकता। लेखक को अपनी आत्मकथा इस ढंग से वर्णन करनी चाहिए जिससे वह पाठक को रुचिकर प्रतीत हो। नीरस विषय को कोई भी पाठक नहीं पढ़ता। आचार्य चतुरसेन ने अपनी आत्मकथा का तो आरम्भ ही ऐसे रोचक ढंग से किया है कि पाठक को आगे पढ़ने में भी उत्कण्ठा उत्पन्न होती है। शैली भी विषयानुसार रोचक प्रतीत होती है—

'मैं एक आहत किन्तु अपराजित योद्धा हूँ। अपने चिर जीवन में मैंने सब कुछ खोया है पाया कुछ भी नहीं। मैंने एक भी मित्र जीवन में नहीं उत्पन्न किया। आज जीवन की सन्ध्या में अपने को सर्वथा एकाकी असहाय और निस्संग अनुभव करता हूँ। मेरी दशा उस मुसाफिर के समान है जो दिन भर निरन्तर मंजिल काटता रहा हो और जब निर्जन राह ही में सूर्य अस्त हो गया हो वह बेसरोसामान थक कर राह के एक वृक्ष के सहारे रात काटने पड़ गया हो।"[1]

रोचकता स्पष्टता सत्यवादिता एवं ईमानदारी के पश्चात् विषय वर्णन में संक्षिप्तता का होना आवश्यक है। अनावश्यक विस्तार विषय को नीरस एवं कृत्रिम बना देता है। आत्मचरित्र लिखना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि पहले तो अपने आप को पहचानना ही कठिन है और फिर पाठकों के सम्मुख अपनी जिन्दगी के हजार किन अंगों को लाना उचित है और किनको न लाना उचित है यह निर्णय करना कठिन है और इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या जीवन में कोई ऐसी विशेष बात है भी जिसका वर्णन किया जाय? वैसे तो यदि कोई निर्जीव व्यक्तित्व वाला भी ईमानदारी के साथ अपनी निर्जीवता का वर्णन कर सके और उसके कारण भी बतला सके तो वह एक मनोरंजक एवं उपदेशप्रद आत्मचरित्र लिख सकता है पर दूसरों के जीवन में स्फूर्ति उत्पन्न करने वाला आत्मचरित लिखना किसी सजीव व्यक्तित्व वाले पुरुष का ही काम है।[2]

इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा के लेखक को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि वह अनावश्यक घटनाओं का विस्तार न करे। केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करे जिनमें उसके व्यक्तित्व के विश्लेषण में सहायता मिले तथा पाठकों के सम्मुख मानव जीवन के यथार्थ सत्य को उद्घाटित करने में उनकी उपयोगिता हो।[3]

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विषय वर्णन में स्पष्टवादिता रोचकता यथार्थता निरपेक्षता संक्षिप्तता एवं स्वाभाविकता आदि गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों से सम्पन्न होने पर ही सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा बन सकती है।

चरित्र चित्रण—आत्मकथा साहित्य का यह दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। जैसे

---

१ मेरी आत्मकहानी ले० आचार्य चतुरसेन, पृ० २

२ अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल'

३ सिद्धान्तालोचन, ले० धर्मचन्द सन्त, बलदेवकृष्ण पृ० २११

कि आत्मकथा साहित्य से स्पष्ट है आत्मचरित्र आत्मपरिचय का साधन है। लेखक आत्मचरित्र में अपने मस्तिष्क के विकास का क्रम लिखता है। वह स्वयं अपने मस्तिष्क का अध्ययन करता है। आत्मनिरीक्षण और आत्मविश्लेषण करता है।[1] इस प्रकार स्पष्ट है कि आत्मकथा में लेखक का उद्देश्य अपने ही चरित्र का विश्लेषण करना है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने आत्मचरित में लिखा है—'इसमें जहाँ तक मुमकिन हो सकता था मैंने अपने मानसिक विकास अंकित करने का प्रयत्न किया है।[2]'

जब लेखक अपने ही व्यक्तित्व का वर्णन करता है तब वह अपनी लेखनी को तटस्थ भाव से चलाता है, गुण एवं अवगुणों को एक साथ लेता है। जहाँ तक गुणों का प्रश्न है यह ठीक है कि उसे आत्मश्लाघा करनी पड़ती है परन्तु ऐसा किए बिना उसका व्यक्तित्व स्पष्ट नहीं हो पाता। इस प्रकार आत्मचरित्र में अहंकार और आत्मश्लाघा के दोष से बच सकना कठिन है। डॉ० श्यामसुन्दरदास में भी यह प्रवृत्ति पायी जाती है। उन्होंने भी अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं का वर्णन करते हुए अपने स्वाभिमान का वर्णन किया है—

'मैंने नागरी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दी भाषा और साहित्य की उन्नति में भरसक उद्योग किया और अपनी तथा अपने कुटुम्ब की चिन्ता छोड़कर इसकी सेवा में अपना शरीर अर्पण कर दिया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के उपरान्त हिन्दी बड़ी शोचनीय अवस्था में थी। उसे कोई पूछने वाला नहीं था। नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन, तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आयोजना से हिन्दी दृढ़ता से उन्नति करने लगी।[3]

यही नहीं आचार्य चतुरसेन शास्त्री भी आत्मचरित्र में अपने अहं को स्वीकार करते हैं। वे इस बात को मानने के लिए तत्पर हैं कि आत्मचरित्र में अहंकार और आत्मश्लाघा के दोष से बच सकना कठिन है। इसीलिए उन्होंने आत्मनिवेदन में कहा है—'अब आज मैं अपने अहं का एक दूसरा प्रमाण इस निवेदन में दे रहा हूँ।'[4]

कुछ भी हो इस दोष और दुर्बलता के बीच भी आत्मचरित्र आत्मअध्ययन तथा आत्मनिरीक्षण का सर्वश्रेष्ठ साधन है। एच० जी० वेल्स ने अपनी पुस्तक Experiment in Autobiography की भूमिका में लिखा है यदि मैं जीवन में अत्यधिक दिलचस्पी न लेता तो आत्मचरित्र लिखने का प्रयास न करता और चूँकि अपने ही जीवन की विवेचना और परीक्षण के द्वारा जीवन की गुत्थियाँ समझी जा सकती हैं इसलिए अपनी आत्मकहानी लिखने का प्रयत्न किया है।[5]

---

१ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास लें० चन्द्रावती सिंह पृ० १६
२ मेरी कहानी संस्करण ७ पृ० ६ जवाहरलाल नेहरू, पृ० १६
३ मेरी आत्मकहानी ले० डा० श्यामसुन्दरदास पृ० २७६
४ मेरी आत्मकहानी, ले० चतुरसेन शास्त्री (ग)
५ Experiment in Autobiography Publication 1954, by H G Wells Vol II, Page 417

If I did not take an immense interest in life through the medium of myself I should not have embarked upon this analysis I am being my own rabbit, because I find no other specimen so convenient for dissection

इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा में लेखक गुण-दोषों का वर्णन निरपेक्ष भावना से करता है। लेखक को किसी विशेष दोष व गुण को वर्णन करने में मोह नहीं होता। वह आत्मकथा सफल नहीं कही जा सकती जिसमें लेखक ने केवल अपने जीवन के केवल एक पहलू का ही चित्रण किया हो। प्रत्येक मनुष्य में दोष भी होते हैं एवं गुण भी होते हैं दोनों के वर्णन से ही व्यक्तित्व स्पष्ट होता है।

अपने चरित्र को स्पष्ट करने के लिए जहाँ लेखक अपनी रुचि स्वभाव चारित्रिक विशेषताओं में गुण एवं न्यूनताओं का वर्णन करता है वहाँ वह उन व्यक्तियों के चरित्र को भी साथ साथ स्पष्ट करता जाता है जिनसे उसका जीवन में सम्बन्ध होता है। ऐसे करने से भी लेखक के व्यक्तित्व को समझने में हमें और भी सहायता मिलती है। डा० श्यामसुन्दरदास की आत्मकथा में अनेक साहित्यिकों के नाम आते हैं जिनसे इनका सम्बन्ध रहा है। गौण रूप से इन साहित्य सेवियों के विषय में भी पाठक को पता चल जाता है। राधाकृष्णदास मदनमोहन मालवीय एवं बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' आदि का नाम प्रमुख है। बाबू राधाकृष्णदास के विषय में लिखते हैं—

"बाबू राधाकृष्णदास सा सज्जन और सहृदय मित्र मिलना तो कठिन है। उनकी कृपा का मैं कहाँ तक उल्लेख करूँ। उन्हीं ने मुझे हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का काम सिखाया और हिन्दी के सम्बन्ध में अनुसंधान करने की रीति सिखाई।"[1]

जब लेखक अपने व्यक्तित्व के वर्णन में अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों के चरित्र पर कुछ ही पंक्तियों में प्रकाश डालता है तो उससे दो लाभ होते हैं—एक तो लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट होता है और दूसरा उस व्यक्ति के विषय में गौण रूप से पाठक को पता चल जाता है। डाक्टर श्यामसुन्दरदास में ही नहीं अन्य आत्मकथा लेखकों में भी यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा में लेखक अपने चरित्र को स्पष्ट रूप से पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है वह अपने चरित्र सम्बन्धी गुण एवं दोषों का निःसंकोच भावना से वर्णन करता है। जीवन में जो भी उसे विशेष सफलताएँ मिलती हैं और कुछ ऐसी आकांक्षाएँ जिनको प्राप्त करने के लिए वह सम्पूर्ण जीवन भरसक प्रयत्न करता है सभी का उल्लेख अपनी आत्मकथा में करता है जो कि उसके चरित्र को समझने में सहायक होती है। बाह्य व्यक्तित्व का वर्णन तो होता ही है पर आन्तरिक व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना ही बड़े

१ मेरी आत्मकहानी, ले० डा० श्यामसुन्दरदास, पृ० २७३

साहस का काय होता है। इन सभी विशेषताओं से लेखक के व्यक्तित्व को समझने में सुविधा होती है। इस प्रकार लेखक के चरित्र का जो खुला रूप हम आत्मकथा में पा सकते हैं वह अन्यत्र नहीं।

देशकाल—वातावरण उन समस्त परिस्थितियों का संयुक्त नाम है जिनमें पात्रों को संघर्ष करना पड़ता है। देशकाल वातावरण का बाह्य स्वरूप है। वातावरण आन्तरिक भी हो सकता है। आदमी जिस प्रकार के समाज में रहता है वैसा तो काय करता ही है परन्तु उसके भाव भावना और विचार भी उसकी अनुकूलता और प्रतिकूलता में सहायक होते हैं।[1]

वर्ण्य चरित्र किसी देश या किसी काल में ही अपना जीवन व्यतीत करता है। उसके जीवन की घटनाएँ देशकाल से सर्वथा सम्बद्ध रहती हैं। इस प्रकार आत्मकथा में भी देशकाल का महत्व है। अन्य प्रबन्धनात्मक साहित्य की भाँति आत्मकथा साहित्य में देशकाल का चित्रण मुख्यतः प्राप्त नहीं होता। यह तो व्यंग्य रहता है। अन्य साहित्य में देशकाल का चित्रण उचित अनुपात के साथ स्वतन्त्र रूप से भी किया जा सकता है। आत्मकथा में लेखक ही मुख्य होता है। वह अंगी होता है देश और काल तो अंगभूत होकर रहता है और वह व्यंग्य रहता है।

हिंदी आत्मकथा साहित्य पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि जहाँ साहित्यिक लोगों की आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं वहाँ राजनैतिक धार्मिक एवं सामाजिक पुरुषों ने भी अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं। जहाँ तक राजनैतिक पुरुषों का प्रश्न है इनकी आत्मकथाओं में तो तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन होता ही है क्योंकि इनका जीवन उन्हीं परिस्थितियों के प्रभाववश फलता फूलता है। इसलिए राजनैतिक परिस्थितियों का विशेषतया ज्ञान हमें इन्हीं द्वारा रचित आत्मकथाओं में मिलता है। जवाहरलाल नेहरू डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद एवं महात्मा गाँधी द्वारा लिखित आत्मकथाएँ इसी श्रेणी की हैं। इनकी आत्मकथाओं में पाठक को तत्कालीन सभी राजनैतिक परिस्थितियों का ज्ञान हो जाता है। इन्हीं परिस्थितियों के वर्णन द्वारा ही लेखक अपने व्यक्तित्व को पाठक के सम्मुख रख देता है। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की आत्मकथा में भी राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन काफी मात्रा में किया गया है।

धार्मिक व्यक्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाओं में तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का आभास होता है क्योंकि उनका जीवन इन्हीं परिस्थितियों में प्रस्फुटित होता है। भवानीदयाल सन्यासी की 'प्रवासी की आत्मकथा' इसी ढंग की है। इसमें सभी सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन है। इसमें इन्होंने भारत के स्वराज्य प्राप्ति के प्रयत्नों का भी इतिहास लिख डाला है। इसमें भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया है और बहुत कुछ निजी जानकारी और अनुभवों

१ समीक्षाशास्त्र, ले० डा० दशरथ ओझा, पृ० १६१, द्वितीय संस्करण जुलाई १९५७

के आधार पर लिखा है। साथ ही हमारे सामाजिक जीवन का, उसकी त्रुटियां और खूबियों का भी इसमें चित्रण है।[1]

इन आत्मकथाओं के अतिरिक्त कुछ साहित्यिक व्यक्तियों ने भी आत्मकथाएं लिखी हैं उनमें हमें साहित्य की परिस्थितियों का आभास होता है। उदाहरणतया डा० श्यामसुन्दरदास की सम्पूर्ण आत्मकहानी में हमें तत्कालीन देश की साहित्यिक दशा का ही आभास होता है। डाक्टर साहब का सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा में व्यतीत हुआ था इसलिए इनके जीवन में इन्हीं परिस्थितियों का दिग्दर्शन होना था। इनकी प्रत्येक व्यक्तिगत घटना भी इन्हीं परिस्थितियों से सम्बद्ध है। एक स्थान पर 'हिंदी शब्दसागर' के प्रकाशन की परिस्थितियों के विषय में लिखते हैं।—

'अप्रैल १६१० में सितम्बर १६१० तक तो जम्मू में कोश के सम्पादन का काम बहुत उत्तमतापूर्वक और निर्विघ्न होता रहा पर पीछे इसमें विघ्न पड़ा— १६१० में छुट्टी लेकर प्रयाग आना पड़ा १५ दिसम्बर १६१० को कोश का कार्यालय जम्मू से काशी भेज देना पड़ा जनवरी, १६११ को अमीरसिंह भी स्वस्थ होकर सम्मिलित हो गए नवम्बर १६११ का गंगाप्रसाद गुप्त ने इस्तीफा दे दिया १६२२ में लाला भगवानदीन पुनः इस विभाग में सम्मिलित कर लिए गए।'[2]

आचार्य चतुरसेन की आत्मकहानी में जहां हमें तत्कालीन साहित्य की परिस्थितियों का वर्णन मिलता है वहां उनकी आत्मकहानी में 'राजनैतिक और साहित्यिक विचार' में राजनैतिक परिस्थितियों का ज्ञान भी हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आत्मकथाओं में लेखकों के व्यक्तित्व के अनुसार ही तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन पाया जाता है। इन परिस्थितियों का वर्णन हम गौण रूप से पाते हैं। लेखक का मुख्य उद्देश्य आत्मनिरीक्षण एवं आत्मविश्लेषण ही होता है। लेखक अपने व्यक्तित्व को उभारने एवं निखारने के लिए ही इन परिस्थितियों का वर्णन करता है।

देश और काल के उभय पक्षों में वास्तविकता लाने के लिए स्थानीय ज्ञान होना आवश्यक है। हिंदी आत्मकथा साहित्य में केवल राहुल सांकृत्यायन ही एक आत्मकथा लेखक हैं जिन्होंने इसकी ओर ध्यान दिया है। राहुलजी ने अपनी 'जीवन यात्रा' में जिन जिन स्थानों का भ्रमण किया है उन सभी का विस्तार से चित्रण किया है। 'जीवन यात्रा' में द्वितीय खंड इसी प्रकार का है। उनकी आत्मकथा में देश एवं स्थान विशेष का वर्णन कोई विशेष मुहावरेदार भाषा में नहीं है बल्कि स्वाभाविक ढंग से किया गया है। जिन जिन नगरों एवं पहाड़ी स्थानों पर उन्होंने भ्रमण किया था उन सभी का थोड़ा बहुत वर्णन उनकी आत्मकथा में अवश्य होना था। यह सब गौण रूप

---

१ प्रवासी की आत्मकथा, ले० भवानीदयाल संन्यासी, पृ० ३, प्रथम संस्करण १६४७

२ मेरी आत्मकहानी ले० डा० श्यामसुन्दरदास, पृ० १५४

से ही किया गया है, मुख्य उद्देश्य तो आत्मकहानी का ही वर्णन करना है।

इस प्रकार आत्मकथा साहित्य से स्पष्ट है कि लेखक का मुख्य उद्देश्य आत्म-विश्लेषण ही है परिस्थितियों का चित्रण करना नहीं। जिन परिस्थितियों का वर्णन आत्मकथा में आया भी है वह उन्होंने अपने व्यक्तित्व को प्रामाणिक एवं शुद्ध रूप प्रदान करने के लिए किया है। किसी स्थान विशेष का चित्रण तो बहुत कम ही पाया जाता है।

उद्देश्य—इसमें लेखक की उस सामान्य या विशिष्ट जीवन दृष्टि का विवेचन होता है जो उसकी कृति में कथावस्तु का विन्यास पात्रों की योजना, वातावरण के प्रयोग आदि में सर्वत्र निहित पायी जाती है। इसे लेखक का जीवन दर्शन अथवा उसकी जीवन दृष्टि जीवन की व्याख्या या जीवन की आलोचना कह सकते हैं। उन कृतियों को छोड़कर जिनकी रचना का उद्देश्य मनबहलाव या मनोरंजन मात्र होता है सभी कलाकृतियों में लेखक की कोई विशेष विचारधारा प्रकट हुआ निहित रूप में देखी जा सकती है। बिना इसके साहित्यिक कृतित्व प्रयोजनहीन और व्यर्थ होता है।

जहाँ तक आत्मकथा लेखन के उद्देश्य का प्रश्न है इसका उद्देश्य अन्य लेखकों से पृथक् होता है। आत्मकथा साहित्य का उद्देश्य होता है आत्म निर्माण आत्म-परीक्षण या आत्म समर्थन अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व के उलझावों में अपने आपको अन्वेषित करने का सात्विक प्रयास। इस प्रकार के आत्मकथात्मक साहित्य के पाठकों में सर्वप्रमुख स्वतः लेखक होता है जो आत्मा-कथन द्वारा आत्मपरिष्कार एवं आत्मोन्नति करना चाहता है।

आत्म सम्बन्धी साहित्य लिखने का एक दूसरा उद्देश्य यह भी है कि लेखक के अनुभवों का लाभ अन्य लोग उठा सकें। महान ऐतिहासिक आन्दोलनों और घटनाओं के सम्पर्क में रहने से डायरी संस्मरण या आत्मकथा लेखक को यह आशा होना स्वाभाविक है कि आगामी युगों में उसकी रचना उसके युग तथा समय के प्रमाण रूप में पढ़ी जाएगी। यदि धर्म राजनीति अथवा साहित्य के इतिहास निर्माण में किसी व्यक्ति का महत्वपूर्ण हाथ रहा हो तो अवश्य ही पाठक उस व्यक्ति के बारे में स्वयं उसकी लिखी बातों को पढ़ना पसन्द करेंगे।

इन दोनों स्वतः सिद्ध उपयोगों के अतिरिक्त आत्मकथा लेखक के मूल में कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा भी हो सकती है और अपनी पद मर्यादा अथवा ख्याति से लाभ उठाने की शुद्ध व्यावसायिक इच्छा भी।[1]

यही नहीं चन्द्रावती सिंह ने भी आत्मकथा लिखने के उद्देश्य को अच्छी प्रकार से व्यक्त किया है—

> आधुनिक समाज में व्यक्ति की दो प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर तीव्र होती जा रही हैं—(१) वह आत्मप्रचार चाहता है अपने को समाज के सम्मुख ला देना

---

१ हिन्दी साहित्य कोष पृष्ठ ९९, द्वितीय संस्करण

चाहता है, वह अपने व्यक्तित्व का उभार चाहता है और अपने विचारों, मनोभावों के प्रति समाज की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता है। (२) वह आत्म-अध्ययन और आत्मविश्लेषण कर विश्व और मानव समाज को समझना चाहता है। वह नित्य छानबीन में लगा है और उसमें वह अपनी परीक्षा किया करता है। इन दो प्रवृत्तियों का अनिवार्य परिणाम आत्मजीवनी साहित्य का भविष्य में अधिक प्रसार और उत्थान है।"[1]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रत्येक आत्मकथा लेखक का उद्देश्य आत्मविश्लेषण, आत्मनिरीक्षण एवं आत्मविवेचन के साथ बाह्य विश्व के साथ अपने सम्बन्ध को वर्णन करना है। डाक्टर श्यामसुन्दरदास ने आरम्भ में ही अपनी आत्मकहानी लिखने के उद्देश्य को प्रकट किया है—

बहुत दिनों से मेरी यह इच्छा थी कि मैं अपनी कहानी स्वयं लिख डालता तो अच्छा होता, क्योंकि मेरे जीवन से सम्बन्ध रखने वाली मुख्य मुख्य घटनाओं को जान लेना तो किसी के लिए भी कठिन न होगा, पर हिन्दी और विशेषकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से सम्बन्ध रखने वाली अनेक घटनाओं का विवरण, जिनका उस समय प्रकाशित होना असम्भव-सा था परन्तु जिनका ज्ञान बना रहना परम आवश्यक है मेरे साथ ही लुप्त हो जाएगा और ज्यों-ज्यों समय बीतता जायगा मैं भी उन्हें कुछ-कुछ भूलता जाऊँगा। इसलिए मेरी यह इच्छा है कि इस समय इन घटनाओं का वृत्तान्त तथा अपना भी कुछ-कुछ लिख डालूँ जिससे समय पड़ने पर मैं इन बातों से काम ले सकूँ और मेरे पीछे दूसरे लोग उन घटनाओं की वास्तविकता जानकर इस समय के ऐतिहासिक तथ्य का यथार्थ निर्णय कर सकें।'[2]

ऐसे ही राहुल सांकृत्यायन ने भी अपनी जीवन यात्रा लिखने के उद्देश्य को प्राक्कथन में ही व्यक्त किया है—

' मेरी जीवन यात्रा मैंने क्या लिखी, मैं बराबर इसे महसूस करता रहा कि ऐसे ही रास्तों से गुजरे हुए दूसरे मुसाफिर यदि अपनी जीवन यात्रा को लिख गए होते तो मेरा बहुत लाभ हुआ होता—ज्ञान के ख्याल से ही नहीं समय के परिमाण में भी। मैं मानता हूँ कि दो जीवन यात्राएँ बिल्कुल एक सी नहीं हो सकतीं तो भी इसमें सन्देह नहीं कि सभी जीवनों को उसी आंतरिक बाह्य विश्व की तरंगों में तरना पड़ता है।"[3]

राहुल सांकृत्यायन के कथन से स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी आत्मकथा इसलिए लिखी कि शायद आगामी साहित्यिक इससे कुछ लाभ उठा सकें, क्योंकि

---

१ मेरी आत्मकहानी ले० डा० श्यामसुन्दरदास पृ० १
२ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास, ले० चन्द्रावती सिंह
३ मेरी जीवन यात्रा, ले० राहुल सांकृत्यायन, पृ० ५

प्रत्येक मनुष्य को जीवन में संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उन्हीं संघर्षों के अध्ययन से अन्य व्यक्ति को भी प्रोत्साहन मिल सकती है। अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह है। इसके साथ ही अपने गुण-दोषों के विवेचन से आत्मपरिष्कार एवं आत्मोन्नति चाहना है। अतः आत्मकथा लेखक का प्रमुख उद्देश्य आत्मविश्लेषण एवं आत्म निरीक्षण ही है।

शैली—शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो इस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं। इस पर असामान्य अधिकार के प्रभाव में लेखक की सफलता सम्भव नहीं। क्योंकि सामान्य रूप से लिखने की यहाँ बात ही नहीं, आत्मकथा शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका होना इसमें आवश्यक है।

सर्वप्रथम शैली में प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। लेखक की शैली ऐसी होनी चाहिए जिसका प्रभाव पाठक पर स्थायी रूप से रहे। प्रभावोत्पादकता से ही विषय में रोचकता आती है। मुन्शी प्रेमचन्द की आरम्भ की तीन चार पंक्तियाँ ही अपना स्थायी प्रभाव पाठक पर डाल देती हैं शेष कथन तो है ही प्रभावपूर्ण शैली में लिखा हुआ—

'मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है जिसमें कहीं कहीं गढ़े तो हैं पर टीलों पर्वतों घने जंगलों गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन हैं उन्हें तो यहाँ निराशा होगी।'[1]

लेखक की शैली में प्रभावोत्पादकता तभी उत्पन्न हो सकती है यदि वह आत्म विश्लेषण निःसंकोच एवं स्पष्ट रूप से वर्णन करे। इस प्रकार आत्मकथा की शैली में निःसंकोच आत्मविश्लेषण होना चाहिए। हिन्दी आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि उन्हीं लेखकों की आत्मकथाएँ प्रभावोत्पादक हो सकी हैं जिन्होंने स्पष्ट रूप से आत्मनिरीक्षण किया है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता शैली में सुसंगठितता एवं लाघवता का होना है। आत्मकथा शैली में यदि लेखक जीवन में घटित अनावश्यक घटनाओं का वर्णन सीमा से अधिक करता है तो वह आत्मकथा रोचक एवं प्रभावपूर्ण नहीं बन सकती। लेखक को आत्मकथा में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह जो कुछ भी अपने विषय में कहना चाहता है वह इस ढंग से कहे कि बात भी स्पष्ट हो जाय और विस्तार भी न हो। महादेवी वर्मा द्वारा लिखी हुई कुछ पंक्तियाँ ही उनके समूचे जीवन पर प्रकाश डालती हैं—

'परिवर्तन का दूसरा नाम जीवन है। जिस प्रकार जीवन के ऊषाकाल में मेरे मुख का उपहास-सा करती हुई विश्व के कण-कण से एक करुण की धारा-उमड़ पड़ी है उसी प्रकार सन्ध्याकाल में जब लम्बी यात्रा से थका हुआ जीवन

---

१ मेरा जीवन, ले० मुन्शी प्रेमचन्द, 'हंस' आत्मकथा अंक, सन् १९३२

अपने ही भार से दबकर कातर क्रन्दन कर उठेगा तब विश्व के कोने-कोने में एक अज्ञात पूर्व सुख मुस्करा पड़ेगा। ऐसा ही मेरा स्वप्न है।'[२]

इस प्रकार आत्मकथा शैली में प्रभावोत्पादकता लाघवता, सुसगठितता, स्पष्टता आदि गुणों का होना आवश्यक है। इनके सम्बद्ध होने से ही आत्मकथा की शैली परिपक्व हो सकती है।

हिन्दी आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आत्मकथा लिखने की भी अनेक शैलियां हैं। कई आत्मकथा लेखक जिन्होंने स्फुट रूप से अपने जीवन के विषय में लिखा है उन्होंने निबन्धात्मक शैली को अपनाया है। महादेवी वर्मा उपेन्द्रनाथ अश्क गुलाबराय, मुन्शी प्रेमचन्द, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि लेखकों ने इसी शैली को अपनाया है। हिन्दी साहित्य में कई ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने संस्मरणात्मक शैली में अपने विषय में लिखा है। इसका सफल प्रयास शान्तिप्रिय द्विवेदी की पुस्तक 'परिव्राजक की प्रजा' में उपलब्ध होता है। इस पुस्तक में शान्तिप्रिय द्विवेदी ने समस्त आत्मकथा संस्मरणात्मक शैली में लिखी है। ऐतिहासिक शैली का आभास हम राजनैतिक पुरुषों द्वारा लिखी हुई आत्मकथाओं में प्राप्त होता है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखी हुई आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' में डायरी शैली की काफी सहायता ली गई है। शुद्ध साहित्यिक शैली डा० श्यामसुन्दरदास एवं आचार्य चतुरसेन की आत्मकथाओं में लक्षित होती है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध परिमार्जित एवं भावानुकूल होगी तभी वह पाठक को प्रभावित कर सकती है। शब्द चयन भी विषय एवं भावानुकूल होना चाहिए।

विकास

हिन्दी साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आत्मकथा लिखने की प्रथा यद्यपि नवीन है पर इसका थोड़ा बहुत लिखने का प्रयास आरम्भ से ही चला आ रहा है। हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम आत्मकथा सन् १६४१ ई० में 'अर्द्धकथानक' नाम से बनारसीदास जैन ने लिखी है। एक अच्छी आत्मकथा में जिन प्रमुख गुणों का समावेश होना चाहिए वे सभी इसमें यथेष्ट मात्रा में मिलते हैं। भाषा की दृष्टि से भी कृति का महत्व कम नहीं है। रचना के आरम्भ में ही लेखक उसकी भाषा के सम्बन्ध में कहता है कि वह 'मध्य देश की बोली बोल' कर अपनी कथा कहेगा। केवल कविता की दृष्टि से भी अर्द्धकथा का स्थान ऊँचा है। साहित्यिक परम्पराओं से मुक्त प्रयासरहित शैली में घटनाओं के सजीव और यथातथ्य वर्णन का जहाँ तक सम्बन्ध है इतनी सुन्दर रचना हमारे हिन्दी साहित्य में कम मिलेगी। प्रस्तुत आत्मकथा का महत्व अन्य दृष्टि से और भी अधिक है। वह मध्यकालीन उत्तरी भारत

---

२ जीवन स्मृतियाँ सपादक क्षेमचन्द्र सुमन, पृ० १५१

की सामाजिक अवस्था तथा धनी और निधन प्रजा के सुख दुख का यथार्थ परिचय देती है। इसका प्रथम संस्करण सन् १९४३ में प्रयाग विश्वविद्यालय हिंदी परिषद् से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक माताप्रसाद गुप्त हैं।

(क) भारतेंदु युग

इस प्रकार हिंदी साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि भारतेन्दु के आगमन से पहले केवल 'अर्द्धकथा' ही आत्मकथा प्राप्त होती है। भारतेन्दु युग में भारतेन्दु ने ही "एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगबीती" में अपने विषय में लिखने का प्रयास किया था। केवल दो पृष्ठ ही वह लिख पाए हैं इसलिए यह अपूर्ण है। आरम्भ में यह लिखते हैं—

'हम कौन हैं और किस कुल में उत्पन्न हैं—आप लोग पीछे जानेंगे। आप लोगों को क्या किसी का रोना हो पढ़े चलिए जी बहलाने से काम है। अभी मैं इतना ही कहता हूँ कि मेरा जन्म जिस तिथि को हुआ वह जैन और वैदिक दोनों में ही बड़ा पवित्र दिन है।'[1]

इन पृष्ठों में भारतेन्दु ने अपने जीवन के विषय में कोई विशेष बात नहीं लिखी। केवल आत्मकथा लिखने का प्रयास ही लक्षित होता है।

राधाचरण गोस्वामी—भारतेन्दु युग के एक प्रतिभाशाली तथा प्रगतिशील विचार के लेखक राधाचरण गोस्वामी थे। इन्होंने अपना छोटा सा जीवन चरित्र लिखा था जो मथुरा प्रेस से प्रकाशित 'राधाचरण गोस्वामी का जीवन चरित्र' नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक जीवनी साहित्य के आत्मचरित का रूप मात्र है। इस पुस्तक में उस समय के समाज और प्राचीन कवियों का पता लगता है। यह पुस्तक केवल बारह पृष्ठ की है। वह भी बड़ी मनोरंजक है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है—

'मुझे अंग्रेजी शिक्षा पर बहुत श्रद्धा हुई और मैंने अंग्रेजी पढ़ने की ठान ली। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि मैं जिस कुल में उत्पन्न हुआ उसमें अंग्रेजी पढ़ना तो दूर की बात है यदि कोई फारसी अंग्रेजी का शब्द भूल से मुख से भी निकल जाय तो बहुत पश्चात्ताप करना पड़े। अस्तु मैंने गुप्त रीति से अंग्रेजी आरम्भ की ।'[2]

राधाचरण गोस्वामी के इस जीवन चरित्र से भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियों के विषय में विशेष रूप से अधिक पता चलता है। गोस्वामीजी ने अपने विषय में कुछ कम ही कहा है।

प्रतापनारायण मिश्र—प्रतापनारायण मिश्र ने भी आत्मचरित लिखना

---

१ भारतेन्दु के निबन्ध संग्रहकर्ता और सम्पादक केसरीनारायण शुक्ल, प्रथम संस्करण पृ० १६१

२ राधाचरण गोस्वामी का जीवन चरित्र ले० राधाचरण गोस्वामी, पृ० ३

आरम्भ किया था पर दुर्भाग्य की बात है कि वह उसे अधूरा ही छोड गए। मिश्रजी ने अपने लेख की भूमिका में आत्मचरिता की महिमा का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग पर किया था—

"एक घास का तिनका हाथ में लीजिए और उसकी भूत तथा वर्तमान दशा का विचार कर चलिए तो जो जो बात तुच्छ तिनके पर बीती है, उसका ठीक ठीक वृत्तान्त तो आप जान ही नहीं सकते, पर तो भी इतना अवश्य सोच सकते हैं कि एक दिन उसकी हरीतिमा सजी किसी मदान की शोभा का कारण रही होगी कितने बडे-बडे रूप गुण बुद्धि विद्यादि विशिष्ट उसके दर्शन को आते होंगे कितने ही क्षुद्र कीटों एव महान् व्यक्तियों ने उस पर विहार किया होगा, कितने ही क्षुधित पशु उसको खा जाने को लालायित रहे होंगे।"

श्री मिश्रजी ने अपने लेख में लिखा था—

हमारी सभा में तो जितने मनुष्य हैं सब का जीवनचरित लेखनीबद्ध होना चाहिए। हमारे देश में यह लिखने की चाल नहीं है, इससे बडी हानि होती है। मैं उनका बडा गुण मानूगा जो अपना वृत्तान्त लिखकर मेरा साथ देंगे।"

अम्बिकादत्त व्यास—सन् १९०१ में अम्बिकादत्त व्यास द्वारा लिखा हुआ 'निजवृत्तान्त'[1] प्राप्त होता है। व्यासजी ने ५६ पृष्ठों में अपने जीवन के सवत् १९३५ से लेकर सवत् १९५३ तक का वर्णन किया है। प्रत्येक सवत् के शीर्षक को लिखकर सवत् क्रमानुसार जीवन का वर्णन है। इन्होंने अपने साहित्यिक एव सामाजिक जीवन पर भी प्रकाश डाला है। सर्वप्रथम वश का परिचय देकर अपने विद्याध्ययन का वर्णन कर फिर अपनी साहित्यिक सेवाओं का वर्णन किया है। इसके साथ ही लेखक ने जहाँ जहाँ नौकरी की है वहाँ का भी वर्णन किया है। इनके अध्ययन से लेखक के विस्तृत अध्ययन का भी पता चलता है। आरम्भ इन्होंने इस ढंग से किया है—

'पडित हरिप्रसाद प्रभृति ने अपना वृत्तान्त कुछ भी न लिखा तो इस समय के विद्वद्गण को उनके ग्रन्थ में इस अभाव को देख नाक सिकोडनी ही पडती है। परमानन्द पडित ने इस समय ग्रन्थ बनाया तो भी निज शृगार सप्तशतिका में अपना कुछ भी चरित्र न लिखा। यह देख हम लोग इस अश में उनकी भी चूक कहते हैं। ऐसे ही यदि मैं भी अपने ग्रन्थ में निज विषय में कुछ न लिखूँ तो मुझे विद्वान् लोग उनकी अपेक्षा भी अधिक दूषित समझेंगे। इस कारण मैं किंचित् निजवृत्तान्त लिखता हूँ और समझता हूँ कि जैसे लल्लू लाल ने निज ग्रन्थ के अन्त में स्व-वृत्तान्त लिखा तो उससे साक्षर समुदाय अधिक प्रसन्न है और कृष्णदत्त का निज विषय में किंचित लिखना बिहारी के भी जीवन का निर्णायक समझते हैं वैसे ही मेरा लेख भी आवश्यक ही समझा जाएगा।'

---

१ विद्याविनोद, अष्टम भाग बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित पटना 'खग विलास प्रेस, बाकीपुर

"मेरे पिता के ग्रंथ साहित्य भाण्डागार म घर घर पाये जाते हैं और उनका जीवन चरित बिहार के (गवनमेंट द्वारा स्वीकृत) प्रसिद्ध शिक्षा सम्बन्धी विद्याविनोद नामक पत्र म बाबू चडीप्रसादसिंह छाप चुके हैं तथा उसी ग्रंथ म उद्धृत कर बाबू साहब प्रसादसिंह ने अलग भी खग विलास यन्त्रालय (बाकीपुर) से प्रकाशित किया है तथा इनाम म बाटन के लिए यहा के शिक्षा विभाग ने स्वीकार किया है। इसी के अवलोकन से मेरे जन्म तक वृत्तान्त तथा मेरे पूर्वजों का सक्षिप्त चरित विदित हो सकता है तो भी सूचना मात्र यहाँ लिख देता हू।"[1]

इतना विस्तृत उद्धरण देने का मेरा अभिप्राय यह है कि भारतेन्दु युग म लेखको का मन आत्मचरित लिखने को अवश्य था। परन्तु किसी कारणवश वह अपनी इच्छाओं को पूर्ण न कर सके। केवल थोडा बहुत ही अपने जीवन का वर्णन कर सके हैं जिनको कि आत्मकथा लिखने का थोडा बहुत प्रयास ही कहा जा सकता है। पर आत्मकथा लिखने की प्रवृत्ति अवश्य उनम थी।

श्रीधर पाठक—सन् १६२७ म श्रीधर पाठक द्वारा लिखी हुई 'स्व जीवनी' प्राप्त होती है। यह दो पृष्ठों की जीवनी श्रीधर पाठक ने लिखी है। इसम इनके जन्म स्थान एव तिथि का ही विशेष रूप स पता चलता है। साथ ही उनकी शली सम्बन्धी विशेषताओं का पता चलता है कि इन्होंने ब्रज भाषा और खडी बोली दोनो का प्रयोग किया। इनकी स्व जीवनी का उद्धरण उल्लेखनीय है—

वय पसिठ हुई आज अपनी बयस हपपूरित हुई स्व गृह जन मडली मन हुआ मुदित अति उदत रवि दरस सग प्रात के समय ज्यों सरस सरसिज कली।'

'मडली शब्द पय त इस पद्य की पक्ति उत्सव सुलभ विमल मगल मे जनवरी मास तारीख तेईस उन्नीस पच्चीस सन् बीच विरचित हुई।'

बहुत से मित्र अनुरोध अतिकर रहे कीजिए। शीघ्रलिपि बद्ध निज जीवनी। न अति विस्तृत न अति लघु न अत्युक्तियुत किन्तु सब सत्य सुव्यक्त स्व व्यक्तिगत सकल घटना घटित सरलता से बलित सुभग सुन्दरललित सुघर साहित्य सस्थान से अस्खलित सुलभ कल कोकिला काकली सी भली।

किन्तु मम जीवनी ऐसी वस्तु नही जोकि हो जगत के जानने योग्य। अतएव इस ओर मति अतिव आती नही चित्त म सुरुचि सुमचित समाती नही। पर सुजन वृन्द या सुहृद जन सघ की ओर स की गई प्रबल या प्रार्थना विवशता विवश स्वीकार्य होती हुई जगत के बीच है प्राय देखी गई।

अत लिखना उचित जीवनी का हुआ शक्ति अनुसार कुछ सार सयुक्त यद्यपि लगे काय यह निपट एक भार ही।'[2]

इस प्रकार भारतेन्दु युग के अनुशीलन से ज्ञात होना है कि इस युग के लेखकों

---

१ 'माधुरी अगस्त जनवरी श्रावण (३०३ तु० स)
२ माधुरी, १६२७ ई० अगस्त, जनवरी

ने आत्मचरित लिखने के महत्व को समझ लिया था और शक्ति अनुसार थोडा-बहुत लिखने का प्रयास भी किया परन्तु पूर्ण सफलता किसी को नही हुई, केवल जन्म स्थान, जन्म तिथि एव वश-परिचय से ये लोग आगे नही बढे।

(ख) द्विवेदी-युग

हिन्दी आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि महावीरप्रसाद द्विवेदी के आगमन से पहले आत्मचरित लिखने के महत्व को साहित्य सेवियो ने जान लिया था और कुछ लेखको ने प्रयास भी किया। द्विवेदीजी ने भी अपने विषय मे 'मेरी जीवन रेखा'[1] नाम से पाँच पृष्ठो का चरित लिखा है। इन पाच पृष्ठो का स्व लिखित जीवनी मे द्विवेदीजी ने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व की सच्ची झाकी पाठको के सम्मुख प्रस्तुत की है। इन पृष्ठो मे द्विवेदीजी ने अपने व्यक्तित्व की सभी विशेषताओ को बडी ईमानदारी और सचाई से वर्णन किया है। कुछ पक्तियो मे ही अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से रखा है। एक आत्मकथा लेखक की शैली मे जो गुण होने चाहिए वे इनकी शैली मे विद्यमान हैं।

अपने जीवन को इन्होने नि सकोच रूप से लिखा है। इनके आत्मविवेचन मे स्पष्टवादिता एव सत्यता दृष्टिगोचर होती है—

> मैं एक गरीब देहाती का एकमात्र आत्मज हू जिसका मासिक वेतन १० रु० था। अपने गाँव के देहाती मदरसे मे थोडी-सी उर्दू और घर पर थोडी-सी सस्कृत पढकर १३ वर्ष की उम्र मे २६ मील दूर राय बरेली के जिला स्कूल मे अग्रेजी पढने गया। आटा दाल घर से पीठ पर लादकर ले जाता था। दो आने फीस देना था—कौटुम्बिक दुरावस्था के कारण मै उससे आगे न पढ सका।[2]

यही नहीं इन्होने नि सकोच आत्मविश्लेषण किया है। इनके द्वारा लिखे हुए पाँच पृष्ठ ही साहित्यिको के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। अगर आचार्य जी अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व और विस्तार से लिख देते तो वह हिन्दी साहित्य मे एक अद्वितीय स्थान रखता। फिर भी इन्होने आत्मचरित लिखने का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—आचार्य शुक्ल ने अपने जीवन के कुछ पहलुओ को 'आत्मसस्मरण'[3] शीर्षक से लिखा है। तीन पृष्ठो के इस आत्मचरित मे शुक्लजी ने साहित्यिक जीवन मे प्रविष्ट होने से पहले जीवन का वर्णन किया है। इसमे उन्होने अपने जीवन की किसी अन्य विशेषता का वर्णन न कर केवल साहित्यिक रुचि का ही वर्णन किया है। किन किन साहित्यिको का इनके जीवन पर प्रभाव पडा—इसका भी इन्होने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। सस्मरण रूप मे लिखा हुआ यह आत्मचरित

---

१ आचार्य द्विवेदी सम्पादिका निर्मल तालवार

२ द्विवेदी जी सपादिका निर्मल तालवार पृ० ४

३ जीवन स्मृतियाँ, सम्पादक क्षेमेन्द्र सुमन, द्वितीय सस्करण, १९५३, पृ० ४८

सम्बन्धी निबन्ध उल्लेखनीय है। गुप्तजी द्वारा लिखे हुए कतिपय पृष्ठ उनकी
आत्मकथा लिखने की प्रवृत्ति के द्योतक हैं।

सन् १९३२ में अनेक साहित्यकार लेखकों ने अपने जीवन के विषय में लिखा
है। इन लेखकों में पं० विनोदशङ्कर व्यास, डा० धनीराम प्रेम, सद्गुरुशरण अवस्थी,
विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, पं० गङ्गाप्रसाद शास्त्री श्रीहरि, महावीरप्रसाद
गहमरी एवं राधेश्याम कथावाचक मुख्य हैं। इन सभी लेखकों के आत्मचरित सम्बन्धी
लेख हंस आत्मकथा अंक में प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार हिन्दी आत्मकथा साहित्य
के विकास में इस अंक ने विशेष सहयोग दिया है। यहाँ तहाँ मुंशी प्रेमचन्द ने भी मेरा
जीवनसार इसी अंक में प्रकाशित करवाया है।

पं० विनोदशङ्कर व्यास ने 'मैं' नामक शीर्षक में मेरा संक्षिप्त जीवन सार का
वर्णन स्पष्ट रूप से किया है। अपने जीवन की उत्तम घटनाओं का जहाँ लेखक ने
वर्णन किया है वहाँ अपनी त्रुटियों का भी स्पष्ट वर्णन किया है। अपने आत्माभिमानी
होने के विषय में लिखते हैं—

मैं बाल्यावस्था से ही आत्माभिमानी हूँ। मुझे याद है एक बार मेरी
पढ़ाई के सम्बन्ध में पूछते हुए रुष्ट होकर उन्होंने मेरा कान पकड़ा था। मैं रोता
हुआ घर में चला गया। प्रतिदिन का नियम था कि प्रातःकाल उठकर मैं उन्हें
प्रणाम करने जाता था। लेकिन उसके बाद ६-७ दिनों तक मैं उनके सामने नहीं
गया। अन्त में कई बार बुलाने पर मैं उनके पास गया।[2]

इसी प्रकार विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक ने मेरा वह बाल्यकाल शीर्षक में
बचपन की कुछ घटनाओं का वर्णन किया है। धनीराम ने मेरा साहित्यिक जीवन में
अपने जीवन की उन सभी घटनाओं का वर्णन किया है जो कि प्रत्येक नवयुवक लेखक
के मार्ग में अनिवार्य रूप से आती है। इसी प्रकार गङ्गाप्रसाद शास्त्री श्रीहरि ने मेरी
आत्मकथा में अपने जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन किया है जोकि उनके व्यक्तित्व
की विशेषताओं का दिग्दर्शन करवाने में सहायक हैं।

मुन्शी प्रेमचन्द—मुन्शी प्रेमचन्द ने अपने जीवन के विषय में मेरा जीवन
सार शीर्षक से हंस आत्मकथा अंक में सन् १९३२ में ही प्रकाशित करवाया। मुंशी
प्रेमचन्द द्वारा लिखे हुए अपने विषय में ये कुछ पृष्ठ उनके समस्त जीवन की झाँकी
प्रस्तुत करते हैं। जिस ईमानदारी और परिश्रम से इन्होंने अपना समस्त जीवन व्यतीत
किया है उसका वर्णन स्पष्ट रूप से लेखक ने किया है। लेखक ने निरपेक्ष भाव से
अपने जीवन का विश्लेषण किया है।

सन् १९३५ में आचार्य रामदेवजी द्वारा लिखे हुए मेरे 'जीवन के कुछ पृष्ठ
एवं हीरानन्द शास्त्री की आत्मकथा के कुछ पन्ने प्रकाशित हुए। आचार्य रामदेव ने
अपनी जीवन कथा में—अंग्रेजों के प्रति निर्भयता का परिचय, स्कूल में मास्टर होते
हुए एक अंग्रेज कप्तान की घटना, ट्रेनिंग कालिज में विद्यार्थी के रूप में प्रिंसिपल से

---

२ हंस, आत्मकथा अंक, पृ० ८

झगडा करना आदि घटनाओ के वर्णन से अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है। हीरानन्द शास्त्री ने 'दो संन्यासी' शीर्षक में दो घटनाओं का वर्णन किया है जोकि सावित्री और ब्रह्मा के मंदिरों को देखने के लिए घटी थी। दलाई लामा और दवी शक्ति शीर्षक हैं।

सन् १९३९ में विद्यावती प्रेस लहरियासराय से प्रकाशित प्रोफेसर अक्षयवट मिश्र 'विप्रचन्द' द्वारा लिखा हुआ आत्मचरित चम्पू प्राप्त होता है। यह गद्य-पद्य-मयी सचित्र आत्मकथा है। इसके दस अध्याय हैं और सभी के नाम लेखक ने दिए हैं अर्थात् समस्त जीवन के भिन्न भिन्न पहलुओं को लेखक ने शीर्षकों में बाँट दिया है जैसे मेरी जन्मभूमि, वंश परिचय, शिक्षा दीक्षा, प्रवास, कलकत्ता निवास आदि प्रोफेसर साहब ने अपने जीवन का विस्तारपूर्वक लिखा है।

सन् १९३९ में हो देवीदत्त शुक्ल ने मुंशी लुत्फुल्ला की आत्मकथा का अनुवाद 'एक आत्मकथा' शीर्षक से किया है। अनुवाद करते समय शुक्लजी ने विषयांतर को छोड़कर केवल आत्मकथा सम्बन्धी बातों का ही इसमें संकलन किया है। यही नहीं महात्मा टाल्स्टाय की आत्मकथा का अनुवाद किया इसी सन् में राजाराम अग्रवाल ने 'मेरी आत्मकहानी' शीर्षक से किया। इसके अतिरिक्त राजाराम ने भी अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' नाम से इसी सन् में प्रकाशित की।

सन् १९४० में स्वामी सत्यभक्त की 'आत्मकथा' सत्याश्रम वर्धा (सीपी) से प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में न तो कोई ऐसी घटना है जो लोगों को चकित करे न कोई ऐसी सफलता दिखाई है जो लोगों को प्रभावित करे न जीवन इतनी पवित्रता के निखार तक पहुंचा है कि लोग उसकी वन्दना करें। यह साधारण पुरुष की साधारण कहानी है। सन् १९४० में ही रामनाथ लाल सुमन और परमेश्वरी दयाल की 'मेरी मुक्ति की कहानी' प्राप्त होती है।

डा० श्यामसुन्दरदास—सन् १९४१ में डा० श्यामसुन्दरदास की 'मेरी आत्मकहानी' प्राप्त होती है। यह भी एक विचारणीय कृति है। डा० श्यामसुन्दरदास हिन्दी खडी बोली के उन्नायकों में से हैं, हिन्दी भाषा और साहित्य के महाप्राण हैं और हिन्दी संसार के प्रसिद्ध लेखक हैं। इस दृष्टिकोण से इनका स्थान साहित्य के क्षेत्र में बहुत ऊँचा होने से इनका आत्मचरित्र विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करता है। श्यामसुन्दरदास उच्च कोटि के निबन्ध लेखक थे इसलिए उनकी जीवनी में भी निबन्ध शैली की नीरसता प्रकट होती है। साहित्यिक और उच्च कोटि की भाषा होने पर भी उसमें माधुर्य नहीं है और जीवनी साहित्य की भाषा यदि माधुर्यपूर्ण नहीं है तो उसका रसात्मक साहित्य की दृष्टि से मूल्य बहुत कम हो जाता है। इस पुस्तक में हिन्दी की सेवाओं और हिन्दी से सम्बन्धित अन्य बातों के विषय में विशेष रूप से लिखा गया है। यह तो कहा जा सकता है कि श्यामसुन्दरदास का जीवन हिन्दी साहित्य से परे और क्या था तो कोई आपत्ति नहीं होगी परन्तु मनुष्य अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण सेवाओं के अतिरिक्त कुछ और भी है। आत्मचरित जीवन के महत्त्वपूर्ण

कार्यों का उल्लेखमात्र नहीं है। अतएव इनमें कहीं साहित्यिक के आत्मकथा में चरित्र चित्रण के पूर्ण विकास की कमी खटकती है। यदि श्यामसुन्दरदास हिन्दी संसार के संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति न होते तो उनकी 'आत्मकथा' पर विचार करने की आवश्यकता ही न होती।

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी—द्विवेदी युग के प्रसिद्ध आलोचकों में श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का नाम भी अग्रगण्य है। इन्होंने अपने जीवन का संक्षिप्त विवरण [illegible] में दिया है। साहित्यिक जीवन के अतिरिक्त बाल्यावस्था एवं यौवनावस्था के विषय में लेखक ने कई बातों की चर्चा की है। जीवन पर पड़े अन्य व्यक्तियों के प्रभाव का वर्णन भी लेखक ने स्पष्ट रूप से किया है। इसके अतिरिक्त लेखक ने अपने विचारों एवं भावों का स्पष्ट चित्रण किया है।

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी—इस युग के आत्मकथा लेखकों में अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का नाम उल्लेखनीय है। वाजपेयीजी हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में भीष्म पितामह का स्थान रखते हैं। अपने जीवन का महत्वपूर्ण भाग आपने हिन्दी पत्रकारिता और भाषा की समृद्धि में ही लगाया है। इसलिए आपके द्वारा लिखी हुई आत्मकथा[1] हिन्दी साहित्य-जगत के लिए लाभप्रद है। इसमें वाजपेयीजी ने तत्कालीन साहित्यिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के वर्णन करने के पश्चात् अपने साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय में लिखा है। आत्मकथा के इन पृष्ठों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन्होंने दैनिक 'भारत मित्र' तथा 'स्वतन्त्र' आदि हिन्दी के उल्लेखनीय पत्रों का सम्पादन अत्यन्त सफलतापूर्वक किया। इसके अतिरिक्त अपनी आत्मकथा' में इन्होंने अपनी विद्वता, कार्यकुशलता एवं सहज सरलता का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया है।

बाबू गुलाबराय—बाबू गुलाबराय द्विवेदी युग की शृंखला के लेखक हैं। आपने दर्शनशास्त्र विषयक लेखों और पुस्तकों के प्रणयन द्वारा हिन्दी साहित्य के मन्दिर में प्रवेश किया और धीरे धीरे एक रससिद्ध आलोचक के प्रतिष्ठित आसन पर आ विराजे। इन्होंने अपनी आत्मकथा स्फुट निबन्धों के रूप में लिखी है।[2] 'मैं और मेरी कृतियाँ' आत्मविश्लेषण[3] में विशेष रूप से इन्होंने अपने जीवन के दोनों पक्षों का—साहित्यिक एवं व्यक्तिगत का—विश्लेषण किया है। जीवन की घटनाओं का वर्णन ही नहीं किया अपितु आलोचक होने के कारण उनपर टिप्पणी भी की है। इसके अतिरिक्त 'मेरी असफलताएँ' में लिखे व्यक्तिगत निबन्धों में इनके जीवन का पाठक को अनुमान हो जाता है। इन व्यक्तिगत निबन्धों के अनुशीलन से इनकी स्पष्टवादिता, निष्पक्षता, सत्यता एवं शैली की लाघवता दृष्टिगोचर होती है।

---

१ जीवन-स्मृतियाँ (साहित्यकारों के आत्मचरित), सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन

२ जीवन स्मृतियाँ, सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन, १९५३, आत्माराम एण्ड संस

३ मेरे निबन्ध—जीवन और जगत, गुलाबराय

मूलचन्द्र अग्रवाल—सन् १६४४ मे मूलचन्द्र अग्रवाल की एक पत्रकार की आत्मकथा प्राप्त होती है। मूलचन्द्र अग्रवाल 'विश्वमित्र' के सचालक रहे हैं। इन्होंने अपनी आत्मकथा का आरम्भ ही अद्भुत ढग स किया है। पाठक इन पक्तियो को पढकर कुछ घबरा-सा जाता है—

'घडाम गढी के कुएँ स अधेरी रात्रि के प्रथम प्रहर मे आवाज उठी और सारे गाँव म प्रतिध्वनित सी हो गई। नर नारी कुएँ की ओर दौडते हुए दिखाइ दिए। सबने साश्चय देखा कुए के घाट पर बधी हुई मली पगडी रक्खी है और एक जोडा ग्रामीण जूता तो गोपाल दद्दा का है।

आत्मकथा के जितने भी अध्याय हैं लेखक ने उन सभी का नाम रखा हुआ है—आत्मात्सग, निधनता बनाम शिक्षा प्रगति, अग्रेजी शिक्षा की ओर, कालेज की शिक्षा, भाग्यचक्र अनुभवशून्यता क आधार पर अधकार स प्रकाश और विकास, १६२२ की जेल यात्रा, फिर नया सग्राम, विस्तारपथ पर अधूरी कहानी और अत म लेखक न २५ वष के स्फुट सस्मरण लिखे हैं। जीवन यात्रा के विपिन पथिक इससे शान्ति लाभ कर सकते हैं। एक श्रमजीवी पत्रकार पूजीपति पत्रकार के रूप म दिखायी देन पर आलोचना की सामग्री हो सकता है परन्तु आदशवादी पत्रकार के बाद व्यावहारिक हिन्दी पत्रकार की यह दूसरी पुस्तक है।[1]

आत्मकथा लेखक की शली मे प्राय जो गुण होने चाहिए वह इनकी आत्मकथा मे स्पष्ट रूप से विद्यमान है। हिन्दी म प्राप्त श्रेष्ठ आत्मकथाओ मे इसकी भी गणना की जा सकती है।

इसी युग मे महात्मा गाधी एव जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रसिद्ध महापुरुषो की आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं। महात्मा गाधी की मूल गुजराती पुस्तक 'आत्मकथा' का हिन्दी अनुवाद श्री हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा सन् १६२७ म प्रकाशित हो चुका था। इस जीवनी ग्रथ न जीवनी साहित्य को गौरवपूण स्तर प्रदान किया। आत्मकथा के सम्बध म भारतीय सकुचित दृष्टिकोण की परिधि बधन तोडकर विस्तृत और उन्मुक्त हो गई। जीवनी लिखने का एक अत्यन्त वज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो गया था। पडित नेहरू के अग्रेजी म लिखे आत्मचरित का हिन्दी अनुवाद १६३६ ई० मे प्रकाशित हो गया था। इनके आत्मचरित के हिन्दी अनुवाद से हिन्दी आत्मकथा साहित्य को अधिक बल पहुचा था। इन दोनो महापुरुषो के अतिरिक्त डा० राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा सन् १६४७ म प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा से हिन्दी आत्मकथा साहित्य का स्तर और भी अधिक ऊचा उठ गया। इस प्रकार इन महापुरुषो की आत्मकथाओ म वे सभी गुण प्राप्त होते हैं जोकि एक अच्छे आत्मकथा लेखक मे होने चाहिए। इस दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य को यह बहुत प्रभावित कर सके हैं।

सन् १६४७ म भवानीदयाल सन्यासी का आत्मचरित्र 'प्रवासी की आत्मकथा

---

१ एक पत्रकार की आत्मकथा, ले० मूलचन्द्र अग्रवाल, पृ० ८६

नाम से प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का बड़ा महत्व है यद्यपि इतिहास और आत्मकथा होने के साथ साथ यह एक सुंदर साहित्यिक कृति भी है।

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की आत्मकथा भी भागों में प्रकाशित हुई है। इन दोनों भागों का हिन्दी अनुवाद भी हुए। प्रथम भाग 'आधे रास्ते' सन् १९४७ ई० और दूसरा भाग 'सीधी चढ़ान' सन् १९४६ में प्रकाशित हुआ। आधे रास्ते के हिन्दी अनुवादक श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' हैं और 'सीधी चढ़ान' के अनुवादक श्री युगलकिशोर हैं। दोनों भागों में मुन्शी जी का व्यक्तित्व प्रत्येक पृष्ठ के साथ उभरता आया है। अत्यन्त ऊँची साहित्यिक भाषा में जीवनी ग्रन्थ लिखा है। यहाँ आडम्बर का नाम नहीं, छिपाने का प्रयत्न नहीं और पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे जैसे जीवन प्रतिदिन आगे चलता गया है, उसी रूप में जीवनी ग्रन्थ उसे लिखा गया है। जीवन के अनेक पहलू, मन की पीड़ाएँ और व्यथाएँ, आकांक्षाएँ और असफलताएँ घृणा और प्रेम निराशा की पराकाष्ठा और फिर उससे ऊपर उठने के प्रयत्न, पारिवारिक स्थिति और उसमें अपना स्थान अपने अपने स्थान पर ठीक ढंग से चित्रित मिलते हैं।

वियोगी हरि—सन् १९४८ में 'मेरा जीवन प्रवाह' वियोगी हरि द्वारा लिखा हुआ प्राप्त होता है। 'मेरा जीवन प्रवाह' जीवन की छोटी बड़ी सभी बातों का चित्रण करता है। मन की तरंगों का, ज्वार और भाटों का उसमें एक चित्र मिलता है। भाषा सुन्दर है और लिखने की शैली अच्छी है, वर्णन रुचिकर है।

राहुल सांकृत्यायन—राहुल सांकृत्यायन ने 'मेरी जीवन यात्रा' में अपना आत्मचरित्र लिखने का प्रयत्न किया है। इसमें उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इसमें भाषा की सुन्दरता विविधता विशेष रूप से आकर्षक है। भावों को सरल तथा रोचक ढंग से व्यक्त करने की उनमें क्षमता है। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९४६ में हुआ। समस्त पुस्तक को चार खंडों में विभाजित किया हुआ है।

सन् १९४६ ई० में पूज्य श्री १०५ क्षु० गणेशप्रसादजी वर्णी ने 'मेरी जीवनगाथा' प्रकाशित कराई।

इस प्रकार सन् १९२७ से १९५० तक के आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि जहाँ इस युग में साहित्यिक व्यक्तियों के आत्मचरित्र स्फुट एवं सम्बद्ध रूप में प्राप्त होते हैं वहाँ कुछ ऐसे राजनैतिक पुरुषों के आत्मचरित्र भी प्राप्त होते हैं जिनका आत्मकथा साहित्य की प्रगति में विशेष हाथ रहा है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू एवं डा० राजेन्द्रप्रसाद के आत्मचरितों से जनता बहुत प्रभावित हुई। इस युग तक साहित्यिक व्यक्तियों में केवल डा० श्यामसुन्दरदास ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी आत्मकथा विस्तारपूर्वक लिखी यद्यपि वह इनके साहित्यिक व्यक्तित्व को ही लक्षित करती है। स्फुट रूप में जितनी भी निबन्धात्मक एवं संस्मरणात्मक शैली में आत्मकथाएँ लिखी गई हैं वे भी विषय एवं शैली की दृष्टि से साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इस प्रकार हिन्दी आत्मकथा साहित्य

की विशेष रूप से प्रगति हुई। कई अनुवादित आत्मकथाएँ भी प्राप्त होती हैं। राजाराम अग्रवाल एव पद्मसिंह शर्मा कमलेश न महात्मा टाल्सटाय एव मुशी जी की आत्मकथाओं का हिंदी म अनुवाद किया। इनके अतिरिक्त हरिभाऊ उपाध्याय ने गाधीजी की जीवनी का हिन्दी अनुवाद किया। इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जहाँ इस युग म मौलिक आत्मकथाएँ प्राप्त होती है वहाँ अनुवादित भी। भारतेन्दु युग म तो साहित्यिक लेखकों न आत्मचरित लिखने के महत्व को ही समझा था जिसका परिणाम यह हुआ कि द्विवेदी युग म इसकी पर्याप्त प्रगति हुई। 'हस के आत्मकथा अक' ने भी इस युग म आत्मकथा साहित्य के विकास म विशेष सहयोग दिया है।

(ग) वर्तमान काल

वतमान काल म भी अनेक कथालेखकों, आलोचकों एव कवियों द्वारा लिखी हुई कथाएँ स्फुट एव सम्बद्ध रूप म पाई जाती है।

सन् १९५१ में स्वतन्त्रता की खोज मे अर्थात् मेरी आत्मकथा' स्वामी सत्यदेव परिव्राजक द्वारा लिखी हुई हिंदुस्तान प्रिंटिंग प्रेस अलीगढ स प्रकाशित हुई। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक न देश विदेश म भ्रमण कर भारतीयता और राष्ट्रीयता का जो प्रचार किया था उसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

कालिदास कपूर – सन् १९५३ म इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित कालिदास कपूर की आत्मकथा 'मुर्दारिस की रामकहानी प्राप्त होती है। यह पुस्तक अध्यापक का जीवन-वृत्त है और मुख्यत अध्यापक पाठकों को ध्यान म रखकर ही लिखा गया है। इस रामकहानी मे कालिदास कपूर ने अपने जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं का बडे गर्व के साथ वर्णन किया है। इनके जीवन म जो भी सकट व बाधाएँ आई है वे सभी शिक्षक समुदाय की हो सकती है ऐसा इन्होंने स्वय स्वीकार किया है —

> 'अतएव कुछ ऐसा विश्वास हो रहा है कि मेरी रामकहानी म भारतीय शिक्षक बन्धुओं की कहानी सन्निहित है। यदि वन्दनीय नेताओं की आत्मकथाओं से समस्त भारतीय नागरिक प्रभावित होते है तो माध्यमिक एव प्रारम्भिक विद्यालयों के शिक्षक समुदाय को तो मेरे जैसे मुर्दारिस की रामकहानी म आत्म दर्शन होना ही चाहिए।[1]

इस आत्मकथा म लेखक की स्पष्टवादिता एव लेखन शैली मे प्रभावोत्पादकता दृष्टिगोचर होती है।

सन् १९५३ म आत्माराम एण्ड सस ने जीवन-स्मृतियाँ पुस्तक प्रकाशित की जिसके सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन हैं। इस पुस्तक म आधुनिक कथालेखक, आलोचक एव कविजनों के आत्मचरित सकलित है। कविगण म सुमित्रानन्दन पत, महादेवी

[1] मुर्दारिस की रामकहानी, ले० कालिदास कपूर, पृ० ३

वर्मा एव मथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखे गए आत्मकथा सम्बन्धी लेख हैं। मथिली
शरण गुप्त ने अपने साहित्यिक जीवन के विकास के विषय में लिखा है। इसका
अर्थात् आत्मकथा सम्बन्धी लेख का शीर्षक कविता के पथ पर है। साहित्यिक जीवन
की झाँकी ही केवल प्राप्त होती है इसलिए लेख कुछ अपूर्ण-सा प्रतीत होता है।
इसी प्रकार सुमित्रानन्दन पत ने भी मेरा रचनाकाल शीर्षक में अपना कवि
जीवन के विकासक्रम को पाठकों के सम्मुख रखा है। इस प्रकार इनके भी साहित्यिक
जीवन का पाठक को आभास मिलता है।

महादेवी वर्मा ने भी 'अपने सम्बन्ध में' शीर्षक में अपने कवि जीवन के मात्र
पक्ष का ही अधिक वर्णन किया है। कविताओं के करुण दुःख आदि विषयों का
ही विस्तारपूर्वक लिखा है। अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से आत्मकथात्मक ढंग में
लिखा है। दुःख के विषय में लिखती हैं—

'मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं—एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील
हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधन में बाँध देता है और दूसरा वह
जो काल और सीमा के बन्धन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रन्दन है।'[1]

महादेवी द्वारा लिखे हुए इन पाँच पृष्ठों को पढ़ने के पश्चात् इनकी कविताओं
के भाव पक्ष का समझने में पाठक को बहुत सहायता मिल सकती है।

कथाकार एवं आलोचकों में से जैनेन्द्रकुमार, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्री
रामवृक्षबेनीपुरी, श्री शांतिप्रिय द्विवेदी एवं डाक्टर रामकुमार वर्मा द्वारा लिखे
हुए आत्मकथा सम्बन्धी निबन्ध भी संग्रहीत हैं। जैनेन्द्र ने भी अपनी कथित नीरस
में साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय में ही लिखा है। इन्होंने कैसा लिखना शुरू किया और
किस प्रकार इनकी लेखन शैली का विकास हुआ इसी का विश्लेषण किया है।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी ने अपने जीवन का आरम्भ से वर्णन किया है - जन्म
शिक्षा एवं साहित्यिक जीवन को क्रमानुसार 'मेरा निर्माण' में लिखा है। इन्होंने
संक्षिप्त रूप से जीवन के समस्त पहलुओं को रखा है। साहित्यिक रचनाओं के विषय
पर इन्होंने प्रकाश डाला है। इस प्रकार इन द्वारा लिखे हुए अपने जीवन के विषय में
कुछ पन्ने इनके साहित्यानुशीलन में पाठक को बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

डाक्टर रामकुमार वर्मा ने अपने जीवन की कुछ घटनाओं को जिनसे उनका
व्यक्तित्व विशेष रूप से प्रभावित है पाठकों के सम्मुख रखा है। इसका शीर्षक
उन्होंने मेरे जीवन के कुछ चित्र रखा है।

इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी मैं कैसे लिखता हूँ शीर्षक में अपने
साहित्यिक जीवन का ही वर्णन किया है।

इस प्रकार क्षेमेन्द्र सुमन ने इन सभी स्फुट रूप में लिखे हुए आत्मकथा सबधी
लेखों का संकलन किया है। इनके अध्ययन से स्पष्ट है कि इन्होंने जीवन के केवल एक

---

१ जीवन स्मृतियाँ, सपादक क्षेमेन्द्र सुमन, पृ० १५१

समूह का विश्लेषण किया है। व्यक्तिगत जीवन को यह पूर्ण छोड़ गए हैं।

शान्तिप्रिय द्विवेदी ने भी अपनी आत्मकथा 'परिव्राजक की प्रजा' संस्मरणात्मक शैली में लिखी है। संस्मरणों में लिखी हुई इस आत्मकथा का प्रकाशन काल १९५२ सन् है। इसका विस्तृत वर्णन मैंने 'संस्मरण' अध्याय में किया है। फिर भी द्विवेदीजी ने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन के दोनों पहलुओं का विश्लेषण किया है। 'बालभवान' में शिशवावस्था का एवं उत्तरकाल में साहित्यिक जीवन को लिया है।

सन् १९५९ में उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लिखे यात्रा, डायरी, संस्मरण एवं आत्मकथा सम्बन्धी लेखों का संकलन नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसमें जीवनी के बाद शीर्षक में अश्क जी ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है।

सन् १९६२ में अमर शहीद बिस्मिल' द्वारा जेल में फांसी के दो दिन पूर्व लिखी हुई आत्मकथा बनारसीदास चतुर्वेदी ने प्रकाशित करवाई। यह इसका द्वितीय संस्करण है। इसके प्रकाशक आत्माराम एण्ड संस हैं। इस आत्मकथा के चार खण्ड हैं। आत्मचरित, स्वदेश प्रेम, स्वतन्त्र जीवन एवं वृहत संगठन। कथा भाषा और कथा भाव दोनों दृष्टियों से बिस्मिल की आत्मकथा एक अद्भुत ग्रंथ है। बिस्मिल ने अपने पूर्वजों का जो वृत्तांत आरम्भ में दिया है वह बड़ा आकर्षक है। पुस्तक में स्पष्टवादिता है और अपने संगठन की त्रुटियों का जिक्र है और साथी संगियों की कड़ी आलोचना भी है।[1] बिस्मिल के इस आत्मचरित के मुकाबले का ग्रंथ केवल हिन्दी साहित्य में ही नहीं, वरन् भारत की अन्य भाषाओं के साहित्य में भी मुश्किल से मिलेगा।

सतराम बी० ए० सन् १९६३ में सतराम बी० ए० की आत्मकथा प्राप्त होती है। अपने जीवन के छिहत्तर वर्षों के अनुभवों को लेखक ने इसमें वर्णित किया है। इसीलिए इसका नाम भी 'मेरे जीवन के अनुभव' दिया है। इन्होंने अपने समस्त जीवन को चौदह भागों में विभाजित किया है और फिर क्रमानुसार वर्णन किया है। जीवन के सभी पक्षों का विवेचन इनकी आत्मकथा में लक्षित होता है। आत्मकथा लेखक में जिस ईमानदारी और जिन्दादिली का होना आवश्यक है वह इनमें है जैसा कि इन्होंने स्वयं भी कहा है—

"अपने जीवन के छिहत्तर वर्षों में मुझे जो सुखद दुःखद अनुभव प्राप्त हुए हैं इन्हीं को मैंने ईमानदारी के साथ ज्यों का त्यों यहाँ लिखने का यत्न किया है।"[2]

जीवन की किसी भी घटना को लेखक ने छिपाया नहीं है। वर्णन में सत्यता एवं स्पष्टवादिता लक्षित होती है। इसके साथ ही लेखक ने 'साहित्यिक जीवन' शीर्षक में अपनी साहित्यिक सेवाओं का वर्णन किया है। यहाँ तक कि लेखक के व्यक्तित्व पर किन किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा था उसका भी वर्णन इसमें पाया जाता है। अत्यन्त

---

१ सम्पादकीय बनारसीदास चतुर्वेदी।
२ मेरे जीवन के अनुभव ले० सन्तराम, पृ० ६।

प्रभावशाली शैली मे लेखक ने अपनी आत्मकथा लिखी है। इसीलिए प्राप्त श्रेष्ठ हिन्दी आत्मकथाओ मे यह एक कही जा सकती है। कथा भाषा एव कथा भाव दोना ही दृष्टियो से यह सफल कही जा सकती है।

आचाय चतुरसेन—सन् १९६३ मे आचाय चतुरसेन की 'मेरी आत्मकहानी' चतुरसेन साहित्य समिति ज्ञानधाम शाहदरा दिल्ली से प्रकाशित हुई। इसमे आचाय जी ने अपने जीवन का पूण विस्तृत रूप से वणन किया है। इस आत्मकथा म आचाय जी के व्यक्तिगत एव साहित्यिक जीवन का पूण रूप से वणन है। आरम्भ म लेखक ने अपने माता पिता एव पूवजो के विषय मे लिखा है। उसके बाद बाल्यावस्था का वणन है। विद्यार्थी जीवन का वणन लेखक ने स्पष्ट एव रोचकपूण ढग से किया है। गृहस्थ जीवन की सभी समस्याओ का लेखक ने नग्न चित्र खीचा है। इसके पश्चात् लेखक ने अपने साहित्यिक जीवन का विकास लिखा है। जीवन म जिन जिन व्यक्तियो से लेखक का सम्बन्ध रहा है उन सभी का वणन किया है। आत्मकथा को पढने के पश्चात् आचाय जी की की स्पष्टवादिता का पता चलता है। गुण कथन मे ही वह सिद्धहस्त नही थे अपितु त्रुटिया को मानने मे भी वह चतुर थे। गुण-दोषो का लेखक ने वणन ही नही किया अपितु शक्ति अनुसार विश्लेषण भी किया है। राजनतिक एव साहित्यिक विषया पर भी लेखक ने नि सकोच रूप मे अपने विचार रखे है। अपने विषय म एव अन्य व्यक्ति के विषय जो कुछ भी लेखक ने लिखा है वह निरपेक्ष स्वभाव का ही परिणाम है। व्यक्तिगत घटनाओ के वणन की अपेक्षा लेखक ने जहाँ बाह्य जीवन मे अपना सम्बन्ध स्थापित किया है वह अधिक प्रभावशाली बन पडा है। हिन्दी साहित्य म प्राप्त आत्मकथाओ म यह सवश्रेष्ठ आत्मकथा कही जा सकती है। कथा भाषा एव कथा भाव दानो दृष्टिया से इसका महत्व कम नही है। इसम केवल एक त्रुटि है कि यह अधिक विस्तृत है। अनावश्यक विस्तार प्राय रोचक नही होता लेकिन फिर भी आचाय जी की शली प्रभावोत्पादक है।

इस प्रकार उपयुक्त विवचन से स्पष्ट है कि हिन्दी आत्मकथा साहित्य प्रगति की ओर अग्रसर है। हिन्दी साहित्य म विस्तृत एव पूण आत्मकथा केवल आचाय चतुरसन की ही प्राप्त होती है और जितनी भी आत्मकथाएँ स्फुट एव निबन्ध रूप म प्राप्त होती हैं उनम लेखको के एक ही पहलू व पक्ष का ज्ञान होता है। साहित्यिक जीवन के अतिरिक्त लेखक का व्यक्तिगत जीवन भी होता है उसका बहुत कम उल्लेख है। वही आत्मकथा सफल कही जा सकती है जिसम जीवन के सभी पक्षो का उल्लेख हो। इस दृष्टिकोण स आचाय चतुरसन की मेरी आत्मकहानी ही उत्कृष्ट रचना है। प्रकाशित आत्मकथाओ म से यही सवश्रेष्ठ आत्मकथा है।

विभाजन

पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित एव प्रकाशित पुस्तको के आधार पर आत्मकथा साहित्य का विभाजन निम्न ढग से हो सकता है—

(क) लेखकों के आधार पर

हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखक केवल साहित्यिक व्यक्ति ही नहीं हैं प्रत्युत अनेक राजनैतिक एवं धार्मिक व्यक्तियों की आत्मकथाएँ भी प्राप्त होती हैं। यहाँ साहित्यिक व्यक्ति से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अपनी कृतियों द्वारा विद्वता का परिचय दिया है। ऐसी श्रेणी में कवि, कथालेखक एवं आलोचकगण आते हैं।

कवि—हिन्दी आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों ने अपनी आत्मकथा स्फुट रूप से निबन्धात्मक शैली में लिखी है। भारतेन्दु युग में स्वयं भारतेन्दु ने लिखने का प्रयास किया था। द्विवेदी युग में वियोगी हरि, मैथिलीशरण गुप्त एवं वर्तमान युग में सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, उदयशंकर भट्ट, निराला, सियारामशरण गुप्त एवं हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखी हुई आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं। इन कवियों ने अपनी आत्मकथाओं में अपने चरित्र का चित्रण पूर्ण ढंग से नहीं किया है। केवल कवि जीवन के विकास क्रम को ही समझाने का प्रयत्न किया है। कवि होने के कारण इनकी शैली भी विषयानुकूल हो गई है। कहीं कहीं आत्मनिरीक्षण करते समय भावुक से प्रतीत होते हैं। पंत की मेरा रचनाकाल में शैली इसी प्रकार की है—

'पर्वत प्रदेश के निर्मल चंचल सौंदर्य ने मेरे जीवन के चारों ओर अपने नीरव सौन्दर्य का जाल बुनना शुरू कर दिया था। मेरे मन के भीतर बरफ की ऊँची चमकीली चोटियाँ रहस्य भरे शिखरों की तरह उठने लगी थीं जिन पर खड़ा हुआ नीला आकाश रेशमी चंदोवे की तरह आंखों के सामने फहराया करता था। कितने ही इन्द्रधनुष मेरी कल्पना के पट पर रंगीन रेखाएँ खींच चुके थे, बिजलियाँ बचपन की आंखों को चकाचौंध कर चुकी थीं।'[1]

इस प्रकार इनका प्रत्येक पृष्ठ जहाँ यह अपनी रचनाओं के विषय में लिखते हैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित लक्षित होता है।

आत्मकथा शैली का प्रधान गुण संक्षिप्तता एवं लाघवता का होना है तो इन कवियों की आत्मकथा में यह विशेष रूप से पाया जाता है क्योंकि किसी ने भी पूर्ण चरित्र को तो लिखा नहीं, थोड़े शब्दों में अधिक कह देने की प्रवृत्ति ही इनमें विशेष रूप से पायी जाती है। इसीलिए इनके द्वारा लिखे हुए कुछ पृष्ठ ही बहुत उपयोगी हैं। महादेवी में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से है—आरम्भ में ही पाठक को इसका अनुभव हो जाता है—

'अपने सम्बन्ध में क्या कहूँ? एक व्यापक विकृति के समय, निर्जीव संस्कारों के बोझ से जड़ीभूत वर्ग में मुझे जन्म मिला है। परन्तु एक ओर साधनापूत, आस्तिक और भावुक माता और दूसरी ओर सब प्रकार की साम्प्रदायिकता

---

1 जीवन-स्मृतियाँ, सम्पादक क्षेमेंद्र सुमन पृ० १२९

से दूर, धर्मनिष्ठ और दार्शनिक पिता ने अपना अपने संस्कार देकर मेरे जीवन को जैसा विकास दिया उसमें भावुकता, बुद्धि के कठोर धरातल पर, साधना एक व्यापक दार्शनिकता पर और आस्तिकता एक सक्रिय किन्तु किसी वर्ग या सम्प्रदाय से न बंधने वाली चेतना पर ही स्थित हो सकती थी।'[1]

अतः स्पष्ट है कि जीवन के जिस पक्ष को लेकर इन्होंने लिखा है उसमें इनकी पूर्ण ईमानदारी दृष्टिगोचर होती है। इनकी शैली भी परिपक्व एवं उत्कृष्ट है।

कथालेखक—कथालेखकों में से उपेन्द्रनाथ अश्क, रामवृक्ष बेनीपुरी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, मुंशी प्रेमचन्द एवं आचार्य चतुरसेन की आत्मकथाएं प्राप्त होती हैं। इन कथालेखकों में आचार्य चतुरसेन के अतिरिक्त किसी ने भी सम्पूर्ण चरित्र का चित्रण नहीं किया। उपेन्द्रनाथ अश्क ने भी अपने साहित्यिक जीवन के विषय में 'ज्यादा अपनी और कम परायी' में लिखा है। इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी 'मैं कैसे लिखता हूँ' में अपने साहित्य जीवन के विषय में लिखा है। इसमें इन्होंने कला पक्ष पर अधिक बल दिया है। मुंशी प्रेमचन्द ने भी व्यक्तिगत जीवन को कम ही लिखा है। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने अपनी आत्मकथा संस्मरणों में 'परिव्राजक की प्रजा' नाम से लिखी है। इसमें इन्होंने बाल्यकाल एवं उत्तर काल में जीवन के सभी पक्षों के विषय में लिखा है। इनकी शैली में इनका भावुक मन अधिक लक्षित होता है। कथा लेखकों की शैली में रोचकता अधिक पायी जाती है जैसे कि कहानी तभी उत्कृष्ट होती है यदि वह पाठक का मनोरंजन कर सके। तो इसी प्रकार आत्मकथा में भी यही है। इन लेखकों ने आत्मकथा भी ऐसे ढंग से लिखी है कि वह पाठक का मनोरंजन कर सके। मुंशी प्रेमचन्द ने तो व्यक्तिगत घटना का वर्णन करते समय वार्तालाप भी ज्यों का त्यों लिखा है। इससे और भी रोचकता एवं प्रभावोत्पादकता बढ़ती है—

एक महीने के बाद मैं फिर मि० रिचडसन से मिला और सिफारिशी चिट्ठी दिखलाई। प्रिंसिपल ने मेरी तरफ तीव्र नेत्रों से देखकर पूछा, 'इतने दिन से कहाँ थे?'

"बीमार हो गया था।'

क्या बीमारी थी?

मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। अगर ज्वर बताता हूँ तो शायद साहब झूठा समझें—मैंने कहा—

'पलपिटेशन आफ हार्ट सर।'[2]

मेरा यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि इन कथालेखकों की शैली जो कि इन्होंने उपन्यास एवं कहानियों के लिखने में अपनायी है आत्मकथा में भी आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया है। इससे वह पाठक के सम्मुख और अधिक नग्न एवं स्पष्ट रूप

---

१ जीवन स्मृतियाँ, सम्पादक, क्षेमेन्द्र सुमन पृ० १४२
२ मेरा जीवन सार ले० मुंशी प्रेमचन्द 'हंस' आत्मकथा अंक, सन् १९३२

से अपने चरित्र को रख सकते हैं। इन कथालेखकों में से केवल आचार्य चतुरसेन ही अपने पूर्ण व्यक्तित्व को स्पष्ट कर सके हैं। इनकी आत्मकहानी में वे सभी विशेषताएँ हैं जोकि एक आत्मकथा लेखक की शैली में होनी चाहिए।

आलोचक—आलोचकों में से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ श्यामसुन्दरदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, डॉ० रामकुमार वर्मा एवं बाबू गुलाबराय द्वारा लिखी हुई आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं। इनमें केवल डॉ० श्यामसुन्दरदास की आत्मकथा ही हम विस्तृत रूप में प्राप्त होती है बाकी आलोचकों ने स्फुट रूप से ही अपने विषय में लिखा है। आलोचक होने के कारण इनकी आत्मकथाओं में आत्मविश्लेषण, आत्म निरीक्षण एवं आत्मविवेचन अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। अपने गुण दोषों का वर्णन करना ही ये अपना ध्येय नहीं समझते प्रत्युत उन पर टीका टिप्पणी भी करते हैं। बाबू गुलाबराय इस विषय में सिद्धहस्त हैं। वह अपने जीवन की छोटी से छोटी घटना का वर्णन भी इस ढंग से करते हैं कि उनका व्यक्तित्व पाठक को स्पष्ट हो जाए। उन्होंने जिस ईमानदारी और सचाई से आत्मविश्लेषण किया है वह अभी तक कोई भी आलोचक नहीं कर सका है। एक स्थान पर यह लिखते हैं—

"मैं तर्कशास्त्र के विद्यार्थियों में अग्रगण्य था। इस विषय के अवैतनिक ट्यूशन करने का मुझे व्यसन-सा हो गया था। कुछ को तो स्नेहवश पढ़ाता था और कुछ को केवल शान जिताने के लिए क्योंकि शान जताने के लिए मेरे पास और कुछ न था। कपड़ों के नाम से पट्टू का कोट था और सामान के नाम पर एक टूटा चीड़ का बक्स। फिर शान किस चीज की दिखाता!"[1]

कहीं कहीं तो इन आलोचकों ने बड़े गाम्भीर्य से अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की शैली में अधिक गम्भीरता है—

'मैं अपने जीवन को दो भागों में विभक्त कर सकता हूँ। एक कर्म जीवन है और दूसरा भाव जीवन। एक तथ्य का राज्य है और दूसरा कल्पना का। मैंने कभी तथ्य के राज्य में विचरण किया है और कभी कल्पना के राज्य में। दोनों में मैंने सुख दुःख, आशा निराशा और उत्थान-पतन का अनुभव किया है। दोनों मेरे लिए समान रूप से सत्य हैं।"[2]

डा० श्यामसुन्दरदास की आत्मकहानी तो हिन्दी भाषा तथा साहित्य की उत्पत्ति एवं विकास को समझने के लिए विशेष रूप से सहायक है। इसमें इन्होंने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को ही विशेष रूप से लिया है।

राजनैतिक एवं धार्मिक पुरुष—हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसी आत्मकथाएँ प्राप्त होती हैं जो राजनैतिक एवं धार्मिक पुरुषों की हैं। राजनैतिक पुरुषों में महात्मा

---

१ मैं और मेरा कृतियाँ ले० गुलाबराय, पृ० ६

२ अपनी बात ले० पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी पृ० ८६
पुस्तक 'जीवन स्मृतियाँ', सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन

गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं डा० राजेन्द्रप्रसाद प्रमुख हैं। राजनैतिक नेताओं का जीवन भी एक संघर्ष का जीवन रहता है। उत्थान और पतन उनके जीवन के दो समान महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं। भाग्य का झकोरा उन्हें किस समय किस पक्ष की ओर ले जाकर पटकता है, यह कुछ नहीं कहा जा सकता। इन लोगों की आत्मकथाओं का सौन्दर्य भाग्य के इसी उत्थान और पतन की कहानी को सचाई से व्यक्त करने में निहित रहता है। इन महापुरुषों द्वारा लिखी हुई सभी आत्मकथाएँ इसी श्रेणी में आती हैं।

कुछ धार्मिक पुरुषों द्वारा लिखी हुई आत्मकथाएँ भी प्राप्त होती हैं। हरिभाऊ उपाध्याय की साधना के पथ पर एवं भवानीदयाल संन्यासी की प्रवासी की आत्मकथा इसी श्रेणी में आती हैं। संसार में बहुत से महान् व्यक्ति हुए हैं जो अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में कुछ अधिक उच्छृंखल रहे हैं किन्तु किन्हीं विशेष प्रेरणाओं और परिस्थितियों के फलस्वरूप उनके जीवन की गतिविधि सहसा बदल गई और वे उच्चकोटि के धार्मिक व्यक्ति बन गए। इस कोटि के व्यक्तियों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं में हमें आत्मनिवेदन और आत्मविगर्हणा के साथ-साथ उन परिस्थितियों और घटनाओं का मार्मिक चित्रण भी मिलता है जिन्होंने उनके जीवन की गतिविधि को बदलने में योग दिया और उनके जीवन को सफल जीवन बना दिया। ये सभी आत्मकथाएँ इसी कोटि की हैं।

(ख) शैली के आधार पर

प्रत्येक लेखक का अपनी विषयवस्तु को सजाने का अपना अपना ढंग होता है। हिन्दी आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि विभिन्न लेखकों ने विभिन्न शैलियों में अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं।

निबंधात्मक शैली में लिखी हुई आत्मकथाएं—हिन्दी साहित्य में निबन्धात्मक शैली में अनेक साहित्यिक लेखकों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं। गुलाबराय महावीरप्रसाद द्विवेदी मुंशी प्रेमचन्द एवं डा० श्यामसुन्दरदास आदि लेखकों ने इस शैली को अपनाया है। इस शैली में एक निबन्ध की तरह से लेखकों ने अपने विषय में लिखा है। डॉ० श्यामसुन्दरदास की मेरी आत्मकहानी इसी शैली में लिखी गई है। इस शैली की यह विशेषता है कि यदि आत्मकथा के किसी एक भाग को निकाल दिया जाय तो बाकी का भाग स्वतन्त्र रूप से अपना अस्तित्व रखता है। इसका एक भाग दूसरे से और दूसरा तीसरे से सम्बद्ध नहीं होता जैसे बाबू गुलाबराय द्वारा लिखी हुई आत्मकथा है। इसका प्रत्येक निबन्ध अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। ऐसे ही डाक्टर साहब की आत्मकथा के विषय में कहा जा सकता है। इन्होंने पृथक्-पृथक निबन्धों में भिन्न भिन्न जीवन के पहलुओं को व्यक्त किया है।

संस्मरणात्मक शैली में लिखी हुई आत्मकथाएँ कुछ ऐसे भी लेखक हुए हैं जिन्होंने आत्मकथाएँ संस्मरणों के रूप में लिखी हैं। इसका सफल प्रयोग शान्तिप्रिय

द्विवेदी, महादेवी वर्मा सुमित्रानन्दन पंत, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि लेखकों ने किया है। द्विवेदीजी की पूर्ण आत्मकथा 'परिव्राजक की प्रजा' इसी शैली में लिखी गई है। इस शैली की यह विशेषता है कि इसमें लेखक उन्हीं घटनाओं का वर्णन करता है जो कि विशेष रूप से पाठक को प्रभावित करती हैं। संतराम बी० ए० ने भी अपनी अपनी आत्मकथा 'मेरे जीवन के अनुभव' इसी शैली में लिखी है।

डायरी शैली में लिखी हुई आत्मकथाएँ—हिन्दी साहित्य में केवल कन्हैयालाल माणिक्लाल मुंशी की आत्मकथा इस शैली में लिखी गई है। मुंशीजी ने प्रत्येक जीवन की घटना का वर्णन करते समय, समय, स्थान और सन् को दिया है। इसके अतिरिक्त राहुल सांस्कृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा' में भी इसका थोड़ा बहुत प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

आत्मकथात्मक जीवन चरित शैली में लिखी हुई तो केवल एक ही साहित्यिक व्यक्ति आचार्य चतुरसेन की 'मेरी आत्मकहानी' प्राप्त होती है। इसमें आचार्यजी ने ऐतिहासिक शैली का प्रयोग किया है। आदि से अन्त तक सम्बद्ध रूप में इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लिखा है। अपनी जीवनी को अर्थात् जीवन की कुछ घटनाओं को स्पष्ट रूप से पाठकों के सम्मुख रखने के लिए लेखक ने विभिन्न लेखकों से जो पत्र व्यवहार हुआ था वह भी अपनी आत्मकथा में दिया है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्मकथा लेखक विभिन्न शैलियों का प्रयोग कर सकता है।

5 रेखाचित्र

रेखाचित्र साहित्य का वह गद्यात्मक रूप है जिसमें ... विषय विशेष
का शब्द रेखाओं में संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इसका ... विवरण
द्वितीय अध्याय में किया गया है।

रेखाचित्र के तत्व

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं प्राप्त पुस्तकों के आधार पर रेखाचित्र
के तत्व निम्नलिखित हैं—

वर्ण्य विषय—१ रेखाचित्र साहित्य का यह प्रमुख तत्व है। रेखाचित्र साहित्य
विषय से अभिप्राय है कि रेखाचित्रकार ने अपने रेखाचित्र का विषय किसी व्यक्ति को
घटना को वस्तु को या किसी विशेष स्थल को लिया है। जहाँ तक व्यक्ति का प्रश्न
है वह किसी साधारण व्यक्ति का रेखाचित्र भी खींच सकता है यदि उसके चरित्र में
कुछ ऐसे गुण हैं जिनसे वह प्रभावित हुआ हो। साहित्यिक राजनीतिक एवं महापुरुषों
के जीवन में तो कुछ कहना ही क्या वे तो होते ही असाधारण हैं। ऐसे ही घटना
के विषय में है—रेखाचित्रकार यदि किसी विशेष घटना का रेखाचित्र खींचता है तो
वह अवश्य उससे प्रभावित होगा। कहीं कहीं हम प्रसिद्ध नगरों के रेखाचित्र प्राप्त
होते हैं। हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसे रेखाचित्रकार हुए हैं जिन्होंने विशेष नगरों जैसे
वाराणसी कानपुर आदि के विषय में रेखा चित्र लिखे हैं। इस प्रकार रेखाचित्र का
विषय व्यक्ति भी हो सकता है चेतन भी और जड़ भी।

विषय चुनाव के पश्चात् रेखाचित्रों में कुछ गुणों का होना आवश्यक है।
सर्वप्रथम रेखाचित्रों में यथार्थता का होना आवश्यक है। प्रत्येक रेखाचित्र का विषय
अनुभूत्यात्मक होना है काल्पनिक नहीं। इसीलिए उसमें वास्तविकता होती है। महादेवी
के रेखाचित्रात्मक कृतियों के नामों 'स्मृति की रेखाएं' 'अतीत के चलचित्र', दूसरी
कृति की भूमिका से इससे भी बढ़कर उनकी सघन संवेदना से यह स्पष्ट है कि इन
रेखाओं में चित्रकर्त्री ने उनको चित्रित किया है जो स्मृति पट से हटते नहीं।[1] या
जो धूमिल चलचित्रों के उज्जल आधार हैं।[2] जिनकी ममता सुंदर, सरलता शिव और

---

१ स्मृति की रेखाएं
२ अतीत के चलचित्र

मनुष्यता सत्य रही है।[1] नाना जो धूलि में रहा है और जिन्हें किसी पारखी ने पहचाना। प्रकाशचन्द्र गुप्ता ने भी 'पुरानी स्मृतियाँ' पुस्तक में उन व्यक्तियों के चित्र बनाए हैं जिनके बीच उनका बचपन खेला है। कन्हैयालाल मिश्र ने भी 'भूले हुए चेहरों' की याद को रेखाओं में बाँधा है।

यह तो हुई विषय की वास्तविकता, इसके पश्चात् वर्ण्य विषय में यथार्थता से अभिप्राय है प्रत्यक्ष बात का स्पष्ट रूप से रूपायित करना। कौशल्या अश्क ने अपने पति अश्क के विषय में स्पष्ट रूप से लिखा है

> अश्कजी का स्वभाव ऐसे शान्तिप्रिय व्यक्ति का-सा नहीं जो पहाड़ की चोटी पर पहुँच कर उस पर डेरा डाल ले, बल्कि ऐसा चंचल राही है जिसको कभी पहाड़ी के शिखर पसन्द हैं कभी गहरी घाटियाँ। उन्होंने अतीत के कड़वे प्याले भी पिए हैं और मीठे भी, बाहुल्य भी देखा है और अभाव भी—और न जाने किन जन्मजात संस्कारों और माता पिता के किन गुण दोषों और दूसरी सामाजिक अथवा मानसिक विषमताओं के कारण उनका स्वभाव ऐसी आत्म-विरोधी पराकाष्ठाओं में घड़ी के पेंडुलम की भाँति चलता रहता है।'[2]

इस प्रकार लेखक को पूर्ण ईमानदारी के साथ अपने विषय का वर्णन करना चाहिए। रेखाचित्र का यही गुण है जिससे हम रेखाचित्र को आत्मकथात्मक कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण गुण जिसका विषय वर्णन में होना उचित है वह है रोचकता। लेखक को अपने विषय का इस ढंग से वर्णन करना चाहिए जिससे वह पाठक को रुचिकर प्रतीत हो। नीरस विषय को कोई भी व्यक्ति पढ़ने के लिए तैयार नहीं होता।[3] स्केच का साहित्यिक मूल्य और सुन्दरता केवल सामयिक अथवा स्थानीय न हो वरन् प्रत्येक युग में और प्रत्येक जगह उसकी रोचकता बनी रहे और वह नीरस न हो जाए।[4] वैसे तो सभी लेखकों के रेखाचित्रों में यह गुण है पर प्रेमनारायण टंडन के रेखाचित्रों में तो विशेष रूप से यह गुण है। 'बूकी' का वर्णन आरम्भ से ही अत्यन्त रोचकपूर्ण ढंग से किया है—

> "हमारे प्रेस में काम करने वाले महाजन का नाम 'बूकी' है। यह विचित्र नाम उनके माता पिता का दिया हुआ नहीं है। उन्होंने तो बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उसका नाम रक्खा था भगवतीप्रसाद। उसके सगे सम्बन्धी जो व्याकरण के नियमों से सर्वथा अनभिज्ञ थे स्त्रीलिंगवाची 'भगवती' शब्द से ही अपना काम निकालने लगे। इस में भी कम से कम इतनी सच्चाई तो थी कि दिन में आठ-दस बार 'भगवती' का शुभ नाम मुँह से निकलता था और बहुत संभव है किसी को यह आशा भी हो कि चारों ओर मँडराने वाले यमदूतों से

---

१ अतीत के चलचित्र

२ दो धारा—लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क, कौशल्या अश्क, प्रथम संस्करण, पृ० २७

३ स्केच एक अध्ययन, ले० घनश्यामदास सेठी, अजन्ता जनवरी, १९५५

४ वही

किसी समय यदि रक्षा करने की आवश्यकता होगी तो इस नाम की प्रतिष्ठा हमारी अवश्य रक्षा करेगी जैसे अजामिल की सहायता विष्णु ने हुआ न नारायण नाम सुनकर ही की थी।[1]

स्पष्टता एवं रोचकता के पश्चात् वर्ण्य विषय में संक्षिप्तता का होना आवश्यक है। रेखाचित्रकार की सीमाएँ निश्चित हैं। उसे कम से कम शब्दों में सजीव रूप विधान और छोटे से छोटे वाक्य में अधिक भाव और मर्म की भाव व्यंजना करनी पड़ती है।[2] रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं संक्षेप में होती है।[3] इस प्रकार प्रत्येक लेखक को संक्षिप्त रूप से ही वर्णन करना चाहिए। पद्मसिंह शर्मा ने अकबर के समस्त व्यक्तित्व को अत्यन्त संक्षिप्त रूप से लिखा है –

अकबर साहब मान मर्यादा और पद प्रतिष्ठा की दृष्टि से बहुत बड़े आदमी थे। जज के ओहदे से रिटायर हुए थे। अंग्रेजी के विद्वान थे। अंग्रेजी सभ्यता में सब रंग ढंग पुते थे पर रहन-सहन और आचार-व्यवहार में पक्के स्वदेशी। अपनी संस्कृति के उपासक और प्राचीनता के प्रेमी थे। स्वभाव के *सरल और मिलनसार थे।*[4]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वही रेखाचित्र उच्चकोटि के माने जायेंगे जिनके विषय वर्णन में स्पष्टवादिता रोचकता संक्षिप्तता एवं स्वाभाविकता आदि गुण होते हैं।

चरित्रोद्घाटन—रेखाचित्र साहित्य का यह दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। रेखाचित्र में लेखक का उद्देश्य न तो किसी व्यक्ति के चरित्र का चित्रण करना है और न उसका चरित्र विश्लेषण अपितु वह अपनी रेखाओं से उसके चरित्र का स्वयं उद्घाटन करता है। चरित्रोद्घाटन ही रेखाचित्रकार अपने रेखाचित्र में करता है। जिस भी व्यक्ति का यह रेखाचित्र लिखता है उसके जीवन से सम्बन्धित छोटी छोटी घटनाओं द्वारा वह उसके चरित्र पर प्रकाश डालता है। उन घटनाओं की रेखा वह ऐसे ढंग से खींचता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के विषय में स्वयं ज्ञान हो जाता है। इसका कारण यह है कि रेखाचित्र में प्रधानता संकेतों की होती है खुलकर बात बहुत कम की जाती है। कौशल्या अश्क ने अपने पति अश्क के स्वभाव एवं व्यक्तित्व के विषय में एक छोटी सी घटना द्वारा पाठकों के सम्मुख रख दिया है—

'इनके इस रूखे स्वभाव का एक विलक्षण प्रमाण मुझे इन्हीं दिनों फिर मिला। दिल्ली ही की बात है मैंने इन्द्रप्रस्थ गर्ल्ज हाई स्कूल में नौकरी कर ली थी। लड़कियों की परीक्षाएं हो चुकी थी और पेपरों का ढेर का ढेर आया

---

१ रेखाचित्र ले० प्रेमनारायण टंडन पृ० ११

२ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त गोविन्द त्रिगुणायत

३ हिन्दी साहित्य कोष

४ पद्मपराग—ले० पद्मसिंह शर्मा पृ० २६६

पड़ा था। उन्हीं दिनों नौकर भाग गया। किसी प्रकार रात का खाना पका, कपड़े-बर्तन आदि छोड़ मैं पेपर देखने लगी और रात के दो बजे तक देखती रही—उस दिन कुछ देर से उठी—खूनी से भागी भागी अन्दर गई तो देखा रसोई घर में बाल्टी में ढेर के ढेर बड़े-बड़े बर्तन मल रहे हैं और अश्कजी अपने लड़के को बर्तन मलने की कला में निपुण बना रहे हैं।"[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभावोत्पादक घटनाओं के चित्रण से भी चरित्र का उद्घाटन रेखाचित्रकार करता है। कई बार ऐसा होता है कि रेखाचित्रकार जब किसी व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व का परिचय पाठक को देता है तो वह भी उसके चरित्र के विषय में संकेत होता है। गंगाप्रसाद पाण्डेय ने प्रथम दर्शन से ही मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व के विषय में जान लिया था। उसी के वर्णन से पाठक भी उनके चरित्र विषय में जान सका है—

"प्रथम दर्शन से ही मैंने समझ लिया कि गुप्तजी का प्रतिभा चरित्र और वय में बड़े होकर भी गुरु गम्भीर नहीं हो पाए। उनमें शारीरिक शिथिलता जनित सयानापन नहीं आ सका उल्टे बालकों जैसे विनोदी, सरल सहज और निश्छल एवं निर्विकार होते जाते हैं—हास से स्निग्ध कर देते हैं, सान्त्य से लुभा लेते हैं ममत्व से मोह लेते हैं। सदा सात्विक आने के ऐसे हैं। डाक्टरी की उपाधि पाने पर भी वैसे ही।"[2]

चरित्र का उद्घाटन रेखाचित्रकार कई बार अपनी चित्रात्मक शैली द्वारा भी स्पष्ट करता है। वह ऐसे सुन्दर ढंग से कुछ ही पंक्तियों में व्यक्ति का चित्र खींचता है कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की एक झाँकी-सी प्रस्तुत हो जाती है।

चरित्रोद्घाटन में रेखाचित्रकार केवल वर्णित व्यक्ति के चरित्र को वर्णित करने में ही सतर्क नहीं रहता अपितु उसे अपने व्यक्तित्व का भी ध्यान रखना पड़ता है। इसमें आत्मतत्व और परतत्व का अद्भुत सामंजस्य होता है। महादेवी के रेखाचित्रों की मर्मस्पर्शिता जहाँ जगत की मुर्झाई कलियों तथा आँसू लड़ियों के कारण है वहाँ महादेवी की गीली पलकों में उनकी भावुक करुणा को भी नहीं भूला जा सकता। महत्व दोनों का है—महादेवी की करुणा ही तथाकथित क्षुद्रों की निहित महानता का अनावृत कर सकी है। इसी अर्थ में शब्दचित्र को वैयक्तिक कला कहा जा सकता है वैसे रेखाचित्र कोई लेखक का अपना नहीं होता, किसी और का ही होता है। इसलिए रेखाचित्र में सामान्यतः आत्मतत्व तथा परतत्व का अद्भुत सामंजस्य होता है - यह अन्तर्बाह्य चित्र होता है।[3]

---

१ दो धारा प्रथम संस्करण, १९४९, लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क, कौशल्या अश्क, पृ० २५।

२ रेखाचित्र, ले० प्रेमनारायण टण्डन पृ० ८८।

३ रेखाचित्र कला—श्री सत्यपाल चुघ, सम्मेलन पत्रिका कला अंक, वि० २०१५।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लेखक अपने चरित्र नायक का चित्र स्पष्ट एवं रमणीय ढंग से वर्णन करता है। चरित्र उद्घाटन के लिए वह मनोवैज्ञानिकता का भी सहारा लेता है। प्रत्येक रेखाचित्र में लेखक के व्यक्तित्व की आभा भी होती है। एक प्रभावशाली घटना के वर्णन से सम्पूर्ण चरित्र का उद्घाटन करना रेखाचित्र साहित्य की अपनी विशेषता है।

देशकाल वातावरण—रेखाचित्र साहित्य का यही एक तत्त्व है जो कि इसे गद्य की अन्य विधाओं से पृथक करता है। रेखाचित्र का सम्बन्ध देश से होता है, काल तो सङ्गति के लिए व्यस्त रहता है।[1] क्योंकि वर्ण्य विषय किसी स्थान विशेष में विद्यमान रहता है, उसके आस पास की कुछ परिस्थितियाँ होती हैं। ये पार्श्ववर्ती भाग गतिशील नहीं होते हैं और वर्ण्य विषय के साथ नित्य सम्पृक्त रहते हैं। उनके बिना पात्र या वस्तु का अस्तित्व गोचर नहीं हो सकता। रेखाचित्रकार उन स्थायी सम्बन्ध रखने वाले अंशों का वर्णन करता है।[2] चान्सलर साहब की आमद रेखाचित्र में अमृतराय ने यूनिवर्सिटी कम्पाउण्ड का जो वर्णन किया है वह इसी बात का प्रमाण है कि रेखाचित्रकार का सम्बन्ध देश से ही है—

> "यूनिवर्सिटी कम्पाउण्ड में सब जगह मोटरें ही मोटरें दिखाई दे रही थीं। एक से एक नई बिल्कुल लेटेस्ट माडल की चमचम चमकती हुई लम्बी सुथुक मोटरें। सजे हुए फाटक के भीतर घुसते ही रोशनी की बहार थी रंग-बिरंगे कुमकुमों की झालर रास्ते के दोनों तरफ दूर तक चली गई थी। पेड़ भी सब इन्हीं रंगीन कुमकुमों से जगमग थे—हाल का तो कुछ कहना ही नहीं। जो हाल खास इसी काम के लिए बनवाया गया है विशिष्ट अतिथियों के स्वागत सत्कार के लिए उसकी शान का क्या कहना। झाड़-फानूस अपनी जगह पर दुरुस्त ऐसे कि लखनऊ का इमामबाड़ा याद आ जाए।"[3]

चित्रांकन के लिए पट चाहिए। वैसे ही शब्दचित्रकार का वर्ण्य भी किसी स्थान विशेष पर आधारित होता है। वस्तु या पात्र की गोचरता के लिए ही इसकी सार्थकता है। इससे अधिक की शब्दचित्र में गुंजायश नहीं। वस्तुतः विषय अपने अस्तित्व के लिए कुछ नैसर्गिक पीठिका लिए होता है शब्दचित्रकार का आधार वही है। हिन्दी साहित्य में कई ऐसे रेखाचित्रकार हुए हैं जिन्होंने स्थान विशेष के विषय में रेखाचित्र लिखे हैं। इनमें श्री रामाज्ञा द्विवेदी समीर एवं सन्तराम बी० ए० का नाम उल्लेखनीय है। कानपुर रेखाचित्र में श्री रामाज्ञा द्विवेदी समीर ने मेस्टन रोड का वर्णन अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है—

> मेस्टन रोड एक चौड़ी सड़क है जिसके दोनों ओर सुसज्जित भवन और दुकानें हैं। जिधर दृष्टि डालिए एक ही प्रकार के भवन दिखाई देंगे।

१ सिद्धान्तालोचन, धर्मचन्द सन्त, पृ० १७१
२ वही
३ चान्सलर साहब की आमद (स्केच), अमृतराय, आजकल १९५२, जून, पृ० ५०

दुकानें अधिकतर जूता और चमडे की अन्य चीजा का हैं किन्तु हर तरह की पहनन ओढने की चीजें भी यहा प्राप्य हैं बलक बठे बठे लेजर और जरनल लिखा करते हैं। [1]

यही नही 'लाहौर रेखाचित्र म सतराम ने शीश महल का वणन भी रोचक पूण शली म किया है —

"यहा सफेद सीमेट मे भिन भिन आठ वर्गों के छोटे काच जडकर विचित्र चित्रकारी की गई है। इन कांचो के चमकने से एक बडा ही उज्जवल और शोभायुक्त दृश्य दख पडता है शाही बुज पर चढकर देखने से एक बहुत मनोहर दृश्य दख पडता है। नगर की भीड भाड और चहल पहल तथा तग और टेढी मेढी गलियाँ उसके मन्दिरो और गिरजो क चमकते हुए अग्र और मसजिदो क उभरते हुए गुवद दशक के मन का मोह लेत हैं। [2]

इधर हिन्दी साहित्य म कुछ एसे लेखक हुए है जिन्होने यात्रा सम्बन्धी रेखाचित्र लिखे हैं। एस लखको मे सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन का नाम उल्लेखनीय है। इनके ये रेखाचित्र 'अरे यायावर रहेगा याद म सग्रहीत है। कुणालस्तूप तक्षशिला का वणन द्रष्टव्य है—

"कुणालस्तूप उसी स्थान पर बनाया गया बताया जाता है जहा विमाता तिष्यरक्षिता के कुचक्र से कुणाल की आखें फोड दी गई थी। देव की विडम्बना है कि इसी स्थान से समूची नगरी का और नीचे की उपत्य का और नदी का पूरा दृश्य दीखता है। कुणालस्तूप स लगभग पाच मील मल्लडस्तूप है जिसके साथ म विहार म सौत्रातिक कुमारलब्ध न वास किया था।" [3]

अत विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र म देश से अभिप्राय नगर स्थान विशेष से है। इसमे लेखक उस पट को चित्रित करता है जिस पर रखाकित करना चाहता है, काल तो इसम न्यग्य रूप स ही रहता है।

जहाँ तक वातावरण का प्रश्न है वातावरणप्रधान रखाचित्रो मे भी मानव चरित्र के अन्त रहस्यो की गुत्थिया ही सुलझाई जाती हैं। इसम मनुष्य की किसी एक भावना का ही अनुरजित और अनुप्राणित करके अनेक घटनाओ द्वारा पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। सारा प्रयत्न उसी अनुभूति को उभारता है। उस भावना का निकाल दन पर उस रेखाचित्र म कुछ भी शेप नही रहता है। बनारसीदास चतुर्वेदी ने बन्धुवर नवीनजी' नामक रेखाचित्र म कई घटनाओ द्वारा श्री नवीन की सकटग्रस्त व्यक्तियो की सहायता करने की मनोवृत्ति का उद्घाटन किया है। नवीन के ड्रायवर और स्वय लेखक आपसी वार्तालाप द्वारा अनेक भूतकालिक घटनाओ

१ माधुरी १९२५ ई०, पृ० ८९२
२ माधुरी
३ अरे यायावर रहेगा याद, ले० वात्स्यायन, पृ० ८७

का रोचक और मार्मिक वर्णन करते हुए उस भाव को पुष्ट करते चले जाते हैं।

फिर भी कुछ भी हो कहीं-कहीं सांकेतिक रूप में हम तत्कालीन परिस्थितियों के विषय में वर्णन मिल ही जाता है। आधुनिक समाज की त्रुटियों का निरूपण टंडन ने 'हिन्दू नारी' रेखाचित्र में बड़ी विदग्धता से किया है—

> फिर भी वह जीना चाहती है। उसके पास पैसा नहीं है उसका सम्मान नहीं है कोई उसकी बात पूछने वाला नहीं है फिर भी वह जीना चाहती है। वह जीना चाहती है अपने उस हिन्दू समाज के लिए जो उसके भरण पोषण का उसके सुख सन्तोष का उसकी शान्ति और मर्यादा का रक्षक होते हुए भी उसकी रक्षा नहीं करना चाहता — सब कुछ देखते-सुनते भी जो अपनी आँख मूँद लेने में कानों में तेल डालने में अपने कर्तव्य की इतिश्री समझता है।[1]

इसी प्रकार लोगों के हिन्दी लेखक के प्रति क्या विचार हैं इसका स्पष्ट वर्णन भी इन्होंने किया है—

> पर इस व्यावसायिक जगत में उनकी पूँजी का क्या मूल्य है? उनके प्राणों के प्राण को उनके जीवन के सार को यह व्यावसायिक जगत किन दामों में खरीदना चाहता है? संक्षेप में इसका उत्तर यही है कि भौतिक संघर्ष में व्यस्त सभ्य मानव समाज शरीर के रक्त से लिखी हुई पंक्तियों का मूल्य कौड़ियों में आँकता है। ऐसी दशा में उनकी आर्थिक स्थिति सर्वथा शोचनीय है तो आश्चर्य ही क्या है?"[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि रेखाचित्रों में देश का ही चित्रण प्रधान रूप से होता है। तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण हमें सांकेतिक रूप से ही प्राप्त होता है।

उद्देश्य—इसमें लेखक की उस सामान्य या विशिष्ट जीवनदृष्टि का विवेचन होता है जो उसकी कृति में कथावस्तु का विन्यास पात्रों की योजना, वातावरण के प्रयोग आदि में सर्वत्र निहित पाई जाती है। इस लेखक का जीवन-दर्शन अथवा उसकी जीवनदृष्टि जीवन की व्याख्या या जीवन की आलोचना कह सकते हैं। उन कृतियों को छोड़कर जिनकी रचना का उद्देश्य मन बहलाव या मनोरंजन मात्र होता है सभी कलाकृतियों में लेखक की कोई विशेष विचारधारा प्रकट या निहित रूप में देखी जा सकती है। बिना इसके साहित्यिक कृतित्व प्रयोजनहीन और व्यर्थ होता है।[3]

जहाँ तक रेखाचित्र साहित्य का प्रश्न है इसके लेखक का उद्देश्य अन्य लेखकों से पृथक है। रेखाचित्रकार का प्रमुख लक्ष्य होता है चरित्र विशेष के बाह्य और अभ्यान्तर दोनों ही के मार्मिक एवं संवेदनशील तत्त्वों को उभारकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर देना।[4]

---

१ रेखाचित्र, ले० प्रेमनारायण टंडन, पृ० ६०
२ रेखाचित्र प्रेमनारायण टंडन पृ० ६७
३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, ले० गोविन्द त्रिगुणायत पृ० ४६२
४ सिद्धान्तालोचन, ले० धर्मचन्द सन्त, पृ० १७८

रेखाचित्र की संक्षिप्त परिधि में जो कुछ वर्णित होता है उसमें जीवन की अभिव्यक्ति हो जाती है। यदि वर्ण्य विषय वस्तु या प्राणी है तो मानव जीवन के साथ उसके सम्बन्ध पर प्रकाश डालना अनिवार्य हो जाता है। रेखाचित्रों में किसी ऐसी वस्तु का चित्र उपस्थित करना उपादेय नहीं जिसके साथ मानव ने अभी तक अपना किसी भी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित नहीं किया। यह सम्बन्ध व्यावहारिक भी हो सकता है दार्शनिक या साहित्यिक तथा रागात्मक भी। इसी सम्बन्ध की प्रेरणा रेखाचित्र के मूल में निहित रहती है। यदि वर्ण्य विषय कोई व्यक्ति है तो उसके जीवन के साथ सीधा सम्बन्ध होने से रेखाचित्र में जीवन व्याख्या अनायास ही आ जाती है लेखक अपनी अनुभूतियों मानसिक प्रतिक्रियाओं, मान्यताओं, आदर्शों को उसी व्यक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगता है।[1]

चित्रण की कुशलता कला का आदर्श है। जीवनोन्नायक तत्त्वों का उद्‌बोधन चित्रण का आदर्श रेखाचित्र कला की सार्थकता इसी में है। शब्दचित्र चित्रण में ऐसा प्रभाव अपेक्षित है कि पाठक के भाव विचार जागृत हुए बिना न रह सकें। यह प्रभावक उद्देश्य चित्र के भीतर से ही आए बाह्यारोपित न हो—चित्रण की प्रत्यक्ष वास्तविकता में ही अभीप्सित आदर्श का बोध हो जाए। बेनीपुरी की माटी की मूरतें ग्राम्य जीवन का यथार्थ चित्र है। यथातथ्य चित्रण होते हुए भी लेखक का अभीष्ट स्केच के अंत पर ध्वनित हो उठता है और पाठक विचारोद्‌बोधन हुए बिना नहीं रहता। इन ग्रामीणों के रेखाचित्र लिखने के उद्देश्य को प्रकट करते हुए लिखते हैं—

ये मूरतें न इनमें कोई खूबसूरती है न रंगीनी उन्हें देखते ही मुँह मोड़ लें नाक सिकोड़ लें, तो अचरज की कौन सी बात? किन्तु इन कुरूप बदशक्ल मूरतों में भी एक चीज है शायद उस ओर हमारा ध्यान नहीं गया। वह है जिन्दगी। ये माटी की बनी हैं माटी पर धरी हैं इसीलिए जिन्दगी के नजदीक हैं जिन्दगी से सराबोर हैं। ये देखती हैं सुनती हैं, खुश होती हैं नाराज होती हैं शाप देती हैं आशीर्वाद देती हैं कला का काम जीवन को छिपाना नहीं। उसे उभाड़ना है। कला वह है जिसे पाकर जिन्दगी निखर उठे चमक उठे।[2]

सवेदनानुभूति बढ़ाने में महादेवी के रेखाचित्र सर्वाधिक सफल कहे जा सकते हैं। जिस उत्तम उन्मन व्यथा ने उनके संवेदन को दिशा तथा भावना को गति दी, उसी के कुशल चित्रण से वे पाठकों को भी प्रभावित करने में समर्थ हुई हैं। अवश्य ही महादेवी ने यत्र-तत्र विषयान्तर करके भी अपनी प्रतिक्रियाओं के दृष्टिकोण को व्यक्त किया है—और ऐसा करने से रेखाचित्रकार मानो निबन्ध तत्त्व का उपयोग करता है फिर भी पाठक को मूल संवेदनानुभूति पात्रों के कुशल करुण चित्रण द्वारा ही होती है। संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में आत्मतत्त्व के सहज सन्निवेश के कारण प्रसंगानुसार व्यक्त हुई लेखक की मानसिक हार्दिक प्रतिक्रियाएँ अनधिकार चेष्टा

---

[1] सिद्धान्तालोचन ले० धर्मचन्द्र संत पृ० १७८

[2] माटी की मूरतें, ले० रामवृक्ष बेनीपुरी पृ० ३

नहीं लगती।

मानवेतर रेखाचित्र भी किसी न किसी सत्प्रेरणा को लेकर लिखे जाते हैं। मानवेतर होते हुए भी व मानवहितार्थ होते हैं। प्रकाशचन्द्र गुप्त के लिखे हुए रेखाचित्र प्राय इसी प्रकार के है। इन्होंने अलमोड़ा का बाजार, शेरशाह की सड़क आदि रेखाचित्र लिखे। इन्होंने इन रेखाचित्रों के लिखने के उद्देश्य को लिखा है—

"मेरे पहले संग्रह रेखाचित्र की पहली रेडियो पर आलोचना करते हुए अज्ञेय ने कहा था कि मैंने मानवता का चित्रण न करके खंडहरों का चित्रण किया था। यह सच था लेकिन मानवता से प्रेरणा पाकर ही मैंने अपने विचार और भाव ऐतिहासिक भग्नावशेषों पर आरोपित किए थे।

बाद में मैंने अलमोड़ा का बाजार आदि स्केच लिखे जिनमें साम्राज्यवादी शोषण के प्रति विद्रोह मेरी प्रेरणा का मुख्य आधार था।"[1]

इसी प्रकार देवेन्द्र सत्यार्थी ने भी अपने उद्देश्य को प्रकट किया है—

"मधुमक्खी को फूलों पर बैठते और मधुसंचय करते देखकर मुझे यह हमेशा ध्यान आता है कि एक लेखक भी अपनी कला के लिए इसी प्रकार मधु जुटा सकता है। मेरा यही दृष्टिकोण मुझे समय समय पर अनेक व्यक्तियों के निकट ले गया जो अपनी साधना में लगे हुए थे जिन्होंने किसी प्रकार मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। मैं उनसे मिला उनकी बातें सुनीं उनका काम देखा, व्यक्तित्व की रेखाएं उभरीं। मैंने हमेशा कुछ न कुछ प्राप्त किया जहाँ भी मुझे जो चीज मिली उसका लेखा जोखा इन रेखाचित्रों में मिलेगा। कला के हस्ताक्षर मुझे सदैव प्रिय रहे हैं क्योंकि मैं कला को किसी कटघरे में बन्द चीज नहीं समझता। मेरे लिए तो कला एक जीवित वस्तु रही है और मेरे साथ साथ चलती है। मेरे साथ कदम मिलाकर चलती है।"[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि रेखाचित्र एक साहित्यिक रूप है अतएव लेखक का व्यक्तित्व, उसका जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रत्यक्ष परोक्ष वृत्ति में इस रूप में अनिवार्यतः अन्तर्निहित एवं समाविष्ट हो जाता है।

भाषा शैली—शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं। इस पर समासाधिकार के अभाव में रेखाचित्रकार की सफलता सम्भव नहीं क्योंकि सामान्य रूप से कुछ लिखने की बात यहाँ नहीं। रेखाचित्र शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएं हैं जिनका होना इसमें आवश्यक है।

सर्वप्रथम रेखाचित्र शैली में चित्रात्मकता का होना आवश्यक है। स्केच चित्रकला का अंग है। इसमें चित्रकार कुछ इनी गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु व्यक्ति

१ आधुनिक हिन्दी साहित्य एक दृष्टि सं० प्रकाशचन्द्र गुप्त
२ कला के हस्ताक्षर—देवेन्द्र सत्यार्थी

या दृश्य को अंकित कर देता है। रेखाचित्र की कला बहुत कुछ फोटोग्राफी की कला की भांति है। जिस प्रकार कमरामैन अपने कैमरे द्वारा किसी वस्तु स्थान अथवा व्यक्ति का वास्तविक चित्र ले लेता है उसी प्रकार रेखाचित्रकार भी विश्व की किसी भी वस्तु का—चेतन तथा अचेतन का चित्र अपने शब्दों द्वारा बना लेता है जिसमें उसी प्रकार की वास्तविकता रहती है। 'अफसर' रेखाचित्र में प्रेमनारायण टंडन ने अफसर की जो रेखा खींची है उसमें उनकी चित्रात्मक शैली की विद्वता प्रदर्शनीय है—

साढ़े पांच फीट के लगभग ऊँचे कद का आदमी जिसके बदन पर नये कट का बढ़िया सूट दूसरों को तो नहीं पर स्वयं उसे बहुत खिलता जान पड़ता है। पैर में जूते और गले की टाई दोनों सूट के रंग से मैच करने वाले हैं। कोट की ऊपरी जेब में फाउंटेन पेन से दबा एक रेशमी रुमाल आप रखते हैं और दूसरा सफेद पतलून की बायीं जेब में जो प्रति पांच मिनट बाद कभी हाथ कभी मुंह और कभी सिर के बाल पोंछने के लिए निकाला जाता है। बायें हाथ की कलाई पर सोने की चैन से बँधी घड़ी कोट से कुछ इस तरह बाहर निकली रहती है कि मिलने वाले उसके डिजाइन से ही बड़े रोब में आ जाते हैं और समय पूछने का उनमें प्राय साहस नहीं रहता।'[1]

लेखक की शैली ऐसी होनी चाहिए जिसका प्रभाव पाठक पर स्थायी रूप से रहे। इसलिए प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। प्रभावपूर्ण शैली होने से ही विषय में रोचकता आती है। हिन्दी साहित्य में जितने भी रेखाचित्रकार हुए हैं उन सभी ने अपनी शैली में इस गुण को प्रमुख रूप से रक्खा है। बेनीपुरी के सभी रेखाचित्रों में यह विशेषता पायी जाती है। ऐसे रेखाचित्रों को पढ़ते हुए पाठक का मन ऊबता नहीं। बलदेव सिंह के चरित्र के चित्रण में यह विशेषता प्रमुख रूप से देखने में आती है—

"टूटे हुए तारे की तरह एक दिन हमने अचानक अपने बीच में आकर उस धम्म से गिरता हुआ पाया ज्योतिर्मय प्रकाशपुंज दीप्तिपूर्ण। और उसी तारे की तरह एक क्षण प्रकाश दिखला, हमें चकाचौंध में डाल वह हमेशा के लिए चलता बना। जैसे वह आया हम आश्चर्य हुआ, जिस दिन वह गया हम स्तम्भित रह गये।[2]

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता शैली में लाघवता का होना है। लेखक को सीमित परिधि में शब्दों से रेखाओं का काम लेकर कोण को सम्पूर्ण बनाना होता है जो विशेष लाघव सन्निप्तता स्फूर्ति का काम है। बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्रों में इस विशेषता को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। श्रीराम शर्मा का समस्त व्यक्तित्व इन्होंने कुछ ही पंक्तियों में कह डाला है जोकि शैली की इसी विशेषता को अंकित करता है—

---

१ रेखाचित्र, ले० प्रेमनारायण टंडन पृ ४६

२ माटी की मूरतें, रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ० १

'कद मझोला, शरीर सुगठित, चेहरे पर मर्दानगी, आंखों में लालिमा, बातचीत में जनपदीय शब्दों का प्रयोग, चाल में दृढ़ता और स्वभाव में अक्खड़पन, श्रीराम जी के इस रूप में एक पौरुषमय अदा है, निराला आकर्षण है जो उनके व्यक्तित्व को विशेषता प्रदान करता है।'[1]

आत्मीयता का शैली में होना आवश्यक है। शैली में आत्मीयता से अभिप्राय है वर्ण्य विषय पर लेखक के व्यक्तित्व की छाप पड़ना। इस विशेषता से शैली में जान पड़ती है और इसको गद्य की अन्य विधाओं से पृथक् करती है।

इस प्रकार रेखाचित्र शैली में चित्रात्मकता, प्रभावोत्पादकता, रोचकता, लाघवता एवं आत्मीयता आदि गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों से शैली परिपक्व हो जाती है।

रेखाचित्र लिखने की कई शैलियाँ हैं जैसा कि रेखाचित्र साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है। हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने निबन्धात्मक शैली में अपने रेखाचित्र लिखे हैं। इन लेखकों में बनारसीदास चतुर्वेदी एवं रामवृक्ष बेनीपुरी अग्रणीय हैं। संस्मरणात्मक शैली में भी लिखे हुए रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। महादेवी जी के रेखाचित्र इसी शैली में लिखे गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लेखक भी हैं जिन्होंने प्रतीकात्मक शैली में लिखा है। बेनीपुरी लिखित 'गेहूँ और गुलाब' संग्रह में संगृहीत रेखाचित्र इसी शैली के हैं।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध परिमार्जित एवं भावानुकूल होगी तभी वह पाठक को प्रभावित कर सकती है। चित्र की प्रकृति के अनुरूप ग्रामीण शब्दों और मुहावरों का भी आश्रय लिया जाता है। रेखाचित्रकार की तूलिका में स्थानीय रंग भरा जाना आवश्यक है। बेनीपुरी ने 'माटी की मूरतें' पुस्तक में ग्राम्य जीवन के रेखाचित्रों में ग्रामीण शब्दों का विशेष प्रयोग किया है। कोमलकान्त पदावली लिखने वाली महादेवी ने भी रेखाचित्रों में उनका स्वाभाविक सरल आश्रय लिया है।

रेखाचित्रों की भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। इसी से रेखाचित्रों में स्वाभाविकता आती है। महादेवी की भक्तिन की भाषा इसका प्रमाण है—

हम मर जाव ना इनकर का खाद? कउन बनाई गियाई। कउन इन पर कर ई प्राणदधर ऐसी गुनी।[2]

सुन्दर चित्रों में विशेषण, साम्यमूलक अलंकार, लक्षणा-व्यंजना आदि शक्तियुक्त प्रयोगों से चित्र को सजीव किया जाता है। महादेवी की कविता तथा गद्य की उस भाषा में बहुत सुन्दर दिया गया है। सामयिक युग के पात्रों के चित्र ग्रामीण या दलितों के जीवन से लिए गए हैं यथा—

---

1 रेखाचित्र सं० बनारसीदास चतुर्वेदी पृ० १८३
2 स्मृति की रेखाएँ—महादेवी पृ० ७२

'मेरी किसी पुस्तक प्रकाशित होने पर उसके मुख पर प्रसन्नता की छाया वसे ही उद्भासित हो उठती है जैसे स्विच दबाने से बल्ब मे छिपा आलोक।"[1]

रेखाचित्र म यथाथ के लिए ध्वन्यात्मक शब्दो से ध्वनि चित्र रगो का उल्लेख कर वण चित्र अकित किए जाते हैं। मिलत जुलत शब्दो से प्रभाववद्धन किया जाता है। एक ही वाक्य को एक छोटे-से चित्र मे अनेक बार दुहरा कर स्थिति के प्रभाव को मानस खड पर मुद्रित करने का सकल्प होता है। रेखाचित्र मे विराम चिह्न मात्र स्पष्टीकरण के लिए नही आते, वे भी बोलने लगते है। हास्य व्यग्य शली को मनोरजक तथा तीखा बनाते हैं।

रेखाचित्र म शब्द विन्यास तथा वाक्य विन्यास विशिष्टता होती है। एक शब्द का एक वाक्य तथा अपने म चित्र हो सकता है। एक पक्ति का ही प्रघटन हो सकता है। पूण वाक्य के स्थान पर वाक्य खड स ही काम चला लिया जाता है और 'है' या आदि सहकारी क्रियाओ की बजा मुदाखलत भी बरदाश्त नहीं की जाती। इन्ही साधना से तो शब्द रेखाएँ बनती हैं। बनीपुरी के छोटे छोटे वाक्य सहकारी क्रियाओ के बिना काय करते हैं—

"सिर के मुड हुए छोटे छोटे बालो के रग से चेहरे का रग प्रतियोगिता करता हुआ। बालों न चारो ओर स जिस पर मुदाखलत बजा कर रखी है वह छोटा-सा ललाट चिपटा-सा। ललाट की कालिमा म पतली भौंहों की रेखा साई सोई सी। छोटी-छोटी आँखें—जिनका पीला रग राजेन्द्र बाबू की आखो की याद दिलाता है।'[2]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्रकार की भाषा विषय एव भावानुकूल होनी चाहिए। शब्द चयन भी विषयानुसार होना चाहिए।

विकास

रेखाचित्र साहित्य गद्य की नवीनतम विधा है। गद्य की इस विधा का विकास अधिकतर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ द्वारा ही हुआ है। सन् १९२४ स पहल हम रखाचित्र प्राप्त नहीं होते इसलिए इसके पश्चात् ही इनका आविर्भाव हुआ है। विशाल भारत' माधुरी, 'हस एव 'सरस्वती जसी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओ न इसके विकास म विशेष रूप से सहयोग दिया है। इस प्रकार प्रकाशित पत्र पत्रिकाओ एव पुस्तको के आधार पर मैंने यह विकास लिखा है।

पद्मसिंह शर्मा

हिन्दी साहित्य म सवप्रथम रेखाचित्र लिखने का श्रेय आचाय पद्मसिंह शर्मा

---

१ गेहूँ और गुलाब का नयुनिया' ले० बेनीपुरी, पृ० २८

२ स्मृति की रेखाएँ—महादेवी, पृ० १५

की है। इनके रेखाचित्र 'पद्मपराग' में संग्रहीत हैं जिसका प्रकाशन काल सन् १९२८ है। इस पुस्तक में पद्मसिंह शर्मा द्वारा लिखे हुए नौ रेखाचित्र हैं पर सबसे बढ़िया महाकवि अकबर विषयक रेखाचित्र है। यह रेखाचित्र महाकवि अकबर विषयक चरित्र चित्रण का सर्वोत्तम दृष्टान्त माना जा सकता है। एक स्थान पर यह उनकी कदामत पसन्दी (अपनी प्राचीन संस्कृति में आस्था) के विषय में लिखते हैं—

> मुझे उनकी कदामतपसन्दी बहुत पसन्द थी। इस पर अक्सर बातें होती थीं और बहुत मजे की बातें होती थीं। अब याद आती है तो दिल थामकर रह जाता हूँ। एक बार की मुलाकात में मुझसे पूछा—'तुमने अपने लड़के को क्या तालीम दिलाई है?' मैंने कहा—'संस्कृत पढ़ाई है।' सुनकर बहुत ही खुश हुए और उठकर मेरी पीठ ठोकी।'[1]

इनके रेखाचित्रों में यद्यपि कला का वह रूप नहीं दिखाई पड़ता जो आज के रेखाचित्रों में मिलता है किन्तु यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उन्होंने जो शिलान्यास किया था आज के कलाकारों ने उसी पर रेखाचित्र का भव्य भवन खड़ा करने का प्रयास किया है।

इनके पश्चात् सन् १९२८ में हमें कुछ ऐसे रेखाचित्र प्राप्त होते हैं जिनमें नगरों का चित्रण है। संतराम बी० ए० द्वारा लिखा हुआ[2] लाहौर नामक रेखाचित्र एवं श्री रामाज्ञा द्विवेदी समीर के[3] हिन्दू विश्वविद्यालय एवं[4] 'कानपुर' रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। संतराम बी० ए० ने लाहौर रेखाचित्र में लाहौर में देखने योग्य प्रसिद्ध स्थानों का वर्णन अत्यन्त रोचकपूर्ण ढंग से किया है। इसके पश्चात् श्री रामाज्ञा द्विवेदीजी ने कानपुर और हिन्दू विश्वविद्यालय का जीता जागता चित्र प्रस्तुत किया है। इनके पढ़ने से लेखक की परिपक्व शैली का आभास पाठक को हो जाता है।

सन् १९२९ में शीतल सहाय द्वारा लिखित[5] द्वारिकापुरी रेखाचित्र प्राप्त होता है जिसमें लेखक ने द्वारिकापुरी की महत्ता को प्रकट करते हुए दर्शनीय स्थानों का वर्णन किया है।

सन् १९३० में ईश्वरचन्द्र शर्मा द्वारा लिखा हुआ[6] काश्मीर में एक मास' एवं मोहनलाल महतो वियोगी के' धुंधले चित्र' नाम से रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। चार बच्चों के महाप्रयाण पर उन्होंने जो कुछ लिखा था वही हृदयवेधकता का वर्णन इसमें है। कहीं कहीं भावुकता में इतने लीन हो गए हैं—

---

१ पद्मपराग प्रथम संस्करण, ले० पद्मसिंह शर्मा, पृ० २७८
२ माधुरी
३ माधुरी
४ माधुरी
५ चाँद
६ चाँद

"मुझे इस मायामय दुनिया मे आने की क्या आवश्यकता थी यह मैं आज तक नही समझ सका हू। केवल ताप, केवल दाह, केवल जलन, केवल टीस। उफ! कितने गिनाऊँ देव। हाँ इस दुनिया ने मुझे जी भर कर कोसा, पूरी शक्ति लगाकर सताया। तुम्हे भी मेरे कारण कष्ट उठाना पडा।'[1]

इस प्रकार ११२ पृष्ठा की पुस्तक म लेखक के हृदयपटल पर अकित वदना ही दृष्टिगोचर होती है।

सन् १९३१ म श्री प्रेमनारायण अग्रवाल द्वारा लिखित[2] मयिलीशरण गुप्त' एव श्री रामनाथ सुमन द्वारा[3] 'सरोजनी नामड्ड रेखाचित्र प्राप्त होत हैं। इन रेखा-चित्रो मे लेखको ने इनके समस्त जीवन की एक झाकी-सी प्रस्तुत की है।

श्रीराम शर्मा

आचार्य पद्मसिह शर्मा के बाद हिन्दी साहित्य के प्रमुख रेखाचित्रकारो म श्रीराम शमा का नाम आता है। इन्होने उस समय रेखाचित्र विधा को अपनाने की चेष्टा की थी जबकि हिदी साहित्य के अधिकाश लेखक इस विधा के नाम से भी परिचित न थे। सन् १९३४ मे इनके लिखे हुए[4] एक सडक का दृश्य एव थडक्लास[5] नामक रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। वस इनके रेखाचित्र बोलती प्रतिमा नाम से भी प्रकाशित हुए हैं। इनकी बोलती प्रतिमा की प्रतिमाएँ देहाती है। सीधे-सादे और आडम्बर से शून्य जमीदार और साहूकार के अत्याचारो स पीडित जो जमीन खोदते हैं और फसल काटते हैं धान उपजाकर भूखा मरते हैं दूसरो को पानी पिलाने वाले वे प्यास हैं, दूसरो को जीवित रखने वाले व विना दवा पानी के यू ही मर जात हैं।

वोलती प्रतिमा का चन्दा चमार और तोता विक्रमसिह सकटप्रसाद और रत्ना की अम्मा पुस्तक स अधिक हमारे अडोस-पडोस मे बसने वाले प्राणी हैं। पुस्तक हमे उन्हें अधिक निकट से देखने की एक दृष्टि प्रदान करती है। उन पर होने वाले अत्याचार से लेखक हम अवगत कराता है और उनके उद्धरण की प्रेरणा देता है।

मले-कुचल कपडों वाला और हजारो मवेशियो को जीवनदान देने वाला हकीम पीताम्बर पाठको पर एक अमिट छाप छोड जाता है। कहा आज के बिना फीस लिए एक कदम न चलने वाले नान के भडार डाक्टर जो स्वय आश्वस्त नही हैं कि व रोगी को चगा ही कर देंगे और कहा काली रातो और बरसते पानी म यहा और वहाँ दौडता भागता मवशियो की चिकित्सा करता हकीम पीताम्बर। हरनामदास' हमारे सामन अलिफ लला का एक अध्याय ही खोल देता है।

इस प्रकार हम देखत है कि श्रीराम शर्मा हिन्दी म वास्तविकतावादी लेखक हैं।

---

१ घुघले चित्र—मोहनलाल महतो वियोगी, पृ० ३
२ माधुरी
३ माधुरी
४ विशाल भारत
५ विशाल भारत

अपने अड़ोस पड़ोस में जो कुछ देखते हैं उसको ज्यों का त्यों कागज पर उतारकर रख देते हैं। इनकी एक और पुस्तक 'वे जीते कैसे हैं?' १९५७ में प्रकाशित हुई है। इसमें भी कुछ रेखाचित्रों का संग्रह है। इस पुस्तक में संग्रहीत सभी रेखाचित्र भावपूर्ण हैं।

सन् १९३५ में डाक्टर बाबूराम सक्सेना द्वारा लिखित[1] 'वर्धा में तीन दिन' नामक रेखाचित्र प्राप्त होता है जिसमें लेखक ने वर्धा के मुख्य मुख्य स्थानों का वर्णन किया है। सत्याग्रह कन्याश्रम एवं बजाज का बंगला का विशेष वर्णन है।

सन् १९३८ में 'हंस' के रेखाचित्र अंक ने रेखाचित्र साहित्य के विकास में विशेष सहयोग दिया है। इस अंक में हमें अनेक हिन्दी के अच्छे लेखकों द्वारा लिखे हुए रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। रामनाथ सुमन द्वारा लिखे हुए दो रेखाचित्र 'विष्णु पराड़कर हिन्दी पत्रकारिता के प्रकाशस्तम्भ' एवं 'सम्पूर्णानंद एक बहुमुख व्यक्तित्व', 'बनारसीदास चतुर्वेदी' एवं श्रीराम शर्मा द्वारा लिखा हुआ 'पालीवाल जी', जैनेन्द्र द्वारा लिखा हुआ 'मैथिलीशरण गुप्त' एवं प्रकाशचन्द्र गुप्त द्वारा लिखा हुआ 'बच्चन' नामक रेखाचित्र प्रकाशित हुए। इन सभी रेखाचित्रों में लेखकों की कलाकुशलता का पता चलता है। प्रत्येक लेखक ने बड़ी मर्मज्ञता से व्यक्तित्व को खींचा है। प्रत्येक रेखाचित्र पर लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव है। गुप्तजी तो इस कला में है ही सिद्धहस्त। 'बच्चन' का वस्तु ही सुन्दर परिचय पाठकों को कराते हैं जिससे उनकी शैली की परिपक्वता दृष्टिगोचर होती है—

बच्चन के रूखे बिखरे बाल कुम्हलाया किसी घोर तप साधन में सुखाया शरीर मस्ती भरा मन भाव भरी आँखें कुछ चीनियों जैसे सूझ से पतले उनके युग का पूरा भाव उनकी सम्पूर्ण आकृति मानो मधुशाला का साकार रूप हो।[2]

सन् १९३९ में लोचनप्रसाद पाण्डेय द्वारा लिखित[3] 'श्रीपुर के दर्शन' एवं भुवनेश्वर प्रसाद द्वारा लिखित[4] दो स्केच प्रकाशित हुए। भुवनेश्वर प्रसाद के रेखाचित्रों में एक डाक्टर और विनाश का चित्रण है।

प्रकाशचन्द्र गुप्त

हिन्दी के प्रसिद्ध रेखाचित्रकारों में प्रकाशचन्द्र गुप्त का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी रेखाचित्र पुस्तक सन् १९४० में एवं 'पुराना स्मृतियाँ' सन् १९४७ में प्रकाशित हुई। 'नगर पट' 'इलाहाबाद', 'देहली' और 'आगरा' में पुराने शहरों के रेखाचित्र बनाए। 'अलाम में एक्सा एक्जाडा नगर स्केच' नगर पट प्रकाशित हुआ था।

---

१ सुधा
२ हंस पृ० ५८२
३ विशाल भारत
४ हंस

इनका सबसे महत्वपूर्ण प्रयास शेरशाह की सड़क था जिसमें इन्होंने भारतीय इतिहास पर एक विहगम दृष्टि डालने की कोशिश की। फिर इन्होंने वनानिक दृष्टि प्राप्त कर औद्योगिक क्रान्ति के विकास को समझा और 'राजा की मण्डी' लटरबक्स के प्रति', पट्रोलपम्प' आदि स्कच लिखे। रेखाचित्र' सग्रह में अधिकतर खडहरो का ही चित्रण है। मानवता से प्रेरणा पाकर ही इन्होंने अपने विचार और भाव एतिहासिक भग्नावशेषों पर आरोपित किए थे। बाद में इन्होंने अल्मोड़ा का बाजार रानीखेत की रात, 'चीड़ का वन' आदि रेखाचित्र लिखे जिनमें प्रकृति चित्रण का प्रयास है।

मानवता का रेखाचित्रों में व्यक्त करने का सबसे पहला प्रयास 'पुरानी स्मृतियाँ गोपकमाला है। इन स्कचो में उन व्यक्तियों के चित्र बनाए हैं जिनके बीच इनका शैशव बीता था।

सन् १९४० में ही सद्गुरुशरण अवस्थी का 'पल्हड एक स्केच'[1] प्राप्त होता है। पल्हड' जिसे कि असाधारण परिस्थिति के कारण इस नाम पुकारते थे, लेखक ने उसका शारीरिक वर्णन सुन्दर किया है—

> पल्हडका न रीर न छोटा था और न लम्बा। रग गहुआ था अँधियारी को पकडे हुए। पतली पिंडुरी और दुबली जघा वाले थे। ऊपर का भाग अधिक मासल था। एक विचित्र विषमता सवत्र दिखलाई देती थी। कहीं कहीं मासपेशियाँ बिल्कुल लटक आई थी। कई दिशाओं की ओर शरीर कुछ मसका हुआ-सा दिखाई देता था।[2]

सन् १९४३ में श्री अल्फ्रेड नावल मिचल आई० सी० एस०'[3] रेखाचित्र प० सुन्दरलाल त्रिपाठी का प्राप्त होता है। इस रेखाचित्र में त्रिपाठीजी ने इनके समस्त व्यक्तित्व का चित्र जीती-जागती भाषा में खीचा है। शब्द चयन में लेखक की कला कुशलता दृष्टिगोचर होती है। शैली भी विषयानुकूल है।

रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रतीकात्मक एव रूपकात्मक रेखाचित्र लिखने वालों में बेनीपुरी का नाम अग्रगण्य है। सन् १९४८ में 'माटी की मूरतें, लालतारा, गहूँ और गुलाब' नामक पुस्तकें प्राप्त होती हैं। ग्रामीण जीवन का समस्त चित्रण इनकी पुस्तक माटी की मूरतें' में प्राप्त होता है। इस पुस्तक का प्रकाशन काल सन् १९४८ है। इसमें सबसे पहले बुधिया से हमारा परिचय होता है जिसकी तीन झाँकियाँ हमें मिलती हैं। नन्हीं-सी छोकरी बुधिया, सलोनी-सी, रूपगर्विता युवती बुधिया और अत में अधेड

---

१ माधुरी।
२ माधुरी पृ० १०५
३ माधुरी, सितम्बर

बुधिया जो कई बच्चों की माँ बन चुकी है, इसी क्रिया म जिसकी दर्द बरबादी हो चुकी है।

बलदेव सिंह सामतशाही युग के प्रवचक हैं दप की मात्रा उनम कम नहीं मगर अपनी आन पर व मिटने को सदा तयार रहते हैं बात क धनी। मगर भी एक व्यक्ति नहीं टाइप है। सरजू भैया का परिचय देते हुए स्वय उनके बारे म कुछ कहना जरूरी नहीं इतना कहना काफी है कि दुनिया बहुत खराब है। भौजी म गाँव की गृहस्थी का चित्र है।

'गेहूँ और गुलाब' पुस्तक बेनीपुरीजी की श्रेष्ठ रेखाचित्र सम्बन्धी पुस्तक है। इसम बेनीपुरीजी की निबन्धावली भावनाप्रधान जान पडती है। 'छब्बीस साल बाद' और बचपन शीर्षक रेखाचित्र डायरी के पन्ने से जान पडते हैं। पुरुष और परमेश्वर' शीर्षक रेखाचित्र म लेखक ने एक अति महत्वपूर्ण दार्शनिक समस्या पर कलम उठाई है। नीव की इट और 'निहारिन' नि सदेह बडे ही सफल और मन को छूने वाले रेखाचित्र हैं।

सब चित्र बहुत स्वाभाविक हैं बनावटी नहीं। इन पुस्तकों म बेनीपुरीजी की शैली म भी अधिक गाम्भीर्य मिलता है। भावनाओं को उभाडने के लिए भारी भरकम, अत्यधिक चटकीली मटकीली भडकीली शब्दावली और ढेरों उद्गार चिह्नों का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम हुआ है जिसके फलस्वरूप पुस्तकों म हल्कापन नहीं आने पाया।

सन् १९४९ म दो धारा' पुस्तक कौशल्या अश्क एव उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लिखी हुई प्राप्त होती है। इसमे दोनों द्वारा लिखे हुए रेखाचित्र आरम्भ म ही जिनका विषय अश्कजी एव कौशल्या अश्क हैं प्रकाशित हुए। इन दोनों रेखाचित्रों मे एक दूसरे के व्यक्तित्व का चित्रण है।

देवेन्द्र सत्यार्थी

रेखाचित्रकारों म देवेन्द्र सत्यार्थी का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने बडे ही सजीव रेखाचित्र लिखे हैं। इनके रेखाचित्रों के सग्रह एक युग एक प्रतीक १९५४, 'रेखाएँ बोल उठी १९४९ एव कला के हस्ताक्षर' सन् १९५४ नाम से प्राप्त होते हैं। कला के हस्ताक्षर पुस्तक मे बारह रेखाचित्र है। प्रेमचन्द एक चित्र' अजय से मिलिए होमवती रेखाचित्रों को उच्चकोटि की श्रेणी म रक्खा जा सकता है। *एक युग एक प्रतीक म कई निबन्धात्मक रेखाचित्र हैं। एक से अधिक रेखाचित्रों* मे बापू की चर्चा की गई है। रेखाएँ बोल उठी म 'जन्मभूमि नामक रेखाचित्र उच्च कोटि का है उसकी टीस अब भी हृदय को कुरेद देती है। इनके रेखाचित्रों के विषय मे स्पष्टवादिता स्वाभाविकता, चित्रात्मकता एव आत्मीयता आदि विशेषताएँ दृष्टि गोचर होती हैं। भाव और विषयानुकूल शैली है। आरम्भ ही अत्यन्त रोचकपूर्ण ढग

से करते हैं। प्रेमचन्द एक चित्र का आरम्भ कितना सुंदर एव रोचकपूर्ण ढग से किया है—

'मछें घनी और बडी-बडी सिर पर गाधी टोपी-सी दोना तरफ और गदन पर निकले हूए बेतरतीब स बाल आखो म अनुभव की चमक—इन तीना चीजों का विशेष प्रभाव पडा, जब अक्टूबर १९३१ म लखनऊ म प्रेमचन्द से भेंट हुई।[1]

१९५० सन् म वाहू कैलाशजी[2] रेखाचित्र राजेन्द्रलाल हाडा द्वारा लिखा हुआ प्राप्त होता है। इस रेखाचित्र म राजेन्द्रलाल हाडा ने अपने मित्र कैलाश की एक रेखा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की है।

महादेवी वर्मा

ससमरणात्मक रेखाचित्र लिखने वालों म महादेवीजी का नाम अग्रगण्य है। इनके समस्त रेखाचित्रा का सग्रह स्मृति की रेखाएँ (१९४३ ई०) अतीत के चलचित्र (१९४१ ई०) एव शृखला की कडिया (१९५० ई०) नाम स प्रकाशित है। स्मृति की रेखाएँ पुस्तक के नायक ख्यातनामा साहित्यिक और कलाकार, राजनीतिज्ञ और समाजसेवी नही हैं। उनके नायक हमारे गवस्फीत समाज से एक प्रकार स निर्वासित निम्न वग के लोग किसान और मजूर हैं। वे सामान्य जन हैं। वे ही वास्तविक भारतीय जनता हैं। उनके चरित्र उदात्त हैं। उनम मनुष्यता, परदुखकातरता सौहाद, करुणा स्नेह और परस्पर सहयोग की भावना होती है। पुस्तक म सात रेखाचित्र हैं इन साता म दो सबसे प्रभावशाली हैं—बिबिया धाबिन और चीनी कपडा बेचन वाला। गुगिया और ठाकुरी बाबा के चरित्र भी बहुत मार्मिक हैं।

'अतीत के चलचित्र म भी मेहनतकश और मध्यमवग के लोगा के चित्र हैं। पहला चित्र रामा का है। नौकर रामा, स्नेहपूर्ण, ममत्वशील बच्चा के लिए न जाने वह कितने रूप धरता है। दूसरा चित्र उन्नीसवर्षीया भाभी का है। विधवा है पर वधव्य का भार ढोन के लिए अभी उसके कधे बहुत कमजोर हैं। हिन्दू सामाजिक रूढियो और कुसस्कारा के पूर्ण प्रतिफलन का एक चित्र। वह एक फूल है जिसे कुम्हलाने पर मजबूर किया जा रहा है। इस प्रकार महादेवी के सभी पात्र अधिक यथाथ हैं। इसके अलावा 'अतीत के चलचित्र म एक ऐसी ताजगी है जो पाठक म भी ताजगी भर देती है भावा का सचार करती है और जीवन के साथ उसके सम्बन्ध को गहरा बनाती है। 'महादेवी की गद्य शैली बहुत चुभती हुई है। उसम पच्चीकारी तो नही है लेकिन एक धीर प्रवाह है जो भेरा की गम्भीरता को बढाता है मगर उन बोझिल नही बनाता। जब व अपने पात्रा की रूपरेखा या उनके आस-पास के वातावरण का चित्र खींचने लगती हैं तब उनकी शैली का रग खुलता है। तब उसमे एक तरह की कठोरता भी

---

१ कला के हस्ताक्षर स० देवेन्द्र सत्यार्थी, पृ० ९

२ आजकल, अक्टूबर

आ जाती है कना अवसर उनके गद्य के दामन में कविता की गाँठ सी लगी जान पड़ता है।[1]

सन् १९५१ में रामकुमार द्वारा लिखा हुआ एक परिवार[2] एवं गंगाप्रसाद पांडेय द्वारा लिखित मैथिलीशरणगुप्त[3] रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। रामकुमार ने लिंगवी में रहने वाले एक परिवार का चित्र खींचा है। परिवार में रहने वाले कप्तान राथनु याकब आदि का सुन्दर वर्णन है। उधर पांडेयजी ने मैथिलीशरण गुप्तजी के अंतरंग और बाह्य व्यक्तित्व को अपने रेखाचित्र में स्पष्ट किया है। एक स्थान पर वह लिखते हैं—

किसी की उपेक्षा अवज्ञा करने में, कड़ी बात कहने में, डींग हाँकने में, किसी की निंदा करने में गुप्तजी एकदम सबसे पीछे हैं। यह काम उनके बूते का नहीं इसी कारण वे किसी प्रकार का पदवीधर बनने में बहुत घबड़ाते हैं। यह महादेवीजी की ही महिमा है जिसने इन्हें साहित्यकार संसद का सभापति बना रक्खा है।'[4]

सन् १९५८ में रूपनाथ द्वारा लिखे हुए दो रेखाचित्र 'मंदिर का माली' एवं रोटी और धरम प्राप्त होते हैं।

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

अयोध्याप्रसाद गोयलीय द्वारा लिखे हुए रेखाचित्रों का संग्रह 'गहरे पानी पैठ' नामक पुस्तक में है। गोयलीय ने अपने रेखाचित्रों में मानवता के अनेक सजीव चित्र अंकित किए हैं। देहली के एक धनी सराफ के निर्धन सम्बन्धी जिन्होंने अपनी इज्जत बचाने के लिए गाँठ की गिन्नी सर्राफ की गिन्नी के ढेर में मिला दी थी, साधु स्वभाव निरक्षर बिहारी लाल जो जीवन के विष को इसलिए हँस हँस कर पीता रहा है कि दूसरों को सदा आदर और प्रेम का अमृत पिला सके, दो भाई जो एक दूसरे की रक्षा के लिए फाँसी के तख्ते को चूमने को तैयार हो गए सुन्दरनाम की वह बुढ़िया हलाल खोरा जिसने लेखक के जेल से छूटने पर दामन फैला कर दुआ दी और जिसने गदगद होकर कहा—मुबारक आज का दिन जो अपने जुम्मा के हाथ से मुझे यह नेहता नसीब हुआ और वह मुंशी ऊधमसिंह, जिन्होंने २००६० की असह्य रकम का चुपचाप घाटा इसलिए उठाया कि किसी निरपराध मनुष्य पर उनके कारण कहीं कुछ अत्याचार न हो जाय' यह सब ऐसे चित्र हैं जिन्हें पढ़कर दिन भर जाता है और मानवता का इन मूक गरीब स्वाभिमानी प्रतिनिधियों के प्रति मस्तक आदर से झुक

---

१ नया समीक्षा ले० अमृतराय, पृ० १०८
२ आजकल, अप्रैल
३ आजकल, अगस्त
४ वही पृ० २१
५ हंस

जाता है। ये सभी रेखाचित्र इनकी कला-कुशलता के प्रतीक हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन काल अप्रल १९५१ है।

सत्यवती मल्लिक द्वारा लिखे हुए रेखाचित्रों का सग्रह भी 'अमिट रेखाए' नाम से १९५१ सन् म ही प्रकाशित हुआ। सत्यवती न अपन इन रेखाचित्रो म या तो चरित्रो के प्रति अतिरजित दृष्टि अपना ली है या उनम इतनी भावुकता भर दी है कि वह नाटकीय हो गए हैं रगविहीन वस्तुपरकता उतनी सफलता नही प्राप्त कर सकी है।[1]

सन् १९५२ म 'राजपथ'[2] एव 'मारामाई'[3] स्केच चद्रप्रकाश वर्मा एव गयाराय द्वारा लिखित प्राप्त होत हैं। चन्द्रप्रकाश वर्मा ने राजपथ का सुदर रेखाचित्र लिखा है। उसका एक उद्धरण उल्लेखनीय है —

'और तुम पुजारिणी मदिर जा रही हो। तुम्हें नात है कसा अज्ञात आकषण तुमन इस राजपथ को द दिया है। तुम्हारा निमाल्य तुम्हारे हृदय सौंदय की प्रतिच्छवि है। तुम्हारी गति मे विश्वास है। तुम्हारे सकेतो म सध्या की सी सौम्यता है। तुम्हारी सघन श्याम केश राशि से सद्य स्नान के उज्जवल जल बिदु चू रह हैं और तुम्हारे अगो की आद्र ता म अपूव समपण की सरसता झलक उठी है।'[4]

इसी प्रकार गयाराय ने मारामाई का जिसका नाम खमारी सिंह है चित्रात्मक शली मे सुदर चित्र खीचा है। इसी सन् १९५२ म ही श्री वृदावनलाल वर्मा द्वारा लिखा हुआ एक रेखाचित्र नया वष एक भावचित्र[5] नाम से प्रकाशित हुआ। यह रेखाचित्र वमाजी की कला-कुशलता का प्रतीक है।

बनारसीदास चतुर्वेदी

बनारसीदास चतुर्वेदी की गणना हिंदी के प्रसिद्ध रेखाचित्रकारा म की जाती है। इनके रेखाचित्रा का सग्रह 'रेखाचित्र नाम से १९५२ सन् म प्रकाशित हुआ। इसम ४० रेखाचित्रो का सग्रह है। बनारसीदासजी ने जीवन को निकट स देखा है है इसलिए उनके रेखाचित्र सजीव हैं, वे चलत फिरत दिखाई देत हैं और बालन से सुनाइ पडत है। रेखचित्रो क क्षे म इनका महत्वपूण काय है। इनके रेखाचित्रा का आरम्भ बहुत ही रोचक एव मनोरजक होता है। श्रीराम नामा का परिचय पाठक से करवाते हैं

---

१ हम
२ विशाल भारत अक्टूबर,
३ विशाल भारत, जून
४ विशाल भारत, अक्टूबर, पृ० २२०
५ सम्मेलन पत्रिका

'आदर्श भाषा परिचय आने तक भाई और हिन्दी के मुकाबले में मराठी दूँ। इतना भार जाता है? अथवा सम्मान्य स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी ने एक टोपधारी और चन्दन लिए हुए सज्जन की ओर इशारा करते हुए पूछा। उस वक्त हमारी बात शहर के किनारे के बाग में चल रही थी। गणेशजी ने उनका नाम बतलाया श्यामसुन्दर शर्मा—मैंने समझा कि ये सुरक्षित प्रवृत्ति के कोई हिन्दुस्तानी साहब हैं और इनकी तथा हमारी विचारधारा में एक सी नहीं होगी।'[1]

इन्होंने उन्हीं व्यक्तियों के विषय में रेखाचित्र लिखे हैं जो कि श्रद्धा और प्रेम के पात्र हैं। इन्होंने लिखा है—

'सच बात तो यह है कि हमने अपने इन रेखाचित्रों में अपने प्रेम-श्रद्धा का ही चित्रण किया है। क्योंकि एकांगी मनुष्य अपनी आत्मा के विकृत रूप की ही प्रशंसा करता है।

नाप तौलकर थोड़ा सा पाव रत्ती प्रशंसा करने का हम अभ्यास नहीं और दिल खोलकर दाद देने में विश्वास करते हैं।'[2]

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन

वात्स्यायन के यात्रा सम्बन्धी रेखाचित्रों का संग्रह 'अरे यायावर रहेगा याद' पुस्तक में जुलाई १९५३ में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक के सात भाग हैं 'परशुराम से तूरखम', 'किरणों की खोज में', 'देवताओं के अंचल में', 'मौत की घाटी में', 'एलुरा', 'मामुली एवं 'बहता पानी निर्मल'। खैबर की सड़क का वर्णन एक स्थान पर करते हैं—

खैबर की सड़क कोटों और दुर्गों से पटी हुई है। जमरूद के बाद फोर्ट माड, शगई और अली मस्जिद के किले मुख्य हैं फिर जिनतारा पार करके लंडी पहुँचते हैं जो बड़ी छावनी है। शगई का किला कच्ची और पक्की सड़क के बीच पड़ता है।[3]

इस प्रकार अनेक प्रमुख स्थानों का वर्णन सुन्दर, सजीव एवं साधारण भाषा में लेखक ने किया है। यात्रा सम्बन्धी ये रेखाचित्र पाठक को अवश्य ही प्रभावित करते हैं।

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखने वालों में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का नाम भी उल्लेखनीय है। इनके रेखाचित्रों का संग्रह 'जिन्दगी मुसकराई', 'भूले हुए चेहरे'

---

१ रेखाचित्र ले० बनारसीदास चतुर्वेदी, पृ० १८६

२ वही, पृ० १४

३ अरे यायावर रहेगा याद ले० सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, पृ० ७१

नामक सग्रह मे मगृहीत है। इनका प्रकाशन काल १९५४ सन् है। इन्होंने अपने रेखाचित्रा के विषय म लिखा है—

"इन रचनाम्रा के सम्बन्ध म क्या कहूँ सिवाय इसके कि यह मेरा सचित रक्त है जो आज पाठका को भेंट कर रहा हूँ। अपने भक्कड जीवन म इसके सिवाय मैंन और कुछ भी तो सचय नही किया।'[1]

इनके रेखाचित्रो म कलागत आत्मपरकता होते हुए भी एक एसी तटस्थता बनी रहती है कि उनम चित्रणीय सस्मरणीय ही प्रमुख हुआ है। स्वय लेखक न उन लोगा के माध्यम स अपने व्यक्तित्व को स्फीत करना चाहा है। उनकी शैली की आत्मीयता एव सहजता पाठक के लिए प्रीतिकर एव हृदयग्राहिणी होती है। 'मैं और मेरा घर म इनकी शली की सहजता द्रष्टव्य है—

मैं जब लिखत लिखत खिडकी स बाहर दाहिने हाथ की तरफ झाकता हूँ तो एक ऊँचा मकान दिखाई देता है। कई मजिलें है जिनम छोटे बडे कमरे हैं बरामदे हैं स्नानगृह हैं शौचालय हैं। इन कमरा म पुरुष हैं, स्त्रियां हैं, बालक हैं, हमशा यहा रौनक रहती है। यह एक होटल है।'[2]

सभी रेखाचित्रा मे इनकी शैली की सहजता पाई जाती है।

सन् १९५६ मे नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी द्वारा लिखा हुआ निराला एक महा-मानव रेखाचित्र प्राप्त होता है। जिसम त्रिपाठीजी न निराला के व्यक्तित्व की एक झाकी-सी चित्रित की है। सन् १९५६ म ही शरम द्वारा लिखा हुआ एक रेखाचित्र 'सरस्वती तेरी छाया म प्राप्त हाता है।

१९५७ सन् म सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने मास्टर श्यामलाल गुप्ता'[3] रेखाचित्र लिखा। इसम सक्सना न मास्टरजी के जीवन की कुछ प्रमुख प्रमुख विशेषताम्रो को रेखाकित किया है। रूपदेव मालवीय[4] का रामकच्छा' रखाचित्र भी इसी सन् मे प्रकाशित हुआ।

१९५८ सन् मे हमे अमृतराय द्वारा लिखे हुए दो स्केच प्राप्त होत हैं। इनके उन रखाचित्रा का नाम[5] 'चासलर की आमद' एव 'गिल्ली मिट्टी है।[6]

प्रेमनारायण टडन

प्रेमनारायण टडन के रेखाचित्रो का सग्रह 'रखाचित्र' नाम से २३ मई, १९५९ सन् म प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक म सात रेखाचित्र हैं। इनम सवप्रथम बूकी' का

---

१ जिन्दगी मुसकराई', ले० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर पृ० १६
२ वही, पृ० २२
३ कल्पना
४ आजकल
५ आजकल, जून अक,
६ आजकल, अक्तूबर।

रेखाचित्र है। दूसरी उनकी प्रथा म काम करने वाला व्यक्ति है जिसका पहला नाम 'भगवती' है। इसके चरित्र म कुछ ऐसी खूबियाँ थी कि लेखक उनसे बहुत प्रभावित हुआ। इसम लेखक की उत्कृष्ट भाषा एव शैली का निरूपण होता है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग करने मे यह सिद्धहस्त है। राजा रेखाचित्र म रोगी का एक हृदय-द्रावक चित्र खींचा है।

इसी प्रकार अन्य रेखाचित्रो म भी इन्ही कला-कुशलता का हम आभास होता है। स्वाभाविकता यथार्थता मार्मिकता एव चित्रात्मकता आदि गुण इनकी भाषा शैली म पाए जाते हैं जो कि एक उत्कृष्ट रेखाचित्रकार म होने चाहिए।

सन् १६५६ म ही भगवतशरण उपाध्याय द्वारा लिखित 'ठूँठा आम' पुस्तक प्रकाशित हुई जिसम स्केच एव रिपोर्ताजो का सग्रह है। इसके पश्चात् हम मार्कण्डेय वाजपेयी के रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। इनके रेखाचित्रो का सग्रह 'रेखाचित्र' नाम से ही यूनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इन रेखाचित्रो के विषय नित्य प्रति के साधारण जीवन के विषयो से सम्बन्धित हैं। मदन का बाप, 'वैद्यजी के चूहे' 'जबदस्त मक्खियाँ' पजाब मेल जैसे रेखाचित्र हैं। विषयानुकूल ही लेखक ने भाषा का प्रयोग किया है।

'अर्थपिशाच' नाम से नील के स्केच और कहानी सग्रह प्राप्त होता है। इसम लेखक[1] की श्रीसादेवी धन्यामा की अनुभूति है कला के पारखी इस युग की यह पर तिल तिल मिटने वाले मानव के रक्त और अस्थिपंजरो के शिलान्यास पर खडी बलिदानो की यह दीवार आगे आने वाली पीढियो को चीत्कार कर सचेत तो करती रहेगी। इसम टेलीफोन, मरी पत्तियाँ, मोटे दयाल, आम की गुठलियाँ आदि रेखाचित्र हैं। इसके प्रकाशन काल के विषय म कुछ ज्ञात नही है लेकिन ज्ञान साहित्य, इलाहाबाद से इसका प्रकाशन हुआ है। एक पुस्तक म कुछ मिटे हुए से अक्षरो म इसका प्रकाशन काल १६४६ सन् लिखा है।

रामकुमार द्वारा लिखा हुआ एक रेखाचित्र 'मील का पत्थर' प्रतीक प्रकाशित साहित्यिक सकलन म प्राप्त होता है। इसमे रामकुमार के नवीन के पहाडी प्रदेश म जाने की भावना वहाँ से प्रभावित विचारो का एव मस्तिष्क म उठने वाले सभी विचारो का एक रेखाचित्र खींचा है।

सन् १६६० म पत्थर का लम्प पोस्ट शरद देवडा द्वारा लिखित पुस्तक प्रकाशित हुई। इसम शरद देवडा द्वारा लिखे हुए 'प्रो० करुणायतन' एव रसिकजी दो रेखाचित्रो का सग्रह है।

सन् १६६२ मे डा० उदयनारायण तिवारी द्वारा लिखा हुआ 'श्री राहुल साकृत्यायन' एक रेखाचित्र प्राप्त होता है। इसमे तिवारीजी ने राहुल के समस्त व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण एव सजीव भाषा शैली म वर्णन किया है।

---

१ 'अर्थपिशाच', ले० नील, पृ० ५

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी रेखाचित्र साहित्य प्रगति की ओर अग्रसर है। इसकी आशातीत प्रगति हुई है। अभी भी अनेक रेखाचित्र बिखर हुए पड़े हैं, जितने भी प्रकाशित हुए हैं उन्ही के आधार पर मैंने यह विकास लिखा है। हिन्दी साहित्य मे रेखाचित्र के विकास से स्पष्ट है कि इनकी उन्नति म हिन्दी पत्र पत्रिकाओं का विशेष सहयोग रहा है। इसका भविष्य उज्ज्वल है।

विभाजन

पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित एव प्रकाशित पुस्तको के आधार पर रेखाचित्र साहित्य का विभाजन निम्न ढग स हो सकता है—

वर्ण्य विषय के अनुसार

हिन्दी रेखाचित्र साहित्य के विकास स स्पष्ट है कि जहाँ हम हिन्दी साहित्य के लेखकों के जीवन सम्बन्धी रेखाचित्र प्राप्त होत हैं वहा कुछ लेखको ने राजनतिक पुरुषो को भी अपने रेखाचित्रो का विषय बनाया है। कुछ लेखको न अपनी विभिन्न यात्राओ को भी रेखाचित्र क माध्यम स व्यक्त किया है। कुछ रेखाचित्रकारो न एसे व्यक्तियो के रेखाचित्र खीचे हैं जो हैं तो साधारण व्यक्ति पर मानवीय गुणो क कारण असाधारण हैं। इनके अतिरिक्त कई लेखको न जड या चेतन जगत् सम्बन्धी रेखाचित्र भी लिखे हैं। इस प्रकार संस्मरणो के रेखाचित्र भी अनेक प्रकार के हो सकते हैं।

साहित्यिक लेखकों के रेखाचित्र—हिन्दी साहित्य म कुछ एसे रेखाचित्रकार हुए हैं जिनके रेखाचित्रो का विषय हिन्दी के लेखक ही है। इस प्रकार क रेखाचित्र कलाकार की आत्मानुभूति से अन्य रेखाचित्रो की अपेक्षा कम अनुरंजित करत हैं। इस प्रकार के रेखाचित्र विनिर्मित करते समय कलाकार अपने वर्णन द्वारा विषय सम्बन्धी अतीत की उन मूर्त और प्रभावपूर्ण रेखाओ का उभारने की चेष्टा करता है जो उसके चित्र को सजीव रूप प्रदान करती है। ऐसे रेखाचित्रो मे लेखक व्यक्ति के चरित्रोद्घाटन के विषय म बहुत सावधान रहता है। हिन्दी साहित्य मे श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, देवेन्द्र सत्यार्थी एव रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र इस प्रकार के हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी के इन रेखाचित्रो का संग्रह 'कला क हस्ताक्षर' पुस्तक म है। यह अपने रेखाचित्रो का आरम्भ बहुत ही रोचक ढग स करते हैं—

> आने वाली पीढियाँ सोचा करेंगी कि कैसा था साहित्यकार 'अज्ञेय' जिसने 'शेखर एक जीवनी' लिखकर नाम कमाया और यह भी सोचा करेंगी कि कैसे थे व लोग जो उसके निकटवर्ती थे। अभी तो यह उपन्यास अधूरा है। प्रथम भाग सन् १९४१ म प्रकाशित हुआ था दूसरा भाग १९४४ म। आज हर कोई पूछता है 'शेखर का शेषांश कब तक प्रकाशित हो जायगा' उसके उत्तर मे अज्ञेय मुसकरा देता है और कहता है 'प्रतीक्षा कीजिए। प्रतीक्षा करने वालो का भी तो एक कथा है जिसे अज्ञेय न समझ लिया है।'[1]

---

[1] कला क हस्ताक्षर ले० देवेन्द्र सत्यार्थी

यही नही बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्रा म एक यह विशेषता है कि वह रेखाचित्र के अन्त म उस व्यक्ति के विषय म जो लिखत हैं वह उसक जीवन का निचोड होता है। उसी से उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पाठक को आभास हो जाता है। श्री राहुल सांकृत्यायन के रेखाचित्र म भी इन्होंने ऐसा ही किया है।

> "राहुलजी म अनेक गुण है। अद्भुत परिश्रम शक्ति है अदम्य पौरुष है गम्भीर विद्वत्ता है और सबसे बढकर बात यह है कि वे गाफिल नही हैं और अपनी नौजवानी म दुनिया की खूब सर करते हुए हमारे साहित्य और समाज का मुख उज्ज्वल कर रह है। कुल मिलाकर हिन्दी जगत म वे एक बजोड आदमी है और हम सब उन पर *अभिमान कर सकत हैं।* उन्हे देखकर प्राचीन बौद्ध भिक्षुओ का स्मरण हो आता है।"[१]

राजनतिक पुरुषो के रेखाचित्र—किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य पुरुष को प्रभावित कर सकता है ऐसे ही कोई भी लखक किसी भी राजनतिक पुरुष से प्रभावित हो सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं हिन्दी रेखाचित्र साहित्य म जहाँ हम साहित्यिक लेखको के रेखाचित्र मिलते हैं वहाँ राजनतिक पुरुषो क भी लिखे गए हैं। इन रेखाचित्रा म कल्पना के लिए बहुत कम स्थान रहता है। इसम वणन द्वारा पाठक को उसी काल तथा तत्कालीन मनोदशा म पहुचा देना इष्ट होता है इसीलिए ऐतिहासिक पुरुष की उन मूल रेखाओ को उभारने की चेष्टा रहती है जो उस अन्य व्यक्तियो से भिन्न करती है। बनारसीदास चतुर्वेदी के अनेक रेखाचित्र इसी कोटि म आते हैं। महात्मा गाधी पर लिखे उनक रेखाचित्र सदव जीवित रहकर साहित्य की अमूल्य निधि कहलाएगे। इन रेखाचित्रा म महात्माजी के बाह्य कलेवर और शारीरिक विशिष्टताओ के अतिरिक्त ऐतिहासिक घटनाओ एव व्यक्तियो का सुन्दर अकन किया है। पढते ही सामने चित्र प्रस्तुत हो जाता है और थोडी देर के लिए हम उसी भाव दशा म पहुच जाते हैं। इस प्रकार के रेखाचित्र केवल हम अतीत का ज्ञान ही नहीं देत हैं वरन् काल के उस अजस्र प्रवाह का भी ज्ञान करात हैं जो भूत, वतमान और भविष्य को एक सूत्र म पिरोता हुआ आगे चला जाता है।

रामवृक्ष बेनीपुरी के कुछ रेखाचित्र इसी प्रकार के हैं। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद पर लिखा हुआ इनका रेखाचित्र सवश्रेष्ठ है। इस रेखाचित्र म बेनीपुरी ने उनके समस्त व्यक्तित्व को सुन्दर शब्दो म व्यक्त किया है। जहाँ उनक बाह्य व्यक्तित्व का भी इतना चित्र खींचा है ऐसा अनुभव होता है मानो उनका चित्र सामने हो—

> 'अपनी सादगी के लिए वह सदा विख्यात थ किन्तु उस दिन की उनकी सादगी और सौम्यता कुछ अजब ही छटा दिखा रही थी। लम्बा छरहरा शरीर, श्यामल मुखमडल। उठी हुई नाक के नीचे घनरलोव मूछें और उनक ऊपर बगल बगल दो व पीली पाली आँखें, जिनसे सुनहरी किरणें फूटती-सी मालूम होतीं।

---

१ रेखाचित्र, ले० बनारसीदास चतुर्वेदी, पृ० १८५

सिर पर ऊँचे पल्ले की पाघी टोपी जो उसकी ऊँचाई को और भी बढ़ा रही थी। मोटी खादी का खुरदरा कुर्ता, जिसके बटन भी ठीक से नहीं लगे थे। खादी की ही धोती थी जो मुश्किल से घुटनों के नीचे पहुंच रही थी।[1]

मानवीय गुणों से सम्पन्न साधारण पुरुषों के रेखाचित्र—इन रेखाचित्रों में न तो किसी साहित्यिक व्यक्ति के जीवन का आभास होता है और न किसी राजनैतिक के। इनमें तो लेखक ऐसे व्यक्तियों के जीवन का चरित्र पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है जो कि न तो जनता में प्रसिद्ध हैं न समाज में लेकिन लेखक के सम्पर्क में आने से उसे साधारण पुरुष में मानवता एवं मानवीय गुण उसे लक्षित होते हैं उन्हीं से प्रभावित होकर रेखाचित्र लिखे हैं। ऐसे रेखाचित्र लिखने वालों में महादेवी वर्मा, प्रेमनारायण टंडन एवं बेनीपुरी का नाम अग्रगण्य है। महादेवीजी ने भी लछमा, रधिया आदि अनेक व्यक्तियों के जीवन को रेखाचित्रों के रूप में अंकित किया है। इसके पश्चात् बेनीपुरी की 'माटी की मूरतें' पुस्तक में जितने भी रेखाचित्र हैं वे सभी इसी प्रकार के हैं। मगर के जीवन में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनसे लेखक खूब प्रभावित हुआ है इसीलिए वह उसका रेखाचित्र लिखे बिना न रह सका—

> 'हट्टा कट्टा शरीर। कमर में भगवा। कंधे पर हल। हाथ में पैना। आगे आगे बैल का जोड़ा। अपनी आवाज के हहास से ही बैलों को भगाता मेरे खेत की ओर सुबह सुबह जाता—जब मैं मुझे होश है मैंने मगर को इसी रूप में देखा है,—मगर का स्वाभिमान—गरीबी में भी स्वाभिमान? लेकिन मगर की खूबी यह भी रही है। मगर ने किसी की बात बर्दाश्त नहीं की, शायद अपने से बड़ा किसी को, मन से माना भी नहीं।[2]

मानवेतर जड़ या चेतन जगत् सम्बन्धी—जब रेखाचित्रकार अपना वर्ण्य विषय मानवेतर सृष्टि से ग्रहण करता है और किसी जड़ वस्तु का अथवा चेतन पशु पक्षी का रेखाचित्र प्रस्तुत करता है तब रेखाचित्र मानवेतर जगत् सम्बन्धी कहलाता है। इस कोटि के रेखाचित्र का निर्माण करते समय लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह उस सम्बन्ध पर भी दृष्टिपात करे जो मानव ने उस वर्णित वस्तु के प्रति अपने भावजगत में स्थापित कर लिया है। अभिप्राय यह है कि यदि वह पेड़, उद्यान, झरने आदि का रेखाचित्र उपस्थित करता है तो उसे यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि यह वस्तुएं मानव को किस रूप में भाती है। इनसे मानव के अन्तर्जगत् में क्या प्रतिक्रिया होती है। हिन्दी साहित्य में ऐसे रेखाचित्रों के लेखक अयोध्याप्रसाद गोयलीय एवं मार्कण्डेय वाजपेयी हैं।

मार्कण्डेय वाजपेयी के अपने रेखाचित्र संग्रह में 'मदक का कोप', बद्धजी के चूहे बम्बया कबूतरखाने एवं 'जबरदस्त मक्खियाँ' आदि रेखाचित्रों के विषय हैं।

---

१ मील के पत्थर, ले० रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ० ४३

२ माटी की मूरतें, ले० रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ० २३

'जबर्दस्त मक्खियाँ' रेखाचित्र का प्रारम्भ ही इस ढंग का है कि पाठक पढ़े बिना नहीं रह सकता। *इस रेखाचित्र में मनोरंजन के अधिक साधन होते हैं—*

> भगवान ने मक्खियाँ कुछ सोचकर ही बनाई होंगी। आखिर भगवान की बातें मामूली आदमियों के दिमाग से परे हुआ करती हैं। आखिर ये कमबख्त मक्खियाँ उन्होंने क्यों बनाईं। अगर मंशा महज यह था कि आदमियों को परेशान करके उन्हें यह याद दिलाई जाय कि आदमी में कोई एक गुण भी है तो उस *काम के लिए क्या खटमल, मच्छर, पिस्सू, मकड़ी और तमाम और तरह के कीड़े-मकोड़े काफी न थे क्या।*[1]

प्रकाशचन्द्र गुप्त ने प्राचीन खण्डहरों को ही अपने रेखाचित्रों का विषय बनाया है। 'दिल्ली दरवाजा', 'दरगाह की सड़कें' आदि रेखाचित्र लिखे। इनके अतिरिक्त 'पेट्रोलपम्प', 'लैटरबक्स के प्रति' आदि इनके रेखाचित्र प्राप्त होते हैं। इनके ये सभी रेखाचित्र मानवता से प्रेरणा पाकर लिखे गए थे। जिनमें इन्होंने अपने विचार और भाव ऐतिहासिक अवस्थाओं पर आरोपित किए थे।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी रेखाचित्रकारों ने जहाँ मानव सम्बन्धी रेखाचित्र लिखे हैं वहाँ जड़ एवं चेतन जगत सम्बन्धी लिखने में भी इन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी है।

शैली के आधार पर

प्रत्येक लेखक का अपनी विषयवस्तु को सजाने का अपना अपना ढंग होता है। कोई निबन्धात्मक शैली में लिखता है तो कोई संस्मरणात्मक रूप में रेखाचित्र लिखते हैं। कई लेखकों ने प्रतीकात्मक एवं कथात्मक शैली में अपने रेखाचित्र लिखे हैं। इस *प्रकार शैली के अनुसार भी रेखाचित्र कई प्रकार के हो सकते हैं।*

कथात्मक शैली में लिखे हुए रेखाचित्र—कथात्मक शैली में लिखे हुए रेखाचित्रों में रेखाकार के वर्ण्य पात्रों की जीवन घटनाओं का आलेखन ही प्रमुख होता है। वहाँ उसकी चित्रण शैली वस्तुपरक अधिक होती है आत्मपरक कम। इस शैली का उपयोग अधिकतर ऐतिहासिक एवं पौराणिक व्यक्तियों वस्तुओं और घटनाओं आदि के रेखाचित्र प्रस्तुत करते समय किया जाता है। घटना प्रधान रेखाचित्र जिनको रिपोर्ताज कहा जाता है उनकी भी यही शैली है। कम से कम शब्दों में घटना या स्थान का मार्मिक और सही सही चित्रण होना चाहिए। इस शैली में लेखक अपने विषय को स्पष्ट करने के लिए वर्णन और कथोपकथन दोनों का आश्रय लेता है। इस प्रकार के रेखाचित्र प्रकाशचन्द्र गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी एवं बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखे हैं। बेनीपुरी के सभी रेखाचित्र इसी शैली में प्राय लिखे गए हैं। एक ही उद्धरण से इनकी शैली की विशेषता स्पष्ट हो जाती है—

---

१ रेखाचित्र, ले० मार्कण्डेय वाजपेयी, पृ० ४

'एकाएक बडे जोरो का हो हल्ला हुआ। सभी लोग एक ओर दौडे जा रहे हैं और वहाँ लाठियों की खटाखट जारी है। यह खटाखट खेल की नहीं हैं कई सिरो से खून के फव्वार छूट रहे हैं और यह बीच मे कौन है, बलदवसिंह। पुराने हँसमुख रसीले बलदेवसिंह नही। बलदेवसिंह, साक्षात् भीम बने हुए।'[1]

सस्मरणात्मक शली मे लिखे हुए रेखाचित्र—बहुत से रेखाचित्र सस्मरणात्मक शली म लिखे जाते हैं जिन्हें सस्मरणात्मक रेखाचित्र कहते हैं। इनमे किसी वस्तु, घटना या व्यक्ति का स्मृतिमूलक वणन किया जाता है। इस प्रकार के रेखाचित्र भी अधिकतर वस्तु वणनात्मक ही होते हैं। किन्तु उनका चित्रण भी कलाकार तटस्थ भाव से नहीं कर सकता। वे उसकी अनुभूति और आस्थाओ से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। सस्मरणात्मक रेखाचित्रो के पात्र और उनकी जीवन गाथाओ का सम्बन्ध स्वय लेखक से होने के कारण उनकी आत्मानुभूति का स्वर भी साथ साथ मुखरित हो उठता है। वह अपने पात्रो तथा उनकी सुख दु ख की घटनाओ के साथ आत्मीयता का अनुभव करता चलता है। उनके प्रति उसका प्रेम करुणा, घृणा आदि सहज मे ही अभिव्यक्त होते चलते हैं। इसी मे ऐसे रेखाचित्रो म पाठक को रमाए रखने की अद्भुत शक्ति होती है और पाठक भी लेखक की प्रतिक्रियाओ के साथ भाव तादात्म्य स्थापित करता चलता है।

घटना या वस्तुपरक सस्मरणात्मक रेखाचित्र रिपोर्ताज या सूचनिका से अधिक साम्य रखते हैं। रिपोर्ताज और इस कोटि के रेखाचित्रो मे केवल यही अन्तर होता है कि रिपोर्ताज म लेखक का दृष्टिकोण ऐतिहासिक अधिक होता है साहित्यिक कम और घटनापरक सस्मरणात्मक रेखाचित्रकार इतिहासकार कम होता है चित्रकार अधिक। हिन्दी साहित्य म महादेवी के रेखाचित्र इसी प्रकार के हैं। इनकी स्मृति की रेखाएँ एव अतीत के चलचित्र पुस्तकें इसी प्रकार की है। अतीत के चलचित्र पुस्तक म इन्होने इस सस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे है। प्रत्येक रेखाचित्र मे उनकी कला-कुशलता का पाठक को आभास हो जाता है। आरम्भ म 'रामा' का रेखाचित्र है आरम्भ स ही पाठक इनकी शैली स प्रभावित हो जाता है—

'रामा हमारे यहा कब आया यह न मैं बता सकती हूँ और न मेरे भाई-बहन। बचपन मे जिस प्रकार हम बाबूजी की विविधता भरी मेज से परिचित थे जिसके नीचे दोपहर के सन्नाटे म हमारे खिलौनो की सृष्टि बसती थी अपने लाहे के स्प्रिंगदार विशाल पलग को जानते थे, जिस पर सोकर हम कच्छ मत्स्यावतार जस लगते थे और माँ के शख घडियाल से घिरे ठाकुरजी को पहचानते थे जिनका भाग अपने मुह मे अन्तर्धान कर लेने के प्रयत्न मे हम आधी आख मीचकर बगुल क मनोयोग स घटी की टन टन गिनते थ, उसी प्रकार नाटे, काले और गठे शरीर

---

1 रेखाचित्र, ले० रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ० ७

वाले रामा के बड़े नरा स लम्बी निगा तक हमारा सनातन परिचय था।'[१]

यही नहीं कहीं कहीं महादेवीजी इतनी भावुक हो गई हैं कि पाठक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं—

"गहरे काही रंग की पतली ऊनी चादर म समा न सकने के कारण वर्षा की नन्ही नन्ही बूंदे ऊपर ही जड़ी सी थी जो बिजली के आलोक म हीरे के नूर स झिलमिलाने लगी। चादर उतारकर जब वह मेरी दृष्टि का अनुसरण करती हुई सामने की कुर्सी पर बैठ गई तब मेरी कुछ विस्मय और कुछ जिज्ञासा भरी दृष्टि उस मुख की रेखा रेखा म न जाने किस शब्दहीन उत्तर की खोज म भटकने लगी। आँखों के आस-पास लटकती हुई दो तीन छोटी छोटी लटा के छोरा से हिलती हुई पानी की बूँदें पारे-सी जान पड़ती थी। सफेद साडी के कुछ धबील बैंजनी किनारे स घिरा मुख सुडौल गोरा पर बहुत मुरझाया हुआ सा लगा। *नाक के अग्रभाग की लाली हाल ही म पोछे गए आँसुओं की सूचना द रही थी,* उनकी ममस्पर्शी व्यथा और भी गहरी हो उठी थी।[२]

प्रतीकात्मक शैली मे लिखे हुए रेखाचित्र—हिन्दी साहित्य म कुछ रेखाचित्रकारो ने प्रतीकात्मक शैली म अपने रेखाचित्र लिखे हैं। इस शैली म लेखक किन्ही घटनाओं एव वस्तुओ के चित्रण के माध्यम से कोई लाक्षणिक अर्थ या सदेश व्यजित करना चाहता है। प्रतीकात्मक और रूपकात्मक रेखाचित्र लिखने वाला म रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम अग्रगण्य है। इनकी पुस्तक गेहूँ और गुलाब म इसी शैली का प्रयोग है। *यहाँ गेहूँ उपयोगितावाद का तथा गुलाब आनन्दवाद का प्रतीक बन कर आया है* जिनके रेखाचित्र यह निर्देशित करते हैं कि जीवन म दोनो की आवश्यकता और महत्ता है। यहाँ पर गेहूँ भूख और गुलाब मानसिक अतृप्ति की पूर्ति के साधन के रूप म चित्रित है। सारे मानव इतिहास का पर्यावलोकन किया है और आज के समाज के लिए यह उपयोगी बताया है कि शारीरिक भूख का मिटा कर हम मानसिक तृप्ति को प्राप्त करें तभी पूर्ण मानव बन सकते है। गेहू की दुनिया खतम होने जा रही है— वह स्थूल दुनिया जो आर्थिक और राजनतिक रूप से हम सब पर छाई हुई थी। जो आर्थिक रूप म रक्त पीती रही राजनतिक रूप म रक्त की धारा बहाती रही अब वह दुनिया आने वाली है जिस हम गुलाब की दुनिया कहेंगे। गुलाब की दुनिया मानस का ससार —सास्कृतिक जगत्।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनेक शलियो मे रेखाचित्र लिखे जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे रेखाचित्र भी हैं *जिनके लिखने म साहित्य की अन्य विधाओं* की सहायता नही ली जा सकती। इसका उदाहरण बेनीपुरी का नयनिया' रेखाचित्र है। ऐसे रेखाचित्रा म भी अनेक कला प्रवृतियो का विकास हो चुका है—सवेदना चित्र

---

१ अतीत के चलचित्र, ले० महादेवी, पृ० ६

२ वही, पृ० ७६

एव व्यग्य चित्र ग्रादि। सवेदनात्मक चित्रो मे लेखक किसी यथार्थ सवेदना को काल्पनिक चित्र मे बाँधने का प्रयास करता है। जीवन म कलाकार ग्रनक सवेदनाग्रा से प्रभावित होता है। इनमे से कुछ सवेदनाएँ शाश्वत सत्य खडा के रूप म उपस्थित होती हैं ग्रौर कुछ वैयक्तिक ग्रनुभूतिया का रूप धारण कर सामने ग्राती हैं। रखाचित्रकार दोनो प्रकार की सवदनाग्रा को केन्द्रबिन्दु बनाकर कल्पना के सहारे शब्द-रेखाग्रा मे भावना का रग भरकर सामन रख देता है। इस प्रकार क रेखाचित्र राहुलजी ने ग्रधिक लिखे हैं।

व्यग्यात्मक रेखाचित्रो की रचना ग्रधिक हुइ है। समाज की विभिन्न रूढिया ग्रौर पाखण्डा का मजाक उडाने के लिए व्यग्यात्मक रेखाचित्रो का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार के रेखाचित्र कृष्णचन्द्र ने लिखे हैं। इनके य रेखाचित्र 'फूल ग्रौर पत्थर' शीपक पुस्तक म सगृहीत हैं। 'ग्रसवारी ज्योतिपी, 'देशभक्त, 'मेरा दोस्त' ग्रादि इनके नाम हैं।

6 संस्मरण

जब लेखक अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रमणीय एवं प्रभावशाली रूप से वर्णन करता है उसे 'संस्मरण' कहते हैं। इसका विस्तृत विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया है।

तत्व

वर्ण्य विषय—संस्मरण' साहित्य का यह प्रमुख तत्व है। संस्मरण साहित्य में विषय से अभिप्राय है कि लेखक अपने संस्मरणों में क्या कहना चाहता है। उसके संस्मरण उसके अपने जीवन से सम्बन्धित हैं या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। यदि वह किसी अन्य व्यक्ति के विषय में संस्मरण लिखता है या उसको अपने संस्मरणों का विषय बनाता है—वह व्यक्ति साहित्यिक है राजनैतिक है धार्मिक है या जननेता है। कुछ भी हो विषय चुनाव में ही उसकी विद्वत्ता प्रदर्शित हो जाती है। प्रसिद्ध व्यक्ति ही संस्मरण लिख सकता है। यदि वह अपने ही जीवन से सम्बन्धित संस्मरण लिखे तो उसको आप प्रसिद्ध होना चाहिए अगर किसी अन्य व्यक्ति के विषय में लिखना चाहे तो उसको भी प्रसिद्ध व्यक्ति होना चाहिए अगर किसी अन्य व्यक्ति के विषय में लिखना चाहे तो उसको भी प्रसिद्ध व्यक्ति होना चाहिए। इस प्रकार लेखक एवं वर्णित व्यक्ति दोनों का ही प्रसिद्ध होना आवश्यक है। ऐसे संस्मरण ही प्रभावशाली हो सकते हैं।

संस्मरणों के विषय चुनाव के पश्चात् उनमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। विषय वर्णन में सर्वप्रथम रोचकता का होना नितान्त आवश्यक है। लेखक को अपने विषय का इस ढंग से वर्णन करना चाहिए कि वह पाठक को सरस प्रतीत हो। विषय में रोचकता का होना बहुत आवश्यक है नीरस विषय को पढ़ने के लिए कोई भी व्यक्ति तैयार नहीं होता है। हिन्दी साहित्य में वैसे तो प्रायः सभी लेखक रोचकपूर्ण ढंग से संस्मरण लिखते हैं पर कन्हैयालाल मिश्र के संस्मरणों में विशेषतया इस गुण की प्रधानता है। यह तो आरम्भ ही रोचकपूर्ण ढंग से करते हैं—

'अपने तीन वर्ष की होश को जरा सँभालकर उन्होंने अपने आस पास झाँका, तो वे सहम गए। मां बाप मर चुके थे और उनका पालन पोषण उनके चाचा चाची की देख रेख में हो रहा था। उनके बचपन के संस्मरणों का सार

है बच्चे खिलाना, मार खाना कुछ न कहना और सब कुछ सहना। यह कितना अद्भुत है कि इस दमघोटू वातावरण में उन्होंने अपने स्नेही बाबा से ग्यारहवें वर्ष में पैर रखने के पहले ककहरा और रामकलाऊ शिक्षा पा ली और इससे भी अद्भुत है यह कि इस नरक कुंड में पलकर जो बालक निकला उसके रोम रोम में व्याप्त मिला मानव का प्रेम, सभी तरह के भेदभावों के ऊपर जीवन के कण कण में छाई ममता और ईश्वर विश्वास। ओह ऐसा कि सत्ता को भी ईर्ष्या हो। यह थे मेरे स्वर्गीय पिताजी—श्री पंडित रमादत्त मिश्र।"[1]

वर्ण्य विषय में स्पष्टता का होना भी आवश्यक है। यदि लेखक पूर्ण ईमानदारी के साथ अपने विषय का वर्णन करता है तभी उसमें स्पष्टता का गुण हो सकता है। लेखक में यह गुण तभी हो सकता है यदि उसका उस व्यक्ति से घनिष्ठ सम्पर्क रहा हो। किसी भी व्यक्ति का संस्मरण तभी सच्चा उतर सकता है जबकि लेखक का संस्मरण-नायक से निकट सम्पर्क रहा हो और उसको उसने हर पहलुओं से देखा और समझा हो। *ऐसा न होने में परिणाम यह होता है कि मनुष्य कुछ है और उसका* चित्रण उसके बिल्कुल विपरीत होता है। यह संस्मरण नायक के साथ घोर अन्याय है।[2]

उपेन्द्रनाथ अश्क ने 'होमवती की कहानियों के विषय में कितना स्पष्ट चित्रण किया है—

'वे छोटी छोटी सीधी-साधी घरेलू कहानियाँ लिखने में दक्ष थीं। उनकी इधर की कहानियों की पार्श्वभूमि भी चाहे घरेलू थी पर उनमें काफी तीव्रता आ गयी थी। साम्प्रदायिक दंगों देश के विभाजन और उससे पैदा होने वाली समस्याओं कांग्रेसी सरकार बनने के बाद कांग्रेसी नेताओं के जीवन के झूठ रिश्वत, ढोल के पोल का अतीव सुन्दर चित्रण उन्होंने कुछ कहानियों में किया था फिर अपने इर्द गिर्द रहने वाले गरीबों की मनोदशा का वर्णन अनायास उनकी कुछ कहानियों में आ गया था।[3]

यही नहीं अपने स्वभाव का भी इन्होंने स्पष्ट वर्णन किया है—

'मेरे दिमाग की नसें न जानें कितनी नाजुक हैं कि जरा सी बात मुझे खा जाती है और मेरा चैन आराम हराम हो जाता है। माननीय लोगों ने मुझे इस कमजोरी पर विजय पाने के कई नुस्खे बताए हैं, मुझे वह कंठस्थ भी हैं और मैं सदा उन्हें काम में लाने के मंसूबे बांधता रहता हूँ पर जब समय आता है वे सब धरे के धरे रह जाते हैं।"[4]

---

१ दीप जले शंख बजे—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, पृ० ७६
२ बालकृष्ण भट्ट (संस्मरणों में जीवन)—ब्रजमोहन व्यास
३ रेखाएं और चित्र उपेन्द्रनाथ अश्क, पृ० १७८
४ वही, पृ० १८४

स्पष्टता व रोचकता के पश्चात् वर्ण्य विषय में सुसगठितता का होना आवश्यक है। सुसगठितता से मेरा अभिप्राय है कि लेखक जिस घटना सम्बन्धी सस्मरण का वर्णन कर रहा हो उसमें लेखक के विचार व भाव का तारतम्य रहना चाहिए। यदि वह सस्मरणो के रूप मे जीवनी लिख रहा हो तो वह क्रमबद्ध रूप से वर्णित होनी चाहिए।

वैयक्तिक अनुभूतियो को सुसगठित रूप से रखने के पश्चात् लेखक को उसका वर्णन इस ढग से करना चाहिए कि वह अधिक विस्तृत न हो। अत्यधिक विस्तार रोचकता एव प्रभाव को क्षीण कर देता है। इस प्रकार वर्णन में सक्षिप्तता का होना आवश्यक है। जैनेन्द्र ने मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व के विषय में कुछ ही पक्तियो मे कह डाला है—

'बहुत कुछ उनको अनायास सिद्ध है। कविता में शान्ति और तुक। सफर मे तीसरा दर्जा। भूषा मे सादगी वेष मे चिरगावता। प्रेम मे अपत्य प्रेम। वाणी मे मित भाषण और साहित्य मे सुरुचि। इन सभी के लिए प्रयासी को प्रयास करना लगता है। राष्ट्रीय व्यक्ति के लिए रेल का तीसरा दर्जा अभी तक सहज नही है। वह गौरव का विषय है। किन्ही को जरूरत रहती है कि कोई उन्हे देखें किन्ही को जरूरत रहती है कि कोई उन्हे न देखे। यही हाल हमारे साथ सादगी का है। पर मैथिलीशरण गुप्तजी को मालूम होता है कि दूसरी कोई बात मालूम नही।'[1]

इस प्रकार हम देखते है कि वही सस्मरण उच्चकोटि के माने जाएगे जिनके विषय वर्णन मे स्पष्टवादिता रोचकता सुसगठितता एव सक्षिप्तता गुण होते है। सस्मरण भी साहित्यिक, धार्मिक व्यक्ति के विषय मे लिखे गए एव राजनैतिक व्यक्ति के विषय मे लिखे गए। इसके अतिरिक्त कई यात्रा वर्णन सम्बन्धी सस्मरण हिन्दी साहित्य मे प्राप्त होते हैं।

इसके अतिरिक्त विषय वर्णन के भी दो ढग होते है। सस्मरण लेखक यदि अपने सम्बन्ध मे लिखे तो उसकी रचना आत्मकथा के निकट होगी यदि अन्य व्यक्तियो के विषय मे लिखे तो जीवनी के निकट।[2] प्रथम श्रेणी मे शान्तिप्रिय द्विवेदी की पुस्तक परिव्राजक की प्रजा एव किशोरीदास वाजपेयी के साहित्यिक जीवन के अनुभव और सस्मरण आते हैं। दूसरी श्रेणी मे ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखित बालकृष्ण भट्ट की सस्मरणो मे जीवन' आदि पुस्तकें हिन्दी सस्मरण साहित्य मे प्राप्त होती हैं।

चरित्र चित्रण—सस्मरण साहित्य का यह दूसरा प्रधान तत्त्व है। सस्मरण मे लेखक या तो अपने जीवन को सस्मरणो के रूप मे व्यक्त कर सकता है या किसी

---

१ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, अभिनन्दन ग्रन्थ, प्रबन्ध सम्पादक श्री ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ, पृ० ६५

२ हिन्दी साहित्य कोष पृ० ८७०

अन्य व्यक्ति के जीवन का सस्मरणा के रूप मे चित्रण कर सकता है। हिन्दी सस्मरण साहित्य म बहुत कम लेखक हैं जिन्होने अपने जीवन को आत्मकथात्मक रूप म सस्मरण शैली म रखा है। फुटकर सस्मरण तो इस शैली मे अनेक साहित्यिक लेखको के प्राप्त होते हैं परन्तु सम्पूर्ण जीवन की झाँकी सस्मरणा के रूप म केवल शान्तिप्रिय द्विवदी की ही प्राप्त होती है। इनकी पुस्तक 'परिव्राजक की प्रजा' आत्म-कथा है। इसम द्विवेदीजी ने सस्मरणा क रूप म अपने जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत की है। चरित्र चित्रण से मेरा यहा अभिप्राय है कि लेखक चाहे अपने जीवन का चित्रण करता हो या किसी अन्य व्यक्ति का, उसको पूर्ण रूप स जीवन का वर्णन करना चाहिए। उसके जीवन म घटित सभी घटनाओं का, अच्छी-बुरी सभी का, स्पष्ट एव नग्न रूप से वर्णन करना चाहिए। शान्तिप्रिय द्विवदीजी न अपनी आत्मकथा को दो भागों म विभाजित किया है—बाल्यकाल एव उत्तरकाल। इनम वर्णित सस्मरणा म द्विवेदीजी की स्पष्टवादिता एव भावुकता का पता चलता है। इसम दो ही व्यक्ति मुख्य हैं—एक शान्तिप्रिय द्विवदी और उनकी बडी बहन। जीवन म घटित सभी घटनाओं का वर्णन अत्यन्त मार्मिकता स शान्तिप्रिय द्विवेदी ने चित्रण किया है जो कि उनकी चरित्र चित्रण शैली की प्रतिमा का द्योतक है। अपने स्वभाव एव व्यक्तित्व के विषय म लिखते हैं—

'पिता का तापस सस्कार बहिन का करुण कोमल अभिजात्य और मेरे श्रुतिमन्द श्रवणो का नीरव एकान्त यह सब कुछ स्वत एक ऐसा सेन्सर बन गया कि मैं बाहरी दुनिया का कुछ भी गुन सुन नही सका। अगाध जल म तरने वाली मछली की तरह मेरी आत्मा को जीवन की उथली सतह से सन्तोष नही मिलता था।[1]

इसके अतिरिक्त हिन्दी सस्मरण साहित्य म कुछ ऐसे सस्मरण लेखक हुए हैं जिन्होने प्रसिद्ध साहित्यिक व्यक्तियो के सस्मरण कुछ पृष्ठो म ही लिखे हैं। इन सस्मरणो म उन्हाने उनके समस्त चरित्र का विश्लेषण कर दिया है। जनेन्द्र इलाचन्द्र जोशी, अश्क बच्चन कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, शिवपूजन सहाय, शान्तिप्रिय द्विवेदी आदि ऐसे ही लेखक हैं। ऐसे सस्मरण कुछ पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित हुए हैं और अधिकतर अभिनन्दन ग्रन्थों म प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के सस्मरणो मे लेखक एक ही व्यक्ति के चरित्र पर पूर्ण रूप से सक्षिप्तता रखते हुए पाठक के सम्मुख उसके जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत कर देता है। किसी एक प्रभावशाली सस्मरण का वर्णन करते हुए विद्वत्तापूर्ण शैली द्वारा उसके समस्त व्यक्तित्व की झलक प्रत्यक्ष आ जाती है।

आचार्य शिवपूजन सहाय ने पडित रूपनारायण पाण्डेय के व्यक्तित्व का विश्लेषण कुछ ही पक्तियो म कर डाला है—

---

१ परिव्राजक की प्रजा, शान्तिप्रिय द्विवेदी, पृ० ६१

'उनका घरेलू जीवन बड़ा नियमित था। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग स्वाध्याय और साहित्याराधन में किया। यही कारण है कि पत्र सम्पादन काय के अतिरिक्त व अपनी मौलिक और अनूदित रचनाओं की राशि से हिन्दी के साहित्य भडार की शोभा बढ़ा गए। उनकी बहुत-सी लिखित, अनूदित एव सम्पादित पुस्तकें दूसरे सज्जनों के नाम से भी प्रकाशित हुई हैं। द्रव्योपाजन के लिए विवश होकर उन्हें ऐसा करना पडता था क्योंकि उनका व्यक्तिगत बजट बहुत लम्बा था, अ छे से अच्छे भोजन वस्त्र, सुगध आदि के व बड़े शौकीन थे। मलमली पाग जड़ा किमाम और सुरता व बनारस से मगाते थ—गोरा छरहरा बदन सिर पर किश्तीनुमा टोपी या साफा देशी मलमली धोती या चूडीदार पाजामा पालिशदार जूता कोट की जेब म घडी हाथ म चिकनी छडी दो दो सुवासित रुमाल, मुह म पान की गिलौरी—जसे शाह खच वसे ही मनोरपसन्द भी। बहुत ही अच्छी तबीयत पाई थी पाडेयजी ने।'[1]

प्रत्येक सस्मरण म लेखक के व्यक्तित्व की आभा होती है। यदि लेखक आलोचक है तो वह अपने चरित्र नायक के व्यक्तित्व की आलोचना किए बिना नहीं रह सकता। शिवदानसिंह चौहान ने पत के विषय म जो अपना सस्मरण लिखा है उसम उनके व्यक्तित्व की आलोचना किए बिना वह नहीं रह सके—

पतजी का व्यक्तित्व कुछ इतना बौद्धिक है कि उनके सम्पर्क म आने वाले व्यक्ति को उनमे वह साधारणता नहीं मिलती जो आमतौर पर हर व्यक्ति म होती है। मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि इन्होंने असाधारणता का कोई आडम्बर रच रखा है और जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क म आता है उसको वे केवल अपना बाहरी असाधारणता का नकाब पहना हुआ चेहरा ही दिखाते हैं। ऐसा कुछ नही है। उनका अन्तर बाहर एक है—सरल सहज और कोमल लेकिन यह सरलता और सहजता या तो हम अबोध शिशुओं की क्रियाओं म मिलती है या एक ऐसे मनीषी व्यक्ति के चिन्तन और आचरण म जो जीवन के गरल को पचाकर समदर्शी बन गया है।[2]

यही नही इलाचन्द्र जोशी जसे मनोवज्ञानिक लेखक ने भी पत का मनोवज्ञानिक ढग से विश्लेषण किया है। इस वणन म मनोविज्ञान के विशेष शब्दों तक का प्रयोग भी किया है। जिस समय पत गहरी बीमारी के पश्चात् इलाहाबाद पहुच गए हैं उस समय का वणन करते हैं—

महामृत्यु पर दुबारा विजय पाकर नई अग्नि परीक्षाओं के बाद तपे हुए खरे सोने की तरह उभरा हुआ उनका व्यक्तित्व मानवीय हिंसा प्रतिहिंसा से कलुषित वातावरण म उपचेतना और उच्चचेतना के बीच के इन्द्रधनुषी पुल

---

१ पाडेय स्मृति ग्रन्थ—सम्पादक डा० प्रेमनारायण टडन, पृ० ३७

२ सुमित्रानन्दन पत स्मृति चित्र—प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, पृ० १४६

पर खडा होकर चारा ओर उज्जवल जीवनानुभूति की स्वर्णिम किरणें बिखेर रहा था और स्वणधूलि उडा रहा था ।"[1]

कहीं कहीं लेखक चरित्र का वणन करते समय अन्तमु खी प्रवृत्ति का हो जाता है। ऐसे समय म लेखक को चरित्र नायक की प्रत्येक वस्तु म कुछ छिपी हुई बात का आभास होता है। बच्चन द्वारा लिखा हुआ प्रेमचन्द सम्बन्धी सस्मरण इसी भावना का द्योतक है। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व वणन म बच्चन ने इसी प्रतिभा का परिचय दिया है—

'प्रेमचन्दजी नग सिर खद्दर का कुर्ता पहन खडे हैं। उनके चेहरे पर पडी हुई प्रत्यक पक्ति सघषमय जीवन का इतिहास सा बता रही है। उनकी आंखो की चमक मे उनका उच्चादश झलक रहा है। उनके चेहरे की मुस्कराहट म उनका भोलापन फूटा पडता है। नम्रता, सरलता और निरभिमान उनके रूप म रसा बसा सा प्रतीत होता है।"[2]

इस प्रकार उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि लेखक अपने चरित्र नायक का चित्रण स्पष्ट एव रमणीय ढग से करता है। प्रत्येक पष्ठ पर लेखक के व्यक्तित्व की आभा होती है। अपने चरित्र नायक का चित्रण वह मनोवज्ञानिक ढग से भी कर सकता है। अधिकतर सस्मरणा म व्यक्ति के चरित्र का चित्रण वणनात्मक शैली मे ही किया जाता है। इसके साथ ही वह अपने चरित्र का विश्लेषण भी स्पष्ट रूप से करता है। एक प्रभावशाली घटना के वणन म सम्पूण व्यक्तित्व की झाकी प्रस्तुत करना ही सस्मरण साहित्य की विशेषता है।

देशकाल वातावरण—वातावरण उन समस्त परिस्थितिया का सकुल नाम है जिनसे पात्रा को सघष करना पडता है और विषयवस्तु का विकास होता है। सस्मरण साहित्य की वास्तविकता का मान दने की कसौटियो म वातावरण मुख्य उपकरण है। सस्मरण लेखक भी देश और काल की जजीर म जकडे रहते हैं। देश और काल की पृष्ठभूमि के बिना पात्रा का एव लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट नही होता। घटनाक्रम को समझने म उलझन होती है। देश और काल में वास्तविकता लाने के लिए स्थानीय ज्ञान आवश्यक है कि वह कथानक क स्पष्टीकरण का साधन ही रहे, स्वय साध्य न बन जाय। जहा वणन अनुपात से बढ जाता है वहा उसस जी ऊबने लग जाता है।

हिन्दी सस्मरण साहित्य म केवल यशपाल ही ऐसे लखक हुए हैं जिन्होने अपने सस्मरणा म तत्कालीन राजनतिक परिस्थितिया का वणन खूब किया है। उन्होने तो अपने सस्मरण लिखे ही तत्कालीन इतिहास का जनता क सम्मुख रखने के लिए हैं। सुखदेव, राजगुरु एव भगतसिंह सम्बन्धी सभी सस्मरण इनक व्यक्तिगत अनुभवा पर आधारित हैं जसा कि इन्होने 'परिचय' मे स्पष्ट किया है—

---

१ सुमित्रानन्दन पत स्मृति चित्र—प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, पृ० १४३

२ नये पुराने झरोखे, ले० बच्चन, प्रथम सस्करण, १९६२, पृ० ८०

'यह संस्मरण व्यक्तिगत जान पड़ेंगे क्योंकि व्याकरण की दृष्टि से प्रथम पुरुष में या कर्तावाचक में लिखे गए हैं। इस रूप में लिखने का प्रयोजन यह है कि इनकी सचाई और वास्तविकता का उत्तरदायित्व मुझ पर है। अब तक क्रान्तिकारी प्रयत्नों के विषय में इतिहास के नाम से जो कुछ लिखा गया वह अधिकांश में अफवाहों के आधार पर ही लिखा गया है। इसी कहानी के लिए दावा है कि अफवाह का सहारा नहीं लिया गया।

हिन्दी साहित्य में इनके संस्मरणों के तीन भाग 'सिंहावलोकन' नाम से प्राप्त होते हैं। वर्णन सीमा से अधिक होने पर भी रोचक एवं आकर्षक है।

केवल परिस्थितियों का वर्णन करने से ही लेखक कुशल नहीं माना जाता बल्कि उनका साहित्य पर प्रभाव दिखलाने में भी वह अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देता है। 'बच्चन' जैसे भावुक कवि भी इस विशेषता से शून्य न रह सके—आधुनिक साहित्यिकों की दशा का वर्णन भी इन्होंने गिरिधरशर्मा नवरत्न के संस्मरण में किया है—

जीवन आज अधिक व्यस्त हो गया है लेखकों के दृष्टिकोण बदल गए हैं और साहित्य क्षेत्र अधिक प्रतियोगितापूर्ण है। पहले सब हिन्दी के लिए कुछ न कुछ कर रहे थे, आज सब को दूसरों के पीछे छोड़ते हुए या पीछे समझते हुए आगे बढ़ना बढ़वाना है।'[1]

शान्तिप्रिय द्विवेदी ने भी अपने संस्मरणों में कहीं-कहीं तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण किया है। एक स्थान पर वह पूँजीपति वर्ग से प्रभावित गाँव के लोगों का वर्णन करते हुए लिखते है—

खेती-पाती में, शादी-ब्याह में रोग शोक में सब यथाशक्ति शरीर से साथ देने को तैयार रहते हैं किन्तु कठिन से कठिन संकट आ जाने पर भी कोई किसी को अपना एक पैसा नहीं देना चाहता। ऐसे गाढ़े मौके पर निष्ठुर न होते हुए भी उनकी रिक्तता उन्हें जड़ बना देती है। उनके पास दो चार पैसे होते हैं वे अगल-बगल के पड़ोसियों को अथवा किसी अन्य गाँव के गरजमन्दों को सूद-दर-सूद के हिसाब से कर्ज देकर जमींदारों और महाजनों की तरह शोषण करने लगते हैं।[2]

उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे कथा लेखक ने भी मंटो सम्बन्धी अपने संस्मरणों में तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण किया है—

मुझे सन् याद नहीं रहा लेकिन वही दिन थे जब अमृतसर में हर तरफ इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे गूंजते थे। उन नारों में, मुझे अच्छी तरह याद है कि अजीब किस्म का जोश था—वातावरण में वह जो जलियाँवाला बाग की खूनी दुर्घटना का उदास भय समाया रहता था, उस वक्त लोप था। अब

१ नये पुराने झरोखे—बच्चन (गिरिधरशर्मा नवरत्न—संस्मरण), पृ० ८०

२ पथचिन्ह—शान्तिप्रिय द्विवेदी, पृ० ३३

उसकी जगह एक निर्भीक तडप ने ले ली थी—एक ग्रधाधुध छलाग ने जो ग्रपनी मजिल से ग्रनभिज्ञ थी।'

'लोग नारे लगाते थे, जलूस निकालते थे और सख्या की तादाद मे धडाधड कद हो रहे थे। गिरफ्तार हाना एक दिलचस्प शुगल बन गया था। सुबह कद हुए, शाम को छोड दिए गए। मामला चला च द महीनो की कैद हुई, वापस ग्राय एक नारा लगाया फिर कद हो गए।[1]

इस प्रकार हम दखते है कि सस्मरण साहित्य को लिखन समय लेखक का उद्देश्य अपने समय की परिस्थितिया का चित्रण करना नही है। इन परिस्थितियों का चित्रण तो ग्रनायास ही हो जाता है। किसी भी सस्मरण की वास्तविकता व सचाई का प्रमाण दने के लिए लखक उस समय की परिस्थितिया का थाडा ग्राभास पाठक को ग्रवश्य दना चाहता है। प्रत्येक कलाकार अपने समय स प्रभावित होता है, इस प्रकार उसक साहित्य मे त कालीन परिस्थितियो का वणन होना स्वाभाविक ही हाता है।

कही कही सस्मरणा म हम किसी विशष स्थान या नगर का वणन देखते हैं। ऐसे सस्मरण तभी सफल हो सकत हैं यदि लखक ने उस स्थान या नगर को देखा हो। हिन्दी साहित्य म राहुल साकृत्यायन के सस्मरण इस श्रेणी म ग्रात हैं। इन्होन अपनी पुस्तक 'यात्रा के पन्न म तिब्बत यात्रा सम्बन्धी ग्रनेक सस्मरण लिखे हैं जिनम ग्रनेक नगरा एव स्थला का चित्रण है। हरिवशराय बच्चन के कुछ सस्मरण इसी प्रकार के हैं। काश्मीर यात्रा सस्मरण इनका एक उच्चकाटि का सस्मरण है। इसम इन्हाने काश्मीर के सभी मुख्य स्थाना का ग्राकषक एव रमणीय चित्र प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य—इसम लेखक की उस सामान्य या विशिष्ट जीवन दृष्टि का विवेचन हाता है जा उसकी कृति म कथावस्तु का विन्यास, पात्रा की योजना, वातावरण के प्रयोग ग्रादि मे सवत्र निहित पायी जाती है। इसे लेखक का जीवन दशन ग्रथवा उसकी जीवन दृष्टि जीवन की व्याख्या या जीवन की ग्रालोचना कह सकते हैं। उन कृतिया का छोडकर जिनकी रचना का उद्देश्य मन बहलाव या मनारजन मात्र होता है, सभी कलाकृतिया म लखक की कोई विशेष विचारधारा प्रकट या निहित रूप म देखी जा सकती है। बिना इसके साहित्यिक कृतित्व प्रयोजनहीन ग्रौर व्यथ होता है।

जहाँ तक सस्मरण साहित्य का प्रश्न है इसके लेखक का उद्देश्य ग्रन्य लेखकों से पृथक है। इसम लेखक अपने समय क इतिहास को लिखना चाहता है परन्तु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप स वह बिलकुल ग्रलग है। सस्मरण लेखक जो स्वय देखता है जिसका वह स्वय ग्रनुभव करता है उसी का वणन करता है। उसके वणन मे उसकी अपनी ग्रनुभूतियाँ-सवेदनाएँ भी रहती हैं। इस दृष्टि स शली म वह निबन्धकार के

1 मटो मेरा दुश्मन—उपेन्द्रनाथ ग्रश्क पृ० १६६

गम्भीर है। यह धारणा भी भ्रान्त है कि संस्मरण किसी व्यक्ति के जीवन का मनन करता है, सम्पूर्ण घटना और जीवन के अंग। इतिहासकार के समान वह विवरण प्रस्तुत करने वाला नहीं है।[1]

संस्मरणों में लेखक अतीत की स्मृतियों को साकार रूप देता है। वह उन स्मृतियों का चयन करता है जिनका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। ऐसा करने में उसको सबसे बड़ा लाभ यह है कि जब भी उसे जीवन में प्रेरणा की आवश्यकता पड़े वह उनको सीमाओं से पढ़कर उत्साह प्राप्त कर ले। दूसरी बात यह है कि प्रत्येक लेखक की रचना में कोई-न-कोई उद्देश्य तो रहता है कुछ रचनाएँ स्वान्तः सुखाय लिखी जाती हैं। ऐसा ही संस्मरणों में है। कुछ ऐसे लेखक हैं जिनको संस्मरण लिखकर आत्मिक संतोष प्राप्त होता है। ब्रजमोहन व्यास ने बालकृष्ण भट्ट के संस्मरण इसी उद्देश्य से लिखे थे—

'इन संस्मरणों को मैंने 'स्वान्तः सुखाय' लिखा है। लिखने में मैं सफल हो सका या नहीं आत्मविश्वासपूर्वक कैसे कह सकता हूँ। परन्तु इतना कहना सम्भवतः असंगत न होगा कि जब भट्टजी के सुपुत्र पं० जनार्दन भट्टजी ने संस्मरणों को पढ़ा तो उन्होंने मुझे लिखा—इन संस्मरणों को पढ़ने से अनायास अनेक दृश्य और घटनाएँ जो विस्मृति के गर्भ में छिपी पड़ी थीं सहसा फिर जाग उठीं और चलचित्र के समान आँखों के सामने एक-एक कर नाच गया।'[2]

हिन्दी संस्मरण साहित्य में कुछ ऐसे लेखक भी हुए हैं जिन्होंने राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण अपने संस्मरणों में किया है। उन लेखकों को हम इतिहासकार और संस्मरणों की गणना इतिहास की श्रेणी में नहीं कर सकते। संस्मरण में तो लेखक केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करता है जिनसे समाज के जीवन में घटित होने वाले परिवर्तनों का संकेत मिलता है और जो भय जनता के कौतूहल का शान्त करने में सहायक हो सकती हैं।[3] हिन्दी संस्मरण साहित्य में राजनैतिक पुरुषों विषयक संस्मरण लिखने वालों में यशपाल का नाम प्रमुख है। इन्होंने सुखदेव, राजगुरु एवं भगतसिंह विषयक संस्मरण लिखे हैं। इन संस्मरणों में पाठक को तत्कालीन सभी परिस्थितियों का आभास सुचारु रूप से हो जाता है। इन संस्मरणों को लिखने का उद्देश्य यशपालजी ने परिचय में स्पष्ट किया है—

आत्मकथा या आपबीती लिखकर मैं पाठकों के सम्मुख आत्म-भाग रखने का संतोष अनुभव नहीं कर सकता। इसलिए इस कहानी को केवल स्मृतियों और अनुभवों का विचारार्थ अनुभव ही समझा जाना चाहिए। हम सभी लोग समाज की व्यापक हाँडी के एक-एक चावल हैं। हाँडी की अवस्था जानने

---

१ हिन्दी साहित्य कोष

२ बालकृष्ण भट्ट ब्रजमोहन व्यास पृ० १६

३ सिद्धान्तालोचन, प्रो० धर्मचन्द संत एम० ए०

के लिए कुछ चावला को निकालकर परख लिया जाता है। इस कहानी के रूप में मैं अपने पाठकों के सम्मुख अपने आपको और अपने साथियों को कुछ चावलों के रूप में प्रस्तुत करने का साहस कर रहा हूँ क्योंकि मैं अपने समाज की हाडी की अवस्था परखी जाने के लिए उत्सुक हू। [1]

इसी प्रकार किशोरीदास वाजपेयी ने भी अपने व्यक्तिगत सस्मरण लिखकर पाठकों को यह शिक्षा दी है कि जीवन म असफलता के कारण और सफलता की कुंजी क्या है ? यही बात अर्थात् सस्मरण लिखने के उद्देश्य का वाजपेयीजी ने 'निवेदन' म स्पष्ट कर दिया—

"साहित्य क्षेत्र म 'सफलता' चाहने वालो के लिए यह पुस्तक बडे काम की है। असफलता के कारण और सफलता की कुजी दोनो इस पुस्तक म ह। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस छोटी सी पुस्तक से हिन्दी जगत का उपकार होगा। [2]

इसी तरह शान्तिप्रिय द्विवेदी ने भी अपने बहन सम्बन्धी सस्मरण लिखने के उद्देश्य को स्पष्ट किया है—

'पथचिह्न म मैंने अपनी स्वर्गीया बहिन को भारत माता की आत्मा के रूप म स्मरण किया है। उसी के व्यक्तित्व का केन्द्रबिंदु बना कर अपने जीवन और युग की समस्या को स्पष्ट किया है। इस प्रकार यह पुस्तक व्यष्टि से समष्टि की ओर है।'[3]

उपर्युक्त विवेचन मे स्पष्ट है कि सस्मरण लेखक का उद्देश्य जहा स्वान्त सुखाय रचना करना है वहाँ प्रभावशाली अतीत की स्मृतियो का चित्रण करना भी है जिससे उस समय समय पर उत्साह व प्रेरणा मिलती रहे। प्रत्येक व्यक्ति की यह आकाक्षा होती है कि उसको जीवन म जो अनुभव हुए हैं वह दूसरो को बतलाए ताकि वे उनसे लाभ प्राप्त कर सकें। इसी उद्देश्य को लेकर प्रसिद्ध व्यक्ति अपने अनुभवो को सस्मरणो का रूप देकर पाठको के सामने रखते ह। ऐसा करने से उनको आत्म-सताप प्राप्त होता है यही सस्मरण लिखने का उद्देश्य है।

भाषा शैली—शैली अग्रेजी स्टाइल का अनुवाद है और अग्रेजी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी म आया है। शैली भी एक प्रकार का स्पृहणीय गुण है इसीलिए अच्छे लेखक ही अच्छे शैलीकार होते हैं। शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीको का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एव प्रभावपूर्ण बनाते हैं। सस्मरण शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका होना नितान्त

---

१ सिंहावलोकन, भाग १

२ साहित्यिक जीवन के अनुभव और सस्मरण, किशोरीदास वाजपेयी, प्रथम सस्करण निवेदन (ग)

३ पथचिह्न, शान्तिप्रिय द्विवेदी पृ० ५

आवश्यक है—

संस्मरण शैली में सर्वप्रथम प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। लेखक को इस प्रकार से संस्मरण लिखने चाहिए कि वह अन्य व्यक्ति पर प्रभाव डाल सकें। यह तभी हो सकता है यदि शैली में प्रभावोत्पादकता का गुण हो। प्रभावोत्पादकता से ही रोचकता उत्पन्न होती है। शिवपूजन सहाय ने विनोदशंकर व्यास का वर्णन रोचकता-पूर्ण किया है। इसी से पाठक के मन में प्रभावोत्पादकता उत्पन्न होती है, यही शैली का एक महत्वपूर्ण गुण है—

> देखा नीचे गली में एक गोरा गोरा सा खूबसूरत सफेदपोश नौजवान खड़ा है जिस की विहंसी हुई आंखें ऊपर की ओर मेरी तरफ देख रही थीं। लम्बे लम्बे बाल नई धज से सवार हुए थे। सलोना सा मुखड़ा पतले-पतले होठों पर पान की सुर्खी। मोती से चमकीले दांत मूछें घुटी हुई, हाथ में पतली सी नफीस छड़ी पैरों में आबदार पम्पशू, चुनी धोती चुना कुर्ता—बड़ी बांकी फबन थी। किन्तु इस छैल छबीलेपन में भी साहित्यिक छटा थी।'[1]

शैली की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता सुसंगठितता का होना है। संस्मरण शैली में सुसंगठितता से मेरा अभिप्राय है कि लेखक जिस भी घटना का वर्णन करता हो उसमें विचारों और भावों का तारतम्य होना आवश्यक है।

आत्मीयता का शैली में होना आवश्यक है। शैली में आत्मीयता से अभिप्राय है कि लेखक चाहे अपने जीवन के सम्बन्ध में लिखता है चाहे अन्य व्यक्ति के सम्बन्ध में, उसके संस्मरणों में उसके व्यक्तित्व की छाप पड़नी आवश्यक है। इस गुण से संस्मरणों की शैली में जान पड़ती है और इसको गद्य की अन्य विधाओं से पृथक् करती है।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषता संक्षिप्तता का होना है। लेखक को इस ढंग से व्यक्तिगत घटना एवं जीवन का वर्णन करना चाहिए कि वह पाठकों को आकर्षित कर सके। अधिक विस्तार से वर्णन किया हुआ संस्मरण नीरस हो जाता है। इससे पाठक का मन ऊब जाता है। इस प्रकार शैली में समास गुण व संक्षिप्तता का होना आवश्यक है।

इस प्रकार संस्मरणों की शैली में प्रभावोत्पादकता सुसंगठितता रोचकता, स्पष्टवादिता एवं आत्मीयता आदि गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों से शैली परिपक्व हो जाती है।

संस्मरण लिखने की कई शैलियाँ हैं। हिंदी संस्मरण साहित्य का पठन के पश्चात् ज्ञात होता है कि संस्मरण भी कई ढंग से लिखे जा सकते हैं। सर्वप्रथम शैली आत्मकथात्मक शैली है। जब लेखक अपने सम्बन्ध में संस्मरण लिखे तब वह इस शैली का प्रयोग करता है। इस संस्मरणों का शैली आत्मकथा की शैली के समान

---

1 शिवपूजन रचनावली, चौथा खंड, पृ० ३१८

होता है। इस प्रकार उसकी रचना भी आत्मकथा के निकट होगी। हिन्दी साहित्य म शान्तिप्रिय द्विवेदी एव किशोरीदास वाजपेयी के सस्मरण इसी शली के है।

कई सस्मरण लेखको ने अपन सस्मरण निबधात्मक शैली म लिखे हैं। ऐसी रचनाओं को निबधात्मक सस्मरण कहा जा सकता है। 'मेरी असफलताएँ' गुलाबराय के सस्मरणात्मक निबधो का सग्रह है।

कुछ सस्मरण हमें पत्रात्मक शली म भी प्राप्त होते हैं। जनेन्द्र और प्रेमचन्द सम्बन्धी कई सस्मरण पत्रात्मक शली म लिखे गए हैं।

डायरी शली मे लिखे हुए सस्मरण हिन्दी सस्मरण साहित्य म राहुल साकृत्यायन के प्राप्त होते हैं। इनकी पुस्तक 'यात्रा के पन्ने' मे इसी शली मे लिखे हुए सस्मरणो का सकलन है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध, परिमार्जित एव भावानुकूल होगी तभी वह पाठक को प्रभावित कर सकती है। स्वाभाविक एव प्रसादगुण का भाषा मे होना नितान्त आवश्यक है। यशपाल का कितनी स्वाभाविकता से अश्क न वणन किया है यह उनकी भाषा के प्रसादगुण का ही प्रतीक है—

"मैंने देखा—बढिया सूट पहने मँझले कद और सावल रग का एक युवक सफाई से कटे छटे छोटे बाल, चौडे खुले खुले अग मोटे ओठ घनी भवें और पिचके हुए कल्ले। किसी क्रान्तिकारी के बदल मुझे यशपाल किसी बिगडे हुए ईसाई युवक से लगे।[1]

भावानुकूल भाषा का प्रयोग शली को उत्कृष्ट बनाता है। शान्तिप्रिय द्विवेदी जी इस विषय म अपना हिन्दी सस्मरण साहित्य म प्रमुख स्थान रखते हैं। कहीं-कहीं तो इतना भावुक हो गए हैं कि उसी प्रकार के शब्दो का प्रयोग उन्होंने किया है—

'छुटपन म ही वह विधवा हो गई थी। उस अबोध वय म उसने जाना ही नहीं कि उसके भाग्य क्षितिज म क्या पट परिवतन हो गया। जन्मकाल से माँ का जो अचल उसके मस्तक पर फला हुआ था सयानी होने पर उसने वही अचल अपने मस्तक पर ज्यों का त्यों पाया मानो शशव ही उसके जीवन म अक्षुण्ण हो गया।'[2]

कहीं-कहीं अलकारिक भाषा का प्रयोग खटकने लगता है जसे कि जनेन्द्र ने गुप्तजी का विश्लेषण अलकारित भाषा म किया है—

'मानव स्वभाव का विकास दोहरा होता है दो दिशाओं मे होता है। एक और उपमा व्यक्तित्व की दी जाती है कि पर्वत की नाई अचल, वज्र की

---

१ (यशपाल) रेखाएँ और चित्र ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, पृ० ४७
२ पथचिह्न, ले० शान्तिप्रिय द्विवेदी पृ० ८

भांति अनिवार्य और कठोर इत्यादि। ये उपमाएं सन्त महात्माओं पर फबती हैं। दूसरी तरह की उपमाएँ हैं कि कुसुमवत् कोमल, जल सरीखा तरल आदि। इन उपमाओं के योग्य कवि होते हैं। जैसे बारीक तार का बना हुआ कोई कोमल वाद्य यन्त्र। तनिक चोट लगी कि उसमें से झंकार फूट आई।

मैथिलीशरण किस कोमल वाद्य यन्त्र के समान हैं यह तो मैं नहीं जानता। सवेदन की मूर्च्छना की सूक्ष्मता मैं क्या समझूँ ? लेकिन वह अपने भावों के वश में रखने वाला महात्मा नहीं है। भावना के साथ बहुत कुछ सम स्वर होकर बज उठने वाला कवि का स्वभाव उनका है।[1]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संस्मरणों की भाषा स्वाभाविक एवं भावानुकूल होनी चाहिए। शब्द चयन भी विषय एवं भावानुकूल होना चाहिए।

हिन्दी साहित्य में विकास

संस्मरण साहित्य भी गद्य की एक नवीनतम विधा है। गद्य की यह विधा भी योरोपीय साहित्य की देन है। ये जीवनी का दूसरा रूप कहलाते हैं। इनका निकटतम सम्बन्ध आत्मकथा के साथ है। हिन्दी साहित्य में जो भी संस्मरण लिखे गए हैं वे अधिकतर १९२० ई० के पश्चात्। सच तो यह है कि संस्मरण लिखने की प्रथा 'माधुरी' सुधा विशाल भारत आदि कुछ ही पत्रों ने डाली। ये सभी पत्र १९२० के बाद प्रकाशित हुए। इन्हीं संस्मरण साहित्य का विकास मैंने प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के आधार पर लिखने का प्रयास किया है।

बालमुकुन्द गुप्त

हिन्दी संस्मरण साहित्य के सर्वप्रथम लेखक बालमुकुन्द गुप्त हैं। गुप्तजी ने 'प्रतापनारायण मिश्र सम्बन्धी संस्मरण १९०७ ई० में लिखा। इसमें गुप्तजी ने मिश्रजी के जीवन एवं स्वभाव सम्बन्धी लिखा है। आरम्भ अत्यन्त रोचकपूर्ण है—

'हिन्दी साहित्य के आकाश में हरिश्चन्द्र के उदय से थोड़ा ही दिन पश्चात् एक ऐसा चमकता हुआ तारा उदय हुआ था जिसकी चमक-दमक देखकर लोग उसे दूसरा चन्द्र कहने लगे थे। उस चन्द्र के अस्त हो जाने के पश्चात् उस तारे की ज्योति और बढ़ी। कई हृदय के साथ कितने ही के मुख से यह ध्वनि निकलने लगी कि यही उस चन्द्र की जगह लेगा। पर दुःख की बात है कि वैसा होने से पहले ही कुछ दिन बाद वह उज्ज्वल नक्षत्र भी अस्त हो गया।'[2]

इतने ही इनकी एक और पुस्तक हरिऔधजी के संस्मरण प्राप्त होती है। प्रकाशित रूप में तो इस पुस्तक के लेखक का नाम वणीमाधव शर्मा है पर वास्तव में

---

१ मैथिलीशरण गुप्त, अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशक श्री ऋषि जैमिनी बरुआ पृ० ६८

२ भारत मित्र १९०७ ई०

जसाकि निवेदन' से स्पष्ट है इन सस्मरणो के लेखक बालमुकुन्द गुप्त ही हैं। इन्होने अपना नाम बदलकर या कल्पित नाम से ये सस्मरण लिखे हैं—श्यामनारायणजी हरिऔधजी से कहते हैं—

"मैं तो इस लेखक को जानता हूँ। इन लेखो को मुकुन्दजी ने लिखा है। आप उन्ह लिखने के लिए मना करते हैं और डाण्त रहते है अत उन्होने इस कल्पित नाम से ही लिखकर इन लेखो को भेजा था मुझे भली भाति ज्ञात है।'

इससे मेरा निजी अनुमान है कि य 'मुकुन्दजी बालमुकुन्द गुप्त ही हैं। इस पुस्तक म हरिऔधजी सम्बन्धी पन्द्रह छोटे छोटे सस्मरण लिखे हुए हैं जिनम उनकी प्रकृति एव जीवन सम्बन्धी कुछ विशेषताओ पर मुकुन्दजी ने प्रकाश डाला है। य सभी सस्मरण उनके व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। सस्मरणा म कही कही अन्य व्यक्तियो का परिचय लेखक न जहा पाठक को करवाया है उसम लेखक की शली एव विद्वत्ता दर्शनीय है। मौलवी साहब के वणन म उनकी भाषा एव शैली की प्रभावोत्पादकता देखने योग्य है—

'*वडे रगीन तबीयत के आदमी थे। ठिगना कद था, ठुमक ठुमककर* चलते थे। यदि कोई आदाबअज कर दता तो पचासो बार घूम घूमकर दखने लगते और मन म फूले न समाते। उनकी आखो पर मुनहली कमानी का चश्म *हमेशा चढा रहता।'* [1]

डॉ० श्यामसुन्दरदास

गुप्तजी के पश्चात् सस्मरण लेखको मे डा० श्यामसुन्दरदास आते हैं। इन्होने 'लाला भगवानदीन' विषयक सस्मरण लिखा। डाक्टर साहब ने लालाजी के सम्पूर्ण जीवन की झाकी अपन सस्मरण म सक्षिप्त रूप से लिखी है। *प्रत्येक कृति लेखक* के व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। यह सस्मरण भी डॉक्टर साहब के व्यक्तित्व से प्रभावित है। आलोचक होने के नाते सस्मरण म भी यह लालाजी के व्यक्तित्व की *आलोचना किए बिना नही रह सके*—

'कविवर दीन का स्वभाव बडा ही सरल तथा आकषक था। वह जब अपने शिष्या स वार्तालाप करते थ तो जान पडता था मानो वह उनके मित्र तथा *बराबरी के हो। सदव हँसना हँसाना उनक स्वभाव का सबस* बडा गुण था। उनके स्वभाव का तीसरा गुण स्पष्टवादिता थी।'[3]

श्री रामदास गौड

सन् १९२८ म श्री रामदास गौड सस्मरण लेखक हुए हैं। इन्होने प० श्रीधर

---

१ हरिऔध के सस्मरण पृ० २१
२ साहित्यिको के सस्मरण सम्पादक ज्योतिलाल भागव
३ वही, पृ० ८६

पाठक[1], 'रायदवीप्रसाद पूण'[2] सम्ब धी सस्मरण लिखे हैं। पाठकजी सम्बन्धी लिखा हुआ सस्मरण अत्यन्त रोचक है। इसमे लेखक ने उनके समस्त व्यक्तित्व की झाँकी प्रस्तुत की है। एक स्थान पर उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय म लिखते हैं—

> पाठकजी का जहाँ नैसर्गिक सौन्दय मनमोहक लगता था, वहाँ सजावट की कला को भी वह बहुत पसन्द करते थे। उनकी यह पसन्द मन कम वचन तीनो म व्यापक थी। उनके विचारो म सजावट थी। उनकी रचना म चुन चुन कर मधुर कोमल शब्द नग की तरह जटित हैं। उनकी कविता जडाऊ गहने के सदृश होती थी और उनके घर की सजावट बाग और मकान—उनकी रुचि को क्रिया के रूप मे परिणत करके दिखाते हैं।[3]

इसी प्रकार रायदेवीप्रसाद पूण के विषय म लिखा हुआ इनका सस्मरण भी इनकी उत्कृष्ट सस्मरण शैली का द्योतक है।

सन् १९२९ म कई हिन्दी सस्मरण लेखक हुए हैं जिन्होने अपने सस्मरण हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित करवाए। सवप्रथम श्री आचाय रामदेव ने अपने धमपिता श्रद्धानन्द के सस्मरण मेरी जीवन कथा क कुछ पृष्ठ[4] नाम स प्रकाशित करवाए। इसम उनकी जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाए सस्मरणात्मक रूप म लिखी गई हैं। इनके पश्चात् श्री अमृतलाल चक्रवर्ती के बालमुकुन्द गुप्त[5] के सस्मरण प्राप्त होते हैं। इन सस्मरणो म चक्रवर्ती ने गुप्तजी के साहित्यिक व्यक्तित्व के साथ साथ निजी व्यक्तिगत अनुभवो पर आधारित गुप्तजी क जीवन पर प्रकाश डाला है। सस्मरण अत्यन्त स्वाभाविक एव रोचक हैं। इनके सस्मरणो के बाद श्री जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के सस्मरण[6] प्राप्त होत हैं। इन सस्मरणो म चतुर्वेदीजी ने अपने जीवन की कुछ घटनाओ का वणन किया है।

इलाचन्द्र जोशी ने भी अपने जीवन की कुछ घटनाओ को सस्मरणात्मक शैली म इसी सन् म प्रकाशित किया।[7] मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतियाँ शीषक सस्मरणो म जोशीजी न बचपन की कुछ घटनाओ को रोचकपूण ढग स व्यक्त किया है। आलोचक होने क कारण अपनी आलोचनापूण शैली का परिचय पाठक को सस्मरणो म भी करवा दिया है। इनके अतिरिक्त श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने भी[8] कुछ सस्मरण

---

१ विशाल भारत १९२८ ई०
२ विशाल भारत १९२८ ई०
३ साहित्यिको क सस्मरण सम्पादक ज्योतिलाल भागव, पृ० ६४
४ विशाल भारत
५ विशाल भारत
६ विशाल भारत
७ सुधा फरवरी, जुलाई
८ सुधा जुलाई

शीर्षक में अपने जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाओं एवं अनुभवों का वर्णन किया है। ये संस्मरण उनकी इतिहास लेखक शैली के प्रतीक हैं।

सन् १६३० में श्रीनिवास शास्त्री के संस्मरण 'मेरी जीवन स्मृतियाँ'[1] नाम से प्राप्त होते हैं। इन संस्मरणों में शास्त्रीजी ने अपने जीवन की प्रमुख प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया है जिनका उनके जीवन पर अमिट प्रभाव है। इसके साथ-साथ जो भी महान् व्यक्ति उनके सम्पर्क में आए उनका भी इन संस्मरणों में उन्होंने उल्लेख किया है। शास्त्रीजी के ये संस्मरण संक्षिप्त होते हुए भी स्वाभाविक हैं।

सन् १६३१ में हिन्दी संस्मरण साहित्य के प्रसिद्ध लेखक बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'श्रीधर पाठक के संस्मरण'[2] प्राप्त होते हैं। पाठकजी विषयक लिखे हुए संस्मरण में निम्नलिखित उद्धरण उल्लेखनीय है—

> 'पाठकजी की कविता के अतिरिक्त जिन बातों का मुझ पर अधिक प्रभाव पड़ा, वे था उनकी मूर्ति, सुप्रबन्ध शक्ति और सौन्दर्य प्रेम। उनकी पद्मकोट नामक कोठा उक्त तीनों चीजों का सम्मिश्रण का परिणाम थी।"
>
> "साहित्य गोष्ठी के विषय में भी पाठकजी ने कई बार कहा। उनका विचार यह था कि प्रत्येक मास में कहीं प्रकृति की गोद में वृक्षों के नीचे अथवा नदी तट पर साहित्यिक सज्जन इकट्ठे हुआ करें। प्रत्येक व्यक्ति अपना भोजन भी यहाँ साथ लेता जाय और वहाँ साहित्य सम्बन्धी चर्चा हुआ करे।[3]

श्री सुरेन्द्र शर्मा के 'लाहौर श्री गणेशजी के संस्मरण' भी इसी वर्ष में प्राप्त होते हैं। इन संस्मरणों में सुरेन्द्र शर्मा ने गणेशजी के जीवन सम्बन्धी घटनाओं का संस्मरणात्मक रूप में रोचकपूर्ण शैली में वर्णन किया है।

सन् १६३२ में प० मगलदेव शर्मा के संस्मरण हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इन्होंने पर्सिंह शर्मा एवं मुन्शी प्रेमचन्द विषयक अपने संस्मरण लिखे हैं। इनके पर्सिंह शर्मा के सम्बन्ध में 'मेरे कतिपय संस्मरण' 'माधुरी' में प्रकाशित हुए। इनमें शर्माजी ने पर्सिंह शर्मा के जीवन की प्रमुख घटनाओं को संस्मरणात्मक रूप में वर्णन किया है। 'मुन्शी प्रेमचन्द संस्मरण' में से निम्नलिखित उद्धरण उल्लेखनीय है—

> "समष्टि से पूर्व व्यष्टि का संस्कार नितान्त आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण का महान समस्या वर्षों के बजाय महीनों में हल हो सकती है यदि व्यक्ति का चरित्र निर्माण हो जाय और प्रेमचन्द के प्रचार वाक्य में हम व्यक्ति को ऊँचा उठाने योग्य सामग्री मिलती है। प्रेमचन्द के प्रचार ... राष्ट्रोत्थान की कसरपूर्ण अनुभूति की छाप है। उनके कलाम में कौम के लिए दर्द और मोहब्बत है।'

---

१ विशाल भारत
२ विशाल भारत
३ विशाल भारत

"प्रेमचन्द में जीवन से हम अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं। वह असहाय गुमर जिसमें इट्रेंस से लेकर बी० ए० और सी० टी० प्राईवेट पास किया। घर वालों की नियमों की रोटी कमाते हुए, आज के बाप भाइयों की कमाई पर यूनीवर्सिटी होस्टलों में गुलछर्रे उड़ाने वाले विद्यार्थियों के सम्मुख स्वावलम्बनपूर्ण स्वाध्याय का एक ज्वलंत उदाहरण उपस्थित करता है।[1]"

सन् १९३३ में श्रीयुत रामनारायण जी मिश्र एवं श्रीयुत रूपनारायण पाडेय के सस्मरण प्रकाशित हुए। मिश्र जी के 'श्री प्रतापगारिक धमपाल जी'[2] में कुछ सस्मरण एवं पाडेय जी के सस्मरण[3] (द्विवेदी जी) नाम से प्राप्त होते हैं। पाडेय जी ने द्विवेदी के जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाओं का वर्णन किया है।

सन् १९३४ में प्रो० धवलानी[4] सम्बन्धी 'सस्मरण श्रीयुत धर्मवीर एम० ए० के प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त १९३५ सन् में मोहनलाल महतो के डा० गगानाथ भा[5] (सस्मरण) प्रकाशित हुए। सन् १९३६ में गोपालराम गहमरी के[6] 'साहित्यिक सस्मरण एवं मुन्शी ब्रजादिकलाल श्रीवास्तव[7] के स्वर्गीय महादेव प्रसाद के कुछ सस्मरण' लिखे गए। गहमरी जी के सस्मरण अपनी ही विशेषता लिए हुए हैं। इन्होंने कथावाचकों की तरह सस्मरण लिखे हैं। इनकी शैली अधिक प्रभावोत्पादक नहीं है।

बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखा हुआ[8] मीर साहब सस्मरण सन् १९३७ में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त गोपालराम गहमरी ने अपने जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाओं को[9] मेरे सस्मरण' नाम से प्रकाशित करवाया। इसमें गहमरी जी के जीवन की कुछ घटनाओं का पाठक को आभास मिलता है। इनके पढ़ने से इनके स्वभाव एवं साहित्यिक जीवन की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। उधर मोहनलाल महतो ने मा[10] शरत बाबू सस्मरण सन् १९३८ में लिखा।

सन् १९३९ में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्बन्धी दो प्रसिद्ध विद्वानों के सस्मरण प्राप्त होते हैं। कामताप्रसाद गुरु द्वारा लिखित[11] स्व० पडित महावीरप्रसाद

---

१ साहित्यिका के सस्मरण—सपादक ज्योतिलाल भागव
२ हस पृ० ११८, ११९
३ हस
४ सरस्वती
५ माधुरी
६ सरस्वती
७ विशाल भारत
८ विशाल भारत
९ सरस्वती
१० माधुरी
११ सरस्वती

द्विवेदी जी के 'सस्मरण एव सूयनारायण दीक्षित द्वारा'[1] द्विवेदी जी के कुछ सस्मरण हैं। इन सस्मरणो म द्विवेदी जी क जीवन सम्बधी कुछ घटनाओ का उल्लेख करते हुए उनके साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह

सन् १९४० के लगभग हिन्दी के नवप्रसिद्ध सस्मरण लेखक राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह क कुछ सस्मरण हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि क रूप म प्राप्त होते हैं। व कला की दृष्टि स अत्यन्त उत्कृष्ट हैं और जीवन को ऊँचा उठान वाले हैं। उनकी सस्मरणात्मक रचनाओ म 'सावनीसमा', 'टूटा तारा' और 'सूरदास', तीन प्रमुख हैं।

'सावनीसमा' म राजा साहब की बस्ती का ४०, ४५ वष पूव का ही चित्र है जो 'लालू बाबा' द्वारा प्रस्तुत किया गया था। रगीन तबीयत वाले इस वृद्ध न राजा साहब और उनक साथियो को यह कहानी सुनाई थी। इस कहानी के नायक थ गोपाल बाबू। इस कहानी को राजा साहब ने एक नया रूप दिया है और यह लालू बाबा की ओर से ही लिखा गया है। इसका रचनाकाल सन् १९३८ है। सन् १९३८ स ४० ४५ वष पूव राजा साहब की बस्ती का क्या स्वरूप था, कस शौकीन आदमी थे खास खास त्योहारो पर लाक जीवन म कसी मस्ती की घटनाएँ छा जाती थी—ये सब बातें बडी ही मजेदार भाषा म लिखी गई हैं। 'सावनीसमा' का अथ है सावन के दृश्य या सावन के नजारे। गोपाल बाबू के जाने स सावन सूना हो गया। यह कमक पुस्तक क पन्ने पन्ने पर अंकित है। राजा साहब लिखते हैं —

> 'आज की मेरी मानस दृष्टि पर यह सावनी चकरलस की पार्टी चक्कर काटती है। उस विलुप्त गौरव की धुधली स्मृति गोधूलि की म्लान आभा की तरह स्निग्ध भी है। करुणा भी।'[2]

राजा साहब न गोपाल बाबू क इस सस्मरण म केवल तत्कालीन समाज का चित्राकन ही नही किया वरन् अपनी सस्मरण लेखन कला के उत्कृष्ट रूप का परिचय भी दिया है। इस सस्मरण का सबसे बडा आकषण चित्रात्मक शैली, उर्दू मिश्रित भाषा और छोटे छोटे वाक्यो म गागर म सागर भरने का गुण है। चाहे उत्सव की तैयारी का वणन हो चाहे नारी के सौंदय का, चाहे प्राकृतिक वातावरण का अकन हो चाहे व्यक्तित्व के प्रतट्ट[?] का—राजा साहब एक चित्र सा खडा कर देते हैं सूक्तियाँ तो बराबर चलती ह।

टूटा तारा राजा साहब के कलात्मक सस्मरणो की दूसरी पुस्तक है। राजा साहब स्वय और हम भी उनकी सवश्रेष्ठ रचना मानते है। इस कृति म राजा साहब ने मौलवी मुरादबख्श और देवी बाबू क सस्मरण लिखे हैं। दोनो ही सामान्य व्यक्ति

---

१ सरस्वती

२ पृष्ठ २

थे पर अपनी मानवीय विशेषताओं के कारण वे असामान्य थे। राजा साहब उच्च वर्ग के सम्माननीय प्रतिनिधि रहे हैं और उनके सम्पर्क में अनेक सम्पन्न व्यक्तियों का आना स्वाभाविक है परन्तु उन पर लेखनी न चलाकर उन्होंने ऐसे व्यक्ति चुने हैं जो एक प्रकार से निरीह और नगण्य हैं। राजा साहब ने आरम्भ में अपने साहित्य और कला सम्बन्धी विचार देते हुए सारांश रूप में अपने दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—

"आखिर शरीर मात्र और मुजतन के रस से तो आप प्रतिदिन परिचित होते ही हैं पर हाँ कभी कभी रुचि में ताजगी लाने के लिए एकाध सूखी बाजार की रोटी भी बुरी नहीं।"[1]

मौलवी मुरादबख्श सूरत की दृष्टि से ही नहीं सीरत की दृष्टि से भी अच्छे थे—

'कान थे—कुचकुची कोनतार से पुते ताने थे। मगर जो रंग था वह गाढ़ा ही था और वह रंग हर्गिज खुशरंग नहीं था। चेहरे की बनावट भी कुछ अजब टेढ़ी थी उस पर चमक तो थी नहीं नमक भी नहीं था। बकरा की सी दाढ़ी और गर्दन तक जुल्फों की तैयारी छटांक भर के आदमी थे।"[2]

"देवी बाबा दूसरा संस्मरण है। इसका अपना अलग महत्व है। यह राजा साहब के अपने एक सम्बन्धी का करुण इतिहास है। वह सम्बन्धी अपनी भरी पूरी रियासत से हाथ धोकर अपने परिवार में आ गया था। उसने अपनी समस्त इच्छाओं को मार कर किस प्रकार त्याग का जीवन बिताया और अन्त में बसी उपहासास्पद स्थिति में परलोक को प्रस्थान किया—यह बड़ी विषादपूर्ण भाषा में वर्णन किया गया है। इस संस्मरण के आरम्भ में राजा साहब ने लिखा है—

"मुझे इस आसमान के तले से एक से एक पीड़ित एक से एक आर्त को देखने का अवसर मिला है। पर वह भाई भी दर्द भरी तसवीर देवी बाबा की करुण मूर्ति के सामने खरी नहीं उतरी। सो बात की बात यह है कि वह अथ से इति तक आँसू और उसाँस की जीवित प्रतिमा है।"[3]

सब मिलाकर 'टूटा तारा' में राजा साहब का कला, साहित्य और संस्कृति के प्रति दृष्टि का स्पष्टीकरण बड़े स्वाभाविक ढंग से हुआ है। भाषा शैली में भी सन्तुलन है और विषय विवेचन में भी। घटनाएं रस की बाना पहनकर पाठक को रुलाती, हँसाती और मानवता का बोध कराती हैं। नाम भी बड़ा सार्थक है। राजा साहब ने टूटा तारा लिखकर संस्मरण लेखन कला का आदर्श प्रस्तुत किया है।

सूरदास इस शृंखला की तीसरी कड़ी है। यह अपना की दुनिया की एक निराली भाँकी प्रस्तुत करता है। सूरदास राजा साहब का पगा कुली है। उसका बचपन का नाम मुरारी था पर आँखें चली जाने से सूरदास हो गया।

---

१ पृ० १३
२ पृ० १५
३ पृष्ठ ११७

वास्तव म 'सूरदास' म ग्रघा के रोमास का चित्रण है। राजा साहब न यह प्रयत्न किया है कि जिन्ह हम नीच, घृणित ग्रौर तुच्छ समझते हैं उनकी चारित्रिक दृढता का परिचय पा सकें। उच्च, प्रतिष्ठित ग्रौर महान् कहलान वाला म भी सूरदास ग्रौर धनिया जस सयम दुलम हैं।

सामूहिक रूप स य तीनो सस्मरणात्मक पुस्तकें ग्रपनी विशेषता रखती हैं। सावनीसमा म सामन्ती विलासा का ग्रोर सकेत है टूटा तारा म दो सामाजिक दृष्टि म नगण्य परन्तु हृदय की दृष्टि स धनी ग्रौर ग्रान क पक्के व्यक्तिया की जीवन भाँकी है ग्रौर सूरदास म ग्रघा के प्रेम का प्रदशन है। इन सस्मरणा के ग्राधारभूत व्यक्तिया म स प्रत्यक ग्रपनी करुण छाप छोडता है ग्रौर पाठक उनके प्रति सहानुभूति से भर उठता है। स्वय लेखक की ग्रन्तदृष्टि ग्रौर सवेदना के प्रति भी ग्राकृष्ट हुए विना नही रहा जाता। उसके व्यक्तित्व की ग्रनेक नातव्य वात इनम पिरोई हुई हैं। वह इतना ग्रात्मीयता स इन व्यक्तिया के ग्रन्त वाह्य जीवन का चित्रित करता है कि शब्द शब्द सजीव होकर लघुता के प्रति उसके ग्रन्तर की सहानुभूति का जय-जयकार करता है। जीवन ग्रौर जगत को समझने के ग्रसख्य सूत्र इन सस्मरणा म बिखर पडे हैं। सब स बडी बात यह है कि य कथा शली म लिखे गए है। इनम यथास्थान मार्मिक सवादा स नाटकीय प्रभाव उत्पन्न किया गया है। साथ ही ग्रौपन्यासिक ग्रन्तद्वन्द के भी स्थान-स्थान पर दशन होते हैं। इनकी जान इनकी भाषा शली है। सावनीसमा' ग्रौर टूटा तारा की भाषा शैली तो बेजोड है।[1]

राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह के पश्चात् गुलाबराय के निबन्ध शली म लिखे हुए सस्मरण मेरी ग्रसफलताएँ पुस्तक म सग्रहीत हैं। ग्रपने जीवन की कुछ घटनाग्रो को सस्मरणात्मक रूप म प्रकट करने का इन्होंने सफल प्रयास किया है।

महादेवी वर्मा

महादेवी हिन्दी साहित्य की कलापूण कलाकर्त्री हैं। कवियित्री हैं ग्रालोचिका भी हैं ग्रौर सफल सस्मरण लेखिका भी। ग्रतीत के चलचित्र (१९४१ ई०), स्मृति की रेखाएँ (१९४३ ई०) एव शृखला की कडियाँ (१९५० ई०) महादेवी जी के तीन सस्मरणात्मक गद्य सग्रह हैं। सामाजिक वैषम्य एव नारी हृदय की करुणा, वेदना व्यथा का इनम ममस्पर्शी बौद्धिक विश्लेषण है। काव्य जगत की भावुक प्रणयिनी कवियित्री ग्रपन सस्मरणा म धरती की बेटी बन कर मा बहन के रूप म ग्रवतरित हुई है। ग्रात्मनिवेदिता कवियित्री न स्वात्मपीडन से उन्मुक्त होकर युग सापेक्ष्य गतिवान रूप स्वीकार लिया है ग्रौर उसका ग्रात्मरद्ध कलाकार ग्रपने सस्मरण साहित्य म युगा युगो स पीडित तिरस्कृत मानवता की वकालत के लिए तनकर खडा हो गया है।

---

१ राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह व्यक्तित्व ग्रौर कृतित्व—डॉ० कमलेश

समाज के परम उपेक्षित तत्त्व ही उनके संस्मरणों की वस्तु हैं जिन पर उनकी कोमल करुण स्मृतियों का वितान तना है। इन परम उपेक्षित प्राणियों के साथ उन्होंने पारिवारिक निकटता प्राप्त की है। निम्न से निम्न और छोटे से छोटे व्यक्तित्व में भी महत्ता को लक्ष्य करके उनके कलाकार ने उन उपेक्षित प्राणियों के हृदयों में झाँका है। इन परम उपेक्षित प्राणियों में भी महादेवीजी का कलाकार तिरस्कृत हिन्दू नारी पर अधिक केन्द्रित रहा है। फलस्वरूप सबिया, विधवा मारवाड़िन लछमा और बिन्दो उनके संस्मरणों की अमर पात्री बन गई हैं। संस्मरणों की भाषा शैली अद्वितीय है। संस्मरणों में स्वाभाविकता होने से पाठकों को आनन्द का अनुभव होता है।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के 'गुरुदेव के संस्मरण'[1] सन् १९४२ में एवं कैलाशनाथ काटजू के 'मेरे माता जी'[2] सन् १९४८ में प्राप्त होते हैं। किशोरीदास वाजपेयी के[3] 'पुरुषोत्तमदास टंडन (कुछ संस्मरण)' भी सन् १९४४ में ही प्रकाशित हुए। उधर सन् १९४५ में डा० सत्यप्रकाश के 'राजनैतिक जीवन सम्बन्धी संस्मरण'[4] भी प्राप्त होते हैं। इन सभी लेखकों ने जो भी संस्मरण लिखे हैं वे सब व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं।

सन् १९४६ में पंडित रामनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'हिन्दी प्रचार सम्बन्धी कुछ संस्मरण'[5] उमाशंकर शुक्ल के 'अखिल भारतीय नई तालीम सम्मेलन संस्मरण'[6] एवं पद्मसिंह शर्मा द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्मरण' प्राप्त होते हैं। पंडित रामनारायण मिश्र के संस्मरणों में भट्टजी के जीवन के प्रत्येक पहलू को लिया है—क्या गार्हस्थिक, क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक, क्या साहित्यिक और क्या धार्मिक सभी के विषय में अपने संस्मरणों में वर्णन किया है। इसके साथ उनके स्वभाव एवं व्यक्तित्व आदि पर भी प्रकाश डाला है। इसी वर्ष गंगाप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'प्रेमचंद'[7] (संस्मरण) भी प्रकाशित हुआ। इसमें मिश्र जी ने प्रेमचन्द के जीवन की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डाला है। राहुल सांकृत्यायन के 'तिब्बत यात्रा के संस्मरण' भी इसी सन् में प्रकाशित हुए। इनमें राहुलजी ने एक अगस्त से लेकर आठ अगस्त तक की तिब्बत यात्रा के संस्मरणों को लिखा है। जो भी स्थान,

---

१ विशाल भारत
२ विशाल भारत
३ माधुरी
४ सरस्वती
५ सरस्वती
६ विशाल भारत
७ हंस
८ आजकल

मवन् एव प्राकृतिक दृश्य लेगक न देगे उन्हा का वणन दुलभ है।

सन् १६५० म बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखे दो महान् पुरुषा पर सस्मरण प्रकाशित हुए। 'एण्ड्रूज क सस्मरण 'एव 'स्वर्गीय रामानन्द चट्टोपाध्याय एक सस्मरण प्राप्त होत हैं। यहा नही श्री भास्करमल शर्मा एव श्री बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित बालमुकुन्द गुप्त स्मारक ग्रन्थ भी इसी वष प्रकाशित हुआ।

बालमुकुन्द गुप्त स्मारक ग्रन्थ

गुप्त स्मारक ग्रन्थ का उत्तराद्ध विविध सस्मरणा तथा श्रद्धाजलिया का सकलित ग्रन्थ है जिसम तीन श्रद्धासमपण और सतीस सस्मरण तथा श्रद्धाजलियाँ हैं। सवप्रथम माधुरी सम्पादक प० रूपनारायण पाडेय का श्रद्धासमपण है। पाडेयजी न गुप्तजी का स्थान उन विवेकशील राष्ट्रभक्त तथा देश के सपूतो म प्रधान माना है जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनान के सुयोग्य बनाया है। पाडेयजी के श्रद्धासमपण म गुप्तजी का सही चित्र अकित हुआ है तथा उनकी काव्यगत विशेषताओ पर सम्यक् प्रकाश पडा है। इसके पश्चात् अयोध्यासिंह उपाध्याय की सस्मरणात्मक तीन पक्तियाँ हैं जिनम उपाध्यायजी ने गुप्तजी की भारत मित्रकालीन हिन्दी सवा को सगव स्वीकार किया है किन्तु गुप्तजी की हिन्दी की सवा की यह स्वीकृति शब्द-दारिद्रय की सूचक है। तत्पश्चात् श्री गिरिधर शर्मा का एक सस्कृत श्लोक है जो गुप्तजी की विशेषताओ का उल्लेख करता है।

गुप्तजी विषयक सर्वोत्तम सस्मरण जमाना' सम्पादक श्री दयानारायण निगम का है जिसका हिन्दी अनुवाद 'बहुत सी खूबियाँ थी मरन वाले म शापक से पडित हरिशकर शर्मा ने विशाल भारत सितम्बर सन् १६२२ ई० म प्रकाशित कराया था।[3] यही इस ग्रन्थ म सम्मिलित है, प्रस्तुत सस्मरण अति भावात्मक तथा आत्मीयता से ओतप्रोत है। आलोच्य सस्मरण गुप्त जी क साहित्य का अध्ययन करन म पथ प्रदशक का काम करता है।

शेष सस्मरणा म स अमृतलाल चक्रवर्ती का तजस्वी गुप्तजी' बाबू गोपाल राम गहमरी का 'गुप्तजी का शुभानुस्मरण महावीरप्रसाद का सहकारी का अनुभव', अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'गुप्तजी की स्मृति म, प गिरिधर शर्मा का लखनी का प्रभाव, सठ कन्हैयालाल पोद्दार का गौरवान्वित गुप्तजी, बाबू रामचन्द्र वर्मा का मरे आदश, प० श्रीनारायण चतुर्वेदी का गुप्तजी का व्यग्य और हास्य, श्री रामधारी सिंह दिनकर का गुप्तजी कवि के रूप म, प० किशोरीदास वाजपेयी का 'समालोचक प्रतिभा और कतव्य निष्ठा, प० श्री रामशर्मा का 'पत्रकार पुगव गुप्तजी, आदि सस्मरण इस दृष्टि स अधिक उत्कृष्ट हैं कि इनके द्वारा गुप्तजी की पत्रकारिता

१ आजकल

२ विशाल भारत

३ जमाना लाला बालमुकुन्द गुप्त, अक्तूबर-नवम्बर, १६०७, पृ० २०७

की विनोदप्रियता भाषा शुद्धता हिन्दी गद्य का निर्माण उत्तम व्यंग्य एवं हास्य शैली की परम्परा का स्थापन, कविता की विशेषता तथा भारतेन्दु परम्परा परिपालन का ज्ञान होता है और होता है हिन्दी साहित्य के इतिहास में गुप्तजी के स्थान का निर्धारण।

उक्त संस्मरण संग्रह में से प्रथम छः तो गुप्त जी के सामयिक लेख हैं। इन लेखों में गुप्तजी विषयक कुछ अच्छे संस्मरण आ गए हैं किन्तु इन्हें सर्वांगीण दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं कहा जा सकता क्योंकि इनमें शैली दम और अपने व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित गुप्तजी सम्बन्धी अधिक संस्मरणों का अभाव है।[1]

इस प्रकार १९०० से १९५० तक के हिन्दी संस्मरण साहित्य का विकास अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में ही अधिक संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। इनकी उन्नति का कारण ये पत्र-पत्रिकाएँ ही हैं विशेषतया—सरस्वती माधुरी हंस विशाल भारत। बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी तीन संस्मरण पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाकर अपनी प्रतिभा का परिचय हिन्दी साहित्यिकों को दे दिया था। संस्मरणों के विविध विषय भी देखने में आ गए थे। साहित्यिक लेखकों राजनीतिज्ञों के विषय में जहाँ संस्मरण लिखे गए वहाँ महादेवी वर्मा एवं राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह ने ऐसे मनुष्यों को अपने संस्मरणों का विषय बनाया जो कि साधारण मनुष्य होते हुए भी मानवीय गुणों के कारण असाधारण व्यक्ति हैं। महादेवी एवं राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह का समस्त संस्मरण साहित्य इस बात का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त राहुलजी ने यात्रा विषयक संस्मरण भी लिखे। आत्मकथा की शैली में लिखे हुए जोशीजी के संस्मरण मिलते हैं। अभी तक हिन्दी संस्मरण साहित्य में ऐसी पुस्तक नहीं प्राप्त होती जिसमें किसी साहित्यिक के सम्पूर्ण जीवन को संस्मरणों के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के किसी भी संस्मरण लेखक ने संस्मरणों के रूप में अपने जीवन को नहीं लिखा। गोपालराम गहमरी ने कुछ लिखने का प्रयास किया था। परन्तु उनकी शैली और भाषा प्रभावोत्पादक नहीं दीख पड़ती। अभी तक केवल एक गुप्त स्मारक ग्रन्थ प्राप्त होता है जिनमें भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। सन् १९२८ से १९५० तक हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने संस्मरण साहित्य के उत्थान में पूर्ण सहायता दी है।

सन् १९५१ में भदन्त आनन्द कौसल्यायन के 'कहा जाओगे कहाँ रहोगे'[2] एवं देवेन्द्र सत्यार्थी के 'कोटा अधिवेशन'[3] के संस्मरण प्रकाशित हुए। भदन्त आनन्द कौसल्यायन के संस्मरण में १६ १७ वर्ष के लड़के ओमन का वर्णन है। लड़के ने बाल्यकाल की जो कहानी सुनाई थी, लेखक ने उसी का वर्णन किया है।

---

१ बालमुकुन्द गुप्त जीवन और साहित्य ले० डा० नत्थनसिंह प्रथम संस्करण जनवरी १९५९ पृष्ठ २३

२ आजकल

३ आजकल

सन् १६५१ म हिंदी सस्मरण साहित्य के दो प्रसिद्ध लेखक—शान्तिप्रिय द्विवेदी एव राहुल साकृत्यायन की कृतिया प्राप्त होती हैं।

शान्तिप्रिय द्विवेदी

शान्तिप्रिय द्विवेदीजी हिंदी के प्रसिद्ध सस्मरण लेखक हैं। इनके सस्मरण हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इनकी दो *सस्मरणात्मक रचनाएँ प्राप्त होती है*— परिव्राजक की प्रजा एव पथचिन्ह।

'परिव्राजक की प्रजा' मे श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने छोटे छोटे अनेक सस्मरणो के रूप म अपनी आत्मकथा लिखी है। शान्तिप्रिय क पिता सन्यासी हो गए थे। ग्रन्थ मे इन्ही सन्यासी (परिव्राजक) पिता की सन्तान (प्रजा) की जीवनगाथा वर्णित है। इस ग्रन्थ म दा ही व्यक्ति प्रमुख हैं—एक शान्तिप्रिय दूसरी उनकी बडी बहन। बडी बहन करुणा की सजल मूर्ति है। वह बाल विधवा अपने छोटे से जीवन म माता पिता, छोटी बहन और दो कोमल भाइयो की मृत्यु का आघात झेलती है और बच्चो के समान शान्तिप्रिय का लालन-पालन करती है। शान्तिप्रिय न उन्हे धार्मिक सुरुचि पूर्ण आचार विचार का ध्यान रखने वाली और परिश्रमी चित्रित किया है। उनकी तुलना मीरा और स्वर्ण की कल्पलता स की है। इस बहन के प्रति शान्तिप्रिय की अत्यधिक श्रद्धा है अत वर्णन प्राय अतिशयोक्तिपूर्ण और अतिरजित हो गए है। अपने को बधिर और कृशकाय बतलाया है। इस कृशता की तुलना उन्होने मृगशावक, शशक कुडमल और ओस बिन्दु स की है। ये उपमान उनके लिए कहा तक उपयुक्त है यह तो व ही लोग बता सकेंगे जिन्होने इनके भी दर्शन किये हैं।

इस आत्मकथा म शान्तिप्रिय ने अपने साहित्यिक और सासारिक जीवन के *विकास के साथ अपनी बडी बहन के प्रति हृदय की समस्त श्रद्धा* उँडेलते हुए अपने अभावो का खुला वर्णन किया है। यद्यपि लेखक के अकर्मण्य होने और विषम परिस्थितियो म सघर्ष से पलायन करने के कारण इस कृति से पाठको को कोई सामाजिक प्रेरणा नही मिलती फिर भी इसके कुछ स्थल बडे मर्मस्पर्शी और पठनीय बन पड हैं।

वर्णन की दृष्टि से यह ग्रन्थ बडा महत्वपूर्ण है। शान्तिप्रिय को कवि हृदय मिला है और उसका प्रभाव उनकी गद्य शैली पर भी पडा है। विभिन्न प्रसगो के बीच सरयू तट और सरोवर खेल और अमराईया शरद चादनी और पत्र पर कनेर नीबू नीम और बर जिस किसी भी वस्तु को इन्होने बाह्य वस्तु वर्णन के रूप मे ग्रहण किया है उस चमका दिया है। काशी तो बहुत ही सजीव इनक सस्मरणो मे पाई गई है।

इन सस्मरणो म अनेक व्यक्तियो की चर्चा हुई है। राजनतिक क्षेत्र म जिन महापुरुषो की चर्चा है उनकी झाकियाँ ही इस ग्रन्थ म मिलती हैं। नाम तो इन्होंने बहुत स व्यक्तियो क लिए है जसे—महात्मा गाधी, नेहरू राजेन्द्रप्रसाद, सरोजिनी नायडू गणेशशकर विद्यार्थी, चन्द्रशेखर आजाद आदि पर इसे राजनीतिक महापुरुषो का सम्पर्क नही कह सकते। धर्म के क्षेत्र म थियोसोफिकल सोसाइटी, आर्य समाज और

ईसाई प्रचारकों की चर्चा मात्र है। इससे इनके मन की किसी गहरी प्रतिक्रिया का पता नहीं चलता।

साहित्यिकों में प्रसाद और रायकृष्णदास की चर्चा थोडी अधिक है। अन्य साहित्यकारों में प्रेमचन्द, बनारसीदास चतुर्वेदी, कृष्णबिहारी मिश्र, पदमलाल पुन्नालाल बख्शी, उग्र, दुलारेलाल भार्गव, निराला, पन्त, महादेवी, नवीन, भगवतीचरण वर्मा और रामकुमार का उल्लेख हुआ है।

पदचिन्ह

'पदचिन्ह' श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी के संस्मरणों और निबन्धों का छोटा सा संग्रह है। संस्मरण है अपने और अपनी बहन के सम्बन्ध में, निबन्ध हैं कला और संस्कृति को लेकर। संस्मरण भावप्रधान हैं, निबन्ध विचारप्रधान। संस्मरणों में शान्तिप्रिय का कवि हृदय लौट आया है। निबन्धों में आलोचक बोल रहा है।

शोक के गहरे आघात से इस ग्रन्थ का सृजन हुआ है। मृत्यु के आघात और उनकी आशंका ने सदैव जीवन्त रचनाओं को जन्म दिया है। इन संस्मरणों में शान्तिप्रिय ने अपने बचपन की ही चर्चा अधिकतर की है। इससे उनके व्यक्तित्व का अंश ही हमारे सामने आता है। वह भी ऐसा है जिसके सम्बन्ध में वे वह सकते है कि मैं अपने को जैसा समझता हूँ वैसा मैंने चित्रित किया है। आप लोग क्या समझते हैं इसकी मैं चिन्ता नहीं करता। फिर भी पुस्तक में जीवनी और विचारों के बीच एक बडी खाई सी दिखाई देती है। अपने सम्बन्ध में शान्तिप्रिय ने कुछ कुछ लिखा है उससे उनके जीवन की बहुत सी बातों पर प्रकाश पडता है। उन्होंने परिस्थितियों का वर्णन बडी स्पष्टता और तत्परता से किया है जो उनके व्यक्तित्व के विकास या उसे कुचलने में संलग्न रही। इसमें सन्देह नहीं कि यह संस्मरण बहुत भोलेपन के साथ लिखा गया है और हृदय पर इसका संस्कार बहुत कम पडता है।

बनारसीदास चतुर्वेदी

सन् १९५२ में बनारसीदास चतुर्वेदी के 'संस्मरण' प्रकाशित हुए। इन्होंने बहुत ही कलापूर्ण ढंग से संस्मरण लिखे हैं। भाषा बडी ही सजीव तथा वर्णन शैली आकर्षक है। संस्मरण में २१ व्यक्तियों के संस्मरण २८१ पृष्ठों में लिखे हैं। इसी पुस्तक में भवानीदयाल संन्यासी का संस्मरण है। उनके जीवन के संस्मरण के कुछ अंश निम्नलिखित है—

> पर स्वामीजी का जीवन एकांगी नहीं था। आर्य समाज, हिन्दी प्रचार, प्रवासी भाइयों की सेवा और साहित्य रचना—इन चारों क्षेत्रों में स्वामीजी ने बडी सफलतापूर्वक काम किया।
>
> स्वामीजी चाय के बडे शौकीन थे और विशाल भारत आफिस के जब कभी पंडित पद्मसिंह शर्मा तथा स्वामीजी का आगमन होता था तो हमारे

सहचारी श्री ब्रजमोहन वर्मा 'एकटा घोरचा तयार कराते और टोस्ट ता उसके साथ होता ही। स्वामीजी का धूम्रपान भी साथ साथ चलता ही था।'[1]

राहुल साकृत्यायन

सन् १९५१ म राहुलजी की 'यात्रा के पन्ने' पुस्तक प्रकाशित हुई। डायरी शैली म लिखी गई यह सर्वप्रथम संस्मरणात्मक पुस्तक है। इस पुस्तक म लेखक ने तिब्बत यात्रा का वणन किया है। यह चार भागो म विभाजित की गई है—तिब्बत म, अनात तिब्बत प्रवास पत्र एव राजस्थान विहार। प्रत्येक स्थान व घटना का वणन तिथि अनुसार किया गया है। निम्नलिखित उद्धरण स यह स्पष्ट है—

'२९ जुलाई को भोजन करके ७ बजे चले। दानू म शिगर्चे जान म तीन छोटी छोटी नदिया पडती हैं। पानी नही बरसा था इसलिए हम उनके पार करने म कोई दिक्कत नही हुई और दोपहर को शिगर्चे पहुच गए।'[2]

किशोरीदास वाजपेयी

सन् १९५३ म किशोरीदास वाजपेयी की पुस्तक 'साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण' प्रकाशित हुई। समस्त पुस्तक के चार भाग हैं। जीवन म जो भी अनुभव उन्ह हुए उन सभी का वणन इसम है। जीवन म असफलता के कारण और सफलता की कुजी दोनों ही इस पुस्तक म हैं। प्रत्येक घटना का वणन शीषक देकर किया है। भाषा तथा शैली की अनेक समस्याओ पर भी वाजपेयीजी ने अपने विचार प्रकट किए हैं। भाषा की स्वाभाविकता एव शैली की प्रभावोत्पादकता पठनीय है।

जनेन्द्र

हिन्दी संस्मरण साहित्य म जनेन्द्र का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी संस्मरणो पर लिखी पुस्तक 'ये और वे' नाम से सन् १९५४ म प्रकाशित हुई। इसम बारह संस्मरणो का सकलन है। इस पुस्तक म प्रेमचन्द का भी संस्मरण है। उनके जीवन के कुछ संस्मरण के अश निम्नलिखित है—

उनका जीवन एक आदश गृहस्थ का जीवन था। बुद्धि द्वारा उन्होंने स्वतन्त्र और निबाध चिन्तन के जीवन व्यवसाय को अपनाया सही पर कम म वह अत्यन्त मर्यादाशील रहे। आर्टिस्ट के संकुचित परिश्रमी अर्थों में उन्होंने आर्टिस्ट बनने की स्पर्द्धा नही की। यही मर्यादाशील प्रामाणिकता उनके साहित्य की धुरी है। उनके साहित्य म जीवन की आलोचना तीव्र है, चहुमुखी है किन्तु एक सवसम्मत आधारशिला है जिसको उन्होंने मजबूती से पकड रक्खा और जिस पर उन्होंने एक भी चोट नही लगने दी।'

---

१ संस्मरण, प्रथम संस्करण, पृ० संख्या १७६ १७९

२ पृ० ७९

"मानवीय भावनाओं का परनिर्मित स्नेह का दय प्रेमचन्दजी म था जिसको कलाकार समझा और जानना चाहता है, उसम इसकी सम्भावना रहती है। कलाकार इतना आत्मग्रस्त हो जाता है कि औरों क प्रति उपेक्षावृत्ति धारण कर ले। प्रेमचन्दजी आत्मग्रस्त न थे बल्कि वह परग्रस्त थ।[1]

इसी पुस्तक म मथिलीशरण गुप्त का भी सस्मरण है उनक जीवन क सस्मरण के कुछ अश निम्नलिखित हैं—

'अपन स बडा को बडा मानत है और यह हो सकता है कि इसम अपने स छोटो को भी बडा मान बठ। लकिन जिनको अपने स छोटा मानना होता है उनसे प्रत्याशा रखते हैं कि छोटो की तरह बडा का मान रखकर व चल। वय की अवज्ञा उन्हें नापसन्द है और वय की वृद्धता के कारण मूढ भी उनके निकट आदरणीय हो सकता है। विद्या बुद्धि नही गुण भी उतना नही जितना सामाजिकता के लिहाज से मनुष्य मनुष्य क प्रति अपन व्यवहार मे वह भेद करते हैं। राजा और रक उनके लिए समान नही है। राजा को हुजूर कहगे, रक को तू भी कह देंगे। लेकिन दबेंगे राजा से नही दबाएँगे रक को भी नही।[2]

इन्होंने बहुत ही कलापूर्ण ढग से सस्मरण लिखे हैं।

घनश्यामदास बिडला

सन् १९५५ मे घनश्यामदास बिडला क गाधीजी की छत्रछाया म व्यक्तिगत सस्मरण प्रकाशित हुए। इन सस्मरणो मे तत्कालीन राजनतिक सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितियो का ज्ञान होता है। साथ म बिडला का गाधीजी के साथ कसा सम्बन्ध था, गाधीजी उन्हे कसा व्यक्ति समझते थे इन सब बातो का आभास हम सस्मरणो म मिलता है। बिडलाजी ने अपने जीवन की समस्त घटनाओ की वास्तविकता दिखान के लिए कुछ पत्र भी दिए हैं—

'इन पृष्ठो म यह भी दखने को मिलेगा कि किस प्रकार भाति भाति के कामो स घिरे रहने पर भी गाधीजी बिडला से सम्बन्ध रखने वाली जरा जरा सी बात मे व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी रखते थे—ठीक वसे ही जस कोई पिता अपनी सन्तान के कायकलाप मे रस लेता है।[3]

सस्मरण सम्बन्धी इनकी दूसरी पुस्तक सन् १९६३ म 'कुछ देखा कुछ सुना प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक की सबस बडी विशेषता यह है कि लखक ने बड स बडे स लेकर छोटे से छोटे व्यक्ति तक पर लखनी उठाई है। एक ओर ठक्करबापा, गाधीजी नहरूजी प्रभति क सस्मरण लिखे है तो दूसरी ओर हीरा और नाहरसिह जस व्यक्तियो के विषय म भी इन्होंने लिखा है।

---

१ पृ० ३६, ५४

२ पृ० ७८

३ पृ० ६

यशपाल

हिन्दी सस्मरण साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों मे यशपाल का नाम भी अग्रगण्य है। इनके सस्मरणो के तीन भाग 'सिंहावलोकन' नाम से १९५२ एव १९५५ सन् मे प्रकाशित हुए। इनके सस्मरणो मे सशस्त्र क्राति की कहानी है। इनमे राजगुरु सुखदेव एव भगतसिह सम्बन्धी सस्मरण विशेष रूप से पाए जाते हैं। इनके सस्मरणो मे तत्कालीन राजनतिक सामाजिक परिस्थितियो का पूर्ण रूप से ज्ञान होता है। इन सस्मरणो को पढने से ज्ञात होता है कि किन किन कठिनाइयो का सामना करने से हमे यह स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुई है। प्रथम भाग मे यशपाल ने अपने जीवन से सम्बन्धित अधिक सस्मरणो का उल्लेख किया है। सस्मरणो मे लेखक की निर्भीकता एव स्पष्टवादिता का ज्ञान पाठक को मिल जाता है। भाषा शैली सशक्त होने से सस्मरण अधिक प्रभावोत्पादक बन पडे हैं। चारो ओर क्रातिकारी वातावरण होने से भी सस्मरणो मे रोचकता है।

उपेन्द्रनाथ अश्क

सन् १९५५ मे अश्कजी की पुस्तक 'रेखाएँ और चित्र' प्रकाशित हुई। इसमे रेखाचित्र सस्मरण और हास्य रस के निबन्धो का सग्रह है। सस्मरण केवल दो ही हैं यशपाल और होमवतीजी। इनकी एक और पुस्तक 'मटो मेरा दुश्मन' सन् १९५६ मे प्रकाशित हुई। इस पुस्तक मे उस महान् लेखक के साथ अश्क द्वारा बिताए गए दिनो की दर्दीली और दिलचस्प कहानी है। अश्क ने बडे ही निकट से उसे पहचाना था, उससे बेहद प्यार किया था और बेहद नफरत की थी। उन्ही बातो और घटनाओ को एकत्रित करके इस अनूठे सस्मरण मे सँजो दिया गया है। निम्नलिखित उद्धरण उल्लेखनीय हैं—

'मटो जब गाली देने पर माफी माँग लेता था इतना मादा उसमे था, तब फिर क्या कारण है कि हम मे बराबर खिंचाव रहा और हम लडते रहे? मैंने स्वय इस बात पर गौर किया है और मैं हमेशा इसी निष्कर्ष पर पहुचा हूँ कि जिन्दगी की बिसात पर हम एक दूसरे के सामने रख दिया गया और हम लडने पर मजबूर रहे। अगर कही बराबर मिलकर बैठ भी तो एक-दूसरे से लडते हुए एक-दूसरे के पतरे को काटकर शिकस्त देने वाले मोहरो की तरह।"[1]

'मटो जिस तरह पीटना जानता था—लेकिन पिटना नहीं, पढाना जानता था लेकिन पढना नही उसी तरह मजाक करता था पर मजाक बर्दाश्त करने की शक्ति उसमे नही थी, उसे बडी जल्दी गुस्सा आता था।'[2]

इस प्रकार सभी सस्मरणो मे लेखक की कला कुशलता निखर उठी है।

---

१ पृ० ७२
२ पृ० ६२

शिवरानी देवी

सन् १९५६ में 'प्रेमचन्द घर में' शिवरानी देवी द्वारा लिखित पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में शिवरानी देवी ने प्रेमचन्द के सम्पूर्ण जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत की है। इस पुस्तक में घरेलू संस्मरण मिलते हैं पर इन संस्मरणों का साहित्यिक मूल्य इस दृष्टि से है कि उस महान् साहित्यिक के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। मानवता की दृष्टि से वह व्यक्ति कितना महान् कितना विशाल था। यही बात इस पुस्तक से स्पष्ट होती है। इसमें लिखित सभी संस्मरण लेखिका ने पूर्ण ईमानदारी और सचाई से लिखे हैं। सभी संस्मरण स्वाभाविक एवं आकर्षक शैली में लिखे गए हैं। भाषा अत्यन्त सजीव और सशक्त है। स्वाभाविकता लाने के लिए लेखिका ने कहीं-कहीं वार्तालाप का भी सहारा लिया है।

सन् १९५७ में राजनैतिक महापुरुषों के संस्मरण प्राप्त हैं। हरिभाऊ उपाध्याय के 'साधना के पथ पर', 'स्मरणांजलि' जिसके सम्पादक मंडल काका साहब कालेलकर हरिभाऊ उपाध्याय श्रीमन्नारायण आदि के हैं प्रकाशित हुए। यही नहीं श्री कृष्णदत्त भट्ट के संस्मरण 'मां' नम्रता की छाया में संकलित हैं। इन सभी राजनैतिक पुरुषों के संस्मरण व्यक्तिगत घटनाओं पर आधारित हैं सभी में तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन है।

स्मृति ग्रंथ

सन् १९५६ में स्मृति ग्रंथों द्वारा हिन्दी संस्मरण साहित्य का विकास हुआ। पंत प्रेमचन्द पाण्डेय एवं मैथिलीशरण गुप्त आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों पर स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हुए। इनमें प्रसिद्ध प्रसिद्ध साहित्यिक लेखकों द्वारा लिखे हुए संस्मरण पाए जाते हैं। प्रेमचन्द स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। इस ग्रंथ में अमृतराय इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र उपेन्द्रनाथ अश्क, बनीपुरी वाजपेयी एवं चतुर्वेदी द्वारा लिखे हुए संस्मरणों में प्रेमचन्द के जीवन और कृतित्व का पूर्णतया ज्ञान होता है। इन्होंने प्रेमचन्द के स्वभाव वेशभूषा घर रखने का ढंग, बोलचाल आदि जीवन के सभी पहलुओं को लिया है।

'श्री सुमित्रानन्दन पंत स्मृति चित्र' राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। इस स्मृति ग्रंथ में पंत के प्रति अनेक हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वानों ने जिनमें आलोचक, कवि एवं कथाकार हैं अपने संस्मरण लिखे हैं। श्री जगदीशचन्द्र माथुर महादेवी, इलाचन्द्र जोशी आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी डॉ० नगेन्द्र, शिवदानसिंह चौहान हरिवंशराय बच्चन एवं शान्तिप्रिय द्विवेदी जैसे विद्वानों ने अपने संस्मरणों में पंतजी के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में प्रकाश डाला है। पंत के अन्तरंग एवं बाह्य व्यक्तित्व का पूर्णतया चित्रण इन संस्मरणों में है।

'पाण्डेय स्मृति ग्रंथ' हिन्दी साहित्य मंदिर लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इस स्मृति ग्रंथ में प्रेमनारायण टंडन श्रीनारायण चतुर्वेदी, त्रिलोकीनारायण दीक्षित,

अमृतलाल नागर, गणेशदत्त सारस्वत एवं शिवपूजन सहाय द्वारा लिखे रूपनारायण पाडेय सम्बन्धी सस्मरण प्राप्त होते हैं। गणेशदत्त सारस्वत द्वारा लिखे सस्मरण का उद्धरण उल्लेखनीय है—

'शान्ति और उदारता को मैंने उनमे स्पष्ट देखा, विद्या तथा ज्ञान की सजीव मूर्ति का दर्शन कर मुझे परमानन्द अनुभव हुआ, विनय एवं नम्रता के गुणों से परिपूर्ण पाया। उनके सामने एक लक्ष्य था—वह था साहित्य सेवा। सचमुच पहले पहल के मिलन में मैंने उन्हें गतिमान जागरूक साहित्य देवता के रूप में देखा था।'[1]

पाडेयजी के सस्मरणों में उनका कवि रूप आलोचक, सम्पादक एवं अनुवादक रूप पूर्ण रूप से वर्णित है। इनके साथ ही उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं का भी वर्णन है।

इन स्मृति ग्रन्थों के अतिरिक्त इसी सन् में हमें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ में वृन्दावनलाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, इलाचन्द्र जोशी जैनेन्द्र विश्वनाथप्रसाद मिश्र, उदयनारायण तिवारी, पद्मनारायण आचार्य एवं श्रीमती साविश्रीदेवी वर्मा के लिखे हुए सस्मरण सग्रहीत हैं। द्विवेदीजी द्वारा लिखे हुए सस्मरण का उद्धरण उल्लेखनीय है—

'गुप्तजी के काव्य सद्गृहस्थ के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। वे वस्तुत सद्गृहस्थों को ही ध्यान में रखकर लिखे गए हैं। उनका प्रधान उद्देश्य युवकों में महान आदर्श और उत्तम चरित्र की प्रतिष्ठा करना है। इसलिए मेरे बाल्य-काल में गाव में पढ़े लिखे सात्विक विचार के लोग गुप्तजी की कविताओं को बड़े ही आदर और प्रेम की दृष्टि से देखते थे।"[2]

शिवपूजन रचनावली चौथा खड भी सन् १९५९ में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में शिवपूजन सहाय द्वारा लिखे विद्वानों सम्बन्धी सस्मरण सग्रहीत हैं। पडित विनोदशकर व्यास निराला बदरीनाथ भट्ट, श्यामसुन्दरदास माधव शुक्ल मुन्शी प्रेमचन्द, श्री पारसनाथ सिंह एवं श्रद्धेय विद्यार्थीजी पर लिखे हुए इनके सस्मरण इस पुस्तक में प्राप्त होते हैं। ये सस्मरण अत्यन्त रोचक एवं प्रभावपूर्ण हैं। भाषा भी विषयानुकूल है। शिवपूजन सहाय के सस्मरण लेखन की यह सब में बड़ी विशेषता है कि वह सस्मरण लिखने के पश्चात् अन्तिम कुछ पंक्तियों में उसके जीवन का सारांश एवं उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का परिचय देते हैं जो कि उनकी भाषा की सजीवता एवं समास शैली का द्योतक है। कहीं भी वर्णन में कृत्रिमता नहीं आने पाई—

'बस इसी एक वाक्य में शुक्लजी का उज्ज्वल चरित्र और आदर्श

१ पृ० ४८
२ पृ० ९८

थी जिस पर श्रीमद्भागवत् की एक पत्रेत्तर पायी वस्ठन म बधी रखी थी। अलमारी क ऊपर भट्टजी का, पूजा म ध्यानमग्न एक छोटा-सा एनलाजमट टँगा था।[1]

इस तरह कितने ही एस रोचक प्रसगो का वणन इन्होने सस्मरणो म किया है। भाषा की स्वाभाविकता एव शली की सजीवता प्रकट हो उठी है। यही व्यासजी के सस्मरणो की विशेषता है।

पाडेय बेचनशर्मा 'उग्र'

उग्रजी क आत्मकथात्मक शली म लिखे हुए सस्मरणो का सग्रह 'अपनी खबर' नाम से १९६० मन् म प्रकाशित हुआ। इसम लेखक ने प्रारम्भिक २२ वर्षों का सस्मरणात्मक रूप म चित्रण किया है। सस्मरण अत्यन्त स्वाभाविक एव रोचक हैं। अपने जीवन म घटित घटनाओ का ईमानदारी और सचाई से वणन करना ही इनकी सस्मरण कला की विशेषता है। इनकी शली की यह विशेषता है कि जहाँ कहीं भी किसी घटना या स्थान का वणन होता है वहाँ वणन के पश्चात् अपना नाम देकर वह देते हैं कि यह (मेरी) राय है—जन्मभूमि क वणन म भी इसी शली का प्रयोग है—

रामचन्द्र भगवान महप नदी के किनार पदा हुए थे, मैं पदा हुआ गगा सुरसरि क किनार। मुझे सरयू उतनी अच्छी नहीं लगती जितनी नर नाग, विबुध वन्दनी गगा। रामचन्द्र भगवान् अयोध्या नगरी म पदा हुए थ जो पवित्र तीथ मानी जाती है। मैं चुनार म पदा हुआ, जो काशी के कलेजे और गगातट पर होकर भी त्रिशकु की माया म होन स तीथ नही है। इतना ही नहीं तीथ का पुण्य हरण करने वाला भी है। फिर भी चुनार मुझे ताव और अयोध्या और साकत स भी अधिक प्रिय है। यह अपनी जन्मभूमि चुनार के बारे म पाडेय बचनशर्मा उग्र' की राय है।"[1]

यही नही जो भी व्यक्ति इनके सम्पक म आए उन सभी का वणन जीती जागती भाषा म इन्होंने किया है।

१९६० सन् म ही मनमोहन गुप्त क सस्मरण एक क्रातिकारी क सस्मरण नाम स प्रकाशित हुए। इस पुस्तक म उन्होने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से अपनी आप बीती लिखी है। इसका उद्दश्य क्रातिकारी आदोलन का इतिहास लिखना नहीं है किन्तु एक क्रातिकारी की दृष्टि स उस समय की दश की परिस्थिति का वणन करना है। इसम उन्ह आशातीत सफलता मिली है। उनकी वणन शली अत्यन्त सजीव और रोचक है। उन्होने इन सस्मरणो म कहीं दूर की नहीं हाँकी और न अपना प्रचार ही किया है तटस्थ भाव स अनुभवो को रोचक भाषा म लिख दिया है।

---

१ पृ० ६४
२ पृ० ४८

सन् १६६१ म 'अश्क' एक रगीन व्यक्तित्व' सस्मरण जिनका सकलन कौशल्या अश्क द्वारा हुआ नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद से प्रकाशित हुए । य सस्मरण अश्कजी के व्यक्तित्व का विभिन्न कोणा से जाचत-परखते हैं । इन सस्मरणा म कितनी ही शलिया हैं कुछ स्मृति चित्रा के स हैं कुछ रेखाचित्रा क स कुछ निबन्धा के स और कुछ उन्ही हा सुन्दरता स गढे हुए कूजा एस—अत्यत कलापूण । फिर इनके लखका म भी समय स्थान और क्षेत्र का बडा अ तर है—एक ओर आचाय शिवपूजन सहाय और पतजा हैं ता दूसरी ओर नेखर जोशी और शानी एक ओर कृष्णचन्द्र और राजेन्द्रसिंह बदी है तो दूसरी ओर बलवतसिंह हुनर—और य लखक जीवन्त हिन्दी-उदू साहित्य क एक विशाल ओर महत्वपूण क्षेत्र को घर हुए हैं। इन सस्मरणा और स्मृति रखाकना म अश्कजी क व्यक्तित्व और विचारा की स्पष्ट रखाएँ भी उभर कर प ठका क सामन आती हैं ।

सन् १६६१ म ही रामवृक्ष बनीपुरी की पुस्तक का द्वितीय सस्मरण मील के पत्थर नाम स प्रकाशित हुआ । इसम बेनीपुराजी के हृदयस्पर्शी रेखाचित्र और सस्मरण सग्रहीत हैं ।

सन् १९६२ म हरिवशराय बच्चन की पुस्तक नये पुरान झरोखे प्रकाशित हुई। इस पुस्तक म आचाय चतुरसन शास्त्री गिरिधर शर्मा, प्रेमचन्द एव काश्मीर यात्रा पर लिखे हुए सस्मरण हैं । इन सस्मरणो म लखक का कवि हृदय भी जागरूक हो गया है । भाषा भी विषयानुकूल है ।

सन् १९६३ म 'साहित्यिको क सस्मरण' पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके सम्पादक ज्योतिलाल भागव हैं । इसम पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित सस्मरणा का सकलन है । ये सस्मरण हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वाना द्वारा लिखे गए हैं । शिवपूजन सहाय, प० हरिशकर शमा रमाशकर शुक्ल, वेंकटेश्वरनारायण तिवारी, दिनकर, वियोगी हरि जस विद्वाना के लिखे हुए सस्मरण हैं । एक और पुस्तक जिसके सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन ह जसा हमने दखा नाम स अभी प्रकाशित हुई है । इसका प्रकाशन काल भी सन् १९६३ ही है । इसम लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय कृष्णानन्दन गुप्त रामकृष्णदास, महादेवी वर्मा डा० पद्मसिंह शर्मा कमलश डा० भगवतशरण उपाध्याय विष्णु प्रभाकर, डा० सुधीन्द्र, हरिभाऊ उपाध्याय द्वारिकाप्रसाद शमा, विनोदशकर व्यास एव लक्ष्मीनारायण सिंह सुधाशु द्वारा लिखे विभिन्न साहित्यिको के विषय म सस्मरण हैं ।

उपयुक्त विवचन से स्पष्ट है कि हिन्दी सस्मरण साहित्य प्रगति की ओर अग्रसर है। इसकी आशातीत उन्नति हुई है । इसके विकास म हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ का बहुत सहयोग रहा है । मुझे पूण आशा है कि गद्य की यह विधा भविष्य मे और भी विकसित होगी ।

विभाजन

हिन्दी सस्मरण साहित्य गद्य की नवीनतम विधा है फिर भी इसकी प्रगति

भाषा से अधिक हुई है। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर संस्मरण साहित्य का निम्नलिखित प्रकार से विभाजन हो सकता है—

(क) संस्मरण लेखकों के आधार पर

हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास से स्पष्ट है कि संस्मरण केवल साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा ही नहीं लिखे गए अपितु राजनीतिज्ञ एवं क्रान्तिकारी व्यक्तियों द्वारा लिखे हुए संस्मरण भी प्राप्त होते हैं। साहित्यिक व्यक्तियों से मेरा अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अपनी कृतियों द्वारा विद्वता का परिचय दिया है। इसी श्रेणी में कवि, कथाकार एवं आलोचकगण आते हैं।

कवि हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसे संस्मरण प्राप्त होते हैं जिनके लेखक प्रसिद्ध कविगण हैं। इन कवियों में हरिवंशराय बच्चन रामधारीसिंह दिनकर सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा हैं। इनके संस्मरणों में इनका कवि हृदय साकार रूप से दृष्टिगोचर होता है। महादेवी वर्मा द्वारा लिखा हुआ सुमित्रानन्दन पंत पर संस्मरण में से निम्नलिखित उद्धरण उल्लेखनीय है—

'आज से साठ वर्ष पूर्व हिमालय के हिमावृत शिखरों के छोटे बड़े ऊँचे-नीचे दर्पण खण्डों में अपनी धवल हरित छवि देखने में तल्लीन कौसानी में कवि ने प्रथम आँख खोली थी। यदि उसे हिमालय की उर्ध्व अचल साधना और धरती की भावुक सजलता का दाय एक साथ मिल गया तो आश्चर्य नहीं।'

"उनके कोमलकांत शरीर को अनेक रोगों से जूझना पड़ा है और उनके सरल अनुभूतिप्रवण मन ने युग की अनन्त समस्याओं से संघर्ष किया है परन्तु न शरीर ने पराजय स्वीकार की है न मन ने।"[1]

संस्मरणों में भी कवि होने के कारण बच्चन भावुक से दीख पड़ते हैं—

"दो वर्ष हुए मैं काश्मीर फिर गया था, पर मैं स्पष्ट कर दूँ काश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य मुझे वहाँ नहीं खींच ले गया था। मुझे खींच ले गई थी वहाँ के मेरे कुछ मित्रों की मुहब्बत और आगे भी कभी मेरा जाना हुआ तो काश्मीर से अधिक काश्मीरियों के प्रति मेरा आकर्षण ही मुझे वहाँ ले जायगा।"[2]

बच्चन ने कवि होने के कारण एक कवि के हृदय, स्वभाव एवं व्यक्तित्व को जानने में अच्छी कुशलता का परिचय दिया है। इनकी भाषा शैली ही इनके साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय देती है। नवीनजी के समस्त व्यक्तित्व को इन्होंने कुछ ही पंक्तियों में कह डाला है—

'वे जीवन की ठोस अनुभूतियों, विदग्ध भावनाओं क्रान्तिकारी विचारों, सहज कल्पनाओं एवं सरल अभिव्यक्तियों के कवि थे। उन्हें जीवन के हास हुलास

---

१ अन्त स्मृति चित्र, पृ० १७१

२ नए पुराने झरोखे, पृ० २६२

मे ही रोने गाने को विवश किया था। उन्होंने अपनी कविता के सम्बन्ध में जो कहा था वह कोई विनम्रता प्रदर्शन नहीं था, वह बिलकुल सत्य था—उनकी हर कविता के पीछे एक इतिहास है एक घटना है, चलते फिरते व्यक्ति हैं भावों का ऊहा-पोह है। और है एक भावुक हृदय, जिसे सबमें लपटते, झपटते, उलझते और मरते खपते हुए गुनगुनाते भी जाना है। नवीनजी ने अपनी कविताएँ विवश से नहीं लिखीं उन्होंने अपने प्रभु स्वद रक्त में अपनी लेखनी डुबाकर लिखा है जिसमें जग का बहुत सा गर्द गुबार भी आकर पड गया है।' [1]

कथालेखक—कई कथालेखकों ने भी हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास में योग दिया है। इन कथालेखकों में उपेन्द्रनाथ अश्क, इलाचन्द्र जोशी जैनेन्द्र, यशपाल एवं वृन्दावनलाल वर्मा प्रमुख हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क ने तो कथालेखकों जैसी वर्णनात्मक शैली में ही अपने संस्मरण लिखे हैं। 'होमवतीजी के संस्मरण, में कथा। लेखकों जैसी शैली में सुन्दर वार्तालाप प्रस्तुत किया है—

बातें करते करते हम एक किसान की झोपडी के पास से गुजरे। वह झोपडी पगडंडी से तनिक नीचे खेतों के इस छोर पर बनी थी। किसान मटर या सेम की छीमियाँ टोकरे में भर रहा था। होमवतीजी ने तनिक रुक कर उससे भाव पूछा, 'क्या मइया कैसे दी है?' वहीं टोकरी पर झुके झुके बिना हमारी ओर देखे उसने पत्थर सा उत्तर फेंका ग्यारह आने।

मैंने कहा 'सब्जी तरकारी की तो आपको मौज है। "अरे कहा देख तो लिये इनके तेवर।' वे बोलीं 'ये लोग मंडी में इकट्ठी बेचते हैं, सर दो सेर के झगडे में नहीं पडते। मंडी में इससे सस्ती मिलती है।' [2]

जैनेन्द्र के सभी संस्मरणों का संग्रह 'ये आँख' नामक पुस्तक में है। महात्मा भगवानदीन पर लिखे संस्मरणों का उद्धरण उल्लेखनीय है—

"उनका जीवन स्फूर्ति से और कर्म से भरा रहा है। आडम्बर और आकांक्षा जैसी वस्तु उनमें नहीं है। परिणाम यह है कि ऊँची नीची नाना परिस्थितियों में रहकर भी वह अपनेपन से दूर नहीं गये हैं। सौ प्रतिशत सहज और सरल बने रहे हैं। दुनियादारी एक क्षण भी उन पर ठहर नहीं सकी है उनसे एकदम अलग उतरी दिखाई देती है। [3]

सभी कथालेखकों ने अपने संस्मरण प्रभावोत्पादक शैली में लिखे हैं। सभी लेखकों के संस्मरणों पर उनके अपने अपने व्यक्तित्व का प्रभाव है। भाषा शैली सजीव होने से ही संस्मरण रोचक बन पडे हैं।

आलोचक—जहा कवि और कथालेखकों ने संस्मरण लिखे हैं वहा

---

१ नये पुराने झरोखे पृ० २४, २५

२ रेखाएँ और चित्र, अश्क, पृ० १८१

३ पृ० १३५

आलोचकगण भी पीछे नहीं रहे। डा० श्यामसुन्दरदास, नन्ददुलारे वाजपेयी, शिवदानसिंह चौहान और डा० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' आदि आलोचकों के लिखे हुए संस्मरण भी प्राप्त होते हैं। गुलाबराय के सभी संस्मरण 'मेरी असफलताएँ' पुस्तक में संगृहीत हैं। इस पुस्तक में लेखक ने अपने जीवन की घटनाओं का विशद विश्लेषण किया है। ये सभी घटनाएँ संस्मरणात्मक रूप में लिखी गई हैं। जीवन की प्रत्येक घटना का विनोद रूप में वर्णन करने का भी उनका प्रयत्न सराहनीय है। भाषा मुहावरेदार और रोचक है। उनके बाल्य जीवन के वर्णन का एक उद्धरण निम्नलिखित है —

हम लोग एक आन्दाजा कुटिया के घर के दूसरे भाग में रहते थे। उसका नाम था न्यारी का मठ। अस्पताल बनाने की दुनिया में पता था। न तो मेरी महत्वाकांक्षाएँ ही बढ़ी हुई थीं और न सुविधाओं का नितान्त अभाव था। 'अति असिय जग जुरै न छाछी' की तो बात न थी फिर भी उन बालकों में से न था जो कि गर्व से यह कह सकें कि मेरा जन्म सम्पन्न घराने में हुआ था।

मेरे यहाँ चाँदी का चम्मच तो क्या पीतल का भी न होगा। यदि मुझे ऊपरी दूध भी मिल गया तो सीपी से जो मानो की भी जन्मदात्री है। पर मुझे गरीबी के कारण कभी कभी रोना का संयम करना पड़ता था। न्यारी आलू कचालू की चाट बेचा करता था। मुझे याद है कि एक बार चाट के लिए मचला था। न्यारी को पड़ोसी धर्म और मेरी धर्म का उपदेश दिया था माई डाँट कर लाया करो। ऐसी ममता मेरी शिक्षा भी उस की थी। जब यह सब कामी वचन सती मन जग बेकार गए तब माता से पैसे के लिए अनुनय विनय की और फिर वहीं अपनी रुचि की तृप्ति कर सका था। कच्चा खाने की कमजोरी श्रवण समीप ही नहीं चार बाल गफ्फ्राय हो जाने पर भी बनी हुई है। उस घर की बाल क्रीड़ाओं में मेरे बन कर चलने और माई भाई मेमन की स्पष्ट स्मृति है। इस बात का उल्लेख अपनी माताजी से बारबार सुनने से उसकी स्मृति और भी उभार में आ गई थी।[1]

लेखक की प्रत्येक कृति पर उनके व्यक्तित्व का अवश्य प्रभाव पड़ता है। आलोचक होने के कारण शिवदानसिंह चौहान पंत के व्यक्तित्व की आलोचना किए बिना न रह सके। इनके लिखे संस्मरण का एक उद्धरण उल्लेखनीय है—

'पंतजी का व्यक्तित्व ही कुछ इतना बौद्धिक है कि उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को उनमें वह साधारणता नहीं मिलती जो आम तौर पर हर व्यक्ति में होती है। मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि उन्होंने असाधारणता का कोई आडम्बर रच रखा है और जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता है उसको वे केवल अपना बाहरी असाधारणता का नकाब पहना हुआ चेहरा ही दिखाते हैं। ऐसा कुछ नहीं है। उनका अन्तर बाहर एक है—सरल, सहज और

---

१ मेरी असफलताएँ, गुलाबराय, द्वितीय संस्करण १९४६ पृ० ३ ४

कोमल। लेकिन यह सरलता और सहजता या तो हमे अबोध शिशुओं की क्रियाओ म मिलती है या एक मनीषी व्यक्ति के चिन्तन और आचरण मे, जो जीवन के गरल का पचाकर समदर्शी बन गया है, जिसे बोलचाल के मुहावरे मे पहुचा हुआ आदमी कहते हैं, जिसे राग, द्वेष और अभाव छूते तो हैं लेकिन जो उनमे बह नही जाता जिसका विवेक और जिसकी भावनाएँ और सवेदन जीवन के कदम मे कमल की तरह निर्लिप्त रहकर दूसरो को केवल सुरभि और सौंदय का ही वरदान देते है। यह शुचिता और शिवता पत के व्यक्तित्व म है।'[1]

राजनतिक पुरुष—हिन्दी सस्मरण साहित्य की उन्नति म केवल साहित्यिक पुरुषो ने ही सहयोग नही दिया अपितु राजनीतिज्ञो ने भी पूर्ण सहायता दी है। हिन्दी साहित्य म घनश्यामदास बिडला, कृष्णदत्त भट्ट हरिभाऊ उपाध्याय, डा० राजेन्द्रप्रसाद एव कलाशनाथ काटजू जसे प्रसिद्ध व्यक्तियो के द्वारा लिखे हुए सस्मरण प्राप्त होते हैं। घनश्यामदास बिडला की सस्मरणो की दो पुस्तकें 'कुछ देखा, कुछ सुना' एव 'गाधीजी की छत्र छाया म' प्राप्त होती है। बिडला ने जहाँ अपने राजनतिक जीवन से सम्बन्धित सस्मरणो का सग्रह 'गाधीजी की छत्रछाया म' किया है वहाँ अन्य राजनैतिक पुरुषो के विषय म लिखे हुए चौदह सस्मरणो का सग्रह 'कुछ देखा कुछ सुना' मे है। घनश्यामदास बिडला सस्मरण लिखने मे इतने सिद्धहस्त हैं कि उन्होने मणि बहन के समस्त व्यक्तित्व को कुछ ही पक्तियो म कह डाला है—

'कुछ कुछ अधपके बाल, कद की नाटी और बदन की अत्यन्त हल्की, जीणकाय मणीबेन यदि मुह पर सफेद पट्टी बाध लेती तो वह जन साध्वी म भी खप सकती थी। व्यवस्था प्रिय मणीबेन हर चीज को अपने कमरे म व्यवस्थित रखती थी और सरदार की भी व्यवस्था करती थी। बाप बेटी समय के इतने पाबन्द थे, मेजबान की सुविधा असुविधा का उन्ह इतना ख्याल रहता था कि उसे सकोच म डाल देते।'[2]

डा० राजेन्द्रप्रसाद के 'गुरुदेव' के सस्मरण एव कलाशनाथ काटजू के 'मेरे भ्राताजी' सस्मरण हमे प्राप्त होत हैं। इन सभी सस्मरणो म इन राजनतिक पुरुषो की जिन्दादिली टपकती है।

(ख) विषयवस्तु के अनुसार

हिन्दी सस्मरण साहित्य के विकास से स्पष्ट है कि जहाँ हम हिन्दी साहित्य लेखको के जीवन सम्बन्धी सस्मरण प्राप्त होते हैं वहाँ कुछ राजनीतिज्ञो को भी कुछ लेखको न अपने सस्मरणो का विषय बनाया है। इसके साथ ही कुछ लेखको न यात्रा सम्बन्धी सस्मरण भी लिखे हैं। वास्तव मे तथ्य यह है कि जो भी व्यक्ति जिससे प्रभावित

---

१ पत स्मृति चित्र पृ० १४६

२ कुछ देखा कुछ सुना—घनश्यामदास बिडला, प्रथम सस्करण, पृ० १२६

होता है चाहे वह जनता मे प्रसिद्ध हो या न हो उसके विषय म अवश्य श्रद्धा रखता है। यही बात इन लेखको के साथ भी है। इनम से कुछ लेखको न ऐसे व्यक्तियो को अपने संस्मरणो का विषय बनाया है जो हैं तो साधारण व्यक्ति परन्तु मानवीय गुणो के कारण असाधारण हैं। इस प्रकार संस्मरणो के अनेक विषय हो सकते हैं।

साहित्यिक लेखकों के संस्मरण— हिन्दी संस्मरण साहित्य म अधिक संस्मरण साहित्यिक लेखको के जीवन सम्बन्धी ही लिखे गए हैं। साहित्यिक लेखको के संस्मरण भी दो प्रकार से लिखे जाते है—एक तो कोई भी साहित्यिक लेखक अपने जीवन का संस्मरणो म लिख डाले, दूसरे अन्य व्यक्ति किसी साहित्यिक के जीवन के विषय मे लिखे। प्रथम श्रेणी के संस्मरणो म शान्तिप्रिय द्विवेदी की संस्मरणात्मक रूप म लिखी हुई आत्मकथा 'परिव्राजक की प्रजा' एव गुलाबराय की मेरी असफलताए पुस्तक आती है। दूसरी श्रेणी म ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखित बालकृष्ण भट्ट शिवरानी देवी द्वारा लिखित प्रेमचन्द घर म' एव अश्क की पुस्तक मंटो मेरा दुश्मन आती हैं। सम्पूर्ण जीवन की झाकी तो कुछ ही पुस्तको म पायी जाती है बस अनेक लेखको ने अनेक साहित्यिको के जीवन की कुछ स्मृतिया कुछ ही पन्ना म लिखी हैं। सब स्मृति ग्रन्थ इसी श्रेणी म आते है। शान्तिप्रिय द्विवेदी की बाल्यकाल की घटनाओ के कई प्रसग अत्यन्त ही मार्मिक हैं। इनका वणन करते समय लेखक का दु खी हृदय व्यथित हो उठा है —

'छोटा बालक—जिसे न तो शिशु ही कहा जा सकता है और न सयाना ही—वह दोनो का स्वायत्त कर लेना चाहता है। ऐसा वह किसी लोभ या चालाकी से नहीं करता। उसम जीवन की जो स्पष्ट आकाक्षा उत्पन्न हो जाती है वही उसे कुछ पाने, कुछ ग्रहण करने के लिए प्रेरित कर देती है। यहाँ तक कि दुधमुहा शिशु भी कभी मिट्टी तो कभी अगूठा मुह म डाल लेता है। फिर मेरा आकाक्षा तो भूख प्यास म स्पष्ट हो रही थी। बहिन बडी थी इसलिए उसे भूख-प्यास लगती नही होगी, मानो वह मुझे देने के लिए ही बडी है और यह नन्हा भाई हीरा ? इसे भला क्या चाहिए ? वह बौना तो अभी अपना मुह भी नहीं खोल सकता था, निरे सासो का पिंजर द्वार था। अपने सिवा इस सृष्टि से नादान और अबोध मेरा बुभुक्षित मन भरण पोषण के लिए लालायित रहता था।

एक दिन रात के समय माँ का दूध पीने के लिए मैं बहुत हठ करने लगा। बहिन ने समझाया—माँ की तबीयत ठीक नही है उसे दिक मत करो भाई। मैं मान गया। दूसरे दिन तो माँ की मृत्यु हो गयी। मैं तब तक यही जानता था कि लल्लू (साँप) के काटने से ही लोग मर जाते हैं।''[1]

बालकृष्ण भट्ट के जीवन का संस्मरणो के रूप म व्यासजी ने चित्रण किया है। उन्होंने जीवनी म कुछ ऐसी घटनाओ का वणन किया है जो उनके अपने जीवन

१ परिव्राजक की प्रजा—शान्तिप्रिय द्विवेदी, पृ० १८

के अनुभव पर आधारित है। एक घटना से ही उनके व्यक्तित्व का आभास हो जाता है—

'एक बार कई दिन मैं भट्टजी से पढने नही गया। मैं जानता था कि इस पर वे भुनाये होंगे क्योंकि सस्कृत म मैं कुछ तेज हो गया था और मुझे पढाने म उन्हें आनन्द होता था। उस दिन जसे ही मैंने साढी पर कदम रखा तो देखा कि भट्टजी अपने पुत्र महादेव पर बिगड रहे हैं। उस दिन महादेवजी को कालिक (शूल) का बडे जोर का दौरा हुआ था। पहिले तो दद थोडा था, पर महादेवजी ने बहुत-सा दही मीठा खा लिया था। महादेवजी बडे चटोरे थे। दही खान म दद असह्य हो गया और वे चारपाई पर छटपटाने लगे। उनकी चारपाई के पास एक तख्त था जिस पर भट्टजी सन्ध्या बठते थे। उनके कराहने पर भट्टजी भभक उठे उसी समय मैं वहा पहुचा था। गुस्सा कराहने पर नही था बल्कि दही खाने पर। कडककर बोले—'जब दद गुरू होय गवा रहा तो फिर दही काहे खायव ?' भट्टजी ने पीठ फेरी तो मैं सामने पड गया। धोबी से न जीते तो गदहे का कान उमेठे मुझी पर उबल पडे। उस समय भट्टजी का वक्षस्थल वाक-युद्ध के परिश्रम से लाल और नेत्र रक्तवर्ण थे। बडी रुखाई स बोले 'कहा चलेव सरकार ?' इस प्रश्न म मेरे कई दिन न आने का गुबार भरा हुआ था। मैंने बडी विनम्रता से कहा कि पढने आये हैं। मेरा कहना था कि वह तीव्र स्वर म बोले, 'तुम क्या पढोगे जी ? बेवकूफ बनाते आते हो। इम्तहान लेत हो कि एका कुछ आवत जात है कि नाही।'[1]

राजनैतिक पुरुषों के सस्मरण—प्रत्यक व्यक्ति के जीवन म कोई न-कोई ऐसा व्यक्ति सम्पक मे आता है जिसका प्रभाव स्थायी रूप से उस पर रहता है। यदि वह इतना योग्य हो कि अपने विचारो को अन्य व्यक्तियो के सम्मुख रख सके तो वह रखता है। जब वह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की महत्ता को अपने जीवन म घटित घटनाओ के आधार पर व्यक्त करता है तो वह सस्मरण की कोटि मे आ जाती है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य पुरुष को प्रभावित कर सकता है यह कोई आवश्यक नही कि किसी लेखक या कवि का ही व्यक्तित्व लोगो को प्रभावित करता है। कोई भी देशभक्त किसी भी लेखक से प्रभावित हो सकता है ऐसे ही कोई भी लेखक राजनतिक पुरुष स प्रभावित हो सकता है। इस प्रकार हिन्दी सस्मरण साहित्य मे जहा साहित्यिक लोगो के जीवन सम्बन्धी सस्मरण मिलत हैं वहा राजनतिक पुरुषो के भी जीवन सम्बन्धी सस्मरण प्राप्त होते हैं। हिन्दी साहित्य म यशपाल के सुखदेव, राजगुरु एव भगतसिंह सम्बन्धी सस्मरण सिंहावलोकन नाम से पाए जाते हैं—इनके तीन भाग हैं। इसी प्रकार इन्द्रविद्यावाचस्पति के राजनीतिज्ञो पर लिखे हुए सस्मरण मैं इनका ऋणी हू क नाम से प्रकाशित हुए हैं। हरिभाऊ उपाध्याय के 'साधना के

---

1 बालकृष्ण भट्ट, ब्रजमोहन व्यास, पृ० ३८, ३९

पथ पर एव घनश्यामदास बिडला के कुछ देखा कुछ सुना' सस्मरण भी इसी प्रकार के हैं। 'स्मरणाजलि' म अनेक महापुरुषो एव साहित्यिक व्यक्तियो द्वारा लिखे हुए जमनालाल बजाज पर सस्मरण सगृहीत है। कन्हैयालाल मा० मुशी का जमनालाल बजाज पर लिखा हुआ सस्मरण अत्यन्त सजीव एव प्रभावोत्पादक है। अन्तिम पाँच सात पक्तियो म उनके समस्त व्यक्तित्व की झाँकी प्रस्तुत की है—

'व्यापार बुद्धि और नीति, लक्ष्मी और सरस्वती की तरह, साथ नहीं रहती परन्तु जमनालालजी इसके अपवाद थे। इनकी व्यवहार बुद्धि पर जीती-जागती जात की तरह नतिक बल हमेशा पहरा देता था। छोटी बडी हर बात म वह उस्ताद व्यापारी नतिक अपूर्वता की खोज म रहता था।

वे व्यापारी थ देशभक्त त्यागी दानवीर थे सौजन्य मूर्ति थे पर इन सब से भी सस्मरणीय उनकी सिद्धि थी व्यावहारिकता और नीति का सुयोग। सत्यनारायण की कथा के साधु वणिक शब्द को उन्होंने साथक कर दिया था।'[1]

घनश्यामदास बिडला का महादव देसाई पर लिखा हुआ सस्मरण अत्यन्त रोचक है। उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट चित्रण इन्होने अपने सस्मरण म किया है—

'गाधीजी क अनन्य उपासक होते हुए भी महादेव भाई क अपने स्वतत्र विचार थ। गाधीजी क विचारो का विरोध करने की उनम क्षमता थी। गाधीजी से भिड जाने की उनम शक्ति थी और गाधीजी पर उनका खूब असर पडता था। वह कभी कभी बापू की कडी आलोचना करत थ पर शुद्ध भक्ति भाव-पूर्वक। लकिन नहीं गाधीजा न एक अन्तिम निणय किया बस महादव भाई अडिग निश्चय क साथ गाधीजी की योजना म कूद पडे। सशय कल्लोल म खलना उन्ह पसन्द नहीं था।

गाधीजी की चेष्टाओ और वेशभूषा की महादेव भाई न कभी नकल नहीं की। उन्ह कभी 'उपगाधी' बनने का शौक पैदा नहीं हुआ। आजीवन वह गाधीजी क अनन्य अनुचर रह और उनके विचारो को रोम रोम म भरकर उनके साथ अभिन्न भी हो गए थ।'[2]

हरिभाऊ उपाध्याय न 'साधना क पथ पर' पुस्तक म अपने समस्त जीवन को सस्मरणो क रूप म चित्रण किया है। जीवन क सभी मागो क वणन म इनकी जिन्दादिली टपकती है। एक स्थान पर ईश्वरीय विश्वास के विषय म लिखत हैं—

इस निभयता का मूल ईश्वर श्रद्धा म है। जब मैं छाती पर हाथ धर कर यह कह सकता हूँ कि मेरी भावना शुद्ध है काम भला है तो मेरे मन म यह विचार ही नहीं आता कि लोग क्या कहेंगे उसम लोगो क लिए कुछ सोचा करने

1 स्मरणाजलि पृ० ५५
2 कुछ देखा कुछ सुना घनश्यामदास बिडला पृ० ११८

जैसी बात भी हो सकती है। हां कुछ कटु अनुभवों ने अधिक सावधान तो बना दिया है फिर भी लोगों की आलोचनाओं व निन्दाओं के बीच अविचल रहने की प्रवृत्ति अडिग है। क्षणिक प्रभाव हुआ भी तो वह परमात्मा का आश्रय लेते ही नष्ट हो जाता है।'[1]

इस प्रकार राजनैतिक पुरुषों के संस्मरण भी अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली बन पड़े हैं।

यात्रा सम्बन्धी संस्मरण—हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास से स्पष्ट है कि कुछ लेखकों ने अपने संस्मरणों का विषय अपनी यात्रा को लिया है। वे जिस स्थान व जिस जगह भ्रमण करते रहे उन सभी का वर्णन उन्होंने संस्मरणात्मक रूप में किया है। राहुलजी ने यात्रा सम्बन्धी संस्मरण यात्रा के पन्ने पुस्तक में संग्रहीत हैं। इसके अतिरिक्त बच्चन ने अपनी काश्मीर यात्रा का एवं गुलाबराय ने कसौली यात्रा का संस्मरणात्मक रूप में वर्णन किया है।

हरिवंशराय बच्चन ने झील के किनारे का वर्णन अत्यन्त रोचकपूर्ण ढंग से किया है—

'सुबह होते ही झील की सतह पर काश्मीर का जीवन देखिए। एक शिकारा आ रहा है तरह तरह के फूलों से लदा है। एक फल बेचने वाले का, एक मेवे बेचने वाले का किसी में लकड़ी का सामान किसी में शाल दुशाले, किसी में पेपरमेशी की चीजें किसी में सुई, कढ़ाई के बारीक काम। श्रीनगर में कोई चीज खरीदना बहुत होशियारी का काम है। व्यापारी कभी-कभी चौगुना दाम कहता है। आप संकोच में कितना कम करेंगे नतीजा होगा आप ठग जाएँगे। चीजों का ठीक दाम आप तभी देंगे जब या तो आप अनुभवी हों यानी कई बार काश्मीर आए गए हों या किसी काश्मीरी से आपकी जान पहचान हो जो चीजों का वाजबी दाम जानता हो।'[2]

गुलाबराय ने अपनी कसौली यात्रा में कसौली नगर का वर्णन अत्यन्त रोचकपूर्ण ढंग से किया है—

कसौली कुत्ते के काटे वालों के लिए तो प्रधान तीर्थस्थान है ही किन्तु यहां जो लोग रहते हैं वे सब कुत्ते के काटे हुए ही नहीं रहते। यहां पर एक बहुत सुन्दर छावनी है। यहां की सड़कें रमणीक हैं। चढ़ाव उतार की ओर चक्करदार अवश्य हैं, किन्तु उनके दोनों ओर खूब हरियाली रहती है। कुछ स्वाभाविक उपज है और कुछ लगाई हुई है। बाजार भी अच्छा है। यहां पर गिरिजाघर, क्लबघर, बैंक, डेरी आदि देखने योग्य हैं। मंकी पाइंट अर्थात्

---

१ साधना के पथ पर—हरिभाऊ उपाध्याय पृ० ७२

२ नए पुराने झरोखे—बच्चन, पृ० २६१

वानर शृंग यहाँ का उच्चतम शिखर है। जाड़ा में खूब बरफ पड़ती और आबादी कम हो जाती है।'[1]

इसी प्रकार राहुल सांकृत्यायन ने अपनी पुस्तक में तिब्बत की समस्त यात्रा का वर्णन संस्मरणों में किया है। यही नहीं वहाँ पर सभी देखने योग्य स्थानों का, नगरों एवं पर्वतों का वर्णनात्मक शैली में किया हुआ वर्णन प्राप्त होता है। भाषा भी विषयानुकूल है। शैली प्रभावोत्पादक है।

मानवीय गुणों से सम्पन्न साधारण पुरुषों के संस्मरण—इन संस्मरणों में न तो किसी साहित्यिक व्यक्ति के जीवन का आभास होता है और न किसी राजनैतिक के, इनमें तो लेखक ऐसे व्यक्तियों के जीवन का चरित्र पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है जोकि न जनता में प्रसिद्ध है न समाज में। लेकिन लेखक के सम्पर्क में आने से उस साधारण पुरुष में जो मानवता एवं मानवीय गुण उसे लक्षित होते हैं उन्हीं से प्रभावित होकर उसने उसे पाठकों के सम्मुख संस्मरण रूप में रक्खा है। ऐसे संस्मरण लेखकों में राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह, महादेवी वर्मा एवं गुलाबराय हैं। राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह की तो तीनों संस्मरणात्मक पुस्तकें 'सावनीसमाँ, टूटा तारा' एवं 'सूरदास' ऐसे व्यक्तियों के ही जीवन का प्रतीक हैं। महादेवीजी ने भी लछमा, रधिया आदि के समस्त जीवन को अपनी पुस्तकों में संस्मरण के रूप में चित्रित किया है। यही नहीं, गुलाबराय ने एक नाई का संस्मरण 'मेरे नापिताचार्य' नाम से लिखा है। उसके व्यक्तित्व का दिग्दर्शन पाठकों को भलीभाँति करवाते है—

मेरे नापित देव न तो वामन है और न विशालकाय। मेरी बुद्धि की भाँति वे भी मध्य श्रेणी के है, और कुछ लघुता की ओर झुके हुए हैं। उनका छोटे अण्डाकार शीशों वाला डेढ़ कमानी का चश्मा उनके गाम्भीर्य और वार्द्धक्य को बढ़ाता है। जैसे मैं अपनी पोशाक की व्यवस्था सम्हालने में असमर्थ रहता हूँ वैसे ही वे अपनी पेटी जो उनके स्वरूपानुरूप है। पेटी का आवरण पट जो बाल कटाने वाले यजमानों का भी बालों की बाण वर्षा से सुरक्षित रखने में रक्षा कवच बनता है साबुन के प्रयोग से उतना ही अछूता रहता है जितना कि आजकल का विद्यार्थी भगवन्नाम से। उसको स्वच्छ रखने के उपदेश उनके ऊपर उतना ही प्रभाव रखते है जितना कि 'कामी वचन सती मन जैसे' फिर भी मैं उनका स्वागत करता हूँ, क्योंकि वे मुझे रक्तपात से बचाए रखते हैं अपनी जाति के अन्य व्यक्तियों की भाँति वे भी चलते फिरते समाचार पत्र हैं और चूँकि मैं कोई स्थानीय पत्र नहीं खरीदता मैं उनकी इस वृत्ति का स्वागत करता हूँ। विशेषकर साम्प्रदायिक झगड़ों के दिनों में उनकी यह सेवाएँ बहुमूल्य थीं।'[2]

---

१ मेरी असफलताएँ, गुलाबराय पृ० २४१

२ वही, पृ० २०५

घनश्यामदास बिडला ने भी अपने नौकर हीरा का संस्मरण अत्यन्त रोचक एवं भावुकतापूर्ण शैली मे लिखा है। उसके विषय म एक स्थान पर लिखते हैं—

कर्ण का महाभारत मे बडा स्थान है। और हीरा का कोई ग्रन्थ नही बना, इसी बुनियाद म हीरा परख में कम नही उतरा। तीन बार हीरा ने अपना खजाना खाली कर दिया। यह उदारता कर्ण से किस बात म कम उतरती थी? और हीरा की वफादारी तो लाजवाब। बडे-बडे श्लोको से भरे ग्रन्थो से चौंधिया जाने से यदि हम इन्कार करें तो मैं कहूँगा कि हीरा का शौर्य, उसकी दानशूरता और उसकी वफादारी बेमिसाल चीजें हैं।[1]

इसी प्रकार कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने अपनी पुस्तक 'दीप जले शख बजे' म मुखिया सुचेत नन्दा गाटा गोरा दीवान बल्देव बाबा, सल्हड मिश्र एव डाक्टर टिचरप्रसाद जसे व्यक्तियो के विषय म भी संस्मरण लिखे हैं। शैली अत्यन्त प्रभावोत्पादक है।

शैली के आधार पर

हिन्दी संस्मरण साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि प्रत्येक लेखक का अपने और दूसरे के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने का अपना अपना ढग है। किसी ने आत्मकथात्मक शैली को अपनाया है तो किसी ने निबन्धात्मक को। किसी लेखक ने इन दोनो के अतिरिक्त डायरी व पत्रात्मक शैली म संस्मरण लिखे हैं। इस प्रकार शैली के आधार पर संस्मरणो का विभाजन निम्नलिखित ढग से हो सकता है—

आत्मकथात्मक शैली मे लिखे हुए संस्मरण—हिन्दी साहित्य मे कुछ ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन का वर्णन आत्मकथात्मक शैली म संस्मरणो के रूप म किया है। इनम शान्तिप्रिय द्विवेदी किशोरीदास वाजपेयी एव पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' हैं।

शान्तिप्रिय द्विवेदी की पुस्तक 'परिव्राजक की प्रजा' है। संस्मरणो के रूप म इन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी है। इसलिए इसम एक प्रभावोत्पादक आत्मकथात्मक शैली प्राप्त होती है। इस शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि इसम लेखक अपने जीवन का निरूपण अपने आप सकोचरहित करता है। जीवन की सभी अच्छाइयो और बुराइयो को वह अपनी आत्मकथा म व्यक्त करता है। द्विवेदीजी ने भी कहीं-कहीं स्पष्ट रूप से विश्लेषण किया है—

मेरे स्वभाव म चापल्य नही था परिस्थितियो ने मुझे समय के पहले ही गम्भीर बना दिया था। चचल और नटखट बनने का अवसर ही नहीं मिला। वमनस्य और खीचतान से मेरे जीवन का व्यायाम नहीं हो सका। यदि हाइस्कूल तक पढ जाता तो शायद लडको की थोडी कुशलता और लोलुपता-

---

1 कुछ देखा कुछ सुना—बिडला, पृ० २४६

से मैं भी सुदक्ष हो जाता सासारिक दृष्टि से बुद्धू नही रह जाता। किन्तु ससार म कल के लडके ही तो सयाने होकर अधिक होशियारी से दाव पेच खेलते हैं, उनसे भी तो मैं कुछ सीख सकता था। कहाँ सीख सका। प्रभाव और भावुकता ने बचपन स ही मेरा जा अतल सजल स्वभाव बना दिया वह जीवन म स्थायी हो गया। [1]

इसी प्रकार पाण्डेय बेचनशर्मा उग्र ने भी अपनी खबर म चोरी का वणन स्पष्ट रूप स किया है—

'सुना था हनुमानचालीसा का पाठ करने स सारे दुःख दूर ममले स्वयमेव हल हो जाते हैं। लेकिन हनुमानचालीसा मेरे पास कहा। साथ ही पास म पैसा कहा कि हनुमानचालीसा खरीदा जा सके। मैं जिस दरजे म पढ़ता था उसी म एक काला सा लडका था किसी छोटी जाति का। वह अपने बस्ते म रोज हनुमानचालीसा की एक प्रति ले आता था और मैं ललचाकर तडपकर रह जाता था उस दो पसे की विख्यात पुस्तक के लिए। अन्त म मैंने चोरी करने का निश्चय किया। मैं ऊच लडका वह नीच लेकिन मैंने उसकी हनुमानचालीसा चुरा ली और बडे चाव स मैं उसका पाठ करने लगा। [2]

आत्मकथा शैली के सभी गुण—स्पष्ट कथन स्पष्ट आत्मविश्लेषण प्रभावोत्पादकता एव स्वाभाविकता आदि इन लेखकों की आत्मकथाओं म पाए जाते हैं। १२ वर्ष का उग्रजी ने सस्मरणो म अपना जीवन अत्यन्त स्वाभाविक एव स्पष्ट रूप स वर्णन किया है। यही नही शान्तिप्रिय द्विवेदीजी तो आत्मकथा लिखते समय इतने भावुक हो गए हैं कि इनके जीवन की घटनाओं को पढते पढते पाठक के रोगटे खडे हो जाते हैं। इस प्रकार आत्मकथात्मक शैली म लिखे हुए इनके जीवन के सस्मरण अत्यन्त रोचक एव प्रभावशाली बन पडे हैं।

निबन्धात्मक शैली मे लिखे हुए सस्मरण—हिन्दी साहित्य म कुछ सस्मरण लेखकों ने अपने व अन्य व्यक्ति के जीवन चरित्र को लिखने के लिए निबन्धात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली का अधिक प्रयोग अन्य व्यक्तियों के जीवन चरित्र लिखने के लिए होता है। हिन्दी साहित्य म गुलाबराय ने अपने जीवन के कुछ सस्मरणों को निबन्धात्मक शैली म मेरी असफलताए पुस्तक म लिखा है। इस शैली म लेखक वर्णनात्मक एव विवरणात्मक दोनो ही प्रकार के वर्णन प्रस्तुत कर सकता है। गुलाबराय ने अपने व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित कुछ घटनाओं का वर्णन जहाँ निबन्धात्मक शैली म किया है वहाँ इनकी कमीनी यात्रा म हम वर्णनात्मक शैली के भी दर्शन होते हैं।

१ परिव्राजक की प्रजा—शान्तिप्रिय द्विवेदी पृ० १२३
२ अपनी खबर—पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र पृ० २६

शान्तिप्रिय द्विवेदी के अपनी बहन सम्बन्धी लिखे हुए संस्मरण 'पथचिह्न' नामक पुस्तक में हैं। इसमें भी लेखक ने इसी शैली का प्रयोग किया है। शान्तिप्रिय के संस्मरणों में भावुकतामयी शैली का आभास होता है—

'बचपन में ही वह विधवा हो गई थी। उस अबोधवय में उसने जाना ही नहीं उसके भाग्य क्षितिज में क्या पट-परिवर्तन हो गया। जन्मकाल से माँ का जो अंचल उसके मस्तक पर फैला था सयानी होने पर उसने वही अंचल अपने मस्तक पर ज्यों-का-त्यों पाया। मानो शैशव ही उसके जीवन में अक्षुण्ण हो गया। अचानक एक दिन जब वह अंचल भी मस्तक पर से छाया की तरह तिरोहित हो गया तब उसके जीवन में मध्याह्न की प्रखर ज्वाला के सिवा और क्या शेष रह गया था।'[1]

पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित संस्मरणों में भी इसी शैली का दिग्दर्शन होता है। ब्रजमोहन व्यास, शिवरानी देवी कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर एवं उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने भी इसी शैली में अपने एवं अन्य लेखकों के जीवन सम्बन्धी संस्मरण लिखे हैं।

डायरी शैली में लिखे हुए संस्मरण—हिन्दी साहित्य में केवल राहुल सांकृत्यायन के संस्मरण डायरी शैली में लिखे हुए हैं। 'यात्रा के पन्ने' पुस्तक में इन्होंने अपनी समस्त यात्रा का वर्णन संस्मरणों में समय एवं तिथि के अनुसार किया है। इनकी शैली की विशेषता निम्नलिखित उद्धरण से स्पष्ट हो जाती है—

'१४ तारीख को ब्रजनन्दन बाबू के यहाँ भोजन करके ११ बजे मोटर पकड़ी। उधर गये धर्मवर्द्धन को कालिम्पोङ् तार दे दिया था जो कि उसी दिन शाम को ७ बजे हमारे सिलीगुड़ी पहुँचने के एक घण्टे बाद आ गए। ६ बजे रात को कलकत्ता मेल पकड़ा और दूसरे दिन सवेरे ७ बजे को इस सारी यात्रा में साथ लिए होते, तो कितना अच्छा रहता। १५ से १६ नवम्बर तक कलकत्ता में बिताकर २० को हम पटना पहुँच गए। जायसवाल ने गद्गद् हो स्वागत किया और अब जाड़ों का समय हमारा भारत के लिए था।'[2]

पत्रात्मक शैली में लिखे हुए संस्मरण—राहुलजी के कुछ संस्मरण पत्रात्मक शैली में लिखे हुए हैं। इसी पुस्तक 'यात्रा के पन्ने' में 'प्रवास के पत्र' नामक शीर्षक में इनकी इसी शैली का दिग्दर्शन होता है। इसी प्रकार जैनेन्द्र के कुछ संस्मरण भी इसी शैली में लिखे गए हैं। प्रेमचन्द सम्बन्धी कुछ संस्मरणों का आभास इनके पत्रों द्वारा ही होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संस्मरण लिखने के भी अनेक ढंग होते हैं। प्रत्येक लेखक अपनी रुचि अनुसार उनका प्रयोग करता है।

---

१ पथचिह्न ले० शान्तिप्रिय द्विवेदी, पृ० ८

२ यात्रा के पन्ने ले० राहुल सांकृत्यायन, प० १३४

है, परन्तु मुझे प्रतीत होता है कि यह सब व्यर्थ जाएगा, अतः मैं निषेध न करूँगा "।[1]

स्वाभाविक ढंग से वर्णन करने में रोचकता तो आती ही है परन्तु इसके साथ स्पष्टता का भी होना आवश्यक है। यदि लेखक अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण पूर्ण ईमानदारी से वर्णन करता है तभी उसमें रसास्वादन सम्भव होता है। प्रत्येक व्यक्तिगत घटना का वर्णन स्पष्ट रूप से होना चाहिए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केदारनाथ पाठक को लिखे २५-११ ०५ के पत्र में अपने परिवार में घटी घटना का वर्णन स्पष्ट रूप में किया है—

'प्रियवर आजकल मेरे ऊपर ईश्वर की अथवा शनैश्चर की बुरी दृष्टि है। एक के उपरान्त दूसरी, दूसरी के उपरान्त तीसरी विपत्ति में आ फँसता हूँ। सुनिए मैं काशी जाने की पूरी तैयारी कर चुका था परन्तु बीच में मेरे घर ही में एक विलक्षण षडयन्त्र रचा गया। हरिश्चन्द्र का गौना ६ या सात दिन में आने वाला है। मेरे पिताजी इधर कई दिनों से दौरे पर हैं। इसी बीच में मेरी विमाता जी को भी भयकर मूर्ति धारण करने की सूझी। ४०० रु० का जेवर गायब करके कह दिया कि मेरे पास ही से घर में से चोरी हो गया।[2]

यही नहीं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा राधाचरण गोस्वामीजी को लिखे पत्र में स्पष्टता द्रष्टव्य है—

'मैं तीन चार दिन में शायद श्रीवन आऊँ, कृपापूर्वक एक स्थान अपने प्रति निकट रखिए दो बात मुख्य आराम देख लीजिएगा। एक तो पाखाना स्वच्छ हो और दूसरे दिन को गर्म न हो चाहे अति छोटा हो।'[3]

इस प्रकार प्रत्येक कुशल पत्र लेखक के पत्रों में स्वाभाविकता, रोचकता स्पष्टता, एवं संक्षिप्तता का होना आवश्यक है। इन गुणों के साथ ही पत्र, साहित्यिक पत्र कहला सकते हैं। विषय का चुनाव एवं लेखक की सफलता इन्हीं पर निर्भर है।

पात्रों और घटनाओं से सम्बन्ध और उनके प्रति प्रतिक्रिया पत्र में वर्णित प्रत्येक घटना और व्यक्ति के प्रति लेखक का व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है। जिस व्यक्ति को वह पत्र लिखता है या जिस घटना के विषय में वह लिखता है उससे वह स्वयं प्रभावित होता है। पत्र में वर्णित प्रत्येक विषय का वह वर्णन करना ही अपना उद्देश्य नहीं समझता अपितु उसके प्रति अपनी टीका टिप्पणी भी निर्भीकता से प्रस्तुत करता है। यही दशा किसी व्यक्ति के वर्णन में भी कही जा सकती है। यदि वह सच्चा

---

१ श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य, रामचन्द्र मिश्र, भूमिका—बनारसीदास चतुर्वेदी।

२ द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र—बैजनाथसिंह विनोद, पृ० २१८

३ भारतेन्दु ग्रन्थावली, तीसरा भाग—ब्रजरत्नदास, बी० ए० एल० एल० बी०, पृष्ठ ६७, पत्र २

पत्र लेखक है तो वह पूर्ण ईमानदारी से उस व्यक्ति के बारे, वह उसका मित्र है या सम्बन्धी वर्णन करेगा। उदाहरण के लिए यदि द्विवेदीजी के पत्रों को हम देखते हैं कि जहाँ इनके पत्र साहित्य में हमें इनके व्यक्तित्व की पूर्ण झलक प्राप्त होती है वहाँ अनेक मित्रों एवं सम्बन्धियों का परिचय भी है। मित्र की प्रशंसा भी करते हैं और समय आने पर झिड़की भी देते हैं। गुप्तजी को लिखे पत्र में यही स्नेह झलक आता है —

'हर लोग सिद्ध कवि नहीं। बहुत परिश्रम और विचारपूर्वक लिखने से ही हमारे पद्य पढ़ने योग्य बन जाते हैं। आप दो बातों में से एक भी नहीं चाहते। कुछ लिखकर छपा देना ही आपका उद्देश्य जान पड़ता है।

यही बात पद्मसिंह शर्मा में भी पाई जाती है। बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे २६.४.२८ के पत्र में सम्पादकीय मद होने की बड़ी आलोचना की है—

"मालूम होता है कि अब आप पूरे सम्पादक बन गए हैं तभी तो हमारी पसन्द की कविताएँ नापसन्द करके छापने से इनकार कर दिया। यह सम्पादकीय मद प्राय आ ही जाता है।'"[1]

इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक लेखक अपने पत्रों में जिन घटनाओं एवं व्यक्तियों को विषय बनाता है उनके प्रति मन में उठी हुई प्रतिक्रियाओं का भी उल्लेख करता है।

उद्देश्य—इसमें लेखक की उस सामान्य या विशिष्ट जीवन दृष्टि का विवेचन होता है जो उसकी कृति में कथावस्तु या विन्यास, पात्रों की योजना, वातावरण के प्रयोग आदि में सर्वत्र निहित पायी जाती है। इसे लेखक का जीवन-दर्शन अथवा उसकी जीवन दृष्टि, जीवन की व्याख्या या जीवन की आलोचना कह सकते हैं। उन कृतियों को छोड़कर जिनकी रचना का उद्देश्य मन-बहलाव या मनोरंजन मात्र होता है सभी कलाकृतियों में लेखक की कोई विशेष विचारधारा प्रकट या निहित रूप में देखी जा सकती है। बिना इसके साहित्यिक कृतित्व प्रयोजनहीन और व्यर्थ होता है।

उद्देश्य की दृष्टि से पत्र साहित्य गद्य के अन्य रूपों से कुछ भिन्न होता है। जहाँ यह निर्दिष्ट व्यक्ति को किसी विशिष्ट विषय का ज्ञान मात्र देना चाहता है तब उसका उद्देश्य अन्य साहित्यिकों के सदृश होता है। उसमें आत्मीयता की मात्रा कम रहने से निबन्ध रूप के समीप हो जाता है। जब वह अपना वृत्तान्त ही प्रेषित करना चाहता है तब उसमें मानसिक प्रतिक्रियाओं की बहुलता से आत्मीयता बढ़ जाती है। इस स्थिति में लेखक का उद्देश्य सामान्य मानव जीवन की व्याख्या न होकर आत्म-जीवन की व्याख्या होती है।[2]

हिन्दी पत्र साहित्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि जितने भी पत्र लेखक हुए हैं उन्होंने जहाँ आत्माभिव्यक्ति पत्रों में वर्णन की है वहाँ

---

१ पद्मसिंह शर्मा के पत्र—सम्पादक बनारसीदास चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा
२ सिद्धान्तालोचन—धर्मचन्द बलदेवकृष्ण

अनेक अन्य विषयो पर भी अपने विचार प्रकट किए हैं। उदाहरणतया यदि हम द्विवेदी-जी को लें तो हम इनके पत्रो को पढकर पता चलता है कि जहाँ इन्होने अपने जीवन के प्रत्येक पहलू का चित्रण अपने मित्रो का किया है वहाँ अनेक साहित्यिक विषयो पर भी अपने विचार प्रकट किए है। इनके अधिकाश पत्रो का सम्बन्ध व्याकरण से है। सम्पादक होने के कारण व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियो को दूर करना ही इनका उद्देश्य था। इसलिए उन्ही के सुझाव इनके पत्रो म पाए जाते हैं।

देशकाल वातावरण—वातावरण उन समस्त परिस्थितियो का सकुल नाम है जिनसे पात्रो को सघर्ष करना पडता है और विषयवस्तु का विकास होता है। पत्रो को वास्तविकता का मान दन की कसौटियो म वातावरण मुख्य उपकरण है। पत्र लेखक भी देशकाल की जजीर म जकडे रहते हैं। देश और काल की पृष्ठभूमि के बिना पात्रो का एव लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट नही होता। देशकाल के चित्रण म इस बात का ध्यान रहना आवश्यक है कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रह स्वय साध्य न बन जाय। जहा वणन अनुपात से बढ जाता है वहा उससे जी ऊबने लग जाता है।

हिन्दी साहित्य म जितने भी पत्र लेखक हुए है सभी अपने समय की परि-स्थितियो से प्रभावित हैं। उदाहरणतया यदि हम मुशी प्रमचन्द को लें तो हम देखते हैं कि इन्होने अपने पत्रो म तत्कालीन राजनतिक, सामाजिक, धार्मिक एव साहित्यिक परिस्थितियो का स्वाभाविक रूप से यत्र तत्र वणन किया है। श्री जनेन्द्र के ११ मई १९३० के लिखे पत्र के प्रश्नो का उत्तर देते हुए उस समय की राजनतिक परिस्थिति का चित्रण भी इन्होने किया है —

> पहली तारीख को आया तो यहा काग्रेस की उलझनो म पडा रहा। शहर पर फौज का कब्जा है। अमीनाबाद म दोनो पार्कों म सिपाही और गोरे डेरे डाले पड हैं १४४ धारा लगी हुई है पुलिस लोगो को गिरफ्तार कर रही है और काग्रेस तो १४४ धारा तोडने की फिक्र म है। डडे की नइ पालिसी ने लोगो की हिम्मत तोड दी है।'[1]

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यिक व्यक्ति भी देश की परिस्थितियो से प्रभावित हुए बिना न रह सके। उन्होने भी वणन किया है—

> रियासतो की हालत बडी खराब हो रही है। जिनके पास पृथ्वी है वे आलसी हो रहे हैं। उनसे उसका प्रबन्ध नही बन पडता। पर जिनम वह शक्ति है उनके पास डब्ल भर भी जमीन नही। ईश्वर की गति तो देखिए। यदि हमारे प्रभु अग्रेज आप ही इस देश को छोडकर इग्लड जाने लगें और जहाज पर सवार हो जाएँ तो हमको विश्वास है कि हम अकमण्य हिन्दुस्तानियो को तार भेजना पडे कि आप लौट आइये, हम पर जैसा शासन कीजिए हम चूँ नही करेंगे।'

१ प्रेमचन्द चिट्ठी-पत्री, भाग २, पृ० ७५

गांधी का पत्र साहित्य तो है ही अपने युग का इतिहास । इनके पत्रों में भी हम तत्कालीन सभी राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक आध्यात्मिक, नैतिक, घरेलू आदि सभी परिस्थितियों का पता चलता है । कमलापति त्रिपाठी ने भी अपने पत्रों में तत्कालीन सभी परिस्थितियों का चित्रण किया है । इस प्रकार उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक पत्र लेखक अपने समय की परिस्थितियों से प्रभावित होकर उनका स्वाभाविक रूप से अपने पत्रों में वर्णन करता है ।

शैली—शैली अंग्रेजी 'स्टाइल' का अनुवाद है और अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में आया है । शैली भी एक प्रकार का स्पृहणीय गुण है इसलिए अच्छे लेखक अच्छे शैलीकार होते हैं । शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं । पत्र लेखक की शैली अन्य विधाओं से पृथक होती है । इसमें लेखक का मुख्य उद्देश्य आत्माख्यान ही होता है इसलिए इस शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएं हैं—

> "सर्वप्रथम इस शैली की विशेषता आत्मीयता है । पत्र में लेखक की आत्मीयता प्रकट होनी चाहिए । वर्ण्य विषय की दृष्टि से जब लेखक लिखता है तब उसका अपनापन दबा रहता है वह सीधे रूप में सम्मुख नहीं आता । पत्र साहित्य में आत्मीयता अर्थात् सापेक्ष दृष्टि की अत्यन्त आवश्यकता होती है । आत्मीयता का सम्बन्ध लेखक के अपने व्यक्तित्व के साथ भी है और दूरस्थ व्यक्ति के साथ भी ।[1]

लेखक की आत्मीयता सरल एवं सहज रीति से अभिव्यक्त होनी चाहिए । पत्र की भाषा इस रूप में निर्मित होनी चाहिये कि वह पत्र ही समझा जाय । उसके शब्दों में इतनी शक्ति रहनी चाहिये कि वह भाव ग्राहक को वशीभूत कर सके ।[2] इस प्रकार शैली में स्वाभाविकता का होना आवश्यक है ।

मुक्तक काव्य की तरह पत्र का आकार छोटा होता है । इसलिए लेखक को अपनी विचारधारा संक्षिप्त रूप से प्रकट करनी चाहिये । अधिक लम्बे आकार का पत्र, पत्र नहीं बल्कि कोई निबन्ध कहलाता है । अपने विषय को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक को पत्र संक्षिप्त रूप से लिखना चाहिए ।

बात को थोड़े शब्दों में अधिक से अधिक स्पष्टता देना पत्र की सबसे बड़ी मांग है । पत्रों में कुछ लोग तो अपना सारा व्यक्तित्व उडेल देना चाहते हैं और कुछ उनको निर्वैयक्तिक तथा रंगीनी से खाली रखना चाहते हैं । इस सम्बन्ध में मध्यम मार्ग का अनुसरण श्रेयस्कर है ।[3] अतः पत्र लेखक में गागर में सागर भरने वाली क्षमता होनी चाहिये ।

---

१ सिद्धान्तालोचन—धर्मचन्द बलदेवकृष्ण
२ सिद्धान्तालोचन—धर्मचन्द बलदेवकृष्ण
३ काव्य के रूप गुलाबराय

अंतिम विशेषता इस शैली की यह है कि पत्र लेखक को इस बात का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए कि यह पत्र भावग्राहक के अनुकूल है या नहीं। यदि पत्र में किसी ऐसे विषय का वर्णन है जो उसकी समझ के बाहर है तो वह प्रभावहीन हो जायेगा। इस प्रकार इस शैली की यह महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि पत्र भावग्राहक के अनुकूल होना चाहिए।

पत्र साहित्य का विकास

पत्र लेखन एक कला है यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति के पत्र कला की ऊँचाई को नहीं छू पाते। किसी पत्र का सौष्ठव और महत्त्व लेखक के व्यक्तित्व पर अवलम्बित है। लेखक का प्रयोजन रुचि और योग्यता आदि तत्त्व ही किसी पत्र को कला की वस्तु बनाकर सुरक्षित रख सकते हैं। पत्रों की अपील कुछ क्षण के लिए व्यक्तिगत होते हुए भी उसका मूल स्रोत लेखक के कलात्मक व्यक्तित्व में होता है।

भारतेन्दु कालीन पत्र साहित्य—हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम पत्र लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हुए हैं। इनके कुछ पत्रों का संग्रह ब्रजरत्नदास ने भारतेन्दु ग्रन्थावली तीसरा भाग में दिया है। इनके ये पत्र गोस्वामी श्री राधाचरण एवं श्री बद्रीनारायण श्री उपाध्याय प्रेमघन को लिखे हुए हैं। इन समस्त पत्रों में भारतेन्दुजी के साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय में ही ज्ञात होता है। केवल एक पत्र जो इन्होंने प्रेमघन' को लिखा है उसमें इन्होंने एक व्यक्तिगत गोपनीय घटना का वर्णन किया है। श्री राधाचरण को लिखे हुए इनके पत्रों से इनकी स्पष्टवादिता तटस्थ वृत्ति एवं अलौकिक पुरुषों एवं चित्रों के प्रति रुचि का आभास होता है। केवल एक पत्र में जो कि इन्होंने श्री बदरीनारायण प्रेमघन को लिखा था उसमें इनकी दार्शनिक विचारधारा का पता चलता है—

'आपका कृपा पत्र आया। यह संसार दुःख का सागर है और अपनी-अपनी विपत्ति में सब फँसे हैं पर मैं सोचता हूँ कि जितना मैं चारों तरफ से दुःख मे जकड़ा हूँ इतना और कोई कम जकड़ा होगा। पर क्या करूँ खर चला ही जाता है। बाबूजी का यह तुक बहुत ही ठीक है—है संसार का यह मजा, घन सरिस दुःख तडितसम सुख मोह छाजन छजा। इन्हीं झंझटों से आजकल पत्र नहीं लिखा। क्षमा कीजियेगा। चित्त वैसा ही है। इसमें सन्देह न कीजियेगा। सौ घुग पानी में रखे मिटे न चकमक आग।'[1]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात् दूसरे पत्र लेखक श्रीधर पाठक हैं। इनके समस्त पत्रों का संग्रह किसी एक पुस्तक में नहीं प्राप्त होता। फुटकर रूप में इनके पत्र प्राप्त होते हैं। इनका पत्र-व्यवहार श्री पिंकाट, बालमुकुन्द गुप्त जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' लोचनदास पाण्डेय, बनारसीदास चतुर्वेदी एवं भारतेन्दु आदि से हुआ था। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी से जो पत्र-व्यवहार हुआ था उन पत्रों

१ भारतेन्दु ग्रन्थावली, तीसरा भाग—ब्रजरत्नदास, पृ० ६७६

का संग्रह श्री ब्रजनाथसिंह विनोद ने अपनी पुस्तक 'द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र' में किया है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् १९५८ में हुआ। द्विवेदीजी को लिखे पत्रों में उस काल की लेखन प्रणाली एवं व्याकरण सम्बन्धी विवाद है। श्रीधर पाठकजी ने एक स्थान पर स्पष्ट लिखा है कि —

रेफ को प्राय सर्वत्र प्रकट रखना अर्थात् जहाँ उसे पुरानी प्रथा के अनुसार गुप्त रखना चाहिये वहाँ भी उसका आना, इससे अरोचकता उत्पन्न होती है और मुहाविरे का मजा मारा जाता है।[1]

इसके बाद अनेक उदाहरण हैं द्विवेदीजी के विचारों का खंडन करते हुए अन्त में उन्होंने लिखा है—

'मैं कोई नवीन प्रणाली निकालना नहीं चाहता परन्तु शिष्ट शुद्ध प्रथा का परम पक्षपाती हूँ—मुझे राजा शिवप्रसाद पं० राधाचरण गोस्वामी लाला बालमुकुन्द गुप्त की लेख शैली बहुत रुचती है और मुझे असीम प्रसन्नता हो यदि आप इन गुरुजनों का अनुसरण कर सकें।[2]

इनके चतुर्वेदी पाण्डेय भारतेन्दु गंगाप्रसाद अग्निहोत्री एवं बालमुकुन्द गुप्तजी को लिखे पत्रों का संग्रह रामचन्द्र मिश्र ने अपनी पुस्तक 'श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य' में किया है। स्वा० स्वामी नगीरथपुरी के लिए लिखित पत्र में एक छात्र की सी विनम्रता बालमुकुन्द गुप्त एवं गंगाप्रसाद अग्निहोत्री के लिए लिखे हुए पत्रों में मैत्री भाव एवं बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रति लिखित पत्रों में आत्मीयता स्पष्ट व्यक्त होती है।[3] भाषा और साहित्य के निर्माण के सम्बन्ध में पाठकजी के ये पत्र बड़े महत्वपूर्ण हैं। इनके पत्र गद्य एवं पद्य दोनों में लिखे हुए हैं।

भारतेन्दु युग के अन्य पत्र लेखकों में पंडित बालकृष्ण भट्ट एवं बालमुकुन्द गुप्त का नाम आता है। भट्टजी के श्रीधर पाठक को लिखे हुए कुछ पत्रों का संग्रह विनोदजी ने अपनी पुस्तक 'द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र' में किया है। ये पत्र गद्य और पद्य में लिखे गए हैं। बालमुकुन्द गुप्तजी के लिखे हुए उन सभी पत्रों का संग्रह है जो कि उन्होंने श्रीधर पाठक को लिखे थे। गुप्तजी के पत्रों में सुदूर अतीत की अनेक जानने योग्य बातें हैं। उस काल की साहित्यिक चोरी साहित्यिक विवाद और एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर के अनेक उदाहरण गुप्तजी के पत्रों में भरे पड़े हैं। ये पत्र ऐसे हैं कि जिनका महत्व आज भी कम नहीं हुआ है। हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास को स्पष्ट करने के लिए इन पत्रों को प्रमाण रूप में रखा जा सकता है।[4]

---

१ द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र—ब्रजनाथसिंह विनोद पृ० १९८
२ वही पृ० १८६
३ श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य रामचन्द्र मिश्र पृ० ३३३
४ द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र—ब्रजनाथसिंह विनोद भूमिका 'ग'

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतेन्दु युग मे जितने भी पत्र लेखक हुए हैं उन सब लेखकों के पत्रों का विषय विशेष रूप से साहित्यिक ही है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालमुकुन्द गुप्त एव श्रीधर पाठक के सभी पत्रों का अध्ययन करने से यही ज्ञात होता है कि ये पत्र हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास को स्पष्ट रूप मे व्यक्त करते हैं। इन सभी लेखकों के साहित्यिक व्यक्तित्व की जानकारी तो हो जाती है परन्तु व्यक्तिगत जीवन के विषय मे कुछ कम ही आभास होता है। केवल एक-दो पत्र ही इन्होंने ऐसे लिखे हैं जिनमे इनके व्यक्तिगत जीवन के कुछ अंश का पता चलता है।

द्विवेदीकालीन पत्र साहित्य—द्विवेदी युग के पत्र लेखकों मे सर्वप्रथम आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का नाम आता है। इनके समस्त पत्रों का सकलन बैजनाथसिंह विनोद ने सन् १९४८ मे 'द्विवेदी पत्रावली' नाम से प्रकाशित किया। इनके पत्रों से हम इनके साहित्यिक एव व्यक्तिगत जीवन की झाकी प्राप्त होती है। कुछ व्यक्तिगत प्रसगों को छोडकर द्विवेदीजी के पत्र किसी न किसी भाषा सम्बन्धी प्रश्न अथवा साहित्यिक समस्या पर लिखे गए हैं फलत आधुनिक हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास पर इन पत्रों से काफी प्रकाश पडता है। व्यक्तिगत जीवन म से उनकी निर्भीकता स्पष्टवादिता दृढ निश्चय मितव्ययिता आदि गुणो का पत्रों मे वर्णित छोटे छोटे प्रसगों से पता चलता है।

आचार्य द्विवेदी के पश्चात् पद्मसिंह शर्मा के पत्र प्राप्त होते हैं। इनके पत्रों का सग्रह पडित बनारसीदास चतुर्वेदी एव हरिशकर शर्मा ने सन् १९५६ मे 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' नाम से प्रकाशित किया। शर्माजी के पत्रों से हम उनके मानव रूप एव साहित्यिक रूप दोनों का परिचय मिलता है। इनके पत्रों को पढकर यह स्पष्ट हो जाता है कि पडितजी केवल प्रकाण्ड पडित ही नहीं थे वरन् उनमे व्यवहार-बुद्धि, साहस, निर्भीकता, विचारों की दृढता और स्वाभिमान था और सर्वोपरि उनका मानव रूप इन पत्रों से भलीभाँति विदित हो जाता है। लगभग प्रत्येक पत्र से इनकी जिन्दादिली टपकती है। इनकी रचनाओं के सम्बन्ध म भी अनेक आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इनके पत्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रत्येक घडी रस मे डूबे रहते थे।

इनकी साफगोई दिखावट से घृणा दम्भ से अरुचि आत्मगौरव, निर्भीकता आदर्शपालन साहित्य सेवा, वत्सलता, भाषाविकार आदि अनेक बातों का इन पत्रों से पता चलता है। उनके लिए यह कहा गया है कि सरस्वती की रक्षा के लिए तो व वस्तुत 'शमशेर' थे। प्रस्तुत सग्रह से इस कथन की सार्थकता पूर्णत प्रमाणित होती है।[1]

द्विवेदी युग के अन्य प्रसिद्ध पत्र लेखकों मे मुशी प्रेमचन्द का नाम उल्लेखनीय है। इनके पत्रों का सग्रह 'प्रेमचन्द चिट्ठी पत्री भाग प्रथम' एव 'प्रेमचन्द चिट्ठी पत्री भाग द्वितीय' के नाम से अमृतराय ने सन् १९६१ में प्रकाशित किया। मुशीजी के

---

१ पद्मसिंह शर्मा के पत्र—लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय, आलोचना, अक्तूबर, १९५६

समस्त व्यक्तित्व का ज्ञान हम इनके पत्रों से होता है। जितने भी पत्र इन्होंने अपने-अपने मित्रों को लिखे वे प्रकाशित करवाने के उद्देश्य से तो लिखे न थे, इसलिए उनमें कई ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो कि इनके व्यक्तित्व को समझने में पूर्णतया सहायक सिद्ध हुई है। अपने परिवार, स्त्री एवं व्यक्तिगत विचारों का जैसा नग्न चित्र इन्होंने अपने पत्रों में खींचा है वैसा शायद ही आजतक कोई खींच सका हो। श्री जैनेन्द्र को लिखे इनके पत्र विशेषतया महत्वपूर्ण हैं। उनसे इनके व्यक्तिगत जीवन एवं विचारों को समझने में विशेष सहायता प्राप्त होती है। समस्त पत्रों में इनका भोलापन झलकता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा श्री केदारनाथ पाठक को लिखे कुछ पत्र बिनोदजी ने अपनी पुस्तक 'द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र' में प्रकाशित किए हैं। इन पत्रों से शुक्लजी की स्पष्टवादिता एवं साहित्यिक व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है।

सन् १९२५ में 'माधुरी' पत्रिका में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार के पत्र 'एक सप्ताह' एवं मैथिलीशरण गुप्तजी का एक पत्र 'साकेत' पर महात्माजी 'पत्र व्यवहार' नाम से प्रकाशित हुए। विद्यालंकारजी के १३ श्रावण से १९ श्रावण तक के लिखे पत्र हैं। इन पत्रों में इनकी भावुकता दृष्टिगोचर होती है। गुप्तजी ने अपने पत्र में 'साकेत' लिखने का उद्देश्य उसका नामकरण, कला एवं भाव पक्ष पर अपने विचार रखे हैं।

इसके पश्चात् डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा के कुछ पत्र 'सुधा' पत्रिका में सन् १९३६ एवं सन् १९३८ में प्रकाशित हुए। ये पत्र उन्होंने अरब, इटली, पेरिस, बेल्जियम आदि से लिखे हैं। इन पत्रों में इन्होंने अपनी समस्त यात्रा का वर्णन किया है। सन् १९४८ में भदन्त आनन्द कौसल्यायन द्वारा लिखे 'भिक्षु के पत्र' प्रकाशित हुए।

इनके अतिरिक्त कमलापति त्रिपाठी के पत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके पत्रों का संग्रह 'बन्दी की चेतना' नाम से सन् १९४८ में प्रकाशित हुआ। त्रिपाठीजी ने ये पत्र नैनी जेल से अपने आत्मज श्री लोकपति त्रिपाठी को लिखे हैं। यद्यपि ये पत्र व्यक्तिगत हैं तो भी आदर्श, नैतिकता, अध्यात्म, मानवता एवं भारतीय जीवन-दर्शन के प्रति अगाध रूप से आस्थावान् गम्भीर अध्येता तथा विचारक की अनुभूति होने के कारण इन पत्रों में अर्थ, काम, धर्म, विज्ञान, दर्शन एवं समाजशास्त्र की दृष्टि से जीवन एवं जगत के सामान्यतः प्रत्येक पहलू पर जो सम्यक् एवं मूल्यवान् विचार प्रस्तुत किए हैं उनके कारण इनका महत्व सार्वलौकिक हो उठा है। विषमता की पीड़ा से त्रस्त तथा समाज और जीवन तथा जगत में समता एवं सामंजस्य की स्थापना के लिए विचार पथ का सुस्पष्ट निर्देश भी इस कृति में है।

सन् १९५७ में शिवचन्द्र नागर द्वारा लिखे 'मानव को पत्र महात्मा के विचार और व्यक्तित्व' नाम से प्रकाशित हुए। इन पत्रों का विषय महात्माजी ही हैं।

आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र साहित्य

हिन्दी पत्र साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं ने भी बहुत सहयोग दिया है।

आजकल हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं मे पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। सन् १९६२ म श्रीराम शर्मा का श्री नेहरू को एक पत्र' 'विशाल भारत' म प्रकाशित हुआ। सन् १९६३ मे सुरेशचन्द्र द्वारा लिखे पत्र—वृन्दावनलाल वर्मा पत्र के दपण म, पत्र-व्यवहार जिनका सुखद व्यसन है —प० बनारसीदास चतुर्वेदी के दो पत्र 'विशाल भारत मे प्रकाशित हुए। इसके अतिरिक्त बनारसीदास चतुर्वेदी ने स्वर्गीय पीर मुहम्मद यूनिस के पत्र 'सम्मेलन पत्रिका म प्रकाशित किए हैं। यही नही सन् १९६४ म नीरज के लिखे लिख भेजत पाती' पत्रों का सग्रह प्रकाशित हुआ है। इस प्रकार हिन्दी पत्र साहित्य प्रगति पर है।

अनूदित पत्र साहित्य—इन पत्रों के अतिरिक्त कुछ अनूदित पत्र सग्रह भी हिन्दी म प्राप्त होते हैं। बापू के समस्त पत्रों का हिन्दी अनुवाद रामनारायण चौधरी ने किया है। इनके जमनालाल बजाज को मणिबहन को, आश्रम की बहनों को लिखे समस्त पत्रो का हिन्दी अनुवाद प्राप्त है। इसके अतिरिक्त अबीलाड और हेलोज के प्रेमपत्रों का प्रायश्चित' नाम से अनुवाद सत्यजीवन वर्मा ने सन् १९२९ मे किया। श्री अरविन्द के पत्र भी बगला से हिन्दी म अनुवाद रूप म पाए जाते हैं। 'पत्राजलि' श्री सतीश चक्रवर्ती की बगला पुस्तक स्वामी स्नीर पत्र का हिन्दी रूपान्तर पडित कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ने सवत् १९७९ म किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर एव श्री नेहरू के पत्रो का भी हिन्दी अनुवाद प्राप्त है।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतेन्दु युग का पत्र साहित्य द्विवेदी युग के पत्र साहित्य से भिन्न है। भारतेन्दु युग मे जितने भी पत्र लेखक हुए हैं उन सबका विषय विशेष रूप से साहित्यिक ही था। द्विवेदी युग के पत्र लेखकों ने अपने पत्रों का विषय जहाँ साहित्यिकों को लिया वहा व्यक्तिगत जीवन म घटी घटनाओं पर भी प्रकाश डाला है। इस प्रकार पत्र लिखने म जो कला कुशलता द्विवेदी-युगीन लेखकों म प्राप्त होती है वह भारतेन्दु युग के लेखकों म नही। वतमान काल म कुछ पत्र हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित हो रहे हैं। इससे अनुमान है कि हिन्दी पत्र साहित्य विकासोन्मुख है। इसकी प्रगति म साहित्यिक ही नही प्रत्युत राजनैतिक, सामाजिक एव धार्मिक व्यक्ति भी सहयोग दे रहे ह। पत्र साहित्य का यह विकास मैंने प्रकाशित पुस्तकों एव पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित पत्रो के आधार पर लिखा है।

विभाजन

हिन्दी पत्र साहित्य पर दृष्टिपात करने के पश्चात् उसको निम्नलिखित रूप से विभाजित किया जा सकता है—

साहित्यिक पत्र—इन पत्रों का विषय साहित्य से सम्बन्धित होता है। साहित्य से मेरा अभिप्राय भाषा, व्याकरण शैली एव पुस्तक आदि से है। ऐसे पत्रो म लेखक का मुख्य उद्देश्य विषय को समझाकर उसके प्रति अपने विचार प्रकट करना होता है। ऐसे पत्रो म लेखक का व्यक्तित्व गौण एव विषय मुख्य रूप से प्रधान होता है। आचार्य

द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा एवं श्रीधर पाठक के पत्र इसी श्रेणी के हैं। श्रीधर पाठकजी के अधिकांश पत्रों का विषय साहित्यिक है। इनके पत्रों में उस काल की लेखन प्रणाली एवं व्याकरण सम्बंधी विवाद है। एक पत्र में सर्वनाम सम्बन्धी लिखते हैं—

"सर्वनाम आदि के व्यवहार की नई रीति जी में बहुत दिनों से खटक रही थी। थोड़े से उदाहरण यहां देता हूं—१ उसने कहा 'हे कृष्ण' और (वह) चल दिया—यहां 'वह' का प्रयोग प्रचारविरुद्ध है यद्यपि व्याकरण से शुद्ध है। २ जब वह चीखा (तब) मैं चौंक पड़ा। यहां 'तब' में मुहाविरा है तो होना चाहिए। प्रायः 'तब' (प्रचार के अनुसार) जब के बाद छोड़ दिया जाता है—परन्तु अब उसके निरंतर वा निर्विकल्प व्यवहार की परिपाटी पड़ती जाती है।"[1]

भारतेंदुजी के भी कुछ पत्रों के विषय का सम्बन्ध साहित्य से ही है। गोस्वामी श्रीराधाचरण जी को लिखते हैं—

"महात्माओं ने जो पद बनाए हैं उनमें प्रिया प्रियतम का जो संवाद है वा अन्य सखियों की उक्ति है उन्हीं सबों के यथास्थान नियोजन से एक रूपक बने तो बहुत ही चमत्कार हो अर्थात् नाटक की और जितनी बातें हैं अमुक आया गया इत्यादि अंक दृश्य इत्यादि मात्र तो अपनी सृष्टि रहे किन्तु संवाद मात्र उन्हीं प्रवीनों के पदों की योजना से हो। जहां कहां पूरा पद रहे वहां पूरा कहीं आधा चौथाई एक टुकड़ा जितना आवश्यक हो उतना मात्र उनमें से ले लिया जाय। यह भी यों ही कि एक वर पदों में से चुन-चुन कर अत्यन्त चोखे चोखे जो हों वा जिनमें कोई एक टुकड़ा भी अपूर्व हो वह चिह्नित रहे फिर यथा स्थान उनकी नियोजना हो, ऐसा ही गीत गोविन्द से एक संस्कृत में हो बहुत ही उत्तम ग्रन्थ होगा।"[2]

आचार्य द्विवेदीजी 'तुलसी दर्शन-पुस्तक' के विषय में विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं—

'तुलसी दर्शन की कापी आपने क्या भेजी मुझे संजीवनी का दान दे डाला। मैंने उसका कुछ अंश अब तक पढ़ा कर सुना है विशेषकर भक्ति विषयक। मैं मुग्ध हो गया। आप धन्य हैं। ऐसी पुस्तक लिखी जैसी तुलसी पर आज तक किसी ने न लिखी थी और न यही आशा है कि आगे कोई लिखेगा।

आपने अनेक दृष्टियों से रामचरितमानस पर विचार किया है। समन्वय भी यथास्थान ठीक-ठाक कर दिया है। आपने इस विषय में जो विद्वत्ता प्रकट की है वह दुर्लभ है। मेरे मन में आया था कि शाण्डिल्य और नारद के भक्ति सूत्रों की याद आपको दिलाऊं। पर पुस्तक में जो सूची देखी तो लज्जित हो गया।

---

१ द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र—सम्पादक बैजनाथसिंह विनोद, पृ० १६७

२ भारतेन्दु ग्रन्थावली तीसरा भाग संकलनकर्ता ब्रजरत्नदास, पृ० ६६६

मुझे ज्ञात हुआ कि आप इस विषय में मुझ से हजार गुना अधिक जानते हैं।"[1]

इसी प्रकार बालमुकुन्द गुप्त के पत्रों में भी सुदूर अतीत की अनेक जानने योग्य बातें हैं। उस काल की साहित्यिक चोरी, साहित्यिक विवाद और एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर के अनेक उदाहरण गुप्तजी के पत्रों में भरे पड़े हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के विकास का स्पष्ट करने के लिए इन पत्रों को प्रमाण रूप में रखा जा सकता है।

आत्मकथात्मक पत्र—इन पत्रों में लेखक अपने व्यक्तित्व का परिचय स्पष्ट रूप से आत्मकथात्मक शैली में अपने मित्र व सम्बन्धी को वर्णन करता है। ऐसे पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर होता है। स्वाभाविकता स्पष्टता आदि विशेषताएँ इन पत्रों की होती है। एसे पत्र आत्मकथा एवं जीवनी के लिए सहायक होते हैं। गोपनीय घटनाओं का वर्णन होने से ये हृदय का पूर्ण दर्पण होते हैं। हिन्दी साहित्य में मुंशी प्रेमचन्द आचार्य द्विवेदीजी, पद्मसिंह शर्मा रामचन्द्र शुक्ल आदि साहित्यिकों के कई पत्र इसी श्रेणी के हैं।

मुंशी प्रेमचन्द एक पत्र में अपने हालात के विषय में लिखते हैं—

मेरे हालात नोट कर लें। तारीख पैदायश संवत् १९३७। बाप का नाम मुंशी अजायबलाल। सुकूनत मौजा मढवा लमही। मुत्तसिल पाण्डेपुर। बनारस। इब्तदाअन आठ साल तक फारसी पढी। फिर अंग्रेजी शुरू की। बनारस के कालेजिएट स्कूल से एन्ट्रेंस पास किया। वालिद का इन्तकाल पंद्रह साल की उम्र में हो गया। वालिदा सातवें साल गुजर चुकी थी। फिर तालीम के सीगे में मुलाजिमत की। सन् १९०१ ई० से लिटरेरी जिन्दगी शुरू की। रिसाला जमाना में लिखता रहा। कई साल तक मुतफर्रिक मजामीन लिखे। सन् १९०४ में एक हिंदी नाविल प्रेमा लिखकर इण्डियन प्रेस से शाया कराया। सन् १२ में जल्वए ईसार और सन् १८ में बाजारे हुस्न लिखा। हिन्दी में सेवासदन, प्रेमाश्रम रंगभूमि, कायाकल्प—चारों नाविल दो-दो साल के वक्फे बाद लिखे—अब खाना खर्ची है। बाकी उमर आपको खुद मालूम है।'[2]

इसी प्रकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक पत्र में अपने घर के हालात के विषय में लिखते हैं—

'प्रिय आजकल मेरे ऊपर ईश्वर की अथवा शनैश्चर की बुरी दृष्टि है। एक के उपरान्त दूसरी दूसरी के उपरान्त तीसरी विपत्ति में आ फँसता हूँ। सुनिए मैं काशी जाने की पूरी तैयारी कर चुका था परन्तु बीच में मेरे घर ही में एक विलक्षण षडचक्र रचा गया? हरिश्चन्द्र का गौना छः या सात दिन में आने वाला है। इधर मेरे पिताजी कई दिनों से दौरे पर है। इसी बीच में मेरी

---

१ द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र, पृ० ८९ ९०

२ प्रेमचन्द चिट्ठी-पत्री भाग १, पृ० १६१

विमाता को भी भयंकर मूर्ति धारण करने की सूझी। ४०० रु० का जेवर गायब करके यह दिया कि मेरे पास ही मेरे घर में से चोरी हो गया। वे जेवर प्रायः वही थे जो हरिश्चन्द्र के विवाह में मिले थे—मेरे पिताजी को खबर दी जा चुकी है, आज वह आने वाले हैं।'[1]

इस प्रकार अनेक पत्रों में जहाँ लेखक ने अपने व्यक्तित्व के विषय में लिखा है वहाँ उस पर पड़ने वाले वातावरण एवं व्यक्तिगत घटनाओं का भी स्पष्ट रूप से वर्णन है। ऐसे अनेकों पत्र आचार्य द्विवेदी आदि साहित्यिकों के भी प्राप्त होते हैं। उनमें लेखक की ईमानदारी एवं जिन्दादिली प्राप्त होती है।

अन्य चरित्रमूलक पत्र—हिन्दी पत्र साहित्य में कुछ ऐसे पत्र भी हैं जिनमें लेखकों ने अन्य व्यक्तियों के चरित्र के विषय में लिखा है। ऐसे पत्र अन्य चरित्रमूलक कहलाते हैं। आचार्य द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, मुंशी प्रेमचन्द एवं निश्चन्द्र नागर द्वारा प्रकाशित पत्र इसी श्रेणी के हैं। ऐसे पत्रों की शैली समास शैली होती है। द्विवेदीजी ने एक पत्र में श्रीमान् राजा कमलानन्द के विषय में लिखा है—

> 'श्रीमान् राजा कमलानन्द सिंह की उदारता, गुणग्राहकता और सामर्थ्य का और क्या उदाहरण हो सकता है। आपके उदाहरण से कर्णवलि और दधीचि आदि की कथा सब सच जान पड़ती है। श्रीमान् की प्रतिष्ठा, कीर्ति और ख्याति, अनन्य परिमय और दिव्यव्यापिनी है उनकी रचना हमारी समझ में है ही नहीं उसकी किस तरह वृद्धि होगी या कौन कार्य करने से वृद्धि होगी यह बतलाना हमारी सामर्थ्य के बाहर है।'

पं० पद्मसिंह शर्मा भी चतुर्वेदीजी को पन्तजी के विषय में लिखते हैं—

> "इस बार पहली बार पंडित सुमित्रानन्द पंत से बिजनौर में मुलाकात हुई। आदमी तबीयत के साफ और जेंटिलमन साबित हुए। पल्लव की भूमिका में जो पहले कवियों के विषय में अण्ट सण्ट अनाप शनाप ऊल-जलूल लिख गए हैं उसे वापिस लेने को कहते थे। यह भी कहते थे कि ब्रजभाषा का विरोध करने के लिए मुझे खास तौर से कहा गया था। इसी से वैसा लिखना पड़ा। सुरीला गला है। सुरताल से वाकिफ हैं। राग रागिनियों के नाम जानते हैं। आजकल में एक आदर्श छायावादी कवि में जो गुण होने चाहिए सब हैं।

इस प्रकार अनेक पत्र इन व्यक्तियों ने अन्य चरित्र विषयक लिखे हैं।

वर्णनात्मक पत्र—इस प्रकार के पत्रों में लेखक किसी *नगर-स्थान या किसी* विशेष भवन का वर्णन अपने पत्रों में वर्णनात्मक शैली में करता है। डा० धीरेन्द्र वर्मा के सभी पत्र इस श्रेणी में आते हैं। इनके योरप, पेरिस, इटली, वेल्जियम आदि से लिखे पत्र इसी प्रकार के हैं। ऐसे पत्रों में लेखक की वर्णन शैली में सजीवता एवं स्वाभाविकता का होना परमावश्यक है। मध्यमती राज्य के मुख्य नगर इन्दन का वर्णन एक

[1] द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र, पृ० २१८

पत्र में डाक्टर साहब ने किया है—

'ड्रेस्डेन नगर बर्लिन की अपेक्षा 'पुराना और शान्त है। एल्ब नदी के किनारे पहाड़ियों से घिरा होने की वजह से रमणीक मालूम होता है। चारों ओर का दृश्य अजमेर की याद दिलाता है और नदी के किनारे का दृश्य आगरा की जमना का।'

नगर व स्थान के वर्णन की अपेक्षा वहां रहने वाले स्त्री पुरुषों के विषय में भी डाक्टर साहब ने लिखा है। बेल्जियम के स्त्री पुरुषों के विषय में लिखते हैं—

'बेल्जियम के स्त्री पुरुषों के मुख और व्यवहार से शराफत टपकती है इंगलैण्ड के लोगों का अक्खड़पन तथा पेरिस वालों की कामुकता यहां नहीं दिखलाई पड़ती। लोग बहुत मीठे ढंग से बात करते हैं। अगर उन्हें अनुमान भी हो जाता था कि हम लोगों को किसी वजह की तलाश है तो खुद पूछ लेते थे। दौड़ धाम भी ब्रूसेल्ज में लन्दन या पेरिस की सी नहीं है। यों साम्राज्य रखने वाले देशों के दिमाग कुछ फिरे हुए होना स्वाभाविक है।'

इस प्रकार अनेक पत्रों में नगरों का विशेष स्थानों का वर्णन प्रमुख रूप से पाया जाता है।

विचारप्रधान पत्र—विचारप्रधान पत्रों में किसी भी विषय एवं समस्या पर प्रकाश डाला जाता है। पत्र का विषय सामाजिक, राजनतिक, धार्मिक एवं नतिक कुछ भी हो सकता है। इस प्रकार के पत्रों मे उपदेशात्मकता अधिक होती है। वैसे तो सभी लेखकों के कुछ पत्र विचारप्रधान हैं परन्तु विशेषतया कमलापति त्रिपाठीजी के पत्र इस कोटि के हैं। यद्यपि त्रिपाठीजी के पत्र व्यक्तिगत हैं तो भी आदर्श नैतिकता अध्यात्म मानवता एवं भारतीय जीवन दर्शन के प्रति अगाध रूप से आस्थावान् गंभीर अध्यता तथा विचारक की अनुभूत कृति होने के कारण इन पत्रों में अर्थ धर्म काम विज्ञान दर्शन एवं समाजशास्त्र की दृष्टि से जीवन एवं जगत के सामान्यत प्रत्येक पहलू पर जो सम्यक तथा मूल्यवान् विचार प्रस्तुत किए हैं उनके कारण इसका महत्व सार्वलौकिक हो उठा है। विषमता की पीड़ा से त्रस्त व्यक्ति तथा समाज और जीवन तथा जगत से समता एवं सामंजस्य की स्थापना के लिए विचार पत्र का सुस्पष्ट निर्देश भी इस कृति में है।

स्वामी विवेकानन्द के पत्र भी विचारात्मक पत्रों की श्रेणी में आते हैं इनके सभी पत्र धर्म दर्शन, संस्कृत, शिक्षा, कला, भ्रमण, समाज तथा राष्ट्रनिर्माण आदि महत्वपूर्ण विषयों से सम्बन्धित हैं।

डायरी

डायरी वह आत्मीय पुस्तक है जिसमें लेखक प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओं का ही वर्णन नहीं करता अपितु इसके साथ ही साथ मानवीय प्रतिक्रियाओं का वर्णन भी संक्षिप्त रोचक एवं सुसंगठित रूप से करता है। इसका विस्तृत विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया है।

सत्य

हिन्दी साहित्य में जो भी डायरियाँ एवं डायरियों के अंश पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं उनके अनुसार डायरी के तत्त्व निम्नलिखित हैं—

विषयवस्तु का विस्तार—डायरी का यह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। विषय से अभिप्राय लेखक के जीवन में घटने वाली छोटी-मोटी एवं उल्लेखनीय घटनाएँ ही नहीं हैं अपितु जीवन में अनुभव की हुई कोई ऐसी घटना, या अनुभूति, विचित्र वस्तु आदि का विवरण है जो सामान्य मानव समाज के लिए भी निःसन्देह नवीन अद्भुत रोचक तथा आकर्षक हो।[1] डायरी लेखक का बहुत कुछ कौशल उसके विषय चुनाव में है। साधारण घटनाओं का वर्णन करने से कोई लाभ नहीं, यद्यपि वर्णन कौशल द्वारा साधारण विषय में भी सुन्दरता लाई जा सकती है। तथापि रचना की उत्तमता अधिकांश में सामग्री की उत्तमता पर निर्भर रहती है। जीवन के जिस भी भाग का वर्णन लेखक अपनी रचना में करे वह सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिसका प्रभाव लेखक पर भी पड़े और समाज पर भी होता है। विषय चुनाव डायरी में कृत्रिम नहीं होना चाहिए। यहाँ पर चुनाव से मेरा अभिप्राय छोटी छोटी बातों एवं घटनाओं के वर्णन से है।

विषय वर्णन में सर्वप्रथम रोचकता का होना आवश्यक है। डायरी लेखक को अपने जीवन की घटनाओं का इस ढंग से वर्णन करना चाहिए जिससे वह पाठक के मन को अपनी ओर खींच सके। रोचकता दो ही बातों से हो सकती है—कौतूहलता एवं नवीनता। पाठक कुछेक घटनाएँ पढ़कर सोच में पड़ जाए कि इस जीवन की घटना के पश्चात् लेखक का क्या होगा। नवीनता होने के कारण पाठक का मन उकताता नहीं। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी डायरी में जीवन के जिन सात वर्षों का वर्णन किया है वह अत्यन्त रोचक है। सत्य असत्य, धर्म, विवाह, शिक्षा आदि समस्याओं पर विचार प्रकट करते हुए भी लेखक ने वर्णन शैली में रोचकता का ध्यान रखा है। सत्य क्या है इस विषय को भी कितनी रोचकपूर्ण भाषा में व्यक्त किया है —

> संसार में इतने बहुत से धर्म हैं इससे ही मालूम होता है कि सत्य का जानना कितना कठिन है। एक ओर एक बूढ़ा मनुष्य जनेऊ पहने माथे पर चन्दन लगाए, स्नान करके कुशासन पर बैठा गायत्री का जाप कर रहा है। दूसरी ओर बूट और कपड़े पहने गिरजाघर में खड़ा हुआ एक मनुष्य आँख मूँदकर ईसा मसीह से पापों को क्षमा करने की प्रार्थना कर रहा है। तीसरी जगह बकरे को मारकर झटपट हाथ धो कंधे पर के सुर्ख अंगोछे से मुँह पोंछ, मुल्ला साहब मसजिद में घुटनों के बल बैठे हुए या मोहम्मद रसूल अल्लाह श्रद्धापूर्वक कह रहे हैं। इसमें कौन ठीक है ?[2]

आत्मकथा की भाँति डायरी में क्रमबद्ध सुगठित सुविस्तृत जीवनवृत्त नहीं रहता

---

१ गद्य और कौशल सीताराम चतुर्वेदी

२ मेरी कालिज डायरी—डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० १२

इसम अपेक्षाकृत अधिक संक्षिप्तता रहती है।[1] इस प्रकार विषय मे सक्षिप्तता का होना भी परमावश्यक है अत्यधिक विस्तार विषय को नीरस बना देता है मुक्तिबोधजी ने केशव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को कुछ ही पक्तियो म कह डाला है—

'वह बालक सचमुच बहुत दयालु, धीर गम्भीर, भीषण कष्टों को सहज ही सह लेने वाला अत्यन्त क्षमाशील था। किन्तु साथ ही वह शिथिल स्थिर अचचल यन्त्रवत् और सहजस्नेही था। उसम सबसे बडा दोष यह था कि उसम बालकोचित बालसुलभ गुण-दोष नही थे। मुझे हमशा लगा उसका विवेक वृद्धता का लक्षण है।"[2]

विषय वणन का तीसरा गुण स्पष्टता है। डायरी म लेखक को अपने व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप मे विश्लेषण करना चाहिए—क्योंकि डायरी[3] लेखक अपने जीवन या जीवन के किसी महत्वपूर्ण प्रसग को लेकर डायरी लिखता है। डायरी लेखन म वह यथाथ घटनाओ को इस प्रकार सक्षप म व्यक्त करता है कि सारी बात भी स्पष्ट हो जाय और विस्तार भी न हो। इस प्रकार वही डायरी सफल हो सकती है जिसम लेखक की पूर्ण रूप से ईमानदारी है। स्पष्ट वणन स ही लेखक की पूर्ण सत्यता का अनुमान हो जाता है।

इस प्रकार विषयवस्तु म रोचकता, सक्षिप्तता, स्पष्टता एव सुसगठितता आदि गुणो का होना आवश्यक है। विषयवस्तु भी कई प्रकार की हो सकती है। लेखक केवल दनन्दिनी म अपने जीवन म घटित घटनाओ का ही वणन करना अपना उद्देश्य नही समझता, उसके मन म जो भी विचार चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो, धार्मिक हो एव साहित्यिक हो सभी को अपनी डायरी मे लिख सकता है। इसके साथ बात यह है कि एक तो उनमे लेखक का व्यक्तित्व झलकता हो और दूसरा वह पाठक को लाभ दे सके। विषयानुसार हिन्दी साहित्य मे कई प्रकार की डायरियां प्राप्त होती हैं। गाधीजी का 'दिल्ली डायरी' जिसम १० ६ ४७ स ३०-१ ४८ तक के प्राथना प्रवचनो का सग्रह है—राजनीतिक डायरी है। प्रवचन डायरी भाग प्रथम एव द्वितीय श्री आचाय तुलसी की धार्मिक डायरियाँ हैं। इनका विषय धार्मिक है। इलाचन्द्र जोशी के कुछ डायरी के पन्ने एसे हैं जिनका विषय साहित्य से सम्बन्धित है। कुछ एसी डायरियाँ है जिनम नगरो एव स्थान विशेष का वणन है। डा० रामकुमार वर्मा की 'वाराणसी की डायरी एव वाल्मीकि चौधरी की 'राष्ट्रपति भवन की डायरी' ऐसी ही डायरिया हैं।

डायरी लेखक विषयवस्तु को दो प्रकार से लिख सकता है। जब व्यक्ति स्वय अपनी डायरी लिखता है तो वह आत्मचरित्र का रूप हो जाता है और जब कोई

---

१ सिद्धातालोचन—धमचन्द सन्त बलदेव कृष्ण

२ *एक साहित्यिक की डायरी*—गजाननमाधव मुक्तिबोध, पृ० ३

३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धात—डा० गोविन्द त्रिगुणायत

अन्य व्यक्ति डायरी किसी अन्य के सम्बन्ध में लिखता है तो वह जीवन चरित की श्रेणी में आ जाता है।[1] हिन्दी साहित्य में आत्मचरित की श्रेणी में डा० धीरेन्द्र वर्मा की 'मेरी कालिज डायरी' गजानन माधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी' एवं गु[illegible]नाल त्रिपाठी की 'दैनन्दिनी' आती हैं। जीवन चरित की श्रेणी में वाल्मीकि चौधरी की 'राष्ट्रपति भवन की डायरी' है। इस प्रकार विषयवस्तु लिखने के दो ही ढंग हो सकते हैं।

सम्पर्क में आए हुए व्यक्तियों एवं घटनाओं से लेखक का सम्बन्ध और उनके प्रति प्रतिक्रियाएँ—डायरी में लेखक उन्हीं व्यक्तियों का तथा उन्हीं घटनाओं का वर्णन करता है जिनसे उसका सम्बन्ध होता है। वह केवल वर्णन ही नहीं बल्कि स्वेच्छानुसार उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण भी करता है। वह घटनाओं का वर्णन ही नहीं बल्कि कुछ उनमें से जो उसके जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है डायरी में स्पष्ट रूप से पता चल जाता है। जहाँ तक पात्रों का प्रश्न है डायरी लेखक एक उपन्यासकार या नाटककार की तरह काल्पनिक पात्र या अधिक पात्र लाने का इच्छुक नहीं होता। वह तो स्वयं ही प्रमुख पात्र है जिसके चारों ओर सभी कुछ घूमता है। सबका उसी के व्यक्तित्व की शोभा है।

यदि लेखक अपनी डायरी में तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन करता है तो साथ ही उनका प्रभाव अपने व्यक्तित्व पर पड़ता भी दिखलाएगा। यदि वह किसी पारिवारिक घटना का वर्णन करता है तो भी अपने को अवश्य प्रभावित दिखलाएगा। उदाहरणतया मेरी कालिज डायरी में डा० धीरेन्द्र वर्मा ने जहाँ अपनी दादी के देहान्त का वर्णन किया है वहाँ कुछ ही पंक्तियों में उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं का भी साथ में वर्णन किया है—

> उनके गुणों के बारे में क्या कहूँ। पिताजी के लिए वह पिता की तरह थी। मुझे करीब करीब उन्होंने ही पाला था। समझदारी में मैंने उनके बराबर आज तक कोई अन्य स्त्री नहीं देखी थी। प्रबन्ध करने में वे पुरुषों से भी अधिक दक्ष थी। काम करने की रुचि उनकी इतनी अधिक थी कि वे खाली बैठना जानती ही नहीं थी।'

वहाँ मृत्यु को प्रत्यक्ष देखकर उसके मन पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण भी लेखक ने किया है—

> 'मेरा अनुभव यह हो रहा है कि मृत्यु के दुःख को आदमी इसलिए धीरे धीरे भूल जाता है कि अन्तिम समय के कष्टों की तसवीर धुंधली होती जाती है। मेरे हृदय में सबसे अधिक उद्वेग जिया के अन्तिम दिन की असह्य अन्तर

---

१ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास—चन्द्रावती सिंह पृ० २१

वेदना को याद करके होता है। उसका स्मरण आते ही वह पीडाजनक दृश्य चित्र की भाँति आँखो के आगे खिच जाता है। वास्तव म मृत्यु म बहुत ही कष्ट होता है। मैं तो मृत्यु से बहुत ही डरने लगा हूँ—अपने लिए भी और दूसरो क लिए भी।"[1]

उपयु क्त उदाहरण से स्पष्ट है कि लेखक ने दादी की मृत्यु की घटना के वणन म उसके यक्तित्व पर प्रकाश डालत हुए उसके प्रभाव को भी व्यक्त किया है। इसस स्पष्ट है कि डायरी म लेखक घटनाओ का ही वणन नही करता अपितु उसक प्रभाव को भी व्यक्त करता है।

प्रत्यक घटना के वणन और उसके प्रभाव क साथ साथ लेखक उन व्यक्तियो का वणन भी मनोविश्लपणात्मक ढग से करता है जिनसे उसका सम्बन्ध होता है। सुन्दरलाल त्रिपाठीजी ने अपन भागिनेय विद्यापति का वणन अपनी 'दनदिनी म इसी प्रकार से किया है—

शिरा गिरा और अवयव अवयव के कोमल विशाल सृजन म नाम की महिमा से मूत सिद्ध कवि हैं न विद्यापति। आवग विह्वल आद्र, अपलक विपुल, निविड नेत्रा से, एक मगी से विच्छेद कष्ट का जमीन कठिन, मूक रहस्य शायद मुझसे उद्घाटित कर रहे हो विद्यापति राधा की तन्मयता, मीरा की एव निष्ठा वैष्णव कवियो की निविडता, सुनता हू अध्यात्म का सौंध है सो चाहे जो हो किन्तु निर्विवाद तुम इन सबसे परे, ऊचे रहस्यमय सीमातीत, वणनातीत, वदनामय कोमल सुन्दर दीख पडते हो साधक। एक निमिप के स्नेप' के अवसर क तुम इतनी ममत्व वेदना स युक्त इतन निविड इतने शाश्वत हो।"

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि डायरी में लेखक केवल अपने व्यक्तित्व का ही विश्लेपण नही करता अपितु अपने जीवन से सम्बन्धित घटनाओ एव पात्रो का भी मनोविश्लेपणात्मक ढग से वणन करता है।

देशकाल वातावरण

वातावरण उन समस्त परिस्थितियो का सकुल नाम है जिनसे पात्रा को सघप करना पडता है और विपयवस्तु का विकास होता है। डायरी को वास्तविकता का भान देने की कसौटियो मे वातावरण मुख्य उपकरण है। डायरी लेखक भी देश और काल की जजीर म जकडे रहत हैं। देश और काल की पष्ठभूमि के बिना पात्रो का एव लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट नही होता। घटनाक्रम को समझने मे उलझन होती है। देश और काल मे वास्तविकता लाने के लिए स्थानीय ज्ञान आवश्यक है कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रहे, स्वय साध्य न बन जाय। जहाँ वणन

---

१ मेरी कालिज डायरी—डा० धीरेन्द्र वर्मा, प० ८८

अनुपात से बढ जाता है वहाँ उससे जी ऊबने लग जाता है।

हिंदी साहित्य म हम जितनी भी डायरियाँ प्राप्त हैं सभी म डायरी लेखक
न तत्कालीन परिस्थितियो का स्वाभाविकता स वणन किया है। पर कहीं कहीं राज-
नतिक परिस्थितियो के अत्यधिक वणन ने रोचकता म कमी ला दी है। उदाहरणतया
हम गाधीजी की दिल्ली डायरी को ले सकते हैं। इसम १९४७ से १९४८ तक की
परिस्थितियो का चित्रण है। डा० धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी डायरी म १९२१ से १९२२
तक की देश दशा का चित्रण सात शीषकों म बाँटकर किया है। समस्त डायरी के
एक चौथाई भाग म देश दशा का चित्रण है। वणन सीमा से अधिक न होने पर
रोचक है।

केवल परिस्थितिया का वणन करने म ही लेखक कुशल नहीं माना जाता
बल्कि उनका साहित्य पर प्रभाव दिखलाने म भी वह अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय
दे सकता है। धमवीर भारती ने अपनी डायरी के पनो म आधुनिक साहित्य को परि
स्थितिया स प्रभावित दिखलाया है—

आज का युग मानव चेतना के लिए कितना भयानक रेगिस्तान साबित
हुआ है उसम कितनी पथभ्रष्ट करने वाली मृग मरीचिकाएँ रही हैं। (जिनम
स कुछ की असलियत वर्षों पहले खुल गई है और कुछ की अब खुल रही है)
कितने भयानक अंधड चलत रहे हैं और मानव की सहज रस स्निग्धता को
निगलने क लिए कितन भूखे पशु विचरण कर रहे हैं मनुष्य को जड बनाने वाला
पूँजीवादी विचार स्वातन्त्र्य का अपहरण कर मनुष्य का पशुधर्मी बनाकर व्यक्ति
पूजा कराने वाला तथाकथित समष्टिवाद और जान कितनी ही पद्धतियाँ और
सत्ताए जो इस जडवादी युग की देन हैं व मनुष्य स उसकी सहज रागात्मकता,
श्रद्धामयता तथा उसके विकास की अमित सम्भावनाएँ छीनन म तत्पर हैं। आज
दाशनिक वज्ञानिक समाजशास्त्री सभी इस व्यापक सकट क प्रति सचत हैं और
अपनी दिशा म इसक निराकरण क उपाय ढूढ रह हैं। आधुनिक साहित्य दृष्टि
भी इसका सामना कर रही है। उसन इस चुनौती का स्वीकार किया है। जो
इस चुनौती की वास्तविक प्रकृति का समझत हैं व इस नए सौन्दय बोध को भी
समझ सकत हैं। जा इस आधुनिक युग म मानवीय सकट की विडम्बना को ही
नहीं समझ पाए हैं व अगर किसी चीज का सही तौर पर समझन की जिद करें
पचास वष पूव की धारणाओं को ही अपनी कसौटी बनाए रहें ता व इस आधुनिक
साहित्य दृष्टि स बुरी तरह चौंक भी सकत हैं।[1]

डायरी म कहीं-कहीं लेखक राजनतिक सामाजिक परिस्थितिया का चित्रण
करता हुआ तत्कालीन साहित्यिक भाषा की अवस्था का भी चित्रण करता है। गजानन-
माधव मुक्तिबोध न अपनी डायरी म लिया है—

---

1 ठेले पर हिमालय—धमवीर भारती, पृ० ८४

'आज के साहित्यकार का आयुक्रम क्या है ? विद्याजन, डिग्री और इसी बीच साहित्यिक प्रयास विवाह घर, सोफासट, ऐरिस्ट्राक्रैटिक लिविंग, महानों मे व्यक्तिगत सम्पर्क, श्रेष्ठ प्रकाशकों द्वारा अपनी पुस्तकों का प्रकाशन, सरकारी पुरस्कार अथवा ऐसी ही काई विशेष उपलब्धि और चालीसवें वर्ष के आस-पास अमेरिका या रूस जाने की तयारी, किसी व्यक्ति या सस्था की सहायता मे अपनी कृतियों का अग्रजी या रूसी म अनुवाद। किसी बडे भारी सेठ के यहाँ या सरकार के यहाँ किस्म की नौकरी।"[1]

साहित्यिक पुरुषों का ही नहीं राजनतिक पुरुषों की नतिकता का भी इन्होंने नग्न चित्र खींचा है—

"बड़े-बड़े आदर्शवादी आज रावण के यहाँ पानी भरते हैं और हाँ म हाँ मिलाते हैं। बडे प्रगतिशील महानुभाव भी इसी मज म गिरफ्तार हैं। जो व्यक्ति रावण के यहाँ पानी भरने स इनकार करता है उसके बच्चे मारे मारे फिरते हैं। और आप जानते हैं कि ख्याति प्राप्त यशोदीप्त प्रगतिशील महानुभाव भी (मैं सब की नहीं कह सकता) उन पर हँस पडते हैं या कभी-कभी तुच्छ के प्रति दया के भाव स परितृप्त हो उठते हैं। तो सक्षेप म जो व्यक्ति फटे हाल और फटीचर है, उसे मान्यता देने के लिए कोई तयार नहीं चाहे वह कितना ही नैतिक क्या न हो।'[2]

कहीं-कहीं हम डायरी म विशेष स्थान या नगर का वर्णन भी देखते हैं। इस प्रकार के वर्णन म सफलता तभी हो सकती है यदि लेखक ने उस स्थान या नगर को देखा हो। रामकुमार वर्मा की वाराणसी की डायरी एव वाल्मीकि चौधरी की 'राष्ट्रपति भवन की डायरी' ऐसी ही डायरियाँ हैं। इस प्रकार उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि डायरी लेखक अपने समय की राजनतिक सामाजिक, धार्मिक एव साहित्यिक परिस्थितियों का वर्णन ही नहीं करता अपितु उनका प्रभाव व्यक्तिगत जीवन पर ही नहीं समस्त जाति पर स्पष्ट रूप से वर्णन करता है। इसके साथ ही जहाँ उसे नगर एव किसी विशेष स्थान के वर्णन की आवश्यकता पडती है वह भी करता है।

उद्देश्य—डायरी मे लेखक जीवन म घटित होने वाली घटनाओं का ही वर्णन नहीं करता प्रत्युत उससे घटित होने वाली मानसिक प्रतिक्रियाओं का भी उल्लेख करता है। इसमे यह अभिप्राय है कि डायरी म केवल सोना, खाना पीना एव उठना आदि दनिकचर्या का ही वर्णन नहीं करता अपितु वह कुछ ऐसी घटनाओं का भी वर्णन करता है जिनका उसके जीवन पर अटल एव स्थायी प्रभाव होना है। व घटनाएँ यदि वह व्यक्ति राजनतिक है तो वह राजनतिक भी हो सकती हैं, यदि सामाजिक है तो सामाजिक भी हो सकती हैं, यदि धार्मिक है तो धार्मिक भी हो सकती हैं एव यदि

---

१ ठेले पर हिमालय—धर्मवीर भारती, पृ० ३७।

२ वही, पृ० ३६।

साहित्यिक है तो साहित्यिक भी हो सकती है। मुख्य उद्देश्य तो डायरी लेखक का आत्मविश्लेषण ही होता है। प्रायः लेखक अपने समय की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। डायरी में लेखक उन परिस्थितियों का वर्णन करता रहा है। यदि ऐसा होता है तो वह इतिहास की श्रेणी में आ जाता है। इससे स्पष्ट है कि डायरी लेखक का उद्देश्य अपने जीवन की उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करना है जिनका प्रभाव मानव समाज पर पड़े। इसके साथ-साथ वह उन घटनाओं से उत्पन्न होने वाली मानसिक प्रतिक्रियाओं का भी स्पष्ट रूप से वर्णन करता है। ये घटनाएँ किसी भी प्रकार की हो सकती हैं।

मेरी कालिज डायरी में डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी डायरी लिखने के उद्देश्य को प्रकट करते हुए लिखा है—

'मन में चार प्रकार के गुबार उठा करते थे जिन्हें प्रकट करने का व्यक्तिगत साधन नहीं थी और मैं सब प्रकार से अन्तर्मुखी था। आरम्भ से ही घुन्ना स्वभाव का होने के कारण कोई ऐसा मित्र नहीं बना सका था जिसके सामने इन सबको रख कर हृदय का भार कुछ हल्का कर पाता। ऐसी स्थिति में मैंने मार्च १९१७ से एक पृथक कापी रखना शुरू की जिसमें मन की उलझनें और अन्तरंग बातें स्पष्टतया लिख गया। दूसरे लोगों के समान इस कापी में नित्य नहीं लिखता था बल्कि जब कभी विचारों के तूफान उठकर बवंडर का रूप धारण करने लगते थे तभी उन्हें लिखकर मन को शान्त कर लेता था। लिखने के बाद ऐसा मालूम होता था जैसे अपने किसी अत्यन्त घनिष्ठ मित्र से मन की गुप्त बातें कहकर आदमी हल्कापन अनुभव करता हो।'[1]

इससे स्पष्ट है कि डॉ० साहब का डायरी लिखने का उद्देश्य आत्मविश्लेषण ही है जिससे उनको मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। डायरी के समस्त विषय—सत्य, धर्म, शिक्षा १९२१ से १९२२ तक की दिनचर्या आदि सभी लेखक के व्यक्तित्व से प्रभावित हैं।

गजाननमाधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी' में भी लेखक का उद्देश्य आत्माख्यान एवं आत्मविश्लेषण ही है। इसके अतिरिक्त गजाननजी ने आधुनिक काल के राजनैतिक पुरुषों की नैतिकता, नवयुवकों की अवस्था, बुजुर्गों की अवस्था एवं लेखक वर्ग की अवस्था पर भी अपने विचार नग्न रूप से प्रस्तुत किए हैं। प्रत्येक वर्णन में तर्क एवं मनोविज्ञान आदि का सहारा लिया है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि प्रत्येक डायरी लेखक का उद्देश्य आत्माख्यान, आत्मनिरीक्षण एवं आत्मविश्लेषण होता है। इसी से उसे मानसिक सन्तोष प्राप्त होता है।

भाषा शैली—शैली अंग्रेजी स्टाइल का अनुवाद है और अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में आया है। शैली भी एक प्रकार का स्पृहणीय गुण है इसीलिए

---

१ परिचय

अच्छे लेखक ही अच्छे शैलीकार भी होते हैं। प्रसिद्ध यूनानी लेखक प्लेटो का भी यही मत है। 'जब विचार को तात्विक रूपाकार दे दिया जाता है तो शैली का उदय होता है।' बर्नार्डशॉ का भी यह विचार है कि प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अथ और इति है।' कोई भी रचना अभीष्ट प्रभाव का उत्पन्न कर रही है या नहीं, शैली से जाना जा सकता है। इस प्रकार शैली को एक गुण मानते हुए इसकी परिभाषा इस प्रकार करनी चाहिए—

'शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।"

इस दृष्टि से देखने पर यह जान पड़ेगा कि शैली न तो केवल अनुभूत विषय वस्तु का धर्म है और न कहने का तरीका ही। शैली का आत्मा मुख्यत वे सम्बन्ध हैं जिनके ढाँचे में अनुभूत विषयवस्तु को समाहित या व्यवस्थित किया जाता है। विषयवस्तु में उक्त सम्बन्ध की स्थापना रस की उत्पत्ति के लिए की जाती है। काव्य साहित्य की रसात्मकता को उसके प्रभाव से अलग नहीं किया जा सकता। जिस विभावात्मक विषयवस्तु को साहित्यकार सँजोकर पाठक के सामने रखता है, उसमें प्रभाव या रस के उत्पादन की क्षमता निहित रहती है। किन्तु यह क्षमता सम्बद्ध विषयवस्तु का ही धर्म है। साहित्यकार अनुभूत विषयवस्तु को नए सम्बन्धों में ग्रथित करके उसमें नए प्रभाव में उत्पन्न करने की क्षमता स्थापित कर देता है। इन प्रकार की क्षमता उत्पन्न करने के उपादान ही शैली के मूल तत्व होते हैं।[1]

डायरी में लेखक दिनचर्या के रूप में ही जीवन की घटनाओं और मानसिक विचारों का लेखा जोखा रखता है तो इसकी शैली गद्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा पृथक होती है। इसमें लेखक का मुख्य उद्देश्य आत्मनिरीक्षण एवं आत्मविश्लेषण ही है। डायरी शैली की कुछ अपनी ही विशेषताएँ हैं जिनका होना अत्यन्त आवश्यक है।

सर्वप्रथम विशेषता निस्संकोच आत्मविश्लेषण है।[2] दिनचर्या के रूप में लेखक अपने जीवन की घटनाओं और मानसिक विचारों का लेखा रखता जाता है यद्यपि इन सब का विवरण भी वह बिल्कुल तटस्थ होकर नहीं कर सकता परन्तु आत्मचरित्र की अपेक्षा उसका संकोच इस शैली की व्याख्या में कम रहता है। लेखक जानता है कि उसके विवरण दूसरों के काम आएगे अतएव वह अपने मर्म को विशेषकर अवांछित प्रसंग को ज्यादा ढकता नहीं। उसका आवरणहीन वर्णन सत्यवर्णन की तरह अंकित होता रहता है। घटनाओं एवं विचारों में असम्बद्धता भी उसे अपने चेतन को काम में लाने से रोक लेती है। प्रायः देखा जाता है कि संकोच का उद्भव तभी होता है जब घटनाओं का सामूहिक प्रभाव दिखाया जाय। डायरी शैली में यह स्थिति होने नहीं पाती। परिणामत तटस्थ रूप से लेखक अपेक्षाकृत अधिक आत्मविश्लेषण कर

---

१ हिन्दी साहित्य कोष
२ वही

डाल देता है।

अंग्रेजी भाषा के डायरी लेखक सेमुअल पेपीस ने अपनी डायरी में अपने जीवन की सभी घटनाओं का नग्न रूप में चित्र खींचा है। उसने अपने चरित्र की समस्त दुर्बलताओं – स्त्रीविषयक कुविचार, अन्य महिलाओं से प्रेम व्यवहार आदि का चित्रण स्पष्ट रूप से किया है। इनकी डायरी में इनके व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू के दर्शन होते हैं। इन्होंने स्वतन्त्रता से लिखा, इतनी स्वतन्त्रता से कि उसका कुछ भाग प्रकाशित भी नहीं हुआ। हिन्दी साहित्य में अभी इस प्रकार की डायरियाँ नहीं प्राप्त होतीं। कुछेक लेखक हैं जिन्होंने ऐसा करने का प्रयास किया है। गुलाबराय ने अपने व्यक्तित्व के विषय में स्पष्ट लिखा है—

'मैं उन लोगों में से हूँ जो अपने निजी निबन्धों के लिए बिना कुछ पढ़े नहीं लिख सकता। वास्तव में मेरे लेखन में एक तिहाई दूसरों से पढ़ा होता है, एक बटा छह उसके आधार से स्वयं प्रकाशित और ध्वनित विचार होते हैं, एक बटा छह सप्रयत्न सोचे हुए विचार रहते हैं और एक तिहाई मलाई के लड्डू की बर्फी बना चोरी को छिपाने वाली अभिव्यक्ति की कला रहती है—मैं गलत पढ़ाने का पाप नहीं करता किन्तु जो मुझे नहीं आता उसे कभी-कभी कौशल के साथ छोड़ देता हूँ। यदि कोई छन्द इम्तहान में आने लायक हुआ तो मैं बेईमानी नहीं करता।'[2]

इतना ही नहीं लेखक ने घर के अभावों का वर्णन भूसे का चारा न मिलना, पड़ोसी के खेत में चारे का होना, उसका खूँटा उखाड़ कर भाग जाना, घर में कभी चीनी की समस्या कभी कपड़े की—सभी घटनाओं का वर्णन लेखक ने नग्न एवं स्पष्ट रूप से किया है।

डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी डायरी में अपने कालिज के सात वर्षों का पूर्ण रूप से चित्र खींचा है। इन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है—

व्यक्तिगत होते हुए भी यह डायरी किसी भी संवेदनशील आदर्शवादी किन्तु संकोची १८, १६ से २५, २६ वर्ष तक की आयु के नवयुवक के हृदय का चित्र हो सकती है, व्यक्तिगत अंशों को भी इसी रूप में देखा जा सकता है।'[3]

निःसंकोच आत्मविश्लेषण में ही स्पष्ट कथन एवं पर्याप्त सत्यता होती है। डा० रघुवंश ने अपने स्वभाव के विषय में कितनी स्पष्टता से वर्णन किया है—

'सहज परिचित परिस्थितियों से अकुला उठना और किसी परिचित अज्ञात के लिए उत्सुक होना, लेकिन उसकी खोज में निकलकर पा जाने पर फिर परिचित से फिर अकुला उठना यही मेरा स्वभाव है। अपने स्वभाव के इसी विरोध के बीच मैं जी रहा हूँ—स्थिरता से असन्तुष्ट, परिवर्तन के लिए आतुर

१ आलोचना : उसके सिद्धान्त डा० सोमनाथ गुप्त
२ मेरी असफलताएँ गुलाबराय
३ परिचय

और नवीनता के बीच उद्विग्न स्थियत की कामना से स्फुरित।"[1]

घटनाओ मे सम्बद्धता का होना परमावश्यक है। जब तक प्रत्येक घटना का क्रमानुसार वणन नही होगा तब तक पाठक रसास्वादन नही कर सकता। घटनाओ की सुसम्बद्धता के साथ-साथ लेखक को समय एव तिथि का भी ध्यान रखना चाहिए। अनावश्यक घटनाओ का विस्तार, आवश्यक घटनाओ का अल्पवणन डायरी को प्रभाव-हीन बना देता है।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि डायरी शली मे निस्सकोच आत्मनिरीक्षण, घटनाओ म सम्बद्धता स्पष्टता सजीवता मानसिक प्रतिक्रियाओ का सक्षिप्त विवरण, पर्याप्त सत्यता एव स्वाभाविकता आदि गुणो का होना अत्य त आवश्यक है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है—भाषा ही भावाभिव्यक्ति का साधन है। यदि भाषा शुद्ध, परिमार्जित एव भावानुकूल होगी तभी वह पाठक को प्रभावित कर सकती है। स्वाभाविकता एव प्रसाद गुण का भाषा मे होना आवश्यक है। अलकारिक भाषा का प्रयोग कही कही खटकने लगता है—

'शिशु सी अनजान—अकपट और जब तुतलाती भी मुसकाती सी, नगी भटमली सी जा आने को होती है वह कलिका सी किशोरी सी कुछ मुकलिता सी और कुछ विकसिता सी आने को होती है जब स्फुटिता सी प्रौढा सी तब उसे इसीलिए शायद डरना सकुचाना और सोचना पड जाता है।"[2]

भावानुकूल भाषा का प्रयोग शैली को उत्कृष्ट बनाता है। रामकुमार वर्मा ने भी दशाश्वमेघ घाट का वणन भावानुकूल भाषा मे किया है—

"जाडो की वह रात रात का वह साय-साय करता सन्नाटा और गगा मे विलीन होती हुई घाट की सीढिया मे छिपा इतिहास जिसके पन्ने हवा म उडते रहे और हम खाली हाथ सब कुछ हाथो से उडता देख रहे हैं उसे पकडने की कोशिश भी नही करते। कहने के कुछ नही अनकहे ही जसे सब कुछ कह दिया। उस रात वह कौन सी छाया थी जिसने अपनी अनागनत नरा म हमे लपेट लिया।

भाषा म स्वाभाविकता का होना भी आवश्यक है। गजाननमाधव मुक्तिबोध न अपनी डायरी म अत्य त स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया है—

'यह मुसकराहट मुझे चुभ गई। तो क्या मैं इतना पागल हूँ कि बात करने म भटक जाता हू। इस साले ने बहुत ध्यानपूर्वक मेरे स्वभाव का अध्ययन किया होगा शायद मैं भी इसे बहुत बोर करता रहूँगा।'[3]

भाषा मे स्वाभाविकता लाने के लिए इन्होंने अग्रेजी भाषा के शब्दो का प्रयोग भी किया है।

---

१ हरी घाटी—डा० रघुवश
२ दनन्दिनी—सुन्दरलाल त्रिपाठी
३ पृष्ठ ८

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डायरी की भाषा स्वाभाविक एवं भावानुकूल होनी चाहिए। प्रसाद गुण का होना अत्यन्त आवश्यक है। शब्द चयन भी भावानुकूल होना चाहिए। जैसा कि डायरी लेखन का मुख्य उद्देश्य आत्मविश्लेषण, आत्मनिरीक्षण एवं आत्माख्यान होता है इसलिए इसकी शैली भी प्रमुखतया मनोविश्लेषणात्मक होती है।

हिन्दी साहित्य में विकास

आधुनिक काल में डायरी साहित्य गद्य की एक नवीनतम विधा है। हिन्दी साहित्य में इसका आविर्भाव योरोपीय साहित्य की देन है। अभी हमारे साहित्य में उस कोटि की डायरियाँ नहीं प्राप्त होतीं जैसी कि पाश्चात्य साहित्य में हैं। अभी तक जो डायरियाँ एवं डायरियों के पृष्ठ पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं उनके अनुसार डायरी साहित्य का विकास मैंने लिखने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम डायरी लेखक भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध व्यक्ति बालमुकुन्द गुप्त हैं। इनकी डायरी के कुछ पृष्ठ जो कि इन्होंने १८९७ सन् से १९०७ सन् तक लिखे हैं श्री बनारसीदास चतुर्वेदी एवं श्री झाबरमल्ल शर्मा ने बालमुकुन्द गुप्त स्मारक ग्रन्थ में प्रकाशित किए हैं। इनकी डायरी के प्राप्त पृष्ठों से केवल इनकी दिनचर्या का ही पता चलता है। प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक इनका क्या कार्यक्रम था केवल यही कुछ यह अपनी डायरी में लिखते थे। किसी भी किस्म की कोई व्यक्तिगत घटना या इनके व्यक्तिगत परिचय का कुछ भी पता नहीं चलता। इनकी डायरी के पन्ने तो सर्वसाधारण से हैं।

सन् १९०९ में सत्यदेव अमेरिका की मेरी डायरी के कुछ पृष्ठ[1] प्राप्त होते हैं। डायरी के ये पृष्ठ अमेरिका से लिखे गए हैं। इनमें ७, २८ एवं २९ मई के दिवसों की चर्या का वर्णन है। धन का अभाव, नौकरी की तलाश एवं तत्कालीन समाज का चित्रण है।

सन् १९११ में भी इनकी डायरी के पृष्ठ 'मेरी दिनचर्या'[2] नाम से प्रकाशित हुए हैं। इनमें लेखक ने ५ व ६ जून की दिनचर्या का वर्णन किया है। इनमें टकोमा, स्टीमर आदि नगरों का वर्णन है। सन् १९११ से १९३३ तक हमें न तो डायरी के कुछ पृष्ठ ही प्राप्त होते हैं और न डायरियाँ। केवल सन् १९३३ में प्रोफेसर भगवद्दयाल वर्मा एम० ए० पूना द्वारा लिखित 'सिंधिया व हुलकर की डायरी'[3] के पृष्ठ प्राप्त होते हैं। इनमें प्रोफेसर भगवद्दयालजी ने पूना दफ्तर में प्राप्त सौ वर्ष पूर्व के प्राचीन ३,००० पत्र जो कि फारसी भाषा में लिखे हुए हैं जिनमें उत्तर भारत के

१ सरस्वती सितम्बर
२ सरस्वती अप्रैल
३ माधुरी, फरवरी जुलाई, १९३३

राजाम्रा एव नवाबा के विषय म पता चलता है म से कुछ राजाम्रा की दिनचर्या का वणन उन पत्रा की महायता से किया है।

सन् १६४० मे बुक्सेलर की डायरी [1] जिसके लेखक रावीजी हैं प्राप्त होती है। इस डायरी के लेखक साहित्य-सेवी है जिन्होंने जीविका के लिए घूम घूमकर पुस्तकें बेचने का प्रयास किया। इस प्रयोग म लेखक को जो भी माठे कडव ग्रनुभव हुए उन सबका वणन है। इसम वर्णित व्यक्तिया क प्रति लेखक क मन म कोई बुरी भावना नहीं है। जो धारणाएँ लखक की हुई - जो चित्र उसके हृदय पटल पर चित्रित हुग्रा उन्होंने उसी को ग्रकित करने का प्रयास किया हे। लेखक का यह दौरा दो दिन कम दो महीने का है।

सन् १६४७ म श्री लक्ष्मीचन्द्र बाजपेयी का 'डायरी का एक पष्ठ' [2] एव भगवतीचरण शर्मा का भी 'डायरी का एक पष्ठ [3] प्राप्त होता है। बाजपेयीजी ने २४ ग्रक्तूबर १६४६ का वणन किया है जिस दिन लखक का जन्मदिवस एव दीवाली है। इन पष्ठा म लेखक ने तत्कालीन राजनतिक परिस्थितियो के प्रति चिन्ता प्रकट करते हुए ग्रनेक व्यक्तिगत सुझाव भी दिए हैं। शर्माजी ने 'देवाई' पूजन के विषय मे एव हरिजना की कथा एव ग्रचना के विषय म लिखा है। तिथि ६ जनवरी, १६४७ की है।

सन् १६४८ म गाधीजी की दिल्ली डायरी प्रकाशित हुई। इस डायरी म १० ६ ४७ स ३०-१ ४८ तक के गाधीजी के प्रवचना का सग्रह है। इस डायरी म हमे तत्कालीन राजनतिक, सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितिया का ज्ञान होता है। गाधीजी की इस डायरी म ग्रनेक क्षेत्रा के ग्रनेक विषयो की चर्चा है। सब प्रवचन तिथि ग्रनुसार दिए गए हैं।

सन् १६५० म महादेव भाई की डायरी के प्रथम एव द्वितीय भाग प्रकाशित हुए। इसके ग्रनुवादक रामनारायण चौधरी एव श्री नरहरिदास पारिख हैं।

सन १६५१ मे इलाचन्द्र जोशी के 'डायरी के नीरस पृष्ठ' एव ग्राचाय विनय मोहन शमा द्वारा लिखित 'डायरी क कुछ पन्न प्रकाशित हुए। ग्राचायजी न ग्रपनी डायरी के इन पन्नो मे जब इन्ह १९ वष की ग्रवस्था म टाइफाइड हो गया था उसका एव प्रकृति के पथ पर चलने की योग्यता का परिचय हो जाना एव इसके साथ-ही साथ जहाँ कही भी इन्ह प्राकृतिक स्वास्थ्य एव चिकित्सा पर उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है उसका वणन किया है।

सन् १६५१ म घनश्यामदास बिडला के 'डायरी क कुछ पन्ने' प्रकाशित हुए। डायरी क इन पन्ना म बिडलाजी ने दूसरी गोलमज कान्फेंस का जीवित चित्र खींचा है।

---

१ विशाल भारत
२ विशाल भारत
३ वही

सन् १९५३ मे अजितकुमार द्वारा लिखित 'डायरी के कुछ पृष्ठ' प्राप्त होते हैं। १३ जनवरी एव १६ फरवरी दोनो दिनो की चर्चा का वर्णन लेखक ने इन पृष्ठों मे किया है। सन् १९५४ म श्री तुलसीदास द्वारा लिखित 'प्रवचन डायरी' प्रथम भाग प्राप्त होती है। इसमे श्री तुलसीजी के जनवरी १९५३ से दिसम्बर १९५३ तक के प्रवचनो का सग्रह है।

सन् १९५४ म इलाचन्द्र जोशी की 'साहित्य चिन्तन' पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक म अन्य सग्रहो के साथ जोशीजी के कुछ डायरी के पृष्ठो को भी सगृहीत किया गया है। इन पन्नो म जोशीजी का विषय साहित्यिक है। इन्होने काव्य की सर्जनात्मक कला की कसौटी क्या है पर अपने विचार प्रकट करते हुए चेतना, प्रतिभा आदि उसकी तीन-तीन परिस्थितियो एव अवचेतना का वर्णन कर यह सिद्ध कर दिया है कि वही लेखक उच्चतम कृतियो की रचना कर सकता है जो अवचेतनाओ से ऊपर उठकर अतिचेतना के स्तर पर पहुच जाता है। चेता की स्थिति को प्राप्त कर चेतना के निम्नरूपो को स्वय परिचालित करने लगता है।

सन १९५६ म पुन श्री तुलसी की प्रवचन डायरी द्वितीय भाग प्रकाशित हुई। इसका विषय भी धार्मिक है।

सन् १९५७ म श्री कृष्णदत्त भट्ट की 'नदाओ की छाया' पुस्तक प्रकाशित हुई। इसम सग्रहीत भट्टजी की डायरी के पृष्ठो म हम उनकी डायरी लिखने की कुशलता का परिचय मिलता है। डायरी के साँचे म निबन्धलेखन की यह नई शैली है। विषयानुकूल भाषा एव शब्दों का प्रयोग किया है, वैयक्तिकता की छाप चारो ओर है।

दैनंदिनी—सुन्दरलाल त्रिपाठी की सन् १९५८ म प्रकाशित हुई। इस डायरी म अनेक विषय अनेक प्रकार से आए हैं। आरम्भ म कुछ व्यक्तिगत आत्मीय और पारिवारिक चर्चा है जिसमे लेखक की वेदनाकातर भावुक लेखनी स्पष्ट हो उठी है। आगे चलकर शरच्चन्द्र और गाधीजी पर दो निबन्ध मिलते हैं जो भावापन्न, चचल और कुशल लेखनी की सृष्टि हैं। एक म लेखक की अनुकूल और दूसरी म प्रतिकूल विचारधारा होते हुए भी दोनो निबन्ध सुन्दरतम लेखन के उदाहरण हैं।

इसके पश्चात् अधिकाश लेख हिन्दी के साहित्यिको की चर्चा में लिखे गए हैं जिनम उनकी कृतियो की भी समीक्षा की गई है। यहाँ लेखक के सम्मुख परिस्थिति कुछ कठिन रही है क्योकि सुन्दरलालजी हिन्दी साहित्यिकों के प्रति बहुत अच्छी धारणा नही रखते। ऐसी अवस्था म उन्हे अपनी टिप्पणियाँ ऐसे ढग से करनी पडी है कि कही भी विरोध प्रत्यक्ष न हो पावे। फिर भी लेखक अपनी बात किसी न किसी रूप म कह ही गया है।

प्रत्येक निबन्ध म विषय चर्चा के साथ प्रासगिक उल्लेखो और विवरणो की भरमार है जिससे दैनन्दिनी म सुन्दर मनुरजकता आ गई है और कोरा विषय विवेचन अपनी शुष्कता खो बैठा है। कही भी लेखन इतिवृत्तात्मक नही हुआ है जो सुन्दरलालजी की साहित्यिकता का सबसे सुन्दर प्रमाण है। लेखक की व्यक्तिगत छाप

प्राय सब लेखा म मौजूद है जिससे ये निबन्ध ललित साहित्य की श्रेणी म ऊँचे स्थान के अधिकारी हैं। भले ही सब निबन्ध एक ही धारा म न लिखे गए हा और भले ही उनके साथ तादात्म्य स्थापित करने म एक-सी सुगमता न हो, किन्तु एक बार और आत्मीय भावना से प्रवेश करने हर इनम वह सवेदनीय सामग्री मिलेगी जो हिन्दी के निबन्ध साहित्य म बहुत ढूढन पर भी नहीं प्राप्त होती।

दनन्दिनी' के अधिकाश निबन्ध बडी ही मनोरम और परिष्कृत भावना से लिखे गए हैं। उनम भावुकता और शली चमत्कार के साथ ही सूक्ष्म विवेचन और मार्मिकता भी कम नही है। उनकी शली म व्यग्य और गूढोक्ति का अच्छा पुट है। डायरी के साँचे म निबन्धलखन की यह नई शाली है। दनन्दिनी म एक से अधिक दिन की चर्चा एक स्थान पर जहाँ कहीं की गई है मिति का स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है। साथ ही ऐसा उन्ही स्थाना पर किया गया है जहाँ कई दिन की घटनाएँ मिल कर एक प्रसग का निर्माण करती हैं। दनन्दिनी म इस नियम का पालन भी सवत्र मिलता है कि जिस दिन की घटना है उसी दिन वह लिख ली गई है।

मेरी कालिज डायरी डा० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी साहित्य की सवश्रेष्ठ डायरी सन १९५८ म प्राप्त होती है जिसके लेखक डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा हैं। जसा कि नाम से ही स्पष्ट है इन्हाने अपने कालिज जीवन के सात वर्षों का नग्न चित्र उपस्थित किया है। परिचय मे इन्हाने स्वय कहा है—

'यह डायरी मेरे मानसिक जीवन के लगभग सात मूल्यवान् वर्षों का सच्चा आत्मचरित है, जो आज नहीं लिखा जा रहा है बल्कि उसी कच्चे पक्के रूप म है जिसम यह तभी लिखा गया था जब मैं कालिज का एक साधारण विद्यार्थी था और यही नहीं जानता था कि जीवन की नदी के थपेडे मुझे किधर ले जायेंगे। इसकी अपूणता और सचाई मे ही इसका महत्त्व है। यदि शेष आत्मचरित किसी रूप म भी लिखा गया ता वह जीवन का सिंहावलोकन मात्र होगा। वह अधिक प्रौढ परिमार्जित और परिपक्व हो सकता है किन्तु उसम मन के इस कच्चेपन और अल्हडपन का आनन्द नहीं प्राप्त हा सकेगा जो इस डायरी म मिलेगा।

डॉक्टर साहब न अपनी डायरी के समस्त विषय का चार भागा म विभाजित किया है। सन्देह ससार, देश-दशा एव मायाजाल—य चार खण्ड हैं। कालिज जीवन म लेखक के मन म जो भी समस्याएँ उत्पन्न हुई थी उन सभी का उल्लेख एव समाधान लेखक न वणन किया है। सत्य, अहिंसा विवाह शिक्षा, विद्यार्थी जीवन आदि अनेक विषयो पर लेखक न अपने विचार अत्यन्त रोचकपूण ढग स लिखे है। य सब विषय लेखक की व्यक्तिगत घटनाओ से सम्बन्धित हैं। डाक्टर साहब न व्यक्तिगत घटनाओ का वणन ही नहीं किया अपितु उनम उत्पन्न हाने वाली मानसिक प्रतिक्रियाओ का भी उल्लेख किया है। यही नहीं १९२१ से १९२२ तक की देश दशा का वणन भी लेखक ने अत्यन्त कुशलता स किया है। समस्त राजनतिक परिस्थितियो को अपने से प्रभावित दिखलाया है इसलिए वयक्तिकता की छाप चारो ओर है। देश दशा का खण्ड

पढ़ते हुए कहीं भी पाठक को यह अनुभव नहीं होता कि वह इतिहास पढ़ रहा है या उसे पढ़ते हुए आनन्द नहीं प्राप्त हो रहा। यह सब डॉक्टर साहब की कला कुशलता का प्रमाण है। इसके साथ ही संसार खण्ड में लेखक ने अपनी कुछ ऐसी व्यक्तिगत घटनाओं का वर्णन किया है जो अत्यन्त मार्मिक हैं। नौकरी की तलाश एवं पत्नी के देहावसान का वर्णन लेखक ने मार्मिकतापूर्ण किया है। प्रत्येक पन्नों के वर्णन में लेखक की स्पष्टवादिता दृष्टिगोचर होती है।

जहाँ तक डायरी शैली का प्रश्न है इनकी डायरी में शैली सम्बन्धी सभी गुण हैं। निःसंकोच आत्मविश्लेषण, मानसिक प्रतिक्रियाओं का संक्षिप्त विवरण, मार्मिकता रोचकता एवं सुसंगठितता आदि सभी गुण दृष्टिगोचर होते हैं। त्रिपाठीजी की भाँति कहीं भी अलंकारिता का प्रयोग इनमें नहीं आता। डॉक्टर साहब ने किसी भी व्यक्ति का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन अपनी डायरी में नहीं किया लेकिन त्रिपाठीजी की डायरी में यह बहुधा देखने में आता है। डाक्टर साहब ने अपनी डायरी में जहाँ व्यक्तिगत घटनाओं का वर्णन अधिक किया है वहाँ त्रिपाठीजी ने व्यक्तिगत परिचय कम दिया है। साहित्यिकों एवं उनकी कृतियों के विषय में अधिक विचार रखे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि त्रिपाठीजी ने जिन साहित्यिकों एवं उनकी कृतियों के विषय में अपने विचार रखे हैं उनमें किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं है जो कुछ भी वह कहना चाहते हैं खुले रूप से कहा है।

सन १९५८ में ही धर्मवीर भारती की पुस्तक 'ठेले पर हिमालय' प्राप्त होती है। इसमें संग्रहीत 'डायरी एवं साहित्यिक डायरी' में लेखक ने निबन्धात्मक शैली में अपने विचारों को प्रकट किया है। आधुनिक नवयुवकों, साहित्यिकों, पूँजीपतियों एवं बुजुर्गों का स्पष्ट वर्णन लेखक ने अपनी डायरी में किया है।

सन १९५९ में उपेन्द्रनाथ अश्कजी की 'ज्यादा अपनी कम परायी' पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें अश्कजी की नई पुरानी डायरी के पन्नों में लेखक ने जीवन के गूढ़तम रहस्यों को भावावेश में आकर काव्यमयी भाषा में रखा है। शब्दों की सुकुमारता, भाषा की सौम्यता अद्वितीय है। नई डायरी के पृष्ठों में लेखक ने अपने जीवन की घटित घटनाओं को संस्मरणात्मक रूप में प्रकट किया है। समस्त घटनाओं के शीर्षक दिये हैं। तिथि एवं दिवस का विशेष रूप से ध्यान रखा है।

सन १९६० में स्वामी सत्यभक्त द्वारा लिखित 'डायरी के पृष्ठों में भगवान महावीर का अन्तस्तल' एवं गुलाबराय द्वारा लिखित 'मेरी असफलताएँ' पुस्तकें प्रकाशित हुईं। स्वामीजी ने भगवान महावीर के विचारों का रोचकपूर्ण शैली में वर्णन किया है। गुलाबरायजी की प्रकाशित पुस्तक में संग्रहीत 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ' में लेखक ने २१ सितम्बर सन १९४५ का चित्र खींचा है। डायरी के इन पाँच पृष्ठों में लेखक ने अपने व्यक्तित्व का खुला चित्रण किया है।

सन १९६० में वाल्मीकि चौधरी द्वारा लिखित 'राष्ट्रपति भवन की डायरी' प्राप्त होती है। इस डायरी में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की दिनचर्या पर प्रकाश डाला

गया है। वसे तो चौधरीजी ने अपने 'वक्तव्य' म कहा है—

'इस पुस्तक म राष्ट्रपति भवन म रोजमर्रे की घटनाओ, तत्सम्बन्धी क्रियाकलापा—राजनीति के चित्रपट के बनते-बनाने म जो तरह-तरह के दृश्य मेरे सामने आये उन्हें मैंने गूथने का प्रयास किया है।'

यह डायरी सस्मरणात्मक शली मे लिखी गई है। भाषा सरल एव वणन शैली सुहावनी है।

सन् १६६१ मे रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित[1] 'वाराणसी की डायरी सीताराम सेकसरिया द्वारा लिखित[2] 'डायरी के पन्ना मे वसन्त पचमी' एव रघुवश द्वारा लिखित 'हरी घाटी' पुस्तक प्रकाशित हुई। रामकुमार वर्मा ने 'वाराणसी की डायरी' म वाराणसी का वणन अत्यन्त चित्रात्मक शली म किया है। डायरी शैली म लिखा हुआ यह एक स्केच है। सेकसरिया जी ने तीन वर्षों की वसन्त पचमी का वणन किया है। तीन वर्षों के उत्सव पर तीन प्रकार की मन स्थितिया का वणन लेखक ने किया है। प्रथम बार वह जेल म था इसलिए स्वतन्त्र वसन्त के प्रति उसे ईर्ष्या थी। दूसरी बार वह छुटा हुआ था तो और भाई जेल म थे तभी वह उत्सव धूमधाम स न मना सका। तीसरी बार स्वतन्त्र हो जाने पर भी बापू की मृत्यु का शोक था। रघुवशजी ने अपनी पुस्तक मे अपने जीवन की कुछ घटनाओ पर प्रकाश डाला है—जीवन म आर्थिक विषमता, हाथ मे विकार का होना, प्रगतिशील विचारधारा का होना, पवताटन का शौक, निडर स्वभाव आदि का स्पष्ट रूप से चित्रण है।

एक साहित्यिक को डायरी—सन् १९६४ मे गजाननमाधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी प्रकाशित हुई। यह डायरी शली गुण एव विचार तत्व दोना दृष्टिया से अद्वितीय है। यह निबन्धात्मक डायरी है। निबन्ध पढे न जाय इह पन्ने की सहज ललक रहती है। सीधा सादा आरम्भ फिर कही शकालाप, कही एक काल्पनिक पात्र से वार्तालाप पर आदि से अन्त तक भाव और स्वर डायरी का है। प्रत्यक प्रकरण का प्रत्यक क्षण और प्रत्यक चरण इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए कि विषय की परतें हलके हलके खुलती हुई प्रश्ना और प्रश्ना के भीतर के प्रश्नो से साक्षात्कार करा दें और फिर हम भी सोचें और समाधान क अन्वेषी हा।

कुल दस प्रकरण डायरी म हैं। पर कोई नही इनम जो आहत आत्मा की पीडा म पिरोया हुआ न हो और जिसके स्वरा म फिर भी विजित का करुण भाव न होकर चुनौती स्वीकार करने वाले शूर सनिक का ओज न हो। कही तो शायद इसीलिए इसम एक विचित्र सा व्यग्य तक झकारता मिलता है। हिन्दी म डायरी विधा की यह पहली कृति है जो फैंटेसी, मनोविश्लेषण तक कविता, आत्माख्यान के

---

१ कादम्बिनी, माच १६६१ सन्

२ ज्ञानोदय, फरवरी १६६१ सन्

विविध स्तरों पर एक साथ चलती है या यों कह कि इन सबको एक में समन्वित करके एक नई ही विधा सम्भावना की ओर इंगित करती है।

उपर्युक्त विवेचन में स्पष्ट है कि हिन्दी डायरी साहित्य उस सीमा तक नहीं पहुंच सका जैसा कि हम अंग्रेजी भाषा के साहित्य में दृष्टिपात करते हैं। केवल एक दो डायरियों की अपेक्षा हम सभी फुटकर पन्ने ही प्राप्त होते हैं। हिन्दी साहित्य में कोई भी ऐसी डायरी नहीं जो कि लेखक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत कर सके। प्राप्त डायरियों में सवश्रेष्ठ डायरी मेरी कालिज डायरी डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा की है। अभी तक कोई भी ऐसी डायरी नहीं प्राप्त होती जिसकी तुलना हम समुएल पेपीस की डायरी से कर सकें। समुएल पपीस ने अपने जीवन का पूर्ण रूप से जसा खुला व स्पष्ट चित्रण किया है वसा अभी तक कोई नहीं कर सका है।

If there is in all the literature of the world a book which can be called unique with strict propriety it is this Confessions, *diaries, journals autobiographics abound, but such a revelation of* a man's self has not yet been discovered The diary is a thing apart by virtue of three qualities which are rarely found in perfection When separate and nowhere else in combination It was secret it was full and it was honest[1]

अर्थात् यदि किसी पुस्तक को विश्व साहित्य में ठीक ढंग से अद्वितीय कहा जा सकता है तो यह है—डायरी। पत्र एवं आत्मकथाओं में खोज करने पर भी मनुष्य का ऐसा व्यक्तिगत प्रकाशन अभी तक नहीं प्राप्त होता जो कि पूर्ण रूप से बहुत ही कम पाए जाते है पर यहाँ सब एकत्रित रूप में हैं। यह गुप्त, पूर्ण एवं सुस्पष्ट है।

इन्होंने अपने जीवन के विषय में अर्थात जीवन सम्बन्धी घटनाओं का अत्यन्त खुले रूप में चित्रण किया है। यहाँ तक कि अन्य स्त्री विषयक प्रेम को भी पूर्णतया लिखा है। अपनी स्त्री से दुर्व्यवहार का भी स्पष्ट वर्णन है।

He wrote so frankly that part of it not printed[2]

अर्थात उन्होंने इतना स्पष्ट लिखा कि उसका कुछ भाग प्रकाशित भी नहीं किया गया। ऐसा स्पष्ट और नग्न चित्र अभी हम हिन्दी डायरी साहित्य में देखने में नहीं आता। फिर भी कुछ लेखकों ने प्रयास किया है। आशा है गद्य की यह विधा भविष्य में पूर्ण प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी।

विभाजन

डायरी साहित्य के विकास से स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य में बहुत कम डायरियाँ प्राप्त होती हैं। जो भी डायरियाँ या डायरी के पन्ने हम पत्र-पत्रिकाओं में प्राप्त होते हैं उनके अनुसार समस्त डायरी साहित्य का विभाजन निम्नलिखित ढंग से हो सकता है—

1 The Encyclopedia Britannica, Thirteenth Edition
2 Samuel Pepys In the Diary—Percival Hunt P 2

(क) डायरी लेखको के आधार पर

हिन्दी साहित्य म डायरी लेखक केवल साहित्यिक व्यक्ति ही नही हैं प्रत्युत अनेको राजनतिक, धार्मिक व्यक्तियो की डायरियाँ भी प्राप्त होती हैं। साहित्यिक व्यक्ति से मेरा अभिप्राय उन व्यक्तियो से है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास मे अपनी कृतिया द्वारा विद्वत्ता का परिचय दिया है। एसी श्रेणी म कवि, कथालेखक एव आलोचकगण आत हैं।

कवि—हिन्दी साहित्य म कुछ ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी डायरिया लिखी हैं। धमवीर भारती, उपेन्द्रनाथ अश्क एव गजानन्नमाधव मुक्तिबोध इसी श्रेणी म आते हैं। भारतीजी ने अपने जीवन की जिन घटनाओं का वणन किया है उन सबके शीषक दिए हैं जसे—एक सपना और उसके बाद चादनी म कोकावेली, उचटी नीद आदि। जस कवि लोग भावुक वृत्ति के होते हैं डायरी म भी यह भावुक ही दृष्टिगोचर होते हैं। प्रकृति के दृश्यो को देखकर मन का मचलना एव फिर उनक साथ अपनी भावनाओ का तादात्म्य स्थापित करना इनको बहुत आता है। कवि ने अपने आशावादी विचारा का प्रकृति के साथ कसे तादात्म्य किया है—

'मैंने कभी मृत्यु के बारे म नही सोचा पर कभी यह जरूर सोचता हूँ कि जिये जाने वाले क्षणा की यह जो अन्तग्रथित शृखला है इसका कही न कही तो अन्त होगा ही और जब होगा तब कुछ खास नही होगा। मैं तो स्वण-पराग सा उसी तरह महकता रहूँगा सिफ नील क्षण पाखुरिया की तरह ऊपर से घिरने लगेंगे सिमटन लगेंगे और धीरे धीरे फूल मुद जाएगा और फिर सब शान्त हो जाएगा। सिफ डूबती साँझ म मुदे कमल की हल्की उदास छाँह थोडी दर तक सरोवर मे कापती रहेगी और बस।

गजाननमाधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी भी इसी श्रेणी म आती है। यह डायरी शलीगुण एव विचारतत्व दोनो की विशेषता के कारण हिन्दी साहित्य म अपना स्थान रखती है। मुक्तिबोध जी स्वय भी आलोचक एव कवि है तो इनके व्यक्तित्व की इन दानो विशेषताओ का प्रभाव डायरी पर अवश्य पडना था। डायरी विधा का यह रूप ता इसी म मिलेगा। जस निबधात्मक कहानी वसे ही यह निबन्धात्मक डायरी है। निबन्ध पढन के लिए तो मन कुछ घबरा-सा जाता है परन्तु इसम पढने की ललक रहती है। डायरी का आरम्भ सीधा-सादा है, कही एकालाप एव कहीं काल्पनिक पात्र स वार्तालाप दृष्टिगोचर होता है। डायरी का आरम्भ ही बडा सीधा है—

आज से कोई बीस साल पहले की बात है मेरा एक मित्र केशव और मैं दोना जगल-जगल घूमने जाया करते। पहाड पहाड चढा करत। नदी नदी पार किया करत। केशव मेरे जसा ही पन्द्रह वष का बालक था। किन्तु वह मुझे बहुत ही रहस्यपूर्ण मालूम होता। उसका रहस्य बडा ही अजीब था।'

कुल दस प्रकरण डायरी म हैं कोई नही इनम जो एक आहत आत्मा की पीडा म पिराया हुआ न हो और जिसके स्वरो म फिर भी विजित का करुण भाव न होकर चुनौती स्वीकार करने वाले शूर सनिक का ओज न हो। हिन्दी डायरी विधा की यह पहली कृति है जो फण्टसी, मनोविश्लेषण, तक कविता आत्माख्यान के विविध स्तरो पर एक साथ चलती है या वह कि इन सबको एक म समन्वित करके एक नयी ही विधा की सम्भावना की ओर इगित करती है।

कथालेखक—कथालेखको म से उपेन्द्रनाथ अश्क एव इलाचन्द्र जोशीजी की डायरियो के पन्ने प्राप्त होते हैं। अश्क की पुस्तक ज्यादा अपनी कम परायी म इनकी 'नई पुरानी डायरी' के पन्ने प्राप्त होते हैं। जोशीजी की प्रकाशित पुस्तक 'साहित्य चिन्तन म इनकी 'डायरी के पन्ने सग्रहीत हैं। अश्कजी ने पुरानी डायरी के पन्नो म जीवन के गूढ़तम रहस्यो को भावावेश म आकर काव्यमयी भाषा म रखा है। जो भी तरग इनके मस्तिष्क म पैदा हुई उसी को इन्होने डायरी रूप मे लिख दिया है। इस प्रकार ग्यारह छोटे छोटे भाव जिनकी नतिकता अमूल्य है वणन किए हैं। प्रत्येक विचार प्रकट करने म तिथि का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। नई डायरी म जीवन म घटित छोटी छोटी घटनाओ का वणन है। उनकी शली म सक्षिप्तता रोचकता एव सुसगठितता आदि गुणो का समावेश है। भाषा विषयानुकूल एव भावानुकूल है। चारो ओर वयक्तिकता की छाप है। जोशीजी ने अपनी डायरी के पन्नो म साहित्यिक विषय को लिया है इन्होने 'काव्य की सजनात्मक कला की कसौटी क्या है पर अपने विचार प्रकट किए हैं। डायरी के ये पन्ने निबन्धात्मक शली म लिखे गए हैं। अपने विचारो को प्रकट करने के लिए लेखक ने तक एव मनोविज्ञान का सहारा लिया है।

आलोचक—आलोचको म से गुलाबराय एव डा० विनयमोहन शर्मा की डायरियो के कुछ पृष्ठ प्रकाशित हुए हैं। गुलाबराय ने वसे तो कोई डायरी नही लिखी केवल उनकी पुस्तक मेरी असफलताएँ म सग्रहीत मेरी दनिकी का एक पृष्ठ म उनके समस्त व्यक्तित्व की झाँकी प्राप्त होती है। इसम लेखक ने केवल एक ही दिन २१ सितम्बर सन १६४५ का वणन किया है। आलोचक होने के कारण डायरी के इन पाँच पृष्ठो म लेखक ने समस्त व्यक्तित्व की आलोचना स्पष्ट रूप से की है। व्यक्तिगत समस्याओ का गुलाबरायजी ने अत्यन्त खुला चित्रण किया है। घर के अभावो के विषय म कहते है—

घर पहुचते ही शेखर के अन्तिम दिन की भाँति घर के सारे अभावो का ध्यान आ गया। किन्तु बाजार म कोई स्थान नही है जहाँ कल्पवृक्ष की भाँति सब अभावो की एक साथ पूर्ति हो जाय। अगर अच्छा साबुन राजा मण्डी म मिलता है तो अच्छा रोवक पाड म। किन्तु वहाँ मम के लिए भूसे का अभाव था। बाल-बच्चो की दवा के बाद अगर किसी वस्तु को मुख्यता मिलती है तो मस मूल को क्योकि उसके बिना काले अक्षरो की सृष्टि नही होती। मेरी काली मस धवल दुग्ध का ही सृजन नही करती, वरन उसके सदृश ही धवल यश के

सृजन म भी सहायक होती है । इस गुण के हाते हुए भी वह मेरे जीवन की एक बडी ममस्या हो गई है । मैं हर साल उसके लिए अपन घर के पास खेत म चरी कर लेता था । इस साल वर्षा के होते हुए भी मेरा यहाँ चरी नही हुई— भाग्य फलति सवत्र, न विद्या न च पौरुष ।"[1]

इतना ही नही लेखक ने इस एक ही दिन के वणन मे अपने जीवन म घटित पारिवारिक समस्याओ का वणन करते हुए यह सिद्ध किया है कि मनुष्य को जीवन मे बाधाओ से भागना नही चाहिए बल्कि उनका डटकर सामना करना चाहिए । आचाय विनयमोहन शर्मा ने अपनी डायरी के पन्ना म बचपन म टाइफाइड हाने की घटना का वणन किया है ।

राजनतिक पुरुष - हिन्दी म कुछ राजनतिक पुरुषा की डायरियाँ प्राप्त होती हैं । उनम से कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो राजनीतिज्ञ हाते हुए जननेता भी हैं । इस प्रकार राजनतिक एव जननेता दो प्रकार के व्यक्ति इस श्रेणी म आते है । राजनतिक म हमारे सम्मुख घनश्यामदास बिडला, कृष्णदत्त भट्ट एव सुन्दरलाल त्रिपाठीजी आते हैं । बिडलाजी की 'डायरी के पन्ने' पुस्तक है । इसम इन्हाने गाधीजी के साथ जो दूसरी गोलमेज परिषद म भाग लिया था उसी का वणन किया है । इतने विस्तृत विषय का कम स कम शब्दा म वणन करना इनकी शली की विशेषता है । परिषद् का वह जीता जागता चित्रण इन्होने किया है कि पाठक को पढकर ही आनन्द आता है । डायरी के इन पृष्ठा म राजनतिक परिस्थितिया का आभास तो है ही परन्तु वयक्तिकता के चारा आर आच्छादित हाने से रोचकता म कमी नही आने पाई है । जननेता म गाधीजी आते हैं । इनकी दिल्ली डायरी है । इसम गाधीजी के १० ९ ४७ से ३० १ ४८ तक के प्रायना प्रवचनो का सग्रह है । राजनतिक पुरुषा मे से कृष्णदत्त भट्ट एव त्रिपाठीजी की डायरिया भी हिन्दी साहित्य म विशेष स्थान रखती हैं । त्रिपाठीजी की दर्नदिनी' अपनी विषयवस्तु एव शली की दृष्टि से अद्वितीय है ।

(ख) विषयवस्तु के अनुसार

हिन्दी साहित्य म जितने भी डायरी लेखक हुए हैं उन सभी की डायरियो को पढन से ज्ञात होता है कि वसे तो लेखक का उद्देश्य एव प्रमुख विषय आत्मनिरीक्षण एव आत्मविश्लपण ही है पर हम देखते हैं कि कुछ लेखका ने अपन विचारा को एव घटनाओ को प्रकट करन के लिए विशेषतया प्रकृति का सहारा लिया है । किसी ने साहित्यिक आलाचना का, किसी ने अपने जीवन की किसी विशेष अवस्था का चित्रण करने के लिए सस्मरणात्मक शली को अपनाया है तो किसी ने सामाजिक एव सास्कृतिक विषय का अपनाया है । ये सभी विषय लेखका की अपनी अपनी रुचि एव व्यक्तित्व के अनुसार हैं—

---

१ मेरी असफलताए ले० गुलाबराय, पृ० ४०

प्रकृति चित्रण प्रधान—हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसे डायरी लेखक हुए हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण प्रकृति के माध्यम से किया है। ऐसी डायरियाँ जिनमें डायरी लेखक प्रकृति की ओर अधिक उन्मुख दिखलाई पड़ता है प्रकृति चित्रण प्रधान डायरियाँ कहलवाती हैं। सीताराम सेकसरिया की 'डायरी के पन्ना में बसन्त पंचमी' एवं डा० रघुवंश की 'हरी घाटी' इसी प्रकार की डायरियाँ हैं। इनके अतिरिक्त धर्मवीर भारती, गजाननमाधव मुक्तिबोध आदि लेखकों ने भी प्रकृति को अपनी विचारधारा प्रकट करने का साधन माना है। रघुवंशजी ने जहाँ विद्यार्थियों के चले जाने से समस्त प्रयाग को उदास दिखलाया है वहाँ प्रकृति को भी वैसा ही चित्रित किया है—

वासन्ती बयार के स्पर्श के साथ जो नवीन कोंपलों की शृंगार चतुर्दिक पापड़, बरगद, पीपल तथा आम ने किया था वह भी गहरे होते रंग के साथ मंद हो चुका है। गरम हवा के झोंके अवश्य किसी तप्त स्मृति के समान भीतर को झकझोर जाते हैं। शिरीष की उत्फुल्लता गहरी होकर जरठ हो गई है। नीम जरूर झूम रहा है, हँस रहा है, खिला हुआ है। वह हँसता हुआ जीवन की क्षणिकता से उदास होने वाले हम जैसों का मानो उपहास करता हो।'

सीताराम सेकसरिया ने अपनी डायरी के पृष्ठों में तीन वर्षों की बसन्त ऋतु का चित्रण किया है। अधिकतर लेखकों ने प्रकृति के मधुर सुकोमल वातावरण पर दृष्टिपात कर मन में उठी हुई भावनाओं का ही विशेष रूप से वर्णन किया है—गजानन-माधव मुक्तिबोध ने अपनी मन स्थिति का ऐसे ही चित्रण किया है—

"मेरे भीतर वातावरण की मस्ती छाने लगी। वृक्ष के रोम पुलकित हो रहे थे। आँखों में किरणों की सुनहली धारा सी बहने लगी। बादलों की मास-पंक्तियों में से मानो कोई नशा बहकर दौड़ कर हृदय में शराब बन रहा था। एकमात्र प्राकृतिक शारीरिक आनन्द मुझ पर हावी हो रहा था। एक उन्मत्त स्फूर्ति एक सहज शक्ति चेतना मेरी आँखों को निर्मल एवं दीप्त कर रही थी।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डायरी लेखक का प्रमुख विषय आत्माख्यान ही होता है। वह इसको प्रकृति के माध्यम से वर्णन कर सकता है। अधिकतर वह प्रकृति के वातावरण में उत्पन्न हुई मन स्थिति का ही चित्रण करता है।

साहित्यिक आलोचना प्रधान—विषय की दृष्टि से हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसी भी 'डायरियाँ के पन्ने' प्राप्त होते हैं जिनका विषय साहित्य की आलोचना एवं साहित्यिक रस का प्रतिपादन करना है। इस डायरी लेखकों में इलाचन्द्र जोशी, लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी, अजितकुमार, भगवतीचरण वर्मा एवं धर्मवीर भारती जैसे लेखक आते हैं। इन लेखकों की शैली भावानुकूल एवं विषयानुकूल है। आलोचना प्रधान होते हुए भी लेखक की वैयक्तिकता चारों ओर दृष्टिगोचर होती है।

संस्मरण प्रधान—कुछ ऐसे डायरी लेखक भी हुए हैं जिन्होंने अपनी किसी विशेष अवस्था का वर्णन संस्मरण रूप में किया है। इस प्रकार से वह लेखक भी आते हैं जिन्होंने किसी अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन का चित्रण डायरी शैली में संस्मरणों

क रूप मे किया है। प्रथम श्रेणी म अरक न नई पुरानी डायरी के पन्ने एव डॉक्टर विनयमोहन शर्मा ने बचपन की एक दो घटनाए इसी रूप मे लिखी हैं। दूसरी श्रेणी मे वाल्मीकि चौधरी की राष्ट्रपति भवन की डायरी' है। चौधरीजी ने राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद का जीवन-चरित्र डायरी शैली म सस्मरणो के रूपम खीचा है।

सामाजिक एव सास्कृतिक विषय सम्ब धी कुछ ऐसी डायरियाँ भी हिन्दी डायरी साहित्य म पायी जाती हैं जिनका विषय सामाजिक एव सास्कृतिक है। एसी डायरिया म लेखक विवाह, शिक्षा, जीवन आदि सामाजिक विषया पर एव धम, अहिसा, सत्य आदि धार्मिक विषयो सम्ब धी अपने विचार प्रस्तुत करता है। इन सबके साथ वह तत्कालीन परिस्थितियो का वणन भी करता है। वसे तो सभी लखक अपनी डायरियो म इन विषया को किसी न किसी रूप म व्यक्त करते है परन्तु विशेषतया हिन्दी साहित्य म सास्कृतिक विषय को लेकर लिखी गई आचाय तुलसी की प्रवचन डायरियाँ प्राप्त होती है। इन डायरिया का विषय धम से सम्बधित है। इनके अतिरिक्त डा० धीरे द्र वर्मा की मेरी कालिज डायरी' म अनेक सामाजिक समस्याओ पर विचार प्रकट किया गया है।

(ग) स्थानहेतुकादि के आधार पर

हिन्दी साहित्य म कुछ ऐसे डायरी लेखक भी हुए हैं जिन्होने विशेष स्थान एव नगर को दृष्टि म रखते हुए अपनी डायरिया लिखी हैं। रामकुमार ने वाराणसी की डायरी म वाराणसी का एक जीवित चित्र खीचा है। इन्होने गगा क घाटो का वणन आरम्भ स अन्त तक विस्तारपूवक किया है। यही नही, नगर के बाजारो का, उसमे घूमने वाल लोगो का वणन अत्यन्त रोचकपूण ढग से किया है। वहा सडक की भीड का देखकर लखक चाहता है—

' भीड म खो जाना चाहता हू अपना अस्तित्व अलग बचाकर रखने का मोह नही है।

वाराणसी क दूर दूर तक बिखरे हुए मकान मकानो के भीतर आगन म सूखते हुए कपड एव गगा की नील शात जल की धारा, लम्ब बाजार एव मन्दिरो का लेखक ने एक सुन्दर चित्र खीचा है। लखक की शली म सरसता सक्षिप्तता एव स्वाभाविकता आदि गुण स्पष्ट रूप स लक्षित होत हैं।

किसी विशेष स्थल को लेकर लिखने वालो म डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा एव वाल्मीकि चौधरी आते हैं। डाक्टर साहब न मेरी कालिज डायरी म अपने कालिज जीवन क सात वर्षो का चित्र खीचा है। उधर चौधरीजी ने राष्ट्रपति भवन म घटित सभी दनिक घटनाओ का वणन तत्सम्बन्धी क्रियाकलापो एव राजनीति के चित्रपट के बनन म जो चित्र उनके सामन आए है उन सभी का वणन किया है। डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद का जीवन इन्होने सस्मरणात्मक रूप म वणन किया है। वणन शली मे रोचकता है। भाषा भी विषयानुकूल एव परिष्कृत है।

8 हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में इन जीवनीपरक साहित्य रूपोंके अन्तर्बन्ध

साहित्य और जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है । मनुष्य जीवन साहित्य का मूल स्रोत है और साहित्य जीवन को व्यक्त करने का साधन है । जीवन का एसा कोइ भाग नही जिसका साहि य म उल्लेख न हो । जिम भी साहित्य मे जीवन के तत्वो का विवेचन नही हाता महत्व का स्थान और आकषण नही रखता है । इसीलिए जीवन म साहित्य का जो स्थान है वह उतना ही महत्वपूण है जितना जीवन स्वय । इस प्रकार स्पष्ट है कि जीवन और साहित्य का अविच्छि न सम्बन्ध है । इसीलिए साहित्य म इन जीवनीपरक साहित्य रूपा की प्रवृत्ति पाई जाती है ।

साहित्य मे जीवन को अभिव्यक्त करने की दो विधाए है गद्य और पद्य । गद्य मे जहा लेखक अपने व्यक्तित्व एव विचारा को उप यास नाटक एव कहानी आदि विधाओ द्वारा परोक्ष रूप से व्यक्त करता है वहाँ वह स्वतत्र रूप से भी अपने एव अन्य व्यक्ति के जीवन का विवेचन कर सकता है । इसीलिए इस जीवनीपरक साहित्य की उत्पत्ति हुइ है । इस प्रकार के साहित्य म व्यक्ति की प्रधानता होती है समष्टि की नही । ऐस साहित्य म लेखक अपने व अन्य व्यक्ति के जीवन की विशेष विचारधारा, अनुभव एव जीवन के उत्थान पतन को इस कम से प्रस्तुत करता है कि पाठकगण उससे प्रेरणा ग्रहण कर सकें । इस प्रकार के साहित्य के लखक का यक्तित्व निर्भीकता और ईमानदारी से ओतप्रोत होता है । इसलिए आत्मीयता स्पष्टता निर्भीकता इस साहित्य के प्रमुख तत्व हैं । इसमे लेखक का उद्देश्य जीवन के उन गुह्य एव गोपनीय तत्वा को उभारना होना है जिनका किसी को अनुभव भी नही होता । इन तत्वा के उभारने से एक तो लेखक को मानसिक सतोष का अनुभव होता है और दूसरे पाठक उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं । कुछ एतिहासिक एव पौराणिक व्यक्तिया की जीवनियाँ प्रेम और श्रद्धापूवक लिखी जाती हैं । ऐसी जीवनिया म लेखक प्राय उनके गुणा का ही विवेचन करते हैं। इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य, साहित्य म अपना विशेप महत्व पूण स्थान रखता है ।

जीवनीपरक साहित्य मे जीवनी आत्मकथा, रेखाचित्र, सस्मरण डायरी एव पत्र विधाओ का समावेश है । साहित्य अपने युग की विचारधारा का प्रतिबिम्ब होता

इसी प्रकार जीवनीपरक साहित्य की इन पृथक पृथक विधाओ का विकास भी अपने समय की परिस्थितियो के अनुसार ही हुआ है।

भारतेन्दु युग मे जीवनीपरक साहित्य

हिन्दी साहित्य मे आधुनिक काल सन् १८७५ के आस पास से आरम्भ होता है। जब तक मध्ययुगीन जीवन की जडता भग हो चुकी थी और भारतीय पुनर्जागरण अपने बाल्यकाल मे था। ब्रिटिश साम्राज्य का प्रसार हो चुका था पश्चिमी विचार और जीवन मानो से भारतीय प्रभावित हो रहे थे, यातायात और डाकतार की सुविधा और उच्च शिक्षा की व्यवस्था ने भारत मे एक क्रियाशील जागृति का सचार किया। छापेखाने ने समाचार पत्रो को जन्म दिया और भारतीय जनजीवन मे एकता आने लगी विचार विमर्श के लिए अनेक सुविधाएँ मिल गई। १८५७ के बाद अंग्रेज सरकार को विश्वास हो चुका था कि इस देश मे सुशासन स्थापित किए बिना रहना सम्भव नही अत उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्यों को पहले निपटाया। महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र से जनता आश्वस्त हो गई।[1] इसके बावजूद भी भारतीय जनता अपने अधिकारो के प्रति सतर्क थी और राजनैतिक क्षेत्रो मे क्रियात्मक भाग से ले रही थी। यह सर्वथा नए वातावरण की सूचना थी। इस महत्वपूर्ण तथ्य ने जीवन के स्वरूप का ही परिवर्तन कर दिया और साहित्य को गम्भीरतापूर्वक प्रभावित किया। अतीत काल मे साहित्य थोडे से सुखी सम्पन्न लोगो से ही सम्बन्धित था प्रजातान्त्रिक प्रवृत्तियो के विकास के साथ-साथ वह अधिकाधिक जनता की चीज बनने लगा। अब वह सामन्ती विलासिता से पूर्ण अभिजात्य जीवन की अभिव्यजना मात्र न रह गया, प्रत्युत पूरे युग की अनवरत वृद्धिशील आशा आकाक्षाओ शकाओ आपदाओं को चित्रित करने लगा। एक शब्द मे नये युग का साहित्य विविध और प्रजातान्त्रिक होकर आता है।[2]

साहित्य का क्षेत्र इस युग मे विस्तृत होता है। १९वी शती मे स्थिति बदल गई। जीवन मे बहुमुखता आई और साहित्य मे उसका प्रतिफलन हुआ। लेखको ने गद्य को विचारो की अभिव्यक्ति का माध्यम तो बनाया परन्तु काव्य को छोडा नही। गद्य साहित्य मे नाटक उपन्यास, कहानी के सभी साहित्याग जो प्राचीन काल मे अविकसित रहे आधुनिक काल मे अधिक तीव्रता के साथ उभरे। इसे हम युगगत आवश्यकताओं का परिणाम मात्र कह सकते हैं। इनके परिपार्श्व मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की साहित्य साधना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सामाजिक सास्कृतिक धार्मिक और नैतिक विचारो का यह परिवर्तन साहित्य मे एकदम तो न आ सका पर भारतेन्दु की क्रियाशीलता और प्रोत्साहन दान की प्रवृत्ति ने आधुनिक युग को गद्य वाली और उसके विभिन्न साहित्यागो से परिपूर्ण किया। कतिपय विचारक इस युग को स्वच्छन्दतावाद

१ भारतेन्दु युग डॉ० रामविलास शर्मा, पृ० २
२ हिन्दी साहित्य का विकास की रूपरेखा डॉ० रामअवध द्विवेदी, पृ० १२६

की पृष्ठभूमि कहते हैं।[१]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के सिंहद्वार पर स्थित हैं। उनका व्यक्तित्व प्रयतम है। प्राचीन परम्पराओं में मग्न रहकर भी वे उनके दास न बने। उन्होंने अतीत की अपेक्षा भविष्य का अधिक चिन्तन किया और हिन्दी के भावी पथ निर्माण में अकेले और किसी व्यक्ति से अधिक काम किया।[२] व्यक्तित्व से आकर्षक और सुसंस्कृत होने के कारण वे साहित्यिक सक्रियता के केन्द्र बन गए। अपने से प्रतिकूल वातावरण में उन्होंने अनेक साहित्यिक रचनाएं प्रस्तुत कीं और अधिकाधिक संख्या में मित्रों को प्रोत्साहित किया। इसी कारण नवीन प्रवृत्तियों की सशक्त अभिव्यक्ति इनकी कृतियों में हुई।[३] साहित्यकार द्वारा ही देश में जनजीवन का संस्कार होता है।[४] इस रूप में भारतेन्दु की देशभक्ति का रूप सांस्कृतिक उत्थान और जागृति का रूप था। यह बात उनके साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट हो जाती है कि उनका विशेष बल सांस्कृतिक उद्बोधन पर ही अधिक था। एक ओर जहां उस समय देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की लहर दौड़ रही थी वहीं दूसरी ओर पुरानी रूढ़ियां और देश के प्रतिक्रियावादी तत्त्व उनका विरोध कर रहे थे। ऐसे समय में व्यक्ति चेतना ही अधिक मुखर थी। व्यक्ति चेतना भारतेन्दु जी को सांस्कृतिक नवसंस्कार में लगाए था।

हिन्दी साहित्य के जिन अन्य क्षेत्रों में भारतेन्दु द्वारा नवीनता की सृष्टि हुई वैसे ही उन्होंने जीवनीपरक साहित्य में यथार्थवादी परम्परा स्थापित की। जीवनी साहित्य में विशेषतया इन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वैसे तो भारतेन्दु ने कोई भी जीवनी ग्रन्थ नहीं लिखा। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया था, फिर भी अंग्रेजी में उस समय जो जीवन-साहित्य का स्तर था, उसका प्रभाव भारतेन्दु के जीवन लेखन में नहीं है। उन्होंने जीवन चरित्र का ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं लिखा है जैसा आज लिखा जाता है और अंग्रेजी साहित्य में जैसा उस समय भी लिखा जाता था। भारतेन्दु ने छोटे छोटे लेखों के रूप में सन्तों की पौराणिक व्यक्तियों की, मुसलमान बादशाहों और महापुरुषों आदि की जीवनी लिखी है। 'उत्तरार्द्ध भक्तमाल' में लगभग दो सौ भक्तों का वर्णन केवल एक सौ छियानबे छप्पयों में किया है। इसी प्रकार 'चरितावली' में सोलह जीवन चरित्र एक सौ छब्बीस पृष्ठों में लिखे गए हैं। भारतेन्दु द्वारा लिखे ग्रन्थचरित्रों का वर्णन भी आठ-दस पृष्ठों तक ही सीमित है। इन जीवनियों में उनका पूर्ण चित्र उपस्थित नहीं हो पाया है जिनका जीवन चरित्र लिखा गया है। भारतेन्दु की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रवृत्तियाँ चरित्र चित्रण में स्पष्ट दीख पड़ती हैं। तटस्थ रीति से चरित्र लिखने की शैली का प्रादुर्भाव इनकी लेखनी से नहीं पाया।

---

१ हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा डॉ० रामअवध द्विवेदी, पृ० ५७, ५८
२ वही पृ० १३६
३ हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य शुक्ल पृ० ४११
४ भारतेन्दु साहित्य, डॉ० श्री रामगोपाल सिंह चौहान पृ० ३१

भक्तो के चरिनो क भक्तिपूर्ण वर्णन तथा नप यश-कीतन की प्राचीन सीमा, परम्परा तथा शली पार कर भारतेन्दु ने जीवनी साहित्य को मानवीय स्तर पर लाकर लोगो क सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होने जीवनी क सम्बन्ध म व्यापक दृष्टिकोण से विचारने की प्रेरणा दी और भक्तों तथा दरबारी कवियो की परिधि से निकाल जीवनी साहित्य को उस धरातल पर ला बिठाया जहाँ साहित्य वास्तविक रूप धारणकर विकास की ओर अग्रसर होता है।[1]

भारतेन्दु का समस्त जीवन साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर लिखा गया है। इन्होने यह सब काय हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए और हिन्दी पाठकों को भारतीय चरिनो और दूसरे उल्लेखनीय व्यक्तियो तथा प्रारम्भिक इतिहास और वृत्तान्त से परिचित कराने के लिए किया जो कि उस समय की परिस्थितियो के अनुकूल था।

इस युग म जितने भी जीवनी लेखक हुए हैं वे सभी अपने समय की परिस्थितियो स प्रभावित थे। रमाशकर व्यास काशीनाथ खत्री कार्तिकप्रसाद खत्री, प्रमचन्द राधाकृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त इस समय के जीवनी लेखक हैं। केवल कार्तिकप्रसाद खत्री ने ही 'मीराबाई का जीवन चरित्र' लिखकर साहित्यक व्यक्ति के चरित्र पर प्रकाश डाला है और वह भी पूर्ण व्यक्तित्व का परिचायक नही अन्यथा सभी जीवनी लेखको ने पौराणिक, धार्मिक एव ऐतिहासिक पुरुषो के जीवन चरित्र लिखे हैं।

इसके अतिरिक्त जिन भी अन्य भाषाओ के जीवन चरित्रो का हिन्दी म अनुवाद हुआ वे भी इसी प्रकार के हैं।

आत्मकथा साहित्य की उपयोगिता को भी इस काल के लेखको ने अनुभव करना आरम्भ किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र राधाचरण गोस्वामी, प्रतापनारायण मिश्र अम्बिकादत्त व्यास एव श्रीधर पाठक ने आत्मचरित लिखने का प्रयास किया पर थाडे से पृष्ठ लिखकर ही रह गए। इनको पूर्ण सफलता नही मिली, केवल जन्मस्थान, जन्म तिथि एव वश-परिचय से ये लोग आगे नही बढे। इससे स्पष्ट है कि आत्मकथा साहित्य भी इस काल म प्रगति न कर सका। जो कुछ लिखा गया वह नही के समान है।

भारतेन्दु युग मे पत्र साहित्य का भी विकास हुआ। स्वय भारतेन्दु क लिखे हुए पत्र प्राप्त होत हैं। इन पत्रो का विषय व्यक्तिगत होने के साथ-साथ साहित्यिक है। इनके अतिरिक्त श्रीधर पाठक बालमुकुन्द गुप्त एव बालकृष्ण भट्ट इस काल क पत्र लेखक हैं। इनक पत्रो का विषय भी साहित्यिक है। य पत्र हिन्दी भाषा के इतिहास को एव साहित्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। इन पत्रो से इनके साहित्यिक व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त हो जाती है हिन्दी भाषा के उन्नति के लिए जो प्रबाध प्रयत्न किया उसका सब ज्ञान हम हो जाता है। केवल दो एक पत्र ही इन्होने ऐसे

---

1 हिन्दी साहित्य म जीवन चरित का विकास चन्द्रावती सिंह, पृ० १२४

लिखे हैं जिनसे इनके व्यक्तिगत जीवन के कुछ अंशों का पता मिलता है। इस प्रकार हम देखते हैं इस काल में पत्र साहित्य भी उस सीमा तक था। डायरी साहित्य भी पनप न सका, केवल बालमुकुन्द गुप्त ने ही डायरी के कुछ पृष्ठ प्राप्त होते हैं जिनसे इनके जीवन के विषय में कुछ भी नहीं पता चलता। ये पृष्ठ साधारण से हैं जिनमें केवल दिनचर्या का उल्लेख है। संस्मरण भी गुप्तजी ने ही लिखे हैं। संस्मरण साहित्य भी इस काल में विकास को न प्राप्त हो सका।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतेन्दु युग में जीवनी साहित्य ही विशेष रूप से लिखा गया यद्यपि इस विधा का वह विकास न हो सका जैसा कि अब देखने में आता है। गद्य की अन्य विधाओं पत्र डायरी, संस्मरण व आत्मकथा लिखने का प्रयास किया गया। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल ही लेखक न रचना का आविर्भाव करता था तो जीवन चरित ही उनके उद्देश्य को पूर्ण कर सकते थे इसीलिए उन्होंने जीवन चरित्र भी विशेष व्यक्तियों के लिखे गए जिनसे वह अपने उद्देश्य को पूर्ण कर सकते थे। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा ही हिन्दी भाषा का प्रचार हो सकता था। अन्य विधाओं के विकसित न होने का कारण यह है कि भारतीय दृष्टिकोण व्यक्तिगत जीवन की चर्चा और चरित्र चित्रण के संकोच की प्राचीन परम्परा से अभी तक मुक्ति पाने में असमर्थ था। क्योंकि जो भी जीवन चरित्र लिखे गए थे उनके लिखने में लेखक ने जन श्रुति और किंवदंतियों का आश्रय लिया और सभी जीवनियों में जीवन की कुछ स्थूल घटनाओं का वर्णन मात्र कर दिया है। विश्लेषण और छानबीन की है। गद्य की इन सभी विधाओं का प्रारम्भिक रूप इस काल में देखने को मिलता है।

द्विवेदी युग

भारतेन्दु युग प्राचीन काव्य से सर्वथा भिन्न भावभूमि पर आया। उसमें नवोत्थान की द्विमुखी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं—अतीत के गौरव की ओर तथा भविष्य की आशा में संलग्न होने की। सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलनों ने नवोत्थान के भव्य नवीन मार्ग का निर्माण किया था और धर्म के विशुद्ध मूल रूप पर जोर दिया था।[1] द्विवेदी युग में संशोधन तथा व्यवस्था का आवश्यक कार्य किया गया है परन्तु साहित्यिक मूल्य की वस्तुएँ अधिक उपस्थित न की जा सकीं। १८५७ के विग्रह के कठोर धक्के ने भारतेन्दु युग को जगा दिया था और १९२२ के असहयोग आन्दोलन ने एक उत्साह की सृष्टि कर दी थी जो छायावाद के निर्माणकाल में निविष्ट था। इन दो महान् घटनाओं के मध्य में द्विवेदी युग मान्य स्वीकृति और आत्मसंतोष का युग था जो महान् साहित्य के निर्माण का प्रेरक नहीं था, न कोई लेखक ही ऐसी देदीप्यमान साहित्य प्रतिभा का हुआ जो अपनी वैयक्तिक उपलब्धियों से इस युग को असामान्य

१ भारतेन्दु की विचारधारा, ले० डा० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय पृ०१५६

स्तर पर पहुँचा देता। तो भी इस युग के उन गद्यकारों के महान् कार्य को नगण्य नहीं कह सकते जिन्होंने अव्यवस्था के समय सुव्यवस्था के स्थापन के लिए श्रम किया और हिन्दी साहित्य को अनुवादों तथा मौलिक रचनाओं द्वारा समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया।[1] इस व्यवस्था में कतिपय आदर्शों का पालन किया गया। आदर्शों के निर्माता और निर्धारित द्विवेदीजी का कार्य पुनरुत्थानवादी कार्यकर्त्ता का है। उन्होंने साहित्य में कठोर नियमानुशासन, दृढ़ संयम आदि को प्रश्रय दिया और प्राचीन गौरव के चित्रों को प्रस्तुत किया। समष्टि हित चेतना, धर्मप्रियता और समाज के सुव्यवस्थित रूप का उपस्थित करने की प्रवृत्ति में व समष्टिवादी विचारक के रूप में आते हैं। आचार्य द्विवेदी ने उस युग तथा तथ्यपूर्ण विषयों और विचारों को व्यक्त करने का साधन बना दिया। यद्यपि बहुत कुछ होना अभी शेष था परन्तु हिन्दी भाषा के प्रौढ़, सुसगठित और मर्यादित रूप धारण कर अपनी मान्यता और भावी स्वरूप से सम्बन्ध रखने वाली अनेक आशाओं और विवादों को निर्मूल कर दिया। आचार्य द्विवेदी ने एक जागृत चेतना तथा आत्मविश्वास के साथ इस क्षेत्र में कार्य किया। भाषा, व्याकरण, शैली और वाक्य विन्यासों पर ध्यान देते हुए उन्होंने साहित्यिक समालोचना, इतिहास पुरातत्त्व, राजनीति और जीवन चरित्र आदि विषयों पर गम्भीरता, तल्लीनता तथा परिश्रम के साथ लिखना अपना कर्तव्य निर्धारित कर लिया।[2] इस युग के जीवनी परक साहित्य का अध्ययन करने के लिए भी देश के भीतर चलने वाले विभिन्न आन्दोलनों के फलस्वरूप ही इस युग का प्रचुर जीवनीपरक साहित्य प्रस्तुत हुआ।

राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना विशेष अग्रसर हो चली थी। अनेक गुप्त और प्रकट आन्दोलन हो रहे थे। स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार और विदेशी वस्तुओं के त्याग करने का आन्दोलन राष्ट्रीयता का मुख्य अंग बन गया था। इन राष्ट्रीय आन्दोलनों का केन्द्रस्थान बंगाल था। अंग्रेजों ने इसके दो टुकड़े कर दिए। लार्ड कर्जन का शासन काल अनुसार तथा प्रतिक्रियावादी था। भारतीय जनता ने बंग भंग का विरोध करके उससे पूर्व की स्थिति में बदला। इस आन्दोलन का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि अंग्रेजों को इस बात का निश्चय हो गया कि भारतीय जनता आत्मसम्मान के लिए सभी कुछ बलिदान दे सकती है। देश में राष्ट्रीयता की अभूत पूर्व लहर दौड़ गई। नई शक्ति, नई आत्मा और नए जीवन का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त १९०६ ई० में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। मुस्लिम लीग की स्थापना से राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधा उपस्थित हुई। इसकी नींव की प्रेरणा अंग्रेजों द्वारा ही हुई। १९१६ ई० में हिन्दू मुस्लिम समस्या को सुलझाने के लिए लखनऊ में अधिवेशन हुआ। यह समस्या कुछ वर्षों के लिए तो दब गई। बंग भंग आन्दोलन ने देश में बड़ी शक्ति उत्पन्न कर दी थी। देश के भीतर दो प्रकार के आन्दोलन हो रहे थे—

---

१ हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा डॉ० द्विवेदी, पृ० १५६

२ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास चन्द्रावती सिंह पृ० १४०

द्विवेदी युग का जीवनी साहित्य अपने समय से प्रभावित है। स्वयं द्विवेदीजी ने कवि, लेखक, बादशाह, राजनीतिज्ञ, देशोद्धारक, राजकीय उत्तराधिकारी एवं नूतन पथ प्रदर्शकों को अपने जीवनी साहित्य का विषय बनाया। द्विवेदीजी का जीवनी लिखने का उद्देश्य शिक्षात्मक है। हिन्दी साहित्य के प्रसार के लिए इन्होंने इस साहित्य को लिखा। आचार्य द्विवेदीजी ने जो जीवनी लेख लिखे वे युग चेतना के अनुसार न थे। वे अत्यन्त साधारण लेख थे। जीवनी साहित्य की प्रगति में वे आगे नहीं बढ़ सके। इसका एक साधारण कारण तो यह है कि भारतीय जनजीवनी साहित्य की ओर रुचि नहीं रखते थे। दूसरा कारण यह है कि द्विवेदीजी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक थे। उनका उद्देश्य पत्रिका द्वारा प्रचार करना था इसलिए वह सरकार के विरुद्ध नहीं जाते थे। उन्होंने उच्च वर्ग के व्यक्तियों का जीवन चरित्र लिखा, राष्ट्रीय आन्दोलन में लगे किसी भी व्यक्ति के विषय में नहीं लिखा। इस आन्दोलन की ओर उनका झुकाव न था, वे तो राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थे।

द्विवेदी युग में जो भी जीवनी साहित्य लिखा गया उनमें सबसे अधिक ऋषि दयानन्द के विषय में लिखा गया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक पुरुषों के चरित्र लिखे गए। बाबू शिवनन्दन सहाय ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और गोस्वामी तुलसीदास के जीवन चरित्र लिखकर हिन्दी जीवनी साहित्य के विकास में विशेष योग दिया। इनके अतिरिक्त बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी लिखी। डा० श्यामसुन्दरदास द्वारा लिखी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जीवनी भी इस बात की द्योतक है कि जहाँ इस युग में ऐतिहासिक, राष्ट्रीय एवं धार्मिक व्यक्तियों के जीवन चरित्र लिखे गए वहाँ साहित्यिक व्यक्तियों को भी अच्छे लेखकों ने अपने जीवनी साहित्य का विषय बनाया। भारतेन्दु युग की अपेक्षा इस काल में जीवनी साहित्य अधिक पनपा। वह अपनी उत्कृष्ट अवस्था तक पहुंच गया इसमें वे सभी तत्व आ गए जिनका जीवनी साहित्य में होना आवश्यक है। शिवनन्दन सहाय बनारसीदास चतुर्वेदी एवं डा० श्यामसुन्दरदास के प्रयत्न सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त अनेक अनूदित जीवनियाँ भी लिखी गई। इस प्रकार विवेचन से स्पष्ट है कि द्विवेदी युग में जीवनी साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया। लेखकों ने सभी क्षेत्रों से अपने जीवनी के विषय को लिया। शैली भी परिपक्व एवं सुदृढ़ हो गई थी। जितनी साहित्यिक जीवनियां लिखी गई वे सभी प्रामाणिक एवं उत्कृष्ट कोटि की लिखी गई।

जहां तक जीवनीपरक साहित्य की अन्य विधाओं का प्रश्न है उनमें से रेखाचित्र साहित्य का आविर्भाव इस युग में पद्मसिंह शर्मा के द्वारा हो गया था यद्यपि इनके रेखाचित्रों में कला का वह रूप दृष्टिगोचर नहीं होता जैसा कि आज है। इसके अतिरिक्त इस युग में अधिक रेखाचित्र धार्मिक स्थानों के विषय में लिखे गए। सतराम बी० ए०, रामाशासमीर एवं शीतलसहाय ने इसी प्रकार के रेखाचित्र लिखे। केवल मोहनलाल महतो ने अपने बच्चों का जो चित्र अपने रेखाचित्रों में अंकित किया वह इस काल के रेखाचित्र साहित्य की प्रगति को लक्षित करता है। फिर भी यह

रेखाचित्र साहित्य का प्रारम्भिक काल है।

संस्मरण साहित्य का प्रादुर्भाव ही भारतेन्दु काल के पश्चात् हुआ है। द्विवेदी युग म साहित्य की इस विधा की उत्पत्ति हुई और साथ म इस थाड स समय म ही बहुत स लखका ने संस्मरण लिखे। संस्मरण साहित्य की प्रगति हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं द्वारा हुई जिनका कि इस समय म विकास हो गया था। विषय की दृष्टि से ये संस्मरण दो प्रकार के हैं—आत्मकथा स सम्बन्धित एव अन्य व्यक्ति के चरित्र से सम्बन्धित। आत्मकथा से सम्बन्धित संस्मरणो म लेखको ने अपने व्यक्तित्व पर संस्मरणात्मक शैली म प्रकाश डाला है। ऐसे लखक इलाचन्द्र जोशी वृन्दावनलाल वर्मा एव श्रीनिवास शास्त्री हैं।

दूसरी प्रकार के संस्मरण लेखक बालमुकुन्द गुप्त डा० श्यामसुन्दरदास एव श्री रामदास गौड और अमृतलाल चक्रवर्ती हैं। इन सभी संस्मर । म लखको ने केवल साहित्यिक लेखको के यक्तित्व के विषय म प्रकाश डाला है। संस्मरण साहित्य अभी प्रौढ अवस्था तक नही पहुचा था पर जितना भी लिखा गया वह उत्कृष्ट कोटि का है।

द्विवेदी युग म पत्र साहित्य की प्रगति सबस अधिक हुई है। सरस्वती पत्रिका के सम्पादक होने के कारण आचार्य द्विवदी ने हिन्दी भाषा म जो अशुद्धिया थी उनको दूर करके उसको परिनिष्ठित एव परिपक्व भाषा बनाना था। इसलिए उनके पास जो भी लेख पत्रिका म छपने आते थे उनकी अशुद्धियो को वह उनके लखको को पत्रो द्वारा बतलाते थ इसलिए उनक बहुत स पत्र प्राप्त होते है। इनके अधिक पत्रो का विषय साहित्यिक है जिनमे तत्कालीन व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियो पर ध्यान दिया है। इनके अतिरिक्त इस युग के प्रसिद्ध पत्र लेखको म पद्मसिंह शर्मा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एव मुशी प्रमचन्द है। ये सभी लेखक पत्र लेखन म सिद्धहस्त थ। इनके पत्रा म इनका व्यक्तित्व तो उभरा हुआ है ही साथ म तत्कालीन राजनतिक साहित्यिक एव धार्मिक परिस्थितिया पर भी आवश्यकतानुसार प्रकाश डाला है। इनक अधिकाश पत्रा का विषय साहित्य स ही सम्बन्धित है। जिन भी पत्रा म इन्होने अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण भी किया है वह इनकी निर्भीकता एव स्पष्टवादिता का द्योतक है। मुशी प्रमचन्द के पत्र तो अपना ही स्थान रखत हैं। इन समस्त लखको ने अपने चारित्रिक गुण दोषो का विवेचन अपने पत्रो म बडी निर्भीकता स किया है। इनके पत्र तत्कालीन परिस्थितियो के द्योतक एव उनके व्यक्तित्व का प्रकाशन भलीभाँति करत हैं। इस युग म सब से अधिक प्रगति पत्र साहित्य की हुई है। जसा पत्रसाहित्य इस युग म पनप सका वसा अन्य किसी भी समय म नही। इस युग के पत्र साहित्य के अनुशीलन स ज्ञान हाता है कि पत्र लखको ने अपने पत्रो म विविध विषय को लिया है। कुछ पत्र साहित्यिक लिख गए जिनम साहित्य स सम्बन्धित विषयो पर प्रकाश डाला गया। हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास को स्पष्ट करने के लिए य पत्र बहुत सहायता दत हैं। कुछ पत्रों म इन लखको ने अपने व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला

है। ऐसे पत्र आत्मकथा एव जीवन के लिए सहायक होते हैं। ऐसे पत्रों मे लेखक की ईमानदारी और जिन्दादिली प्राप्त होती है। कुछ पत्र ऐस लिखे गए हैं जिनम इन्होंने किसी अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। ऐसे पत्रो मे इन्होंने नायक के गुण दोषो का विवेचन स्पष्ट रूप स किया है। द्विवेदी युग का पत्र साहित्य हिन्दी साहित्य म अद्वितीय स्थान रखता है।

इस युग में आत्मकथा लिखने का प्रयास द्विवेदीजी ने ही किया। इन्होने कुछ पन्ने अपने जीवन के विषम म लिखे हैं। उनम जो कुछ भी इन्होने लिखा है वह इनकी उत्कृष्ट शैली का परिचायक है परन्तु यह पूरी आत्मकथा न लिख सके। अन्य किसी भी लेखक ने यह प्रयास नहा किया। आत्मकथा का अश इस काल के पत्र साहित्य म ही दृष्टिगोचर होता है। अन्य किसी भी लेखक ने स्वतन्त्र रूप से आत्मकथा नही लिखी। डायरी लिखने की प्रथा भी इस युग मे प्रचलित न हो सकी।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि द्विवेदी युग मे जीवनी साहित्य एव पत्र साहित्य की विशेष रूप से लिखा गया। पत्र साहित्य का तो अधिक विकास इस समय म ही हुआ है।

वर्तमान युग

द्विवेदी युग के समाप्त होत ही भारतीय जनता मे उथल-पुथल समाप्त सी होन लगी। १६३० ई० का आरम्भ एक विशेष घटना से हुआ। काग्रेस का अधिवेशन लाहौर म पडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता म हुआ। काग्रेस न पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी थी। सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुआ, समस्त जनता इससे प्रभावित हुई। इसके पश्चात् लार्ड इरविन से गाधीजी का समझौता हुआ। इस समझौते का यह परिणाम हुआ कि महात्मा गाधी गोलमेज कान्फ्रेंस म सम्मिलित होने के लिए इग्लड गए। इतने म ही ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जनता पर भीषण दमन का चक्र चलाया। काग्रेस ने सत्याग्रह और लगानबन्दी आन्दोलन का अनुसरण किया। १६३५ ई० म गवर्नमट आफ इण्डिया एक्ट द्वारा भारतवासियो को जो कुछ भी शासन अधिकार मिला उसस भारतीय लोगो की शक्ति और भी सुदृढ हो गई। १६३७ म चुनाव हुआ और उसम काग्रेस की विजय हुई। सन् १६३६ ई० में योरोप दूसरे विश्वयुद्ध का केन्द्र बना और फिर सारा ससार प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से युद्ध की ज्वाला मे जलने लगा। ब्रिटेन न भारत को युद्ध म मिलाना चाहा परन्तु भारत के नेताओ न इनकार कर दिया इसके साथ ही त्यागपत्र दे दिया। गाधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन चलाया। परिस्थितियाँ धीरे धीरे घनीभूत हो रही थी। साम्राज्य न साम्प्रदायिकता को उत्तेजित कर भारतीय राष्ट्रशक्ति को छिन्न भिन्न करने का पुराना और परीक्षित अस्त्र प्रयोग किया। मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा दोनों जो जनता का समर्थन किसी अश म नही प्राप्त कर सकी थी ब्रिटिश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त करने लगी। १६४० ई० म मुहम्मद अली जिना ने पाकिस्तान की माँग की। महात्मा गाधी के

नेतृत्व में १९४२ में भारतीय जनता ने 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव रक्खा। देश का सम्पूर्ण वातावरण जनजन और जनभावना तथा चिन्तन त्याग के उन्मादका देश के लिए सम्पूर्ण बलिदान से ओतप्रोत था। भारत का जीवन एक एक क्षेत्र में इन युगों का जहाँ मनुष्य और समाज का उत्कृष्ट रूप दीख पड़ता है।

१९४५ में ई० में युद्ध समाप्त हो गया। भारत की राष्ट्रीय चेतना इतनी जागृत थी कि इसको १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता मिली। साम्प्रदायिकता का स्वरूप भारत और पाकिस्तान में दृष्टिगोचर हुआ। गांधीजी ने इसको बहुत अन्त तक शान्त करना चाहा। अन्त में ३० जनवरी १९४८ को इनकी भी मृत्यु हो गई। स्वतन्त्र भारत के संविधान को २६ जनवरी १९५० को लागू किया गया इसके साथ ही हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया गया।

सन् १९३० से १९५० तक साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इस समय का साहित्य अपने देश की परिस्थितियों से प्रभावित था। उच्चकोटि के विद्वान और राजनीतिज्ञ अपना योग प्रदान करने लगे। लोग उन व्यक्तियों के चरित्रों को पढ़ने की उत्सुकता में थे जिन्होंने स्वतन्त्रता युद्ध में अपनी जान को न्योछावर कर दिया। पत्र-पत्रिकाओं ने ऐसे व्यक्तियों के जीवन चरित्र प्रकाशित करने में सहयोग दिया।

इस काल में आत्मकथा साहित्य की विशेष रूप से प्रगति हुई। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा लिखी जिसका हिन्दी रूपान्तर हरिभाऊ उपाध्याय ने किया। इसके साथ ही डा० राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल नेहरू कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी भवानीदयाल संन्यासी एवं सत्यदेव परिव्राजक जैसे महापुरुषों ने अपने जीवन चरित्र लिखे। इन आत्मकथाओं का उत्कृष्ट कोटि की श्रेणी में रखा जा सकता है। इनमें लेखकों ने अपने व्यक्तित्व के सभी पक्षों का सन्तुलित विश्लेषण करते हुए स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जो सहयोग दिया, उसमें जो भी उलझनें सामने आई, उनका वर्णन किया है। इन राजनैतिक व्यक्तियों ने अपनी आत्मकथाओं की रचना तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल होने से ही की थी। जनता यह चाहती थी कि उसे इन महापुरुषों के जीवन पढ़ने को मिलें। इन आत्मकथाओं में उनके आदर्श उनकी विचारधारा और राष्ट्रीय संग्राम की छाप दृष्टिगोचर होती है।

इस समय में राजनीतिज्ञों ने ही आत्मकथाएं नहीं लिखीं अपितु साहित्यिक व्यक्तियों ने भी इस दिशा में कम सहयोग नहीं दिया। डा० श्यामसुन्दरदास वियोगी हरि, गणेशप्रसादजी वर्णी एवं राहुल सांकृत्यायन ने अपनी आत्मकथाएँ लिखीं। स्फुट रूप से अनेक लेखकों ने अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं को लिखा। इनके ये आत्मकथा सम्बन्धी लेख विशेषतया पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। १९३१ के आत्मकथा अंक 'हंस' पत्रिका में अनेकों लेखकों ने इस प्रकार के निबन्ध छपवाए थे। आत्मकथा सम्बन्धी घटनाओं को स्फुट रूप से वर्णन करने वाले लेखकों में से मुंशी

प्रमचन्द, गुलाबराय, अम्बिकादत्त व्यास, पदमलाल पुन्नालाल बख्शी का नाम अग्रणीय है। इनके अतिरिक्त मूलचन्द अग्रवाल की आत्मकथा भी इसी समय म प्राप्त होती है। इस प्रकार आत्मकथा साहित्य का स्तर उत्कृष्ट कोटि का हो गया। इसम उन सभी विशेषताओ एव गुणो का समावश हो गया था जो कि एक आत्मकथा लेखक की शली म होना चाहिए था। भारतेन्दु युग म तो आत्मकथा साहित्य की उपयोगिता का अनुमान लेखको को हो गया था। द्विवदी युग म पत्र या जीवनी साहित्य की प्रगति ही होती गई और वतमान काल म १६३० से १६५० तक के समय मे दश एव समाज की परिस्थितियों ने देश एव साहित्य के महान् पुरुषो को अपनी आत्मकथा लिखने के लिए विवश कर दिया था। इस प्रकार आत्मकथा साहित्य का पूण विकास इस युग म लक्षित होता है।

जीवनीपरक साहित्य की अन्य विधाओ म से रेखाचित्र साहित्य की भी प्रगति पर्याप्त मात्रा म हुई है। इस युग के रेखाचित्रकारो म स श्रीराम शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त रामवक्ष बेनीपुरी दवेन्द्र सत्यार्थी एव महादेवी वर्मा का नाम प्रमुख है। विषय की दृष्टि से यदि देखा जाय तो चार प्रकार के रेखाचित्र लिखे गए—साहित्यिक लखको के रखाचित्र राजनतिक पुरुषो के रखाचित्र मानवीय गुणो से सम्पन्न साधारण पुरुषो के रखाचित्र एव मानवेतर जड या चेतन सम्बन्धी रखाचित्र। प्रत्यक साहित्य अपने समय की विचारधारा का प्रतिबिम्ब होता है। रेखाचित्र साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इस समय के रखाचित्रकारो ने भी तत्कालीन महापुरुषो को अपने रेखाचित्रो का विषय बनाया। दवेन्द्र सत्यार्थी ने तो बहुत स रेखाचित्रो म बापू की चर्चा की है। यही नही कोई भी रखाचित्र लेखक एसा नही था जिसने उस समय के प्रसिद्ध राजनतिक पुरुषो के विषय म नही लिखा। यहा कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक लखक अपने समय की परिस्थितियो से प्रभावित था अपनी रुचि अनुसार उन्होने रेखाचित्र लिखे। कई रेखाचित्र साधारण से व्यक्तियो के लिखे गए हैं, यह भी समय की माग थी। स्वतन्त्रता प्राप्त करन के पश्चात् हमारे सविधान मे जात पात छुआ छूत को को हटा दिया। इसका प्रभाव गया समा लोगो पर पडा। उन्होने उन साधारण पुरुषो व पात्रो का ग्रहण किया जो कि मानवीय गुणो से सम्पन्न थ। महादेवी वर्मा एसे रेखाचित्र लिखने म सफल रही हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लखको ने ऐस रखाचित्र लिखे हैं जिनमे तत्कालीन सामाजिक एव ग्रामीण अवस्था का पूण चित्र है। रामवक्ष बनीपुरी न तत्कालीन ग्रामीण अवस्था का चित्र 'माटी की मूरतें' पुस्तक म बहुत अच्छा खीचा है। प्रकाशचन्द्र गुप्त के रेखाचित्र अधिकतर प्राचीन खण्डहरो एव विशेष स्थानो को लेकर लिखे गए है। १६३८ के 'हस रेखाचित्र अक' द्वारा भी रेखाचित्र साहित्य का विकास हुआ। इसम अनेक प्रमुख लेखको के रेखाचित्र लिखे गए हैं।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस काल म रेखाचित्र साहित्य का विकास भी प्रचुर मात्रा म हुआ है। विषय एव शली की दृष्टि से रेखाचित्र साहित्य

परिपक्व अवस्था तक पहुँच गया। हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रचुर मात्रा में निकलने लगी थी इसलिए लेखकों ने इसमें अपने रेखाचित्र प्रचुर मात्रा में प्रकाशित करवाने आरम्भ कर दिए थे। लोगों ने लेखकों को साहित्य की इस विधा की प्रगति के लिए प्रेरित किया क्योंकि उनको थोड़े से पृष्ठों में ही किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्र मिल जाता था। पाठकों की समय की बचत तो होती ही थी, इसके साथ पर्याप्त मनोरंजन भी होता था।

जहाँ तक जीवनी साहित्य की प्रगति का प्रश्न है, इस काल में जितनी भी जीवनियाँ लिखी गई वे भी समय की माँग के अनुसार ही लिखी गई। राष्ट्रीय, ऐतिहासिक एवं राजनैतिक पुरुषों के जीवन चरित्र ही अधिक लिखे गये। अधिकतर लेखकों ने उन पुरुषों के जीवन चरित्र लिखे हैं जिन्होंने भारत को स्वतन्त्र बनाने के लिए विशेष भाग लिया। इनमें महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह एवं राजर्षि टण्डन मुख्य हैं। कुछ ऐतिहासिक पुरुषों की जीवनियाँ भी लिखी गई। साहित्यिक पुरुषों की जीवनियाँ केवल दो ही प्राप्त होती हैं—ब्रजरत्नदास द्वारा लिखित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जीवनी एवं शिवरानी देवी की प्रेमचन्द घर में। इस समय में जीवनी साहित्य अधिक पनप न सका क्योंकि लोगों के हाथों में प्रसिद्ध पुरुषों की आत्मकथाएँ आ गई थी, उनके पढ़ने में उनकी अधिक रुचि थी।

हिन्दी पत्र पत्रिकाओं ने जीवनीपरक साहित्य की उन्नति में विशेष योग दिया है। संस्मरण साहित्य तो पनपा ही इनके कारण है। १९३० से १९५० तक जितने भी संस्मरण लिखे गए उन सभी का विषय भी राष्ट्रीय पुरुषों से सम्बन्धित है, कुछ संस्मरण ही आचार्य द्विवेदी के विषय में लिखे गए हैं। राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह एक ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने अपने संस्मरणों में साधारण पुरुषों के चित्रण द्वारा अपने समय की परिस्थितियों का चित्रण किया है। 'सावनीसमा' में इन्होंने सामन्ती विलासिता की ओर संकेत किया है 'टूटा तारा' में सामाजिक दृष्टि से नगण्य परन्तु हृदय की दृष्टि से धनी और मान के पात्र व्यक्तियों का चित्रण है। 'सूरदास' में अपना के प्रेम का प्रदर्शन है। कुछ संस्मरण पद्मसिंह शर्मा, श्रीधर पाठक एवं मुंशी प्रेमचन्द के विषय में भी प्रकाशित हुए। इस समय में बनारसीदास चतुर्वेदी ने पाठकों को अपनी संस्मरण कला का कुछ संस्मरण लिखकर परिचय दे दिया था परन्तु पूर्ण परिचय तो १९५० के पश्चात् ही प्राप्त होता है। इस काल में संस्मरण साहित्य भारतेन्दु और द्विवेदी युग से अधिक विकसित हुआ है परन्तु प्रौढ़ावस्था में तो इसके पश्चात् ही पहुँच सका। डायरी और पत्र साहित्य की प्रगति भी इस समय में कोई विशेष नहीं हुई है। कमलापति त्रिपाठी के पत्र, जो इन्होंने जेल में लिखे थे, बन्दी की चेतना में प्राप्त होते हैं। उनमें भी व्यक्तिगत विचारों के साथ साथ तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण है।

१९५० सन् के पश्चात् जीवनीपरक साहित्य का प्रगति विकास रूप में होने

लगी। जीवनी संस्मरण आत्मकथा, रेखाचित्र, डायरी एवं पत्र साहित्य का विकास प्रचुर मात्रा में लक्षित होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नये संविधान के निश्चित होने से हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया था, इससे हिन्दी लेखकों को बहुत प्रोत्साहन मिला। नेहरूजी की पंचशील की योजना का प्रभाव समस्त साहित्य पर पडा। अनेक देशों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। जिन देशों से हमारा ऐसा सम्बन्ध स्थापित हुआ था उनके महान व्यक्तियों के विषय में भी जीवन चरित लिखे गये। इसके साथ ही हमारा साहित्य भी उनके साहित्य से प्रभावित हुआ। इन जीवनीपरक साहित्यिक रूपों का आगमन पाश्चात्य साहित्य की ही देन है। इनके विकसित होने का सबसे बडा कारण यह है कि जीवन स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बहुत जटिल बन गया था। जनता का अधिक समय जीविकोपार्जन में व्यतीत होने लगा। अधिक काम करने के पश्चात् मनोरंजन की आवश्यकता पडी, इसलिए उन्हे ऐसे साहित्य की आवश्यकता थी जो थोडे समय में पढा जाय और पर्याप्त मनोरंजन हो। ये रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी एवं पत्र साहित्य इसी दृष्टिकोण से लिखे गये। इस युग के प्रसिद्ध जीवनी लेखकों में से राहुल सांकृत्यायन, रांगेयराघव रामवृक्ष बेनीपुरी, ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ एवं अमृतराय प्रमुख हैं। अमृतराय द्वारा लिखी हुई प्रेमचन्द कलम का सिपाही जीवनी उत्कृष्ट श्रेणी की जीवनी है। शिवनन्दन सहाय एवं डॉ० श्याम सुन्दरदास के पश्चात् साहित्यिक जीवनी लेखकों में से अमृतराय सर्वश्रेष्ठ जीवनी लेखक हैं। हिन्दी जीवनी साहित्य में यह अपना सर्वश्रेष्ठ स्थान रखती है। इसमें लेखक की शैली भी नवीन ही है। घनश्यामदास बिड़ला के संस्मरण अधिकतर गांधीजी के जीवन से सम्बन्धित हैं। इनके अतिरिक्त स्मृति ग्रन्थों एवं अभिनन्दन ग्रन्थों द्वारा ही इस विधा का विशेष विकास हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं विषय और शैली की दृष्टि से इस काल का संस्मरण साहित्य विशेष रूप से प्रफुल्लित हुआ।

रेखाचित्र साहित्य की प्रगति भी इस काल में कम नहीं हुई। इस समय के प्रसिद्ध रेखाचित्रकार अयोध्याप्रसाद गोयलीय कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर बनारसीदास चतुर्वेदी, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन एवं प्रेमनारायण टण्डन हैं। इनके द्वारा लिखे हुए रेखाचित्र उच्चकोटि के हैं। विषय और शैली की परिपक्वता इनमें दृष्टिगोचर होती है।

डायरी साहित्य का विकास हिन्दी साहित्य के सभी कालों की अपेक्षा इन १४ वर्षों में ही हुआ है यद्यपि इसका थोडा-बहुत रूप हम भारतेन्दु काल में पाते हैं। इस काल में सुन्दरलाल त्रिपाठी डा० धीरेन्द्र वर्मा एवं गजाननमाधव मुक्तिबोध ने अपनी डायरियाँ लिखी हैं। डायरी लिखने की कुछ प्रथा ही चल पडी है। कई लेखकों ने अपनी डायरी के पन्ने पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाये हैं। कुछ लेखकों ने अपने जीवन के कुछ ही दिनों का चित्रण अपनी डायरी में किया है। इनसे हम उनके

सम्पूर्ण जीवन का अनुभव नही होता। धमवीर भारती उपेन्द्रनाथ अश्क, रामकुमार वर्मा एव भगवतीचरण वर्मा का नाम इनम आता है। १६४८ सन तक जो कुछ भी हम डायरी साहित्य म विषय म प्राप्त होता है वह न क समान ही है। केवल १६४२ म कुवरसर रावी न जो प्रयास किया था उस कुछ सफल कहा जा सकता है। १६५८ सन के पश्चात् ही हम इन साहित्यिक व्यक्तियो की पूर्ण जीवनियाँ प्राप्त होती हैं। जहाँ तक आत्मकथा साहित्य क विकास का प्रश्न है इन चौदह वर्षों म तीन आत्म कथाए लिखी गई हैं जिनक लखक कालिदास कपूर सतराम बी० ए० एव आचाय चतुरसेन शास्त्री हैं। इनम शास्त्रीजी की आत्मकहानी सवश्रेष्ठ है। इसम लखक ने अपने जीवन क सभी पक्षो का वणन विस्तारपूवक किया है। इनके अतिरिक्त स्फुट रूप म कुछ लेखको न आत्मकथा सम्बन्धी लख लिखे हैं। महादेवी वर्मा पत, भगवतीप्रसाद वाजपयी मथिलीशरण गुप्त विशेष रूप से अग्रणीय हैं।

इस समय म सस्मरण रेखाचित्र एव डायरी साहित्य का विकास अधिक दृष्टि-गोचर होता है। सस्मरण लखको म शातिप्रिय द्विवेदी बनारसीदास चतुर्वेदी किशोरी दास वाजपेयी जनेन्द्र घनश्यामदास बिडला यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क का नाम तो लिया ही जाता है। इनके अतिरिक्त कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर पाडेय बेचनशर्मा उग्र, ब्रजमोहन व्यास एव रामवृक्ष बेनीपुरी का कम सहयोग नही है। विषय और शली की दृष्टि स इस साहित्य म परिपक्वता दृष्टिगोचर होती है। कुछ लेखको न तो अपनी आत्मकथा ही इस सस्मरणात्मक शली म लिखी है। इस प्रकार का प्रयोग शान्तिप्रिय द्विवेदी एव किशोरीदास वाजपेयी ने किया है। पाण्डेय बेचनशर्मा उग्र ने भी अपनी आत्मकथा सस्मरणात्मक शली म लिखी है। अन्य व्यक्तियो के चरित्रो क विषय म जो सस्मरण लिखे है उनम सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चित्रण करने वालो म ब्रजमोहन व्यास का प्रयास सराहनीय है। इ होने बालकृष्ण भट्ट का जीवन चरित्र इसी शली म लिखा है। यशपाल के सस्मरण भी हिन्दी साहित्य म अपना विशेष स्थान रखत है। इनम लेखक ने तात्कालीन परिस्थितियो का चित्र खीचते हुए अपने जीवन का वणन इसी शली म किया है।

इसक पश्चात डायरियाँ प्राप्त होती हैं। इनम डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा की मेरी कालिज डायरी यद्यपि इनके सम्पूर्ण जीवन का पता नही दती फिर भी यह एक विशेष सफल एव सराहनीय काय है। अभी तक हिन्दी साहित्य म कोई भी डायरी एसी नही जिसम लखक के सम्पूर्ण जीवन का उल्लेख हो। धार्मिक एव राजनतिक पुरुषो की डायरिया तो मिल जाती हैं। वाल्मीकि चोधरी की राष्ट्रपति भवन की डायरी एव श्री तुलसी की प्रवचन डायरियाँ इसी प्रकार की हैं। डायरी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है। आधुनिक लेखक इस विधा को विकसित करने के लिए विशष इच्छुक हैं। आशा है कुछ वर्षों म हम और भी अच्छी डायरियाँ प्राप्त होगी।

पत्र साहित्य को विकसित करने क लिए नवीनतम आधुनिक लेखक भारतेन्दु एव द्विवेदी युग क साहित्यकारो क पत्रो को पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित करवा रहे हैं

जिससे लेखकों को पत्र साहित्य की उपयोगिता का अनुमान हो जाय और वह अपने पत्रों को आगामी साहित्यिकों के लिए सम्भालकर रखें। अन्य भाषाओं के पत्र साहित्य का अनुवाद भी इस काल म किया गया। पत्र साहित्य का जो रूप हम द्विवेदी काल म देखने को मिलता है वह इस काल म नही।

इस प्रकार उपयुक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि विशिष्ट समय म जीवनीपरक साहित्य की किस विधा का विकास हुआ और क्यो हुआ। समय और परिस्थितियों के अनुकूल ही साहित्य की रचना होती है प्रत्यक साहित्य अपने युग की विचारधारा का प्रतिबिम्ब होता है—यह उपयुक्त विवचन से स्पष्ट है।

साहित्येतिहासो के आलोक में जीवनीपरक साहित्य का महत्व

साहित्य अपने युग की विचारधारा का प्रतिबिम्ब होता है। साहित्य म लेखक अपने समय की राजनतिक, सामाजिक, धार्मिक एव आर्थिक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए उनका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव दिखाता है। इसके पश्चात् वह साहित्य की विशेषताओं का उल्लेख जहा करता है वहा उस काल के उन विशेषताओं से युक्त प्रमुख लेखकों का परिचय पाठकों को करवा देता है। लेखकों का वह परिचय उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का ही पाठकों को ज्ञान करवाता है जीवनीपरक साहित्य के लेखक की भाति वह प्रत्यक लेखक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विश्लेषण अपने साहित्य म नही करता। जीवनीपरक साहित्य तो एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य का व्यक्तित्व मानसिक क्रियाओं का परिणाम होता है। वास्तव म मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन मन की क्रियाओं का निर्माण है। इसीलिए व्यक्तित्व का वास्तविक चित्र समझने के लिए मन का विश्लेषण आवश्यक है। जीवनीपरक साहित्य की यह सबसे बड़ी विशेषता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखक जीवन के इन तत्वों की ओर ध्यान नही देता उसका काय तो तत्कालीन परिस्थितियों का वणन करते हुए उस युग की साहित्यिक धाराओं की विशेषताओं का उल्लेख एव उन धाराओं के लेखकों का वणन है। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास जितने भी अभी तक प्रकाशित हुए हैं उनमे जीवनीपरक साहित्य के तत्वों का समावेश नही हो पाया है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास अभी तक जितने प्रकाशित हुए हैं उनम गार्सा दतासी, शिवसिंह सेंगर और ग्रियसन के इतिहास प्राचीन हैं। गार्सा दतासी के इतिहास का अनुवाद लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय ने किया। इस इतिहास के अनुशीलन से भी ज्ञात है कि लेखक ने जिन कवियों का उल्लेख अपने इतिहास म किया है उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर विचार न करके लेखक ने उनके जन्मस्थान, जन्मतिथि का उल्लेख तो अवश्य किया है परन्तु अधिक ध्यान इनकी कृतियों की ओर दिया है। इस प्रकार इस साहित्य म भी जीवनीपरक तत्वों का समावेश नहीं आ पाया। हिन्दी साहित्य के प्रथम लेखक शिवसिंह सेंगर की पुस्तक 'शिवसिंह सरोज' म जिन कवियों का परिचय दिया गया है वह भी अपूर्ण है। उनसे पाठक को केवल यह अनुमान होना

हुए उस काल के कवियों का नामोल्लेख किया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के साहित्य में भी जीवनीपरक महत्ता देखने को नहीं मिलती है। माताप्रसाद गुप्त ने तो अपनी 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में कवियों एवं लेखकों की मात्र सूची ही दी है। उन्हें जीवन चरित्र का वर्णन तो क्या करना था, इन सभी इतिहासों के पश्चात् भवानीशंकर त्रिवेदी एवं डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का इतिहास हमारे सम्मुख आता है। त्रिवेदीजी ने तो अपने साहित्य में कवियों का साधारण सा परिचय देकर उनकी कृतियों में से चुनकर उदाहरण दिए हैं परन्तु डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का इस दिशा में सफल प्रयोग है। द्विवेदीजी ने साहित्य की प्रवृत्तियों के विषय में तो लिखा ही है परन्तु कवियों और लेखकों का परिचय वह जितना अधिक दे सकते थे दिया है। जीवन परिचय देने में उन्हें जो भी प्रमाण मिल सके उन सभी के आधार पर इन्होंने उनके चरित्र को आंका है।

इस तरह गार्सां द तासी के इतिहास से लेकर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तक के इतिहास के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इतिहास में लेखक का उद्देश्य अपने समय की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए उसका प्रभाव साहित्य पर दिखलाना है और उस युग के प्रसिद्ध लेखक कवि एवं आलोचकों का वर्णन करते हुए उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की ओर प्रकाश डालना है। इनकी सीमा वश, जन्मतिथि, जन्मस्थान तक ही सीमित रही है। व्यक्तिगत जीवन का पूर्णतया विश्लेषण वह नहीं कर सके हैं, यहाँ तक कि जिन लेखकों ने किसी विशेष काल के विषय में ही अपनी लेखनी उठायी है उनमें भी वह व्यक्ति का चित्रण पूर्ण नहीं दे पाए हैं। इसका कारण यह है कि इतिहासकार का कर्त्तव्य तो देश की परिस्थितियों का वर्णन करना होता है और उसका प्रभाव साहित्य पर दिखाना होता है। देश उसमें अंगी रहता है व्यक्ति उसमें अंग होकर आता है। जीवनीपरक साहित्य में प्रधानता व्यक्ति की होती है देश की घटनाएँ उसकी अनुवर्तिनी होकर चलती है। इसमें मुख्य लक्ष्य नायक के चरित्र का चित्रण होता है। देश एवं साहित्य की परिस्थितियों का वर्णन तो उसके चरित्र को उभारने के लिए किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहास से जीवनीपरक साहित्य का इतना ही सम्बन्ध है कि दोनों में घटनाओं की सत्यता होती है।

जीवनीपरक साहित्य के आधार पर साहित्य के इतिहास में नए तत्वों एवं नए दृष्टिकोणों का समावेश हो सकता है। जीवनीपरक साहित्य में रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, पत्र एवं आत्मकथा साहित्य का समावेश है। इतिहासकार अपने साहित्य में जिस कवि या लेखक के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करता है वह जनश्रुतियों एवं किंवदन्तियों पर अधिकतर आश्रित होते हैं। किसी भी व्यक्ति के विषय में जो भी लिखा जाता है यह आवश्यक नहीं होता कि वह पूर्णतया सत्य ही हो परन्तु जीवनपरक साहित्य का लेखक नायक स्वयं होता है इसलिए उसके विषय में किसी भी प्रकार का संदेह नहीं होता। जीवनीपरक साहित्य में लेखक अपने विचारों एवं व्यक्तित्व का विवेचन ही नहीं करता अपितु उसमें गुण-दोषों का विश्लेषण भी करता है इसलिए

उनके पढने से बहुत लोगा की भ्रातिया दूर होती हैं और साहित्य क इतिहास म नवीन तत्त्वा का समावेश होता है। लेखक अपने व्यक्तित्व की स्वय आलोचना करता है वह अपने समय की परिस्थितिया का स्वय वणन करता है। वणन ही नहीं अपितु विवेचन करता है। इसलिए हम देखते हैं कि जीवनीपरक साहित्य से इतिहास मे नए दृष्टिकोण एव नए तत्त्वो का समावेश हो सकता है।

हुए उस काल के कवियों का नामोल्लेख किया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के साहित्य में भी जीवनीपरक महत्ता देखने को नहीं मिलती है। माताप्रसाद गुप्त ने तो अपनी 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में कवियों एवं लेखकों की मात्र सूची ही दी है। उन्हें जीवन चरित्र का वर्णन तो क्या करना था, इन सभी इतिहासों के पश्चात् भवानीशंकर त्रिवेदी एवं डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का इतिहास हमारे सम्मुख आता है। त्रिवेदीजी ने तो अपने साहित्य में कवियों का साधारण सा परिचय देकर उनकी कृतियों में से चुनकर उदाहरण दिए हैं परन्तु डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का इस दिशा में सफल प्रयोग है। द्विवेदीजी ने साहित्य की प्रवृत्तियों के विषय में तो लिखा ही है परन्तु कवियों और लेखकों का परिचय वह जितना अधिक दे सकते थे दिया है। जीवन परिचय देने में उन्हें जो भी प्रमाण मिल सके उन सभी के आधार पर इन्होंने उनके चरित्र को झाँका है।

इस तरह गार्सा द तासी के इतिहास से लेकर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तक के इतिहास के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इतिहास में लेखक का उद्देश्य अपने समय की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए उसका प्रभाव साहित्य पर दिखलाना है और उस युग के प्रसिद्ध लेखक कवि एवं आलोचकों का वर्णन करते हुए उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की ओर प्रकाश डालना है। इनकी सीमा काल, जन्मतिथि जन्मस्थान तक ही सीमित रही है। व्यक्तिगत जीवन का पूर्णतया विश्लेषण यह नहीं कर सके हैं यहाँ तक कि जिन लेखकों ने किसी विशेष काल के विषय में ही अपनी लेखनी उठायी है उनमें भी वह व्यक्ति का चित्रण पूर्ण नहीं दे पाए हैं। इसका कारण यह है कि इतिहासकार का कर्तव्य तो देश की परिस्थितियों का वर्णन करना होता है और उसका प्रभाव साहित्य पर दिखाना होता है। देश उसमें अंगी रहता है व्यक्ति उसमें अंग होकर आता है। जीवनीपरक साहित्य में प्रधानता व्यक्ति की होती है देश की घटनाएँ उसकी अनुवर्तिनी होकर चलती है। इसमें मुख्य लक्ष्य नायक के चरित्र का चित्रण होता है। देश एवं साहित्य की परिस्थितियों का वर्णन तो उसके चरित्र को उभारने के लिए किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य के इतिहास से जीवनीपरक साहित्य का इतना ही सम्बन्ध है कि दोनों में घटनाओं की सत्यता होती है।

जीवनीपरक साहित्य के आधार पर साहित्य के इतिहास में नए तत्वों एवं नए दृष्टिकोणों का समावेश हो सकता है। जीवनीपरक साहित्य में रेखाचित्र संस्मरण डायरी, पत्र एवं आत्मकथा साहित्य का समावेश है। इतिहासकार अपने साहित्य में जिस कवि या लेखक के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करता है वह जनश्रुतियों एवं किंवदंतियों पर अधिकतर आश्रित होते हैं। किसी भी व्यक्ति के विषय में जो भी लिखा जाता है यह आवश्यक नहीं होता कि वह पूर्णतया सत्य ही हो परन्तु जीवनपरक साहित्य का लेखक नायक स्वयं होता है इसलिए उसके विषय में किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं होता। जीवनीपरक साहित्य में लेखक अपने विचारों एवं व्यक्तित्व का विवेचन ही नहीं करता अपितु उसमें गुण दोषों का विश्लेषण भी करता है इसलिए

उनके पढने से बहुत लोगा की भ्रातिया दूर होती हैं और साहित्य के इतिहास मे नवीन तत्त्वा का समावेश होता है। लेखक अपने व्यक्तित्व की स्वय आलोचना करता है वह अपने समय की परिस्थितिया का स्वय वणन करता है। वणन ही नही अपितु विवेचन करता है। इसलिए हम दखते हैं कि जीवनीपरक साहित्य से इतिहास मे नए दृष्टिकोण एव नए तत्त्वो का समावेश हो सकता है।

उपसहार

हिन्दी म जीवनीपरक साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इसम केवल साहित्यिक व्यक्तियो के ही जीवन की झाँकी नही प्राप्त होती, प्रत्युत साहित्य स भिन्न व्यक्तियो के विषय मे भी प्रचुर मात्रा म सामग्री मिलती है। साहित्यिक व्यक्तियो ने जहाँ अपने जीवन के विषय म लिखा है और अन्य साहित्यप्रेमियो के जीवन चरित्रो को चित्रित किया है, वहाँ उन्होने राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक एव एतिहासिक पुरुषो पर भी लेखनी उठाई है। महात्मा गाधी लाला लाजपतराय भगतसिह, डा० राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल नेहरू एव राजा राममोहनराय की जीवनियाँ इस बात की प्रतीक हैं कि हिन्दी म जीवनी साहित्य म अनेक उत्कृष्ट श्रेणी के राष्ट्रीय जीवन चरित्र भी लिखे गए हैं। इनके अतिरिक्त गगाप्रसाद महता कृत 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य', राहुल साकृत्यायन कृत 'अकबर' एव लाला लाजपतराय द्वारा लिखी गई छत्रपति शिवाजी आदि जीवनियाँ इस बात की प्रतीक हैं कि हिन्दी जीवनीपरक साहित्य म एतिहासिक वीर पुरुषो के जीवन चरित्र भी प्राप्त होत है। इनके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि जैसे समाज सुधारको के जीवन चरित्रो की भी कमी नही है। धार्मिक व्यक्तियो के जीवन चरित्र तो कई मिलत हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि जीवनीपरक साहित्य म जहाँ शिवन दन सहाय द्वारा लिखी हुई गोस्वामी तुलसीदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र श्यामसुन्दरदास एव ब्रजरत्नदास द्वारा लिखी हुई 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' की जीवनियाँ एव अमृतराय की प्रेमचन्द कलम का सिपाही जैसी साहित्यिक जीवनियाँ प्राप्त होती है वहाँ साहित्यिक व्यक्तियो के जीवन चरित्र भी प्राप्त होते हैं। यही बात आत्मकथा साहित्य एव जीवनीपरक साहित्य की अन्य विधाओ मे भी पाई जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण बात इस साहित्य म यह भी देखने को मिलती है कि इसम कुछ ऐसे व्यक्तियो को लखको ने अपना नायक चुना है जो उक्त सभी महान व्यक्तियो स भिन्न हैं। लेखक को उन व्यक्तियो के व्यक्तित्व ने पूर्णतया प्रभावित किया है। व व्यक्ति साधारण होते हुए भी अपने मानवीय गुणो के कारण असाधारण से दिखाई पड रहे हैं। एसे लेखको मे महादेवी वर्मा, राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, रामवृक्ष बनीपुरी एव प्रमनारायण टडन हैं जिन्होने सामान्य जन को भी चुना है। ऐस साधारण जन न तो समाज म प्रसिद्ध होते हैं और न जनता म लेकिन लखक के सम्पर्क मे आने पर उनकी व्यक्तिगत विशेषताओ का जब लेखक को अनुभव हो जाता है

तब वह उन्हे अपना नायक बना लेता है। महादेवी ने लछमा रधिया आदि का जो चित्रण किया है वह इसी बात का द्योतक है। राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह ने भी 'सावनीसमा' टूटा तारा' एव सूरदास शीर्षक पुस्तको म एसे ही व्यक्तियो को नायक चुना है। इस प्रकार हम देखते है कि हिन्दी म जीवनीपरक साहित्य के लेखको ने जहाँ राजनतिक सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एव साहित्यिक व्यक्तियो को नायक चुना, वहा इन्होने एक विलक्षण प्रकार के लोकजना को भी अपना नायक चुना है जिनके व्यक्तित्व इन सभी प्रकार के व्यक्तियो से भिन्न हैं।

जीवनीपरक साहित्य पाठक और लखक के बीच एक स्वाभाविक सम्बन्ध स्थापित करता है। पाठक अपने साहित्यकार के प्रति प्रेम और सहृदयता की भावना रखने लगते हैं। दोनो का पारस्परिक दुराव हट जाता है जिसके बजाय एक नितान्त वैयक्तिक स्वाभाविक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। पाठक पढ्ते पढते यह भूल जाता है कि यह किसी अन्य व्यक्ति की जीवनी है क्योकि उसकी भावनाओ का साक्षात्कार लखक से हो जाता है, उसके कष्टो को वह अपने कष्ट समझने लगता है और उसके सुखो को वह अपने सुख समझता है, अर्थात् यह उसके सुख दुख को अपने सुख दुख समझने लगता है। वह जीवन रस म इतना तल्लीन हो जाता है कि अपने आपको भूल जाता है कि मैं पाठक हूँ। यही इस साहित्य की विशेषता है। इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य म लेखक और पाठक का एक स्वाभाविक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

इस जीवनीपरक साहित्य का सबसे बडा लाभ यह होता है कि हम किसी भी साहित्यकार की कृतियो को सहजत समझने म सुविधा हो जाती है। जब तक हम उसके जीवन का अनुशीलन न करें तब तक उसकी साहित्यिक रचनाओ को समझना हमारे लिए कठिन हो जाता है। साहित्यकार की प्रत्येक कृति उसके जीवन के उन क्षणो म लिखी हुई होती है। इसलिए जब तक हम उसके जीवन के उन क्षणो का अध्ययन नही कर लेते तब तक उसको पूर्ण रूप से समझ नही सकेंगे। इस प्रकार जीवनीपरक साहित्य के अध्ययन से हम साहित्यकार की सजनात्मक साहित्यिक कृतिया को भी समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि 'प्रेमचन्द कलम का सिपाही' शीर्षक जीवन चरित्र पढ लिया जाय, तो हम उनकी समस्त कृतिया को बडी आसानी से समझ सकते है। उन्होने किस उपन्यास को कब लिखा, कसे वातावरण मे लिखा, उनके लिखने का क्या उद्देश्य था और उसका उसके जीवन से क्या सम्बन्ध है—इन सभी बातो का ज्ञान हम उनके जीवन चरित्र के अध्ययन से हो जाता है। यही बात सभी लखको के विषय म कही जा सकती है। इसके अतिरिक्त और सबसे महत्वपूर्ण बात यह देखी जाती है कि पाठक को यह अनुभव हो जाता है कि उसकी रुचियाँ साहित्यकार के साथ कहाँ तक मिलती हैं। यदि पाठक की रुचियाँ लेखक के साथ प्रचुर मात्रा म मिल जाती हैं तो उसको अध्ययन का और भी आनन्द आने लगता है। उससे पाठक और लेखक मे एक रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

विशेष रूप से पत्र डायरियाँ और आत्मकथाएँ पाठक को साहित्यकार के जीवन के सभी पक्षों का उसके प्रेरणा स्रोतों का, ज्ञान करा देती हैं। पाठक को यह पता चल जाता है कि लेखक के जीवन के प्रेरणा स्रोत कौन-कौन से हैं और इसके साथ ही वह उसके मानसिक विकास से भली प्रकार परिचित हो जाता है। इसके व्यक्तित्व की सभी विशेषताएँ उसे दृष्टिगोचर होने लगती है। वह लेखक के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण-दोषों को भली प्रकार जानने लगता है। उसे यह पता चल जाता है कि लेखक का जीवन किन किन व्यक्तियों आन्दोलनों, परिस्थितियों आदि से प्रभावित हुआ है। इस प्रकार पाठक लेखक के मानसिक एवं भावात्मक जीवन से भलीभाँति परिचित हो जाता है।

जीवनीपरक साहित्य द्वारा हिन्दी साहित्य में—इतिहास लेखन शास्त्र (Historography) के क्षेत्र में एक नया परिवर्तन आ सकता है। जिन साहित्य का विशेषताओं को हम साहित्यकारों की कृतियों के अध्ययन से जान सकते हैं अर्थात् जिनका अनुमान हम उनकी कृतियों से करते हैं उन सभी का वर्णन हम उनके हाथों से लिखा हुआ प्राप्त होता है, जो कि तत्कालीन विशेषताओं को प्रामाणिक सत्य के रूप में घोषित करेगा। इससे स्पष्ट है कि हम कृतियों की अपेक्षा कृतिकारों के माध्यम से साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास को समझने का एक नया दृष्टिकोण पा सकते हैं। इस दृष्टि से जो भी इतिहास लिखा जाएगा वह बिल्कुल ठीक होगा।

इस प्रकार के साहित्य के द्वारा हम विशेष व्यक्ति द्वारा वर्णित इतिहास को समझ सकते हैं। इसके साथ ही हम यह पता चल सकता है कि अमुक व्यक्ति का तत्कालीन परिस्थितियों में क्या स्थान है, वह कहाँ तक उससे प्रभावित है और कहाँ तक उसका व्यक्तित्व उन परिस्थितियों से पृथक है। इसके दो लाभ होते हैं एक तो व्यक्ति के जीवन चरित्र का अनुमान हो सकता है, और दूसरा पाठक को तत्कालीन इतिहास विषयक जानकारी होने की अधिकाधिक सम्भावनाएँ प्राप्त होती हैं।

इस प्रकार के साहित्य द्वारा लेखक साहित्य और समाज का सम्बन्ध, एवं साहित्य और इतिहास का सम्बन्ध भी प्रकट कर सकता है। इससे पाठक को यह पता चल सकता है कि साहित्य और समाज का कहाँ तक सम्बन्ध तत्कालीन लेखकों ने निभाया है तथा किन किन लेखकों ने समाज में प्रतिकूल होकर अपना जीवन को अपनाया है। इसके अतिरिक्त यह भी अनुभव हो सकता है कि साहित्य से समाज प्रभावित हुआ है अथवा समाज से साहित्य। विज्ञान एवं इतिहास का साहित्य में क्या स्थान रहा है? क्या साहित्यकार वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रभावित हुआ है? यदि हुआ है तो कहाँ तक हुआ है? इन सभी बातों की सम्भावना हम इस प्रकार के साहित्य से प्राप्त हो सकती है।

इसके अतिरिक्त इस जीवनीपरक साहित्य के प्रकाश में आने से साहित्यिक आलोचना में अधिकाधिक मनोवैज्ञानिक गहराई सामाजिक गहनता कृतियों की प्रामाणिकता तथा यथार्थता का स्वस्थ विकास हो सकता है। अस्तु।

पुस्तकालयों की सूची

१ काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
२ मारवाडी पुस्तकालय, दिल्ली
३ दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय
४ पजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय
५ सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी पटियाला
६ पजाबी विश्वविद्यालय पुस्तकालय
७ दिल्ली पब्लिक पुस्तकालय
८ ब्रिटिश कौंसिल लाइब्रेरी देहली

चुनी हुई पत्र पत्रिकाओं की सूची

१ अजन्ता	१६४६ ई० से १६५५ ई० तक
२ अग्रवाल सन्देश	१६४४ इ० स ६५१ ई० तक
३ अग्रदूत	१६५० ई० से १६५२ ई० तक
४ अखड ज्योति	१६४० ई०
५ अग्रवाल	१६२२ वि० से १६३६ ई० तक
६ अवन्तिका	१६५२ ई० से १६६३ ई० तक
७ आजकल	१६४७ ई० स १६६४ सन् तक
८ आकाशवाणी प्रसारिका	१६५४ ई० से १६५६ सन् तक
९ आलोचना	
१० कल्पना	१६५० सन् स १६६४ सन् तक
११ कादम्बिनी	१६६१ सन् से १६६८ सन् तक
१२ चाद	१६२३ सन् से १६४५ सन् तक
१३ निकष	१६५५ सन् से १६५७ सन् तक
१४ नया समाज	१६४८ सन् से १६५८ सन् तक
१५ नागरी प्रचारिणी पत्रिका	
१६ प्रतिमा	स० १६७४ से १६७७ स० तक
१७ प्रभा	१६६० स १६२४ इ० तक
१८ प्रतीक	१६४६ सन् स १६५१ सन् तक
१९ प्रसारिका	१६५४ सन से १६५६ सन तक
२० भारतीय साहित्य	१६५६ सन से १६५७ सन तक
२१ माधुरी	१६२३ सन स १६४८ सन तक
२२ माया	१६४० सन स १६६३ सन तक

२३ युग चेतना	१९५६ सन से १९५८ सन तक
२४ राष्ट्र भारती	१९५६ सन स १९६२ सन तक
२५ विश्वमित्र	१९३७ सन से १९४६ सन तक
२६ वीणा	१९५७ सन से १९६१ सन तक
२७ विशाल भारत	१९२८ सनु स १९६४ सन तक
२८ विद्या विनोद	१९०१ सन स १९०२ सन तक
२९ सरस्वती	१९०० सन स १९६४ सन तक
३० साहित्य	२००७ स० से १९५० ई० तक
३१ सम्मेलन पत्रिका	
३२ साहित्य सन्देश	
३३ सुधा	१९४९ सन स १९६२ सन तक
३४ हस	१९२६ सन से १९३४ सन तक
५ हिन्दुस्तानी	१९३२ सन से १९५० सन तक
६ ज्ञानोदय	१९३१ सन स १९६० सन तक
	१९५२ सन स १९६४ सन तक

चुनी हुई पुस्तको की सूची

१ आत्मकथा	महात्मा गाधी
२ आत्मकथा	डॉ० राजेन्द्रप्रसाद
३ अमिट रेखाएँ	सत्यवती मल्लिक
४ अरे यायावर रहेगा याद	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन
५ अपपिशाच	शील
६ अजवर	रागयराघव
७ अपनी खबर	पाण्डेय बचन शर्मा 'उग्र'
८ अमृत एक रगीन व्यक्तित्व	कौशल्या अश्क
९ आचार्य द्विवेदी	सम्पादिका निर्मल तलवार
१० आत्मचरित चारु	श्र यवद मिश्र
११ आलोचना उसके सिद्धान्त	डॉ० शमनाथ गुप्त
१२ आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ० कृष्णलाल
१३ वही	डॉ० भोलानाथ तिवारी
१४ वही	डॉ० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय
१५ वही	प० कृष्णशकर शुक्ल
१६ आधे रास्ते	कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

१७	अतीत के चलचित्र	महादेवी
१८	एक आत्मकथा	देवीदत्त शुक्ल
१९	एक पत्रकार की आत्मकथा	मूलचन्द्र अग्रवाल
२०	एक युग एक प्रतीक	देवेन्द्र सत्यार्थी
२१	एक क्रान्तिकारी के संस्मरण	मनमोहन गुप्त
२२	एक साहित्यिक की डायरी	गजाननमाधव मुक्तिबोध
२३	काव्य के रूप	गुलाबराय
२४	कुछ देखा कुछ सुना	घनश्यामदास बिड़ला
२५	गहरे पानी पैठ	अयोध्याप्रसाद गोयलीय
२६	गांधीजी की छत्रछाया में	घनश्यामदास बिड़ला
२७	गुप्त निबन्धावली	बालमुकुन्द गुप्त
२८	गोस्वामी तुलसीदास	शिवनन्दन सहाय
२९	गेहूँ और गुलाब	रामवृक्ष बेनीपुरी
३०	घुमक्कड़ स्वामी	राहुल सांकृत्यायन
३१	चरितावली	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
३२	चरित चर्चा	महावीरप्रसाद द्विवेदी
३३	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	गंगाप्रसाद मेहता
४	जीवन स्मृतियाँ	स० क्षेमेन्द्र सुमन
३५	जैसा हमने देखा	स० क्षेमेन्द्र सुमन
३६	जिन्दगी मुस्कराई	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
३७	टूटा तारा	राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह
३८	ठेले पर हिमालय	धर्मवीर भारती
३९	दीप जले शंख बजे	कन्हैयालाल मिश्र
४०	दैनन्दिनी	सुन्दरलाल त्रिपाठी
४१	द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र	स० बैजनाथसिंह विनोद
४२	द्विवेदी पत्रावली	स० बैजनाथसिंह विनोद
४३	दो धारा	उपेन्द्रनाथ अश्क
४४	नक्षत्रों की छाया में	कृष्णदत्त भट्ट
४५	नये पुराने झरोखे	बच्चन
४६	नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन चरित्र	रमाशंकर व्यास
४७	पद्मपराग	पद्मसिंह शर्मा
४८	पुरानी स्मृतियाँ	प्रकाशचन्द्र गुप्त

४९ प्रेमचन्द कलम का सिपाही	अमृतराय
५० पद्मसिंह शर्मा के पत्र	सं० बनारसीदास चतुर्वेदी
५१ प्रेमचन्द चिट्ठी-पत्री भाग १	
५२ प्रेमचन्द चिट्ठी पत्री भाग २	
५३ पुरातत्त्व निबन्धावली	राहुल साङ्कृत्यायन
५४ परिव्राजक की प्रजा	शान्तिप्रिय द्विवेदी
५५ पथचिह्न	शान्तिप्रिय द्विवेदी
५६ पाण्ड्य स्मृति ग्रन्थ	सं० प्रेमनारायण टंडन
५७ प्रेमचन्द स्मृति-ग्रन्थ	
५८ प्रेमचन्द घर में	शिवरानी देवी
५९ प्रवासी की आत्मकथा	भवानीदयाल संन्यासी
६० बालमुकुन्द गुप्त जीवन और साहित्य	डा० नत्थनसिंह
६१ बादशाह दर्पण	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
६२ बन्दी की चेतना	कमलापति त्रिपाठी
६३ बालकृष्ण भट्ट (संस्मरणों में जीवन)	ब्रजमोहन व्यास
६४ भारतेन्दु ग्रन्थावली तीसरा भाग	ब्रजरत्नदास
६५ भारतेन्दु युग	डा० रामविलास शर्मा
६६ भारतेन्दु साहित्य	रामगोपालसिंह चौहान
६७ भारतेन्दु की विचारधारा	लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय
६८ भारतेन्दु के निबन्ध	संग्रहकर्त्ता और सम्पादक केसरीनारायण शुक्ल
६९ भूले हुए चेहरे	कन्हैयालाल मिश्र
७० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	शिवनन्दन सहाय
७१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	डा० श्यामसुन्दरदास
७२ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	ब्रजरत्नदास
७३ मेरी असफलताएँ	गुलाबराय
७४ मिश्रबन्धु विनोद	मिश्र बन्धु
७५ मेरे निबन्ध (जीवन और जगत)	गुलाबराय
७६ मेरी कहानी	नेहरू
७७ मेरा जीवन प्रवाह	वियोगी हरि
७८ मेरी जीवन यात्रा	राहुल साङ्कृत्यायन
७९ मुदर्रिस की रामकहानी	कालिदास कपूर
८० मेरे जीवन के अनुभव	संतराम बी० ए०

८१	मीराबाई	कार्तिकप्रसाद खत्री
८२	माखनलाल चतुर्वेदी	ऋषि जैमिनी बरुआ
८३	मेरी कालिज डायरी	धीरेन्द्र वर्मा
८४	माडन हिंदी लिट्रेचर	डा० मदान
८५	मटो मेरा दुश्मन	अश्क
८६	मैं इनका ऋणी हूँ	इन्द्रविद्यावाचस्पति
८७	मील के पत्थर	रामवृक्ष बेनीपुरी
८८	मेरी आत्मकहानी	डा० श्यामसुन्दर दास
८९	मेरी आत्मकहानी	चतुरसेन शास्त्री
९०	यात्रा के पन्ने	राहुल सांकृत्यायन
९१	ये और वे	जनेन्द्र
९२	राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ	स० ऋषि जैमिनी कौशिक
९३	रेखाचित्र	प्रकाशचन्द्र गुप्त
९४	रेखाचित्र	बनारसीदास चतुर्वेदी
९५	रेखाए बोल उठी	देवेन्द्र सत्यार्थी
९६	रेखाचित्र	प्रेमनारायण टंडन
९७	रेखाएँ और चित्र	उपेन्द्रनाथ अश्क
९८	राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह व्यक्तित्व और कृतित्व	डा० कमलेश
९९	लाल तारा	रामवृक्ष बेनीपुरी
१००	वे जीते कैसे है	श्रीराम शर्मा
१०१	शिवसिंह सरोज	शिवसिंह सेंगर
१०२	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	गोविन्द त्रिगुणायत
१०३	शिवपूजन रचनावली चौथा खण्ड	
१०४	शैली और कौशल	सीताराम चतुर्वेदी
१०५	सिद्धातालोचन	धर्मचन्द सत बलदेव कृष्ण
१०६	साहित्य की झांकी	गौरीशंकर सत्येन्द्र
१०७	सुमित्रानन्दन पंत स्मृति चित्र	स० राजकमल प्रकाशन
१०८	सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी	बनारसीदास चतुर्वेदी
१०९	सावनीसमा	राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह
११०	सूरदास	वही
१११	सिंहावलोकन भाग १ से ३ तक	यशपाल
११२	साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण	किशोरीदास वाजपेयी

११३ साहित्यिकों के संस्मरण	स० ज्योतिलाल भार्गव
११४ संस्मरण	बनारसीदास चतुर्वेदी
११५ साधना के पथ पर	हरिभाऊ उपाध्याय
११६ समीक्षा शास्त्र	डा० दशरथ ओझा
११७ सीधी चढान	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
११८ स्मृति की रेखाएँ	महादेवी
११९ सुकवि संकीर्तन	महावीरप्रसाद द्विवेदी
१२० स्तालिन	राहुल सांकृत्यायन
१२१ साहित्य की मान्यताए	भगवतीचरण वर्मा
१२२ साहित्य विवेचन	क्षेमेन्द्र सुमन
१२३ साहित्य चिन्तन	इलाचन्द्र जोशी
१२४ सिद्धान्त और अध्ययन	गुलाबराय
१२५ हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास	चन्द्रावती सिंह
१२६ हरी घाटी	रघुवंश
१२७ हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा	डा० रामअवध द्विवेदी
१२८ हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
१२९ हिन्दी साहित्य की परम्परा	हंसराज अग्रवाल
१३० हिन्दी साहित्य का इतिहास	ग्रियर्सन
१३१ हिन्दी साहित्य का इतिहास	श्यामसुन्दरदास
१३२ हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास	अयोध्यासिंह उपाध्याय
१३३ हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास	सूर्यकान्त शास्त्री
१३४ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० रामकुमार वर्मा
१३५ हिन्दी पुस्तक साहित्य	माताप्रसाद गुप्त
१३६ हिन्दी साहित्य का इतिहास	हजारीप्रसाद द्विवेदी
१३७ हमारे नेता	रामनाथ सुमन
१३८ हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास	रामबहारी शुक्ल